ऐसे थे हम



[redacted]





ऐसे थे हमारे निराला

डॉ. शिवगोपाल मिश्र



तक्षशिला प्रकाशन
तक्षशिला 23/4761, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

I S B N. 81-7965-018-9

प्रथम संस्करण - 2002

मूल्य - 300/- रुपये

प्रकाशक :
श्री तेज सिंह बिष्ट
तक्षशिला प्रकाशन
23/4761, अन्सारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
दूरभाष : 011-3258802, 2213959
फैक्स : 011-3258767

शब्द सज्जा :
डी.जी. कम्प्यूट्रॉनिक्स
जी टी.बी. एन्क्लेव
दिल्ली-110 093

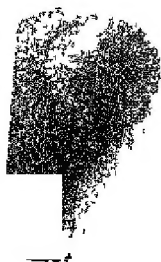
मुद्रक :
बालाजी ऑफ़सेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

AISE THHE HAMARE NI
By : Dr. Shiv Gopal Mishra



समर्पण

अपने दिवंगत मित्र रावत ओउम प्रकाश सिंह
को
जिन्होंने 40 वर्षों तक मेरी साहित्यिक यात्रा में
मेरा साथ दिया
और
निराला जी की रूग्णावस्था में तरह- तरह से
सहयोग किया।



भूमिका

मेरे जन्म के पूर्व ही पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का दिनमान ऊपर चढ़ रहा था। 1940 में जब मैं कक्षा चार उत्तीर्ण कर रहा था तो वह मध्याह्न पर था और 1950 में जब मैं उनके चरणों के समीप पहुंचा तो वह अस्ताचल की ओर ढल रहा था। निराला संन्यासी बनकर दारागंज मुहल्ले में एक गृहस्थ-दम्पति के अतिथि बनकर—अतिथि क्यों, ठाकुर परिवार के सदस्य बनकर परमहंस वृत्ति धारण किये जीवन बिता रहे थे। वे अपने घर के सामने चबूतरे पर बैठकर गाय की पीठ सहलाते, कुतिया को दुलारते और राहगीरों से भी बातें करते। अन्यथा मन ही मन बुदबुदाते रहते भावस्थ होकर। न समय की परवाह, न किसी के कहने-सुनने की परवाह। नितान्त मनमौजी।

निराला के जीवन का यह संन्यस्त काल मेरे लिए उनके पूर्ववर्ती विगत जीवन पर विचार करने के लिए—उसके बारे में स्वयं से खोज करने के लिए प्रेरित करता रहा और इस तरह 12 वर्ष बीत गये। लगता नहीं था कि निराला जी इतनी जल्दी हमें छोड़कर चले जायेंगे।

मै 12 वर्षो तक साइकिल से प्राय. सुबह, कभी शाम, तो कभी-कभी दोनों वक्त निराला जी के पास जाता रहा। अन्तिम समय में अध्यापन की व्यस्तता के साथ ही रह-रहकर अपनी अस्वस्थता तथा गृहस्थी के बोझ के कारण उनके पास मेरा जाना कुछ कम भले ही हुआ हो किन्तु निराला की चिन्ता अहर्निश सताती रही। एक बार मैंने कुतूहलवश गणना की कि अपने शहराराबाग के निवास स्थान से दारागंज तक (वर्ष 1950 से 1956 तक) और अशोक नगर से दारागंज तक (1956 से 1961 तक) मैंने साइकिल से कितने हजार मील की दूरी तय की, मात्र निराला का सान्निध्य प्राप्त करने और इस तरह संस्मरणों या अनुभवों को अंकित करने—एक घटना को, हर भेंट को नोट करने के लिए।

आज जब निराला पर पुस्तक लिखने का आमन्त्रण मिला और मैं अपने उन नोट्स को टटोलता हूँ तो अजीब आकुलाहट होती है। डॉ. रामविलास शर्मा निराला जी से 1934 से 1946 तक अन्तरंगतापूर्वक जुड़े रहे। यह अवधि भी बारह ही वर्ष की है किन्तु उन्होंने अपने अध्ययन, अध्यवसाय तथा संग्रह गुण के कारण निराला

को अमर बना दिया है। गंगा प्रसाद पाण्डेय उनसे बाद में निराला के सम्पर्क में आये---1936 में, किन्तु वे 1961 तक किसी न किसी रूप में उनसे जुड़े रहे पर उनमें वह शोध प्रवृत्ति नहीं रही जो डॉ. शर्मा में मुझे दिखी। इसी तरह काशी के प गंगाधर मिश्र 1949 में निराला के सम्पर्क में आये और भाग्यशाली थे कि निराला ने उनके साथ छह-सात मास बिताये तथा वहीं विनयखण्ड (तुलसीकृत रामचरितमानस के बालकाण्ड का उल्था) की रचना की। निराला के अन्य जीवनी लेखकों या साहित्य-समालोचकों के विषय में मुझे कुछ नहीं करना।

मैं जिस प्रयाग नगरी में आ बसा हूँ वह नगरी विचित्र है। जब सूर्यकान्त का दिनमान उदय हो रहा था तो प्रयाग से ही प्रकाशित पत्रिका 'मनोरमा' में 'भावुक' छद्मनाम से किसी ने 'भावों की भिडन्त' लिखकर नवोदित कवि निराला का मर्माहत किया था। परिणाम अच्छा हुआ तब उनके काव्य में नया मोड़ आया। पुन: 1934 में ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल ने 'अभ्युदय' में प्रयाग से ही पन्त-प्रसाद-निराला को लेकर वितंडा खड़ा किया। लेकिन निराला ऐसे गरलपायी शंकर निकले कि काशी को नहीं प्रयाग नगरी को अपनी स्थली चुना। आखिर प्रयाग में क्या मिला? द्वितीय विश्व युद्ध के समय उन्हें असह्य यातनाएं झेलनी पड़ीं। फिर भी वे टूटे नहीं। एक बार फिर कविता के क्षेत्र में युगान्तर ला दिया---प्रगति या प्रयोगवाद का सूत्रपात करके। उन्होंने भाषा-भाव सभी बदल डाले। और संन्यास लेने के बाद तो उन्होंने कमाल कर दिया। आधुनिक खड़ीबोली में भक्तिकाल ला दिया---तुलसी की प्रतिमूर्ति बनकर।

कलकत्ता निराला की साधना स्थली लखनऊ कर्मस्थली तथा प्रयाग उनकी समाधि स्थली बनी। वे सचमुच राजयोगी एवं उससे भी बढ़कर परमहंस थे।

मेरे संस्मरणों की कुछ अजीब सीमाएं हैं। मैं न तो कोई घटना छोड़ना चाहता हूँ, न ही उन्हें रंग चढ़ाकर चटपटी बनाना चाहता हूँ। मुझे निराला के कलकत्ता, काशी, लखनऊ, गढ़ाकोला, डलमऊ वास तथा 1950 के पूर्व प्रयाग में निराला के विषय में जो भी प्रामाणिक वक्तव्य मिलते रहे, उस पर मैं गम्भीरता से मनन भी करता रहा।

मैंने निराला के सम्पर्क में रहकर उनके द्वारा लिखाये गये कुछ पत्रों की प्रतिलिपियां अपने पास रखीं और निराला के पास आये पत्रों को भी संजोकर रखा। उन्हें भेंट की हुई कुछ पुस्तकें, कुछ गीतों की प्रतिलिपियां और सबसे बड़ी निधि-मधुर स्मृतियाँ, निराला के विविध भाव, उनकी भंगिमाएं, उनके शब्द जो अनुभूति पैदा करते हैं।

यूँ तो 1952 से ही मैं निराला के विषय में लिखता रहा हूँ किन्तु अब जब पुस्तक लिखने बैठा हूँ तो समझ नहीं पा रहा कि नित्यप्रति की घटनाओं, निराला की वक्तृताओं, निराला के साथ अन्यों के पत्र-व्यवहार तथा निराला पर विद्वानों द्वारा

जो कुछ लिखा जा चुका है उन सबको ध्यान में रखते हुए मन की पूरी बात कैसे लिख डालूँ। वस्तुतः जिसे मुझे "मेरे निराला" कहना चाहिए उसे मैं "हमारे निराला" कहूँगा। निराला को कोई एक व्यक्ति अपना कह भी नहीं सकता। वे तो सबों के थे—वे मेरे ही क्यों, 'हमारे निराला' थे और वे "ऐसे थे" जैसे कि कोई महामानव हो, परमहंस हो। यहां इस पर विचार नहीं किया जावेगा कि वे कितने बड़े कवि, निबन्धकार, या व्यंग्यकार थे। विचार तो महामानव निराला पर हो रहा है और वह भी उनके उन 12 वर्षों के मेरे अपने निरीक्षण-अवलोकन के आधार पर जो मैंने उनके सुखद सम्पर्क में पूरे किये।

इस पुस्तक में 7 अध्याय हैं। अध्याय 1 तथा 2 में मेरी परिधि के पूर्व निराला के जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है। अध्याय 3 तथा 4 मेरी निजी पूँजी है। अध्याय 5 व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर है जिसमें यथाशक्ति सामग्री का संकलन मिलेगा। अध्याय 6 में भी संकलित सामग्री ही है। अध्याय 7 उपसंहार के रूप में है। इसी अध्याय के नाम पर पुस्तक का नामकरण हुआ है।

आप प्रश्न कर सकते हैं कि मैं 3 वर्ष के अन्तराल के बाद निराला पर क्यों लिख रहा हूँ तो उत्तर होगा कि 1996 या 1999 निराला की जन्मशती का वर्ष था। अस्वस्थ होने से इसे पुस्तक को विलम्ब से पूरा कर पाया।

25, अशोक नगर,
इलाहाबाद - 1

—शिवगोपाल मिश्र



विषय सूची





1

हमारे निराला

वर्तमान उत्तर प्रदेश के जिला उन्नाव के अन्तर्गत गढ़ाकोला नाम का एक छोटा सा गाँव है। यह बीघापुर रेलवे स्टेशन से 5-6 किलोमीटर दूरी पर है। पास में लोन नदी बहती है। इस गाँव में कान्यकुब्ज ब्राह्मण तथा निम्नवर्ग के लोग रहते हैं। इनका पेशा प्राय: खेती है। यहीं पर 'हमारे निराला' के पितामह शिवधारी त्रिपाठी रहते थे। वे छोटे से काश्तकार थे। उनके चार पुत्र हुए—गयादीन, जोधा, रामसहाय तथा रामलाल। गयादीन के दो पुत्रियाँ हुई, कोई पुत्र नहीं हुआ। जोधा के एक ही पुत्र हुआ बदलू। रामसहाय के भी एक पुत्र हुआ सूर्यकुमार जो आगे चलकर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' कहलाया। रामलाल के कोई भी सन्तान नहीं हुई। बदलू के चार पुत्र हुए—बिहारी लाल, केशवलाल, रामगोपाल तथा कालीचरन। महामारी में बदलू का निधन हो जाने से उनके चारों पुत्रों का पालन-पोषण 'हमारे निराला' ने किया। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के भी दो सन्तानें हुईं—पुत्र रामकृष्ण तथा पुत्री सरोज। एक ओर जहां निराला ने अपने अनाथ भतीजों के पालन का जिम्मा अपने ऊपर लिया, वहीं अपने पुत्र तथा पुत्री को उनके ननिहाल छोड़ आये। चारों भतीजे ठीक से पढ़ नहीं पाये। बिहारी लाल गढ़ाकोला के पैतृक घर में रहे, केशवलाल अपनी ससुराल डलमऊ में, कालीचरन लालगंज में रहे और रामगोपाल कलकत्ते में नौकरी करने लगे।

बिहारी लाल ने एक बार मुझे बताया, "गाँव में खेती थोड़ी थी। भाइयों में बतरस हो जाने से रामसहाय खेत में खुरपी गाड़कर कलकत्ते चले गये। वे लम्बे तड़ंगे खूबसूरत व्यक्ति थे। कलकत्ते में उन्होंने पुलिस की नौकरी कर ली। एक बार रामसहाय लाट साहब के साथ महिषादल के राजा के यहां गये तो राजा ने उन्हें माँग लिया। इस तरह वे कलकत्ता से महिषादल आ गये।"

महिषादल बंगाल प्रान्त के अन्तर्गत मिदनापुर जिले में एक छोटी सी रियासत थी जिसमें ईश्वर प्रसाद गर्ग राजा थे। रामसहाय इन्हीं के यहाँ सिपाहियों के

अधिकारी (जमादार) बनाये गये थे। रामसहाय महावीर के भक्त तथा ईमानदार व्यक्ति थे। उन्होंने अपने भाई रामलाल को भी वहीं बुला लिया था।

रामसहाय के दो ब्याह हुए थे। पहली पत्नी जल्दी मर गई। उनसे कोई सन्तान न हुई थी। रामसहाय की दूसरी पत्नी रूक्मिणी से उन्हें पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। नाम रखा सूर्यकुमार। अभी सूर्यकुमार ढाई वर्ष के थे कि माता का स्वर्गवास हो गया। पिता को ही बालक का पालन-पोषण करना पड़ा। दिनभर नोकरी बजाते, रात में पुत्र को किस्से-कहानी सुनाते, गिनती गिनाते, अक्षर का ज्ञान कराते। बालक दिन भर पड़ोस में ज्वालाप्रसाद शुक्ल के पुत्र रामशंकर के साथ खेला करता। वह धीरे-धीरे उद्दण्ड हो गया।

यद्यपि रामसहाय अपने लाडले पुत्र को प्राणों से भी बढ़कर मानते किन्तु वे अनुशासन प्रिय इतने थे कि उद्दण्डता के लिए अपने पुत्र को कठोर से कठोर दंड देते। जब उन्हें लगने लगा कि बालक आवारा हो रहा है तो उन्होंने उसका नाम पाठशाला में लिखा दिया। बीच-बीच में पिता के साथ सूर्यकुमार गढ़ाकोला भी जाता रहा। महिषादल के राजमहल में भी उसका आना जाना होता रहता। बँगला, गणित, अंग्रेजी, इतिहास के साथ-साथ संगीत के प्रति उसका झुकाव था।

रामसहाय ने पुत्र का विवाह पढ़ाई के बीच में ही रच दिया। उम्र केवल 14 वर्ष रही होगी। जिला फतेहपुर के चाँदपुर निवासी (किन्तु डलमऊ में रह रहे) रामदयाल दुबे की पुत्री मनोहरा देवी के साथ सूर्यकुमार का विवाह तय हुआ। दो साल बाद गौना हो गया। मनोहरा गढ़ाकोला आईं। कुछ दिन बाद दुबे जी अपनी पुत्री बिदा करा ले गये। सूर्यकुमार गवहीं करने ससुराल पहुँचे ('कुल्लीभाट' में निराला ने ससुराल का वृत्तान्त दिया है)। उनकी सासू पार्वती ने दामाद की भरपूर मेहमानी की। यहीं सूर्यकुमार ने मनोहरा से 'श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मनु हरण भवभय दारूणम्' भजन सुना। हाईस्कूल की परीक्षा सिर पर थी किन्तु उसका मन चंचल रहने लगा। आखिर वह परीक्षा में फेल हो गया।

पिता ने कड़ा रूख अपनाया। उन्होंने पुत्र और पुत्रवधू को घर से निकाल दिया। सूर्यकुमार को पिता से ऐसी उम्मीद न थी। ससुर सम्पन्न व्यक्ति थे अतः वे अपनी ससुराल डलमऊ में आकर रहने लगे। मनोहरा की माँ पार्वती बहुत ही सुशील थीं। भीतर से दुःखी थीं दामाद की अवस्था से किन्तु ऊपर-ऊपर उन्होंने दामाद की आवभगत की। सूर्यकुमार कई मास रहे आये। अन्ततः पिता अपने रूठे पुत्र को मनाने डलमऊ आये और पुत्र और पुत्रवधू को गढ़ाकोला ले गये। सूर्यकुमार को मांस खाने की आदत थी और मनोहरा थीं परम वैष्णवी। पति के दुराग्रह से रूठकर मनोहरा मायके चली गईं। सूर्यकुमार गाँव में ही कसरत करते, खेल में भाग लेते, कुश्ती लड़ते।

1914 में मनोहरा को एक पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ। नाम रखा रामकृष्ण। तीन वर्ष बाद पुत्री उत्पन्न हुई नाम रखा सरोज। जिस वर्ष सरोज उत्पन्न हुई उसी वर्ष उसके बाबा रामसहाय की मृत्यु हो गई। सूर्यकुमार के सिर पर से पिता का साया जाता रहा।

अब सूर्यकुमार का ज्ञान जागा। वह नौकरी करने के उद्देश्य से महिषादल के राजा के यहां पहुँचा। राजा सतीप्रसाद गर्ग ने उसे नौकरी दे दी। पढ़े-लिखे होने से राज्य की लिखा-पढ़ी का कार्य सूर्यकुमार को मिल गया। राजा हम-उम्र था। वह सूर्यकुमार के संगीत से प्रभावित था। अब सूर्यकुमार को राज परिवार को निकट से देखने का भी अवसर मिला। किन्तु कुछ ही दिन बीते होंगे कि उसे तार मिला कि पत्नी बीमार है। जब तक सूर्यकुमार ससुराल पहुँचे, मनोहरा का शरीर भस्मीभूत किया जा चुका था। श्मशान की राख सिर पर चढ़ाकर सूर्यकुमार गढ़ाकोला की ओर बढ़ा। रास्ते में उसे चचेरे भाई बदलू, भाभी, एक बच्ची तथा चाचा रामलाल की लाशें मिलीं। सूर्यकुमार इन्हें देखकर संज्ञाशून्य हो गया। उस पर असह्य दैवी बज्रपात हो गया। परिवार के अनेक लोग एक साथ महामारी में सिमट गये।

गढ़ाकोला में बदलू की चार सन्तानें और ससुराल में अपनी दो सन्तानों—कुल छह प्राणियों का भार आ पड़ा। सूर्यकुमार गढ़ाकोला में रहकर भतीजों की सेवा करने लगा। वह चक्की पीसता, चौका-बर्तन करता और रोटी बनाकर उन्हें खिलाता। दैव ने जो विपत्ति डाली थी, उसका वह सामना करने लगा। पर इस तरह कितने दिन बीतते।

महिषादल से तार आया कि नौकरी पर चले आओ। सूर्यकुमार महिषादल पहुचा। महिषादल में स्वामी प्रेमानन्द जी का आगमन हुआ। ये रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। इनका प्रवचन सुनकर सूर्यकुमार के मन में विरक्ति जागी। उसने मन को दृढ़ करके साहित्य-साधना शुरू कर दी। सर्वप्रथम जन्मभूमि पर गीत लिखा जो जून 1920 की 'प्रभा' में (गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा कानपुर से प्रकाशित पत्रिका) छप गया। अब वह अपने बंगाली मित्रों से साहित्य-चर्चा करता।

'सरस्वती', 'मर्यादा' आदि हिन्दी पत्रिकाएँ मंगाकर पढ़ता। उसी वर्ष 'बंगला भाषा का उच्चारण' निबन्ध लिखा जो अक्टूबर की 'सरस्वती' में छप गया।

सूर्यकुमार गृहस्थी से पल्ला झाड़कर अब साहित्य जगत में सूर्यकान्त के नाम से प्रवेश कर रहा था। उसने 11 जनवरी 1929 को पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी को 'बाबा' सम्बोधन प्रयुक्त करते हुए एक पत्र लिखा जिसमें अपना परिचय इस प्रकार दिया—

मैं कान्यकुब्ज ब्राह्मण हूँ। आपका पड़ोसी हूँ। उन्नाव जिले के पूर्वा के पास का रहने वाला हूँ। उम्र बाईस, शरीर पांच फुट साढ़े ग्यारह इंच लम्बा, छाती उन्तालीस इंच चौड़ी। हृष्ट पुष्टांग न तु स्थूल काय। अक्षर हूँ, न साक्षर और न निरक्षर। सगा

यानी माता, पिता, भाई, बहन, चाचा, चाची, स्त्री संसार में कोई नहीं। जीवन का लक्ष्य मेरे बाल्यकाल से है परम पदलाभ।

मेरे सिर पर पितृमातृहीन छः नाबालक भतीजे आदि का पालन भार अर्पित हैं। इसलिए अभी मैंने नौकरी करना स्वीकार किया है।.......मैं एक साधारण वित्त मनुष्य हूँ। विद्वन्मण्डली के सामने मेरा परिचय मूर्खों में है।

"मेरे पिता-पितृव्य इस स्टेट में फौजी अफसर थे। गण्यमान्य थे। मेरा जन्म यहीं हुआ। शिक्षा यहीं मिली। हिन्दी मैंने किसी व्यक्ति विशेष से नहीं सीखी..... . महाराज महिषादल मुझपर कृपा करते हैं। महाराज दो भाई हैं। बड़े राजा सतीप्रसाद गर्ग और छोटे राजा गोपाल प्रसाद गर्ग। इनके पूर्व पुरूष बांदा के रहने वाले थे। ... हिन्दी सिखाइये।"

1923 में कलकत्ते से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र 'मतवाला' से जुड़े तो 'मतवाला' के तुक पर 'निराला' उपनाम रखा। फलतः सूर्यकान्त अब सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' नाम से ख्यात हुए। वे ही 'निराला' कहलाये।

"जुही की कली" निराला जी की पहली कविता है जो 1916 में लिखी गई। तब वे 'निराला' नहीं बने थे। इसे उन्होंने 1919 में पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी के पास 'सरस्वती' में प्रकाशनार्थ भेजा था लेकिन वह लौटा दी गई थी। वैसे चौदह-पंद्रह वर्ष की अवस्था से वे बजभाषा काव्य रचना करने लगे थे। खड़ी बोली तो उन्होंने बाद में सीखी थी। 'जुही की कली' मुक्त छंद में लिखी जाने से चर्चा का विषय बनी। निराला 'मतवाला मण्डल' में रहते हुए कविता लिखते रहे और धीरे-धीरे उनकी धाक जमने लगी। पर जब 'मतवाला' के मालिक महादेव प्रसाद सेठ निराला के बजाय उग्र पर विशेष अनुग्रह दिखाने लगे तो निराला ने कलकत्ता से कूच करने की ठानी। उनके प्रशंसक नवजादिक लाल ने 'अनामिका' नाम से निराला की प्रारम्भिक रचनाएं प्रकाशित कर दी थीं। 1926 में निराला बीमार पड़े तो काशी चले आये जहां जयशंकर प्रसाद, विनोद शंकर व्यास आदि ने सेवा-सुश्रूषा की। कुछ काल बाद वे गढ़ाकोला चले गये और फिर वहां से कलकत्ता।

1929 में निराला जी कलकत्ते से लखनऊ चल आये जहां दुलारे लाल भार्गव ने 'सुधा' में काम दे दिया। तभी 'परिमल' नामक युगान्तरकारी काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। वे देशभर के कवि सम्मेलनों तथा साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों में पहुंचकर अपनी रचनाएं सुनाते और जनता को मुग्ध करते रहे। देवी सरस्वती उनके कण्ठ पर विराज रही थीं। उनका कविता बांचने का ढंग इतना निराला होता कि आलोचकों की जुबानें बन्द होने लगीं।

लखनऊ में निराला ने निबन्ध लिखने शुरू किये और आलोचना की नई शैली अपनाई। वे उपन्यास और कहानियां भी लिख रहे थे। फलत: गद्य तथा पद्य

में समानरूप से चर्चित होने लगे। 1935 में उनकी पुत्री सरोज की दु:खद मृत्यु हुई जिससे निराला विचलित हो उठे। अब वे अपनी कृतियों के प्रकाशनार्थ इलाहाबाद की ओर अभिमुख हुए। 1938 में लखनऊ में रहते हुए अपने पुत्र का विवाह सम्पन्न किया। इसके बाद लखनऊ से भी मन उचटने लगा। वे कुछ काल तक उन्नाव में भी रहे। 1942 में बाँदा जिले के अपने मित्र रामलाल गर्ग के गाँव गये वहा बुरी तरह बीमार पड़ गये। बीमारी की हालत में उन्हें इलाहाबाद लाया गया और वे दारागंज मुहल्ले में रहने लगे। आर्थिक स्थिति ठीक न होने तथा द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़े होने के कारण यहां उन्हें अत्यधिक कष्ट सहना पड़ा किन्तु साहित्य साधना में जुटे रहे। फलस्वरूप 'बेला' और 'नये पत्ते' जैसी रचनाओं को जन्म दिया।

किन्तु निराला यहां से ऊब रहे थे। 1946 से 1949 तक वे कभी उन्नाव, कभी डलमऊ और कभी बनारस आते जाते रहे। 1949 में निराला के प्रशंसकों ने बनारस में उनकी स्वर्ण जयन्ती का आयोजन किया। 1948 में गंगाधर मिश्र ने राष्ट्रभाषा विद्यालय गायघाट बनारस में उनके ठहरने की व्यवस्था की जहां वे कई मास रहे और तुलसीकृत रामचरितमानस के प्रथम काण्ड की खड़ीबोली में उल्था किया। इसी बीच इलाहाबाद में सुश्री महादेवी वर्मा ने 'साहित्यकार संसद' की स्थापना करके निराला जी की चुनी हुई कविताओं का संग्रह 'अपरा' छापा और निराला जी को प्रेरित किया कि वे साहित्यकार संसद में आकर रहें। निराला जी कुछ दिन वहां रुके और वहीं पर उन्होंने विधिवत संन्यास ले लिया। फिर वे वहां नहीं रुके।

वे सीधे दारागंज में अपने पूर्व परिचित ठाकुर कमलाशंकर सिंह के यहां कला मन्दिर में आये और संन्यस्त जीवन बिताने लगे। यहां वे पूरे 12 वर्षों तक रहे और प्रथम तीन-चार वर्षों में 'अर्चना', 'अराधना' तथा 'गीतगुंज' के गीतों की रचना की।

उनके अन्तिम कतिपय वर्ष अत्यधिक कष्ट में बीते। वे रह रहकर बाहुपीड़ा, अस्थिसंधिरोग, शोथ, हर्निया, पेचिश से पीड़ित होते रहे और 15 अक्टूबर 1961 को इस संसार से चल बसे। उनकी मृत्यु से हिन्दी जगत में जो शून्यता आई उसकी भरपाई चाहे जब हो किन्तु उनके त्याग, उनकी तपस्या, उनके कष्टमय जीवन की गाथा अनन्तकाल तक जन-जन के कण्ठ से सुनाई पड़ती रहेगी।

जिन-जिन लोगों को उनका सान्निध्य एवं अनुग्रह प्राप्त हुआ वे धन्य हो गये। जिन्होंने उनके विषय में लेखनी चलाई उनकी लेखनी भी कृतार्थ हो गई। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर न जाने कितने पोथे रंगे जाते रहेंगे।

2

घटनाचक्र

इस अध्याय में दो खण्ड हैं। पहले खण्ड में 1950 के पूर्व का घटनाचक्र दर्शाया गया है और दूसरे खण्ड में 1950 के बाद का घटनाचक्र मिलेगा।

1950 के पूर्व हमारे निराला ने महिषादल, कलकत्ता, काशी, लखनऊ, डलमऊ तथा दारागंज में जैसा जीवन बिताया उसकी झांकी प्रथम खण्ड में मिलेगी। चूंकि मैं इस काल के निराला के जीवन से प्रत्यक्षत सम्बद्ध नहीं रहा हूँ अतः कतिपय प्राप्त प्रामाणिक विवरणों को आधार बनाकर घटनाचक्र के इस विपुलांश को पूरा करने का प्रयास किया गया है। महिषादल में निराला का जन्म, उनकी जन्मभूमि, मनोहरा देवी, निराला का हिन्दी ज्ञान—ये घटनाएँ महिषादल से सम्बद्ध हैं। कलकत्ता में निराला, काशी में निराला, लखनऊ में निराला, डलमऊ में निराला और दारागंज में निराला जैसे प्रकरणों के अन्तर्गत निराला के जीवन की 1950 तक की महत्वपूर्ण बातें संकलित की गई हैं।

इस अध्याय के दूसरे खण्ड में "पुनः दारागंज में" शीर्षक के अन्तर्गत निराला जी के जीवन के अन्तिम 12 वर्षों के कुछ चुने हुए संस्मरण दिये गये हैं जो मेरे द्वारा निराला के सम्पर्क में रहकर लिखे गये हैं। ये संस्मरण वर्षानुक्रम से हैं। चूंकि समस्त घटनाओं को इस पुस्तक में स्थान दे पाना सम्भव नहीं था इसलिए पाठकों के मनोरंजनार्थ एक विस्तृत घटना-चक्र-डायरी के रूप में संलग्न किया जा रहा है।

इसके दूसरे खण्ड में राहुल जी, ए.पी. बारान्निकोव, पृथ्वीराज कपूर जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों के निराला से मिलन का विवरण जानबूझ कर सम्मिलित नहीं किया गया (इनका विस्तृत विवरण मेरी अन्य पुस्तक 'महामानव निराला' में प्रदर्शित हो चुका है)। इसी तरह तमाम समारोहों में से केवल कलकत्ता अभिनन्दन समारोह का विवरण दिया गया है। उसका प्रत्यक्षदर्शी होते हुए भी मैंने 'पाटल' में (नवम्बर 1953) प्रकाशित इलाचन्द्र जोशी द्वारा लिखित आँखों देखा वर्णन का संक्षिप्त विवरण ही प्रस्तुत किया है। हां मैंने निराला जी की बीमारी का विस्तृत विवरण दिया है।

50 के बाद की संस्मरणावली में पाठकगण पायेंगे कि निराला जी कुछ बातें खा घुमा-फिरा कर बार-बार करते रहे। यथा—

बुढ़ापे का उल्लेख—मैं वृद्ध हो गया हूँ, मृत्यु निकट है।

साहित्य-सृजन के प्रति जागरूकता—बीमार रहते हुए भी गीत लिखना, समारोहों में जाना, कहानी-उपन्यास लिखने का मन बनाना और फिर यह कहकर टाल जाना कि अब मन नहीं करता। हम पूर्णतः संन्यस्त हैं।

आत्म-कथन—वे अपने जीवन के विगत प्रसंगों का वर्णन करते और उससे जुड़ी बातें भी बताते।

सरकार पर आक्रोश—वे प्रायः सरकार का नाम ले-लेकर रूष्ट होते सरकारी सहायता के प्रति अपनी वितृष्णा व्यक्त करते।

उपवास पर विश्वास—बीमार होने पर कई दिनों तक निराहार रहते—शाक या दूध का सेवन करते, अंग्रेजी दवाएं लेने से मुकरते रहते।

सरस्वती पूजन तथा देवी व्रत—बीमार रहते हुए भी सरस्वती पूजन और महाअष्टमी व्रत रखते।

दावतें—रचनाओं का पारिश्रमिक प्राप्त होने पर छोटी-मोटी दावत देते, ईष्ट-मित्रों को आमंत्रित करते। उनका आमिष प्रेम देखते बनता।

अध्यापन का शौक—यद्यपि आचार्यत्व से इनकार करते किन्तु विद्यादान देने में उत्साह दिखलाते। अंग्रेजी का अध्यापन विशेष रूप से करते और स्वयं भी पढ़ते रहते।

वर्तमान उच्च शिक्षा पर असन्तोष—विश्वविद्यालय के छात्र जब उनके पास पहुंचते तो वे उन्हें अंग्रेजी पुष्ट करने को कहते और उनमें बेरोजगारी से व्याप्त असंतोष के लिए सरकार को दोषी करार देते।

कुछ विशिष्ट रूचियां—वे खैनी, पान, शराब, आम आदि के विशेष शौकीन थे।

इलाहाबाद के प्रति अटूट प्रेम—वे किसी भी स्थिति में इलाहाबाद छोड़कर अन्यत्र जाने को तैयार न होते।

हाबाद के सारे लोग तथा साहित्यकार ही नहीं अपितु निराला के पूर्व अन्य स्थानों के व्यक्तियों और साहित्यिकों ने निराला के अन्तिम काल में कर भेंट की और अपना-अपना स्नेह प्रदर्शित किया। वे रूग्ण शरीर में न से इस संसार से विदा हुए।

घटनाचक्र (1)
(1896-1950)

महिषादल में निराला

कलकत्ता में निराला

काशी में निराला



घटनाचक्र-1

(1896-1950)

माघ शुक्ल 11 संवत 1955 तदनुसार 21 फरवरी 1899 : निराला का जन्म (प्राय बसन्त पंचमी 1896 ई का ही जन्म तिथि मानी जाती है)

1904	विद्याध्ययन प्रारम्भ।
1910	निराला का मनोहरा देवी से विवाह।
1914	निराला को पुत्र (रामकृष्ण) की प्राप्ति।
1916	निराला द्वारा "जुही की कली" का लेखन। "अधिवास" की भी रचना।
1917	निराला को पुत्री (सरोज) की प्राप्ति। पिता की मृत्यु।
1918	पत्नी मनोहरा की मृत्यु, अन्य पारिवारिक जनों की भी मृत्यु।
1 जून, 1920	"प्रभा" में पहली कविता "जन्मभूमि" छपी नोकरी से त्यागपत्र।
अक्टूबर 1920	"सरस्वती" में पहला निबन्ध (बंगला भाषा का उच्चारण) छपा।
1921	"समन्वय" पत्रिका के सम्पादक बने।
1922	शारदानन्द महाराज के दर्शन। 'आदर्श' में 'जुही की कली' प्रकाशित।
1923	1. महादेव प्रसाद सेठ के पत्र "मतवाला" से निराला जुड़े, 'माधुरी' में 'अधिवास' कविता प्रकाशित। 2. कलकत्ता से नवजादिक लाल श्रीवास्तव द्वारा निराला की पहली काव्यकृति "अनामिका" प्रकाशित।
1924	निराला गढ़ाकोला अपनी जमीन का रिकार्ड ठीक कराने गये तो कानपुर में नवीन जी से मिले और महावीर प्रसाद द्विवेदी से भी। दिल्ली में होने वाले हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भाग लेने गये।



महाराणा प्रताप, भक्त प्रहलाद पुस्तकें छपीं।

भक्त ध्रुव, रस अलंकार, भीष्म पुस्तकें छपीं। 'मतवाला' से सम्बन्ध विच्छेद।

अस्वस्थ रहने के कारण कलकत्ते से काशी चले आये। जहां से गढ़ाकोला चले गये। छतरपुर भी गये। वहा बीमार पड़ गये। हिन्दी बंगला शिक्षक, रवीन्द्र कविता कानन पुस्तकें छपीं, हिन्दू विश्वविद्यालय में निराला जी का भाषण (छात्र नन्ददुलारे वाजपेयी के आग्रह पर)

गंगा पुस्तक माला में सम्पादन शुरू, 'परिमल' का प्रकाशन। नन्द दुलारे वाजपेयी के साथ दौलतपुर जाकर महावीर प्रसाद द्विवेदी से भेंट। पुत्री सरोज का शिवशेखर द्विवेदी से विवाह सम्पन्न।

अप्सरा उपन्यास छपा।

अलका उपन्यास छपा।

1. 'प्रबन्ध पद्य' का प्रकाशन, 2. 'लिली' कहानी संग्रह का प्रकाशन, 3. रामविलास शर्मा का 'निराला' से लखनऊ में परिचय।

'सखी', 'चतुरी चमार' कहानी का प्रकाशन। पुत्री सरोज का देहान्त और "सरोज स्मृति" कविता का लेखन, अमृत लाल नागर से परिचय। भौरावां के समारोह में जाना।

बनारसी दास चतुर्वेदी द्वारा निराला का विरोध—"वर्तमान धर्म" पर "साहित्यिक सन्निपात" का प्रकाशन।

जानकी वल्लभ शास्त्री ने पहली बार निराला दर्शन किये।

गीतिका, निरूपमा, प्रभावती का प्रकाशन।

निराला के पुत्र का प्रथम विवाह।

'तुलसीदास' का प्रकाशन (रचनाकाल 1934)

पन्त जी द्वारा "रूपाभ" पत्रिका का प्रकाशन। द्वितीय 'अनामिका' प्रकाशित, शमशेर बहादुर का निराला से मिलना।

हेमवती के बुलावे पर मेरठ कवि सम्मेलन में गये। कुल्लीभाट, महाभारत (संक्षिप्त) का प्रकाशन।

श्रीनारायण चतुर्वेदी जी का लखनऊ में आना, उनके दरबार में निराला का आना-जाना।

'प्रबन्ध प्रतिमा' का प्रकाशन।

1941	अबाहर कवि सम्मेलन में गये। सुकुल की बीवी छपी। अभी भी लखनऊ भूसा मण्डी हाथीखाना में निराला वास।
19 जुलाई 1941	लखनऊ रेडियो कवि सम्मेलन में गये।
1942	रूपाभ में "चमेली" प्रकाशित। कुकुरमुत्ता, बिल्लेसुर बकरिहा, चाबुक प्रकाशित। रामकृष्ण वचनामृत 3 भाग प्रकाशित। निराला भरकोर्रा में बुरी तरह बीमार। श्रीनारायण चतुर्वेदी ने प्रयाग बुलवाकर अपने यहां रखा।
1943	अणिमा का प्रकाशन। बाल्मीकी रामायण पढ़ते रहे। कई दांत हिलने लगे। निराला को देखने रामविलास शर्मा आये। नन्द दुलारे वाजपेयी के यहां रहे। और उन पर कविता लिखी। बनारस में नरोत्तम नागर ने निराला का इंटरव्यू डॉ. रामविलास शर्मा के लिए निराला ने दारागंज में किराये पर मकान लिया।
1945	ईसप फेबुल का अनुवाद कार्य हाथ में लिया। 1969 में सीख भरी कहानियों के नाम से प्रकाशित। चतुरी चमार छपी। फरवरी-मार्च में ग्वालियर गये। शिवमंगल सिंह सुमन के यहाँ रूके। पं. हरिहर निवास द्विवेदी के यहां भी गये। दिल्ली में सुमित्रानन्दन पन्त से भेंट की। आगरा, दिल्ली, मेरठ गये। मई 1945 आरा जैन कॉलेज, बी.एन. कालेज पटना कवि सम्मेलन में गये। सितम्बर 1945 में निराला के दामाद शिवशेखर द्विवेदी 20 दिनों तक रहे। जून 1945 में त्रिलोकी नाथ दीक्षित निराला के साथ रहे। अगस्त-सितम्बर में पदम सिंह शर्मा 'कमलेश' ने निराला से भेंट की।
1946	अपरा, चोटी की पकड़, नये पत्ते (काँटा नाम भी), बेला पुस्तकें प्रकाशित। डलमऊ, उन्नाव की यात्रा। निराला पर "नया साहित्य" का विशेषांक निकला। गिरजा कुमार माथुर ने निराला पर कविता लिखी।
। सित. 1946	निराला के साले का देहान्त, निराला आगरा गये, मानसिक स्थिति ठीक नहीं।
	डॉ. रामविलास शर्मा की "निराला" पुस्तक प्रकाशित हुई। निराला महीने भर डलमऊ में शय्याशायी रहे।
0 मार्च 1947	बनारस में निराला की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई।
अगस्त 1947	डलमऊ गये, फिर लखनऊ भी। नवम्बर में कानपुर में सुधा जी की यहां रूके।

मई 1948	गायघाट बनारस में गंगाधर मिश्र के यहां 6 महीने रुके। जानकी बल्लभ शास्त्री की दूसरी शादी में गये। 'देवी' 'रामायण' (विनयखण्ड), 'भारत में विवेकानन्द' प्रकाशित। 'हंस' के दमन विरोधी अंक में निराला पर उग्र जी का लेख छपा।
4.3.1949 से	
8.4.1949	डलमऊ में अनुष्ठान।
5.10.1949	निराला द्वारा साहित्यकार संसद में संन्यास ग्रहण। 'पन्त और पल्लव' का प्रकाशन।
1950	'काले कारनामे' प्रकाशित।

महिषादल में निराला

सूर्यकुमार की जन्मतिथि

'सरोज स्मृति' में निराला ने लिखा है कि उनकी पुत्री ने उनकी जन्म कुण्डली के खण्ड-खण्ड कर दिये। अतः जन्म कुण्डली के अभाव में जितनी भी उनकी जन्मतिथियां प्रस्तावित हैं वे संशयपूर्ण हैं। जनश्रुति के अनुसार जिस दिन सूर्यकुमार उत्पन्न हुए मंगलवार था। एक अन्य जनश्रुति के अनुसार सूर्यकुमार की माता रूक्मिणी देवी सूर्य की उपासना करती थीं। चूंकि उन्हें रविवार को पुत्र की प्राप्ति हुई इसलिए उसका नाम सूर्यकुमार रखा गया।

शायद सबसे प्रामाणिक जन्मतिथि वह है जिसे निराला जी ने कुण्डली क छिन्न-भिन्न होने के बाद 1926 में "कविता कोमुदी" में प्रकाशनार्थ पं. रामनरश त्रिपाठी के पास भेजी थी। यह तिथि थी माघ शुक्ल 11, संवत् 1955। बाबू श्यामसुन्दर दास ने अपनी पुस्तक में जन्म संवत् 1953 दिया है। डॉ. रामविलास शर्मा ने 'कविता कौमुदी' के लिए भेजी गई जन्मतिथि को प्रामाणिक मानकर गणना कराई है जिसके अनुसार निराला जी की जन्मतिथि 21 फरवरी 1899 निकलती है। किन्तु अतिप्रचलित तथा निराला जी द्वारा भी अनुमोदित तिथि वसन्त पंचमी 1896 ही चली जा रही है इसी आधार पर वर्ष 1896 को निराला जन्मशती वर्ष घोषित किया गया है और अनेक समारोहों का आयोजन किया गया। वर्ष 1999 में निराला शती का कोई आयोजन नहीं हुआ।

डॉ. धर्मवीर भारती ने निराला विषयक जो संस्मरण धर्मयुग मे प्रकाशित किया ह उसमें निराला कहते हैं "पंचमी में श्रेष्ठ वसन्त पंचमी। भेया मरस्वती उसकी अधिष्ठात्री ठहरीं। तभी निराला पैदा हुए। समझे । इसे कापी में नोट कर लो। इतना ही नहीं, निराला जी ने वसन्त पंचमी का गणित भी समझाया, "देखो! पहल तत्व लो, फिर उसमें गुण जोड दो। हो गया! अब ऋषियों को बुलाकर स्थापित कर दो और उसमें से सूर्यकान्त त्रिपाठी को घटा दो। बस हो गई पंचमी।"

(पांच तत्व + तीन गुण = आठ। ऋषि हुए सात। कुल जोड़ पद्रह। इसमें सूर्यकान्त घटाने से बचे चौदह। चौदह (14) में दो अंक हैं 1 तथा 4 जिनका जोड 5 (पांच) है। यही पंचमी हुई)।

सूर्यकुमार की जन्मभूमि

हमारे निराला की जन्मभूमि बंगाल है। उनकी पितृभूमि गढ़ाकोला थी। बालक सूर्यकुमार पिता के साथ प्रायः गढ़ाकोला जाता रहा, पिता से तथा पडोसियों स बसवाड़ी में बातें करता रहा फलतः उसमें बैसवाड़ी ग्रामीण संस्कारों की छाप थी। वम्प राजपरिवार के सम्पर्क में रहते, विद्याध्ययन करते, नोकरी करते तथा बंगला

भाषी मित्रों से मिलते-जुलते उसमें मध्यम शिक्षित समाज के संस्कारों की कमी न थी। वह बंगला बोलता और क्रमशः खड़ीबोली में लिखने का अभ्यास करता रहा।

सूर्यकुमार को अपने पिता का गोर वर्ण तथा लम्बा डील मिला था। उसने कसरत और कुश्ती से शरीर को हृष्ट-पुष्ट बना लिया था।

पितृभूमि के प्रति प्रगाढ स्नेह

निराला जी ने डॉ. रामविलास शर्मा के पत्र के जवाब में लिखा था (18.02.43)—

"मैं गढ़ाकोला कुल मिलाकर आठ-दस बार लम्बे अरसे के बाद आ जा चुका हूँ।

दादाजाद के भाई के व्याह में 4 वर्ष की उम्र में

अपने जनेऊ में 8 वर्ष की उम्र में

अपने ब्याह में 14 वर्ष की उम्र में

अपने गौने में 16 वर्ष की उम्र में

इसके बाद तीन-चार बार और गया। किन्तु इधर 11 वर्षों के अन्दर शायद एक बार दो-तीन दिन के लिए गया था।"

एक बार निराला जयन्ती पर अमृतलाल नागर गढ़ाकोला गये जिसका विवरण 'सारिका' के 16-31 अगस्त 1985 अंक में छापा है। उन्होंने चतुरी चमार के भतीजे भगवान दास (आयु 75 वर्ष) से पूछा—"पंडित जी जब पहली बार बगाल से आये तो उनकी क्या उमर थी ?" भगवान दास—"कनियाँ माँ रहे (यानी गोद में थे).. फिर 13-14 वर्ष की उम्र में आये तो गेंद खेलते, गोली खेलते, कुश्ती लड़ते रहे।"

मगरायर के रेवती शंकर शुक्ल ने नागर जी को निराला की पहलवानी के किस्से सुनाये। एक बार परागी पहलवान से निराला कुश्ती भी लड़े थे। दुलारे काछी भी नामी पहलवान था।

ग्राम के अन्य लोगों ने नागर जी को बतलाया कि राष्ट्रीय आन्दोलन के समय में गाँव के जमींदार के अत्याचारों के विरूद्ध निराला ने बहुत बड़ा आन्दोलन चलाया। मीटिंग में बालकृष्ण शर्मा नवीन आये थे। किन्तु 1938 में निराला दुःखी होकर यहां से गये तो कभी नहीं आये।

1 जनवरी, 1956 को मैं भी कमला शंकर अवस्थी के निमन्त्रण पर बीघापुर से गढ़ाकोला गया। अनेक लोगों ने मुझे बताया कि निराला 1949 में अन्तिम बार गढ़ाकोला आये थे किन्तु यहां पर अपने पुत्र एवं पुत्रवधू से झगड़ा हो जाने पर उन्हें चोटें आईं। उसके बाद से वे फिर यहां नहीं आये।

मने गाँव के भीतर चतुरी चमार का घर भी देखा। किसी ने बिल्लेसुर बकरिहा का भी घर दिखाया। गाँव के बाहर स्कूल, लाइब्रेरी और वहीं निराला जी का एक खेत भी था। आगे चलकर आम का वह बाग मिला जिसे अब रामकृष्ण त्रिपाठी ने बिहारी लाल से छीन कर बेच दिया है। बिहारी लाल तो दिवंगत हो चुके हैं। बिहारी लाल के पुत्र लक्ष्मीनारायण निराला के पैतृक घर में रह रहे हैं। घर की बगल में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा लगवाई गई निराला की मूर्ति है। बीघापुर में निराला के नाम से महाविद्यालय के प्रांगण में संगमरमर की निराला की आदमकद मूर्ति ने तो मुझे भाव विभोर कर दिया।

मनोहरा देवी

मनोहरा देवी निराला जी की पत्नी थी। वे अखण्ड भारतीय गायन में पटु, हिन्दी में निपुण थी। गौने के समय उनकी आयु अधिक से अधिक 13 वर्ष की और मृत्यु के समय 18 वर्ष की रही होगी। निराला के साथ उनका संयोग 5 वर्ष ही रहा होगा। निराला ने लिखा हैं—

"वह अखण्ड भारतीय थी और मैं प्रत्यक्ष राक्षस-रोज मांस खाता था।"

मनोहरा के गृहस्थिन रूप के बारे में चतुरी चमार ने (मनोहरा की मृत्यु के उपरान्त) निराला को बतलाया—

"काकी रोटी भी करतीं, बर्तन भी मलतीं और रोज रामायण भी पढ़ती थीं। बड़ा अच्छा गाती थीं काका, तुम वैसा नहीं गाते। गजलें और न जाने क्या-क्या—टिल्लाना गाती थीं।"

निराला जी ने स्वयं लिखा है—

"श्रीमती जी का गाना अच्छा, हिन्दी अच्छी। मेरी इन दोनों विषयों की तालो तब तक नहीं खुली।"

"उन्होंने भजन गाया—वह भी साहित्यिक गीतों का शिरोमणि—श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारूणं। कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरज सुन्दरम्—की जगह जान पड़ने लगा गले में मृदंग बज रहा है। मेरा दम उखड़ गया है! यह इतनी हैं, बंगाल से पाये संस्कार के प्रकाश में मैं न देख पाया।"

"जब गौना लेने आये तो श्रीमती जी तेरहवाँ पार कर चुकी थीं। ..... दामाद जवान, बिटिया जवान। परदेश जाते हैं तो ले जाने दो।"

निराला ने मनोहरा की **मृत्यु का वर्णन** 'माधुरी' (1930) में काव्य साहित्य निबन्ध में किया है—

"अन्तिम बार मायके में इंफ्लुएंजा के साल उन्हें भी इंफ्लुएंजा हुआ। मैं तब बंगाल में था। मेरे पास तार गया। जब मैं आया महाप्रयाण हो चुका था। कस्बे के डॉक्टर मेरे परिचित मित्र थे। उनसे मिला तो अफसोस करने लगे। कहा फेफड़े

कफ से जकड़ गये थे। प्यास ज्यादा थी, मैंने पानी की जगह अखनी पिलाने के लिए कहा, वैसे ही डॉक्टरी दवा देने के लिए भी पूछा। उन्होंने इन्कार कर दिया। कहा दस बार नहीं मरना है।"

निराला ने 'गीतिका' का समर्पण अपनी पत्नी मनोहरा देवी का करते हुए लिखा है (27 जुलाई 1936)।

"जिसकी हिन्दी के प्रकाश से प्रथम परिचय के समय मैं आँखें नहीं मिला सका...... जिसने अन्त में अदृश्य होकर मुझसे मेरी पूर्ण-परिणीता की तरह मिलकर मेरे जड़ हाथ को अपने चेतन हाथ से उठाकर दिव्या श्रृंगार की पूर्ति की उस सुदक्षिणा स्वर्गीया प्रिया प्रकृति श्रीमती मनोहरा देवी को सादर।"

मनोहरा का ननिहाल

मनोहरा का ननिहाल जिला फतेहपुर के किशुनपुर कस्बे में था। प्रारम्भ में निराला जी वहां भी गये। एक बार निराला जी ने मुझे बताया "हम किशुनपुर के डाकखाने में रह चुके हैं। वहां पर जगन्नाथ मिश्र को अष्टाध्यायी पढ़ाई है।"

वे जगन्नाथ मिश्र और कोई नहीं बल्कि मनोहरा के मामा थे। बाद में निराला के भतीजे बिहारी लाल की शादी भी किशुनपुर में हुई। मेरे मित्र रावत ओउम् प्रकाश सिंह बतलाया करते थे कि निराला जी के पुत्र की दूसरी शादी किशुनपुर के पास डंडासई में हुई है।

निराला जी ने खड़ीबोली सीखी

निराला बचपन से बसवाड़ी बोलते रहे और पाठशाला में मित्रों के साथ बंगला। खड़ीबोली उनके लिए अपरिचित भाषा थी किन्तु संयोगवश उनकी पत्नी मनोहरा खड़ीबोली में दक्ष थीं।

स्वयं निराला ने लिखा है

"तब मैंने खड़ीबोली का नाम नहीं सुना था... श्रीमती जी खड़ीबोली के बीसियों साहित्यिकों के नाम गिनाती गईं........ एक आग दिल में लगी थी—मैंने हिन्दी नहीं पढ़ी। बंगाल में हिन्दी का जानकार नहीं था, जहां मैं था, देहात में। राजा के सिपाही जो हिन्दी जानते थे वह मुझे मालूम थी—ब्रजभाषा। खड़ीबोली के लिए अड़चन पड़ी। तब हिन्दी की दो ही पत्रिकाएं थीं—सरस्वती और मर्यादा। दोनों मगाने लगा...... मैं रात दो-दो, तीन-तीन बजे तक सरस्वती लेकर एक-एक वाक्य संस्कृत, अंग्रेजी और बंगला व्याकरण के अनुसार सिद्ध करने लगा।"

"ऐसी कई अड़चनें पार कीं। द्विवेदी जी को गुरू माना, लेकिन शिक्षा अर्जुन की तरह नहीं। एकलव्य की तरह पाई।"

"मेरी बैसवाड़ी माता-पिता की दी वाग्विभूति, जिससे सभी रसों के स्रोत मेरे जीवन में फूट निकले हैं। साहित्यिकों में प्रसिद्ध है।"

हिन्दी के बाद गाने का प्रबन्ध

मनोहरा की मृत्यु के बाद निराला ने महियादल के राजा के यहां नौकरी कर ली। तब उन्होंने गाना सीखना शुरू किया।

निराला ने लिखा है—

"कचहरी हो जाने पर शाम के दस बजे तक मैं राजा साहब के पास रहता था। उन्हें गाने बजाने का शौक था। अच्छा मृदंग बजाते थे...... उन्होंने मेरे लिए गाना सीखने का प्रबन्ध कर दिया था।"

निराला ने महिषादल में ही हिन्दी पक्की की

अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद महिषादल आकर निराला ने अपनी हिन्दी पक्की की होगी। 1918 से 1920—इन दो तीन वर्षों में निराला दो-दो, तीन-तीन बजे रात तक हिन्दी का गहन अध्ययन करते। निराला ने यहां पर हिन्दी की जो तैयारी की वह उनके कलकत्ता प्रवास की सम्बल बनी।

इसी साधना को लक्ष्य करके डॉ. रामविलास शर्मा ने (निराला की साहित्य साधना भाग 1 पृष्ठ 547) ठीक ही लिखा है—"निराला ने 1922 से 46 तक लगभग 25 वर्ष अनवरत परिश्रम किया। इतने वर्षों में कुल मिलाकर उन्होंने जितना लिखा उतना बहुत ही कम साहित्यकारों ने लिखा होगा।"

ठीक से विचार करने पर स्पष्ट हो जावेगा कि निराला के महिषादल में ही जुही की कली, जन्मभूमि जगन्महरानी तथा अधिवास कविताएं पूरी कीं।

निराला का कुश्ती प्रेम

गोवर्धन दास मेहरोत्रा (नागरी पत्रिका, 15 मार्च 2000-14 मई 2000) ने निराला जी के कुश्ती प्रेम पर प्रकाश डालते हुए लिखा है—

"वे महिषादल के अलावा कलकत्ता के टडडल बगान खिद्धिपुर और घुसुड़ी (हावड़ा) में आयोजित कुश्ती दंगलों में देश के नामी पहलवानों को देख चुके थे।"

वे नित्य रियाज में 2000 बैठक, 1500 डंड, 3 मील दौड़, 200 हाथ डम्बल फेरने के बाद स्टेट अखाड़े में पुलिस के जवानों से जमकर कुश्ती लड़ते थे। वे दस्ती, लोकान, उतार, पट्ट, ढाक, कालाजंग और धिस्सा दांवों में पटु थे।

उनकी ऊंचाई छः फुट और छाती 56 इंच चौड़ी थी।

उनका यह कुश्ती प्रेम कलकत्ता, लखनऊ तथा बनारस तक बना रहा। वे गामा और गुलाम पहलवान को कुश्ती के महान कलाकार के रूप में मानते थे।



कलकत्ता में निराला

निराला 1929 में 'समन्वय' का सम्पादन करने के सिलसिले में कलकत्ता आये। वहीं पर 1923 में 'मतवाला' साप्ताहिक पत्र से जुड़े और महादेव प्रसाद सेठ का प्रश्रय मिला। यहां उनका जीवन अस्त व्यस्त था। उन्होंने अपन मित्र बनाये। 'निराला' उपनाम से काव्य रचना शुरू की। 'समन्वय' काल में रामकृष्ण मिशन के साधुओं से सम्पर्क हुआ तो उनमें दार्शनिक विचारों की प्रधानता आई। 1929 तक निराला ने कलकत्ता छोड़ दिया किन्तु एक बार पुनः 'रंगीला' के सम्पादनार्थ कलकत्ता पहुँचे। पर अब लखनऊ में उनका मन रम चुका था।

अन्तिम बार 1953 में कलकत्ता वासियों के आग्रह पर अपने अभिनन्दन समारोह में भाग लेने गये तो परम प्रफुल्लित हुए। निराला की तरूणाई के पूरे दस वर्ष कलकत्ते में बीते किन्तु एक तरह से जन्म से लेकर 1929 तक यानी 32-33 वर्ष की आयु तक वे बंगालवासी ही बने रहे। महिषादल बंगाल के ही अन्तर्गत है। निराला ने अपने एक पत्र में डॉ. रामविलास शर्मा को लिखा था—**जब तक मेरी आँख खुली है मैं कलकत्ता को भूल नहीं सकता।**

मतवाला आफिस में निराला

विनोद शंकर व्यास ने (दिन रात-पुस्तक मन्दिर काशी 1950, पृष्ठ 94-109) निराला के कलकत्ता प्रवास के दौरान मतवाला आफिस में उनके रहन-सहन का प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत किया है—

"मैं उग्र के कमरे में ठहरा था। सामने दूसरे कमरे में निराला जी रहते थे। मैं उग्र के साथ उनके कमरे में उनसे मिलने गया। देखा एक फटी दरी पर वह लेटे हैं। उन्होंने तकिये की गिलाफ में कागज की कतरन भरकर उसे तकिया बनाकर अपने सिरहाने रखा था। सामने एक कांच का टूटा गिलास सुर्ती थूकने के लिए पीकदान का काम कर रहा था।"

"वह उठकर बैठ गये। वह खेनी (सुर्ती-चूना) बनाने लगे।...... बातें तो गम्भीर और पाण्डित्यपूर्ण हुई लेकिन देखने से विक्षिप्त प्रतीत हुए। उनके लम्बे शरीर पर लम्बे केश और गूढ़ दृष्टि कवि का स्वरूप प्रकट कर रही थीं।........उग्र से उनकी पटती नहीं थी।

गालिब के साहित्य से परिचय

डॉ रामविलास शर्मा ने (निराला की साहित्य साधना भाग 1 पृष्ठ 545, लिखा है)।

"मतवाला में महादेव प्रसाद सेठ की कृपा से निराला का परिचय गालिब से हुआ और अन्त तक वे गालिब के प्रेमी बने रहे। तुलसी के बाद—रवीन्द्र से भी अधिक जो कवि उनके मन के सबसे नजदीक था वह गालिब था।"

कलकत्ता में निराला के स्वजन

निराला जी कलकत्ते में दस वर्ष रहे। श्री राम प्रीत उपाध्याय ने (निराला-जीवन और साहित्य 1964) एक अभिन्न संस्मरण में लिखा है—

"कलकत्ते में उन दिनों निराला के गांव के बहुत से लोग रहते थे जिनमें श्री रामचन्द्र अवस्थी उर्फ मन्ना बाबू मुख्य थे। उन दिनों मन्ना बाबू की बड़ा बाजार में तूती बोलती थी। उनकी कपड़े की दुकान थी और वे 30, अपर चितपुर में रहते थे। निराला जी उनके यहां आते-जाते थे। दोनों ही साथ घूमा करते। दोनों पान, भाँग और संगीत के शौकीन थे। जब निराला को समन्वय कार्यालय से फुरसत मिलती, वे मन्ना बाबू के पास आ धमकते और दोनों मित्र मन बहलाने हुगली तट की ओर घूमने चले जाते। यह उनका दैनिक कार्यक्रम था।.. ....वे गाना सुनने और कुश्ती लड़ने-देखने के बडे शौकीन थे।....... उन्होंने मेरे साथ भागलपुर की यात्रा की और कई दिनों तक मेरे साथ रहे।"

यहां यह बताना प्रासंगिक होगा कि कलकत्ता में अन्य स्वजनों में पं. दयाशंकर वाजपेयी, पं. परमानन्द शर्मा, पं. शिवशेखर द्विवेदी, रामशंकर, विजय, दुर्गादत्त त्रिपाठी अन्य स्वजन थे जिनसे निराला की पटती रही। दयाशंकर जी बडा बाजार लाइब्रेरी में कार्यरत थे और निराला जी, कलकत्ते से चले आने के बाद भी, उनके रूग्ण होने पर चिन्तित रहे। परमानन्द जी कलकत्ते में अध्यापन कार्य करते थे। निराला अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए इन्होंने सर्वाधिक संस्मरण लिखे हैं। 1929 में निराला जी इनके यहां कई मास तक रूके थे। परमानन्द शर्मा ने लिखा है कि निराला पारिवारिक स्थिति से परेशान थे। एक दिन चुपके से निकल कर गये, सिर मुंडा कर, गेरूव वस्त्र धारण कर आये—कहा मैंने सन्यास ले लिया। मित्रों के समझाने-बुझाने पर निराला ने संन्यास त्यागा।

कलकत्ता का वर्णन निराला के मुख से

निराला ने कलकत्ता के अपने मान्य जनों, मित्रों तथा अंतरंगियों का वर्णन करते हुए लिखा हैं—

"कलकत्ता में बाबू महादेव प्रसाद सेठ, मुंशी नवजादिक लाल, पं. लक्ष्मीनारायण गर्दे, पं. अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, बाबू मूलचन्द अग्रवाल, पं. जगन्नाथ चतुर्वेदी, प. संकलनारायण शर्मा आदि मेरे मान्य जन थे। मित्रो में बाबू शिवपूजन सहाय उग्र, पं. रामशंकर त्रिपाठी आदि-आदि थे। अन्तरंगों में शिवशेखर द्विवेदी, पं. दयाशंकर वाजपेयी, स्व. विजय और दुर्गादत्त त्रिपाठी आदि थे।"

अन्तरगों म से शिवशेखर द्विवेदी निराला जी के जामाता बने। एक बार वे प्रयाग आये तो उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने निराला जी से छन्द अलंकार पढ़ा था और निराला जी के साथ कलकत्ते में संगीत सुनने किसी वेश्या के यहां भी एक बार गये।

बाबू शिवपूजन सहाय निराला का अत्यधिक ध्यान रखते थे। उम्र में निराला से बड़े थे अतः बड़े भाई के रूप में उनका सम्मान करते और उनकी पत्नी को भाभी जी कहते। शिवपूजन सहाय जी निराला की बीमारी सुनकर उनसे मिलने इलाहाबाद आये। उनके पास निराला के लिखे तमाम पत्र थे जिन्हें अवलोकनार्थ उन्होंने मुझे भी दिये थे।

कलकत्ते में पुनः निराला

19-20 सितम्बर 1953 को निराला अन्तिम बार कलकत्ते पधारे। प्रसिद्ध पत्रकार बरूआ ने निराला अभिनन्दन का आयोजन किया था। वे कई बार इलाहाबाद आकर महादेवी वर्मा, इलाचन्द्र जोशी और वाचस्पति पाठक से और निराला जी से भी मिले थे।

जब निराला जी ने कलकत्ता जाने की स्वीकृति दे दी तो वे एक टोली के साथ रेल द्वारा कलकत्ता के लिए रवाना हुए। इस टोली में मैं भी था। निराला के भतीजे केशव, निराला के पुत्र रामकृष्ण को भी बुला लिया गया था। प्रयाग के अन्य व्यक्तियों में ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल, जयगोपाल मिश्र, मदनगोपाल मिश्र तथा कैलाश कल्पित भी थे। महादेवी वर्मा, इलाचन्द्र जोशी, गंगा प्रसाद पाण्डे वाचस्पति पाठक, जितेन्द्र सिंह तो थे ही।

इस अभिनन्दन समारोह के लिए इलाहाबाद से कलकत्ता पहुंचने और वहां अभिनन्दन आदि पूरे कार्यक्रम का वर्णन इलाचन्द जोशी ने नवम्बर 1953 की "पाटल" पत्रिका में प्रकाशित किया था जिसके आवश्यक अंश यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

"जब निराला जी नियत समय पर इलाहाबाद स्टेशन पर शुभ्र खादी का अंचला पहने और वैसा ही चादर ऊपर डाले पहुंचे तब उनके व्यक्तित्व का विराट और गहन रूप, जो उनकी मानसिक खिन्नता के कारण कुछ समय से बिखरा हुआ सा लगने लगा था, फिर जैसे किसी एक नये सूत्र से बंधकर पूर्ण रूप से उभरा हुआ दिखाई दिया। जो लोग उनकी विदाई के अवसर पर स्टेशन आये थे उन सबसे वह अत्यन्त स्नेहपूर्वक मिले।.. ...."

"दूसरे दिन जब वह सब लोगों के साथ कलकत्ता पहुंचे तब उनका मनः वातावरण आश्चर्यजनक रूप से स्निग्ध और शान्त दिखाई दिया।...... मेरे मित्र श्री गंगा प्रसाद पाण्डेय आरम्भ से ही मुझे यह विश्वास दिलाते रहे कि कलकत्ता में निराला जी का शुभ्रतम रूप ही सामने आवेगा।"

"शाम को निराला जी कार की सुविधा रहते हुए भी दो एक व्यक्तियों के साथ पैदल ही टहलने के लिए निकल पड़े। बाद में पता चला कि वह अपने साथियों को बहुत दूर तक घुमा लाये। जहां हम लोगों को टहराया गया था वह स्थान बड़ा बाजार क्षेत्र से बहुत दूर पड़ता था पर निराला जी दूरी की तनिक भी परवाह न करके बड़ा बाजार की ओर उन लोगों को ले गये और उन्हें एक-एक करके वे सब स्थान उन्होंने दिखलाये जो उनकी पुरानी स्मृति मे जड़ित थे.. ......हम लोग कहीं अलग निकल गये थे। जब प्रायः आठ बजे हम लोग लौट कर डेरे पर आये तब बाहर ही से हारमोनियम के सप्तमों के साथ बंधी हुई निराला जी की चिरपरिचित गीत-रसमयी स्वर लहरी सुनाई दी।"

19 सितम्बर की संध्या को बड़ा बाजार के नये जैन भवन में निराला जी के स्वागत और अभिनन्दन की तैयारियां की गईं थीं। उस हाल में अधिक से अधिक हजार-डेढ़ हजार आदमियों के बैठने की गुंजाइश थी। प्रबंधकर्ताओं ने शायद सोचा था कि साधारण साहित्यिक सभाओं में जितने लोग आते हैं उससे कुछ ही अधिक लोग वहां आवेंगे। पर यह बात उन लोगों की कल्पना में नहीं आई कि निराला अपने आप में कोई अकेला व्यक्ति, कवि या साहित्यकार नहीं है, वह अपने भीतर संपूर्ण युग का व्यक्तित्व समाहित किये हुए है और युगचेतना के महाप्लावन की सामूहिक विस्फोटात्मक शक्ति अपने अन्तर्प्राणों में समेटे हुए हैं। ज्यों ही हम लोग नये जैन-भवन के निकट पहुंचे त्यों ही देखते क्या है कि बाहर अपार जन समूह सारे भवन को घेरे हुए है और हाल के भीतर आने के सारे रास्ते एकदम बन्द हैं। निराला जी हम लोगों से पहले ही किसी प्रकार भीतर प्रवेश कर गये थे। कैसे कर गये थे, मुझे नहीं मालूम। या तो जनसमूह ने ही उन पर विशेष कृपा करके किसी तरह उन्हें भीतर ढकेल दिया था या तब तक भीड़ उतनी नहीं बढ़ी थी। पर महादेवी जी, मैं और हमारे साथी श्री गंगा प्रसाद पाण्डेय और लीडर के सहकारी संपादक श्री जितेन्द्र सिंह जी बाहर ही रह गये। महादेवी जी जब भीतर की ओर बढ़ने लगी तब भीड़ में से कुछ सज्जन बोल उठे "जब तक हम लोगों के भीतर प्रवेश कर सकने का प्रबन्ध नहीं होता तब तक आपको भी भीतर नहीं जाना चाहिए और आप चाहें भी तो नहीं जा सकतीं क्योंकि रास्ता तिल भर भी खाली नहीं है।.... हमें बताया गया कि भीतर छह हजार से भी अधिक आदमी घुस चुके हैं और प्रायः उतने ही आदमियों की भीड़ बाहर खड़ी थी।.... प्रायः पन्द्रह मिनट बाद हम लोगों को सूचित किया गया कि रास्ता कुछ खाली हुआ है और हम लोग भीतर चलें। किसी तरह हम लोग सीढ़ियों से होकर ऊपर चढ़े पर भीतर जनसमूह के सिरों पर पांव रखे बिना मंच तक पहुंचना संभव न दिखाई दिया।....मंच पर भी तिल रखने की जगह नहीं थी। गर्मी का यह हाल था कि किस पंखे का रूख किस ओर है इस बात का कुछ पता नहीं चलता था। शान्ति निकेतन के मूर्तिमान संत आचार्य

क्षितिमोहन सेन निराला जी के साथ बैठे हुए थे। मुझे सबसे अधिक चिन्ता निराला की हो रही थीं।. वह अत्यन्त शान्त और प्रसन्न दिखाई दिये।. इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद सभा की कार्यवाही महादेवी जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। महादेवी जी ने प्रारंभ में जनता को शान्त करने के उद्देश्य से एक भाषण ही दे डाला जिसका काफी प्रभाव पड़ा।"

"उसके बाद आचार्य क्षितिमोहन सेन ने अपने भाषण में कहा जब मैं सन्त साहित्य का अध्ययन कर रहा था तब बीच में निराला साहित्य का अध्ययन करने का भी सौभाग्य मुझे प्राप्त हो गया। मुझे लगा कि वह (निराला) साहित्य भी गुरूदेव के साहित्य की तरह ही संत भावधारा से ओतप्रोत है। निराला के साहित्य में मैंने जो सबसे बड़ी विशेषता पाई वह है उनका विद्रोही स्वर। यह विद्रोही स्वर उन निर्भीक सन्तों की ही वाणी है जो किसी भी समाज के रूढ़िगत भावों और विचारों की तनिक भी परवाह किये बिना समस्त अवरोधों को तोड़-फोडकर, जीवन के व्यापक विकास के नये-नये पथों और नई-नई दिशाओं का आविष्कार करते हैं।"

"आचर्य ने महासंत कृष्ण के विद्रोह के दृष्टान्त भागवत, महाभारत और गीता से देते हुए बताया कि वह किस प्रकार इन्द्रपूजा तथा वेदकालीन दूसरी रूढ़ियों के विरूद्ध लड़े थे। अंत में उन्होंने कहा "मैं कबीर, गुरूदेव और निराला को एक ही परम्परा की देन मानता हूँ।" प्रसाद के बाद निराला, पन्त और महादेवी इस विद्रोही परम्परा की ज्वालामुखी प्रकाशधारा को अक्षुण्ण रखे हुए हैं। निराला केवल कलकत्ता और बंगाल के लिए ही नहीं बल्कि सारे देश के लिए पूज्य हैं।"

उसके बाद फिर जगह की कमी के कारण पारस्परिक धक्कम धक्के और ठेलम-ठेल के फलस्वरूप कोलाहल मचने लगा। यह देखकर निराला जी स्वयं उठे। उन्होंने लोगों से शान्त हो जाने की प्रार्थना करते हुए यह आश्वासन दिया कि श्रोताओं के मनोरंजन का कार्यक्रम शीघ्र ही आरम्भ कर दिया जायेगा और आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री को एक कविता सुनाने को कहा। जानकी बल्लभ जी ने निराला जी की 'यमुना' शीर्षक कविता के कुछ पद सुनाये। उसके बाद निराला जी ने अपनी "शिवाजी का पत्र" शीर्षक सुप्रसिद्ध ओजस्वी कविता सुनाई। सारा कोलाहल थम गया और जनता स्तब्ध और मन्त्र मुग्ध होकर सुनती रही। गर्मी बहुत बढ गई थी और ठेलम-ठेल का चक्कर निरन्तर जारी था इसलिए निराला जी को अभिनन्दन ग्रन्थ अर्पित कर सभा की कार्यवाही उस दिन के लिए समाप्त करने का निश्चय किया गया। अभिनन्दन ग्रंथ समर्पित करने के बाद जब निराला जी को मालाएं पहनायी गई तब 'महाकवि निराला की जय' के नारे से सारा हॉल हिल उठा। अपने प्रिय कवि को पाकर जनता जिस तरह उल्लसित हो उठी थी उसे देखकर मेरी आँखें भर आयीं।

निराला जी ने अभिनन्दन का उत्तर देते हुए अत्यन्त विनम्र भाव से कहा मेरी अपनी हकीकत कुछ नहीं है, जो आदर आज आप लोग मुझे दे रहे हैं वह दरअसल मेरा नहीं, हिन्दी साहित्य का और हिन्दी प्रेमी जनता का आदर हैं। मैं केवल हिन्दी का एक विनम्र सेवक रहा हूँ। हिन्दी साहित्य से मैंने जो कुछ पाया उसे केवल प्रत्यर्पित कर दिया है।"

"दूसरे दिन कलकत्ता के सुप्रसिद्ध मुहम्मद अली (पुराने हैलीडे) पार्क में सभा आयोजित की गई जहां असहयोग आन्दोलन के भरपूर उत्साह के दिनों में देश के विख्यात राजनीतिक नेताओं के भाषण हुआ करते थे। नियत समय के पहले ही सारा पार्क ठसाठस भर गया था और चारों ओर केवल नरमुंड ही नरमुंड दिखाई देते थे। लगता था जैसे तुंग हिमालय श्रृंग के चरण चूमने के लिए सागर की सहस्त्रों लहरें उमड उठी है। पर पिछले दिन की तरह आज तनिक भी अव्यवस्था नहीं थीं। जब निराला जी मंच पर पहुंचे तब जनता एक स्वर से आन्तरिक उल्लास से चिल्ला उठी, "महाप्राण निराला की जय।" भारतीय साहित्य जगत के इतिहास में यह पहली घटना थी जब किसी साहित्यकार या साहित्यकारों के स्वागत अथवा अभिनन्दन समारोह के अवसर पर जनसाधारण में ऐसा अपार उत्साह उमड़ा हो। रवीन्द्रनाथ की सत्रहवीं वर्षगाँठ के अवसर पर जो बहुपूर्ण आयोजित जयन्ती समारोह मनाया गया था उसमें भी इस तरह स्वतः प्रेरित सामूहिक उत्साह देखने में नहीं आया था।"

कलकत्ता के मेयर श्री नरेशनाथ मुकर्जी की अध्यक्षता में सभा की कार्यवाही आरम्भ हुई.... गंगा प्रसाद पाण्डेय ने माइक पर ओजस्वी भाषण देना आरंभ कर दिया तो जनता मन्त्रमुग्ध होकर सुनती रह गयी। उन्होंने कहा, "निराला नई उमड़ती हुई विश्वचेतना के गायक हैं। वह विश्वमयता और स्वतन्त्रता का संदेश लेकर साहित्य में अवतरित हुए हैं... उनके बाद बेनीपुरी जी खड़े हुए.. श्री जानकी बल्लभ शास्त्री ने बहुत ही मीठे स्वर में निराला जी के दो गीत सुनाये. " मैं भी कुछ बोला—"निराला को न साहित्यिक समर्थन मिला न आर्थिक सुविधा मिली। फिर भी वह अटूट लगन और अडिग विश्वास के साथ निरन्तर अकेले अपने अन्तर की उस आदिम महाशक्ति के बल पर बढ़ते चले गये। जिसके आगे अन्ततः कोई भी कृत्रिम या रूढिगत बन्धन और अवरोध नहीं ठहर सके ..।" महादेवी जी ने कहा, "निराला जी केवल स्वप्न द्रष्टा ही नहीं वह महान चिन्तक भी हैं...वे सच्चे अर्थों में भावयोगी हैं...." निराला जी ने "राम की शक्तिपूजा" का एक अंश सुनाया।

"मेयर के चले जाने पर बंगला साहित्य के विशिष्ट विद्वान और हिन्दी साहित्य के प्रेमी श्री प्रियरंजन सेन ने निराला जी के तैलचित्र का उद्घाटन किया।"

"जिस दिन हैलीडे पार्क में निराला अभिनन्दन के उपलक्ष्य में वह ऐतिहासिक सभा हुई उसी दिन प्रातः दस बजे न्यू इम्पायर थियेटर हाल में महादेवी जी के चुने

हुए गीतों का भाव नाट्य प्रदर्शन अभिनव भारती तथा संगीत श्यामल नामक दो संस्थाओं की ओर से हुआ... इस अवसर पर बंगाल व्यवस्थापिका सभा के अध्यक्ष श्री शैल कुमार मुकर्जी ने हिन्दी में भाषण करते हुए कहा, "निराला जो न केवल हिन्दी के कवि हैं बल्कि विश्व कवि है।"

दूसरे दिन कुछ प्रगतिशील नव दंपतियों के एक क्लब में तरूण और प्रगतिशील साहित्यकार श्री भंवरमल सिंघी और उनकी पत्नी श्रीमती सुशीला सिंघी के आयोजन से बंगाल के प्रसिद्ध साहित्यकारों और बाहर से आये हुए हिन्दी के कवियों और कलाकारों की एक सम्मिलित गोष्ठी हुई। बंगाल के साहित्यकारों में प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री प्रबोधकुमार सान्याल, डॉ. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, श्री मनोज बसु, श्री प्रियरंजन सेन, श्री गिरीश चन्द्र आदि सज्जन उपस्थित थे।..निराला जी ने 'प्रिय यामिनी जागी', 'वनवेला' और 'जुही की कली' सुनाकर श्रोताओं को मुग्ध किया। इसके बाद अरबी-फारसी मिश्रित भाषा में कुछ शब्द धन्यवाद के रूप में बोले।

काशी में निराला

काशी में निराला का आना अपनी बीमारी के सिलसिले में हुआ, चूंकि उनके अभिन्न मित्र शिवपूजन सहाय काशी में थे अत: बिना हिचक के वे उनके यहां चले आये। फिर प्रसाद जी एवं विनोद शंकर व्यास के यहां रूके।

एक बार पुन: 1947 में अपने अभिनन्दन में काशी आये। फिर 1948 में पं. गंगाधर शास्त्री के यहां रहे। इलाहाबाद प्रवास के समय अन्तिम बार फरवरी 1960 में वे पं. गंगाधर शास्त्री के अनुरोध पर दो दिन के लिए काशी गये।

निराला जी बीमार

मार्च 1926 से ही निराला जी कलकत्ते में बीमार चल रहे थे। उनका शरीर कृश हो रहा था। दिसम्बर तक वे काफी रूग्ण हो गये अत: 1929 में काशी चले आये जहां से मई 1929 मे गढ़ाकोला चले गये और सितम्बर मास तक वहीं रहे।

काशी में निराला जी बारी-बारी से शिवपूजन सहाय, प्रसाद जी तथा विनोद शंकर व्यास के साथ रहे। शान्तिप्रिय द्विवेदी तथा वाचस्पति पाठक भी निराला की बीमारी के समय उनके पास आते-जाते रहे और उन्होंने निराला के लिए आयुर्वेदिक दवाओं का प्रबन्ध किया। जब निराला जी गढ़ाकोला चले गये तो ये लोग निराला के स्वास्थ्य के बारे में खोज-खबर लेते रहे।

गाँव जाते ही निराला जी की बीमारी घटने के बजाय बढ़ गई। उन्होंने दयाशंकर वाजपेयी को गढ़ाकोला से कलकत्ता जो पत्र लिखा उसमें आम खा लेने से पुनः तबियत बिगड़ने का उल्लेख किया।

विनोद शंकर व्यास ने 15 जुलाई 1929 को निराला जी को पत्र लिखा, "आप विचित्र पुरूष हैं, परहेज तो करते ही नहीं, मनमानी करते हैं। वहां कोई कहने वाला भी नहीं....।"

कानपुर से निराला के मित्र (जिन्हें कलकत्ता में निराला मास्टर साहब कहते थे) राधामोहन गोकुल जी ने 23 सितम्बर को लिखा, "अब आप सीधे मार्ग पर चलेंगे तो कल्याण ही होगा.... सादा भोजन, मूँग की दाल, रोटी, हल्का शाक खायें और चौथे रोज कैलोमेल 200 ले लिया करें तो रोग कुछ काल में जड़ से चला जावेगा।"

निराला जी अक्टूबर 1929 में पुनः 'मतवाला' में लौट गये किन्तु अस्वस्थ ही रहे। प्रसाद जी ने उन्हें लिखा कि दवा का नियमित सेवन करते रहें।

अप्रैल 1928 में निराला पुनः गढ़ाकोला में थे किन्तु तब तक वे पूर्ण स्वस्थ हो चुके थे। यहीं पर उन्होंने 'पन्त और पल्लव' आलोचना लिखी जो 'माधुरी' में लगातार छपती रही। पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन बहुत बाद में लखनऊ से हुआ।

निराला की बीमारी

विनोद शंकर व्यास ने (दिन रात 1950) लिखा है—'निराला जी बनारस आये। वह शिवपूजन जी के यहां ठहरे। उनके यहां निराला जी के आराम का कोई प्रबन्ध न हो सकता था... वह भयावह कष्ट में थे। शिवपूजन भी दुःखी थे। मैं निराला को प्रसाद के यहां ले गया। 10-12 दिनों तक वह प्रसाद के यहां ही रहे .. मेरे मकान में (जो गंगा तट पर था) आकर वह बड़े सन्तुष्ट और प्रसन्न हुए।.... प्रसाद ने उनकी चिकित्सा की व्यवस्था कर दी थी लेकिन वह ठीक से दवा नहीं खाते थे.... मेरे यहां एक महीने तक वह रहे। उन्हें कोई लाभ न हुआ। अपने घर जाने की उनकी इच्छा थी अतएव दवा लेकर वह घर चले गये।"

साहित्य की चर्चा

विनोद शंकर व्यास लिखते हैं—

"निराला जी जब बनारस आते तो प्रतिदिन कवि सम्मेलन का सा आनन्द आता। हारमोनियम बजाते हुए जब वह काव्य को संगीत की स्वर लहरियों पर लहराते उस समय सब मुग्ध होकर तन्मय हो जाते। उनके पढ़ने का ढंग ही निराला था।

निराला रवीन्द्र के गीत भी गाते थे। उन्हें गाते समय वह स्वयं तन्मय हो उठते।

काशी में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर निराला जी, पाण्डेय जी आदि अनेक मित्र आये थे। निश्चय हुआ कि नाव की सैर होगी। भंग ठंडाई का प्रबन्ध हुआ। अमृतलाल नागर, ज्ञानचन्द्र जैन, रामविलास शर्मा, नरोत्तम नागर, वाचस्पति पाठक आदि उसमें सम्मिलित हुए थे।"

शिवपूजन सहाय जी ने निराला के काशीवास का मनोहारी वर्णन किया है—"निराला जी कुछ दिन काशी में रहे थे। मैं भी उन दिनों वहीं था। प्रसाद जी के साथ खूब बैठक होती थी। मध्य गंगा में (विनोद शंकर व्यास ने 5/2/28 के पत्र में निराला को लिखा—"आजकल आपकी बहुत याद आती है—परसाल गर्मी के दिन—हमारी-आपकी बातचीत—हार्मोनियम—गंगा नहाने जाना—मस्ती—वगैरह-वगैरह—आजकल मैं बड़ा दुखी हूँ।)" ब्रजेन्द्र पर कविता-पाठ भी हुआ था। निराला जी ने हार्मोनियम बजाकर 'श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन' पद गाया था। प्रसाद जी ने परोक्ष में उनकी बड़ी प्रशंसा की थी। साहित्य और संगीत दोनों शास्त्रों में उनकी असाधारण गति देखकर प्रसाद जी बहुत प्रभावित हुए थे।"

नन्ददुलारे वाजपेयी ने परिचय बढ़ाया

बैसवाड़े के ही रहने वाले पं. नन्ददुलारे वाजपेयी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे थे। 12 नवम्बर 1929 को उन्होंने निराला जी को पत्र लिखा—

"पंत के पल्लव की आपकी आलोचना को ध्यानपूर्वक पढ़ रहा हूँ... त्रिपाठी जी! आप वहां क्या काम करते हैं? इधर साहित्य क्षेत्र से अलग हो गये से क्यों जान पड़ते हैं ?...

पंडित जी! मैंने यह पत्र ऐसा लिखा है जैसे मैं आपका चिरपरिचित मित्र होऊं। पर मैं आपको अपना एक सम्मान्य सुहृद ही नहीं कुछ और भी मानता हूँ।'

1928 में वाजपेयी जी निराला को प्रिय पंडित जी, श्रीमान् त्रिपाठी जी, प्रिय निराला जी, सम्मान्य त्रिपाठी जी जैसे सम्बोधनों का प्रयोग करते पत्र लिखते रहे। अपने प्रथम पत्र में उन्होंने निराला को "सम्माननीय कविवर सप्रेम वन्दे" लिखा था।

बाद में (1932) जब वाजपेयी जी 'भारत' के सम्पादक बने तो उन्होंने निराला का प्रबल समर्थन किया, 1947 में निराला का अभिनन्दन काशी में कराया और अन्तिम बार 26 जुलाई 1953 को निराला से इलाहाबाद में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी कि अभिनन्दन समारोह में मिले। निराला पर उनकी आलोचनात्मक कृतियां अतीव प्रामाणिक हैं।

निराला की स्वर्ण जयन्ती

अभी भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ था। निराला पचास के हो रहे थे। पं. नन्ददुलारे वाजपेयी ने बनारस में उनकी स्वर्ण जयन्ती मनाने का वृहद आयोजन किया। उसका विवरण डॉ. शर्मा की पुस्तक (निराला की साहित्य साधना भाग 1) से—

"उन दिनों निराला विवेकानन्दी मूड में थे। सर पर रेशमी साफा बांधकर वह आइने में छवि देखते और विवेकानन्द के चित्र से मिलान करते। कामदार जूते पहन कर जब वह नागरी प्रचारणी सभा को चले तब एक जगह कीचड़ में उनका कामदार जूता फच्च स हुआ। इसका उन्हें बड़ा अफसोस हुआ। आगे रिक्शा मिलने तक वह जूते हाथ में लिये चले।"

"केले के खम्भों और आम के पत्तों के बन्दनवार वाले मंच पर रेशमी कुर्ते और साफे में जंचते हुए निराला सभा में विराजे वेद मंत्रों का पाठ, एक महिला द्वारा तिलक, जानकी वल्लभ शास्त्री द्वारा 'वरदे वीणा वादिनि' का गायन ? आचार्य नरेन्द्र देव ने समारोह का उद्‌घाटन किया। उपस्थिति कम थी.... बड़े-बड़े आदमियों में से एक भी न था। बाबूराव विष्णु पराडकर ने हिन्दी साहित्य की प्रगति और निराला की साहित्य सेवा पर भाषण किया।"

मजेदार घटना यह घटी कि अभिनन्दन ग्रंथ के लिए आये लेख और ग्यारह हजार की निधि भेंट किये जाने की घोषणा हुई ओर निराला ने वह धन साहित्यिक संस्थाओं को दान द दिया किन्तु थैली खोलने पर उसमें से एक भी पैसा न निकला।

निराला शिव की नगरी काशी में गरलपायी बने।

(डॉ. रामविलास शर्मा कृत अपनी धरती अपने लोग भाग 3, 1996 में 10.03.47 का एक पत्र छपा है जिसमें उक्त स्वर्ण जयन्ती का विस्तृत वर्णन हुआ हैं।)

गायघाट काशी में निराला

पं. गंगाधर मिश्र निराला के बहुत बड़े भक्त थे। 1948 में वे निराला को राष्ट्रभाषा विद्यालय, गायघाट में अपने साथ कई महीनों तक रखने में सफल हुए। उस अवधि में श्री नवजादिक लाल के पुत्र श्री प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव (तपन प्रिंटिंग प्रेस, महुआ टोली, पटना-4) ने निराला का दर्शन किया था। उन्होंने 30 जून 1962 को मुझे लिखे गये अपने पत्र में बतलाया है—

"सन् 1948 में मुझे निराला जी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला था। उस समय वे गायघाट काशी में रहते थे।.... वहां दो एक आदमियों के अलावा एक तख्त पर एक भीमकाय लंगोटधारी बैठे थे। मैंने पूछा— निराला जी हैं? लंगोटधारी सज्जन ने ही बतलाया में ही हूँ। आप उस ओर से आइयें।"

"मने दरवाजा खटखटाया तब बकायदा उन्होंने दरवाजा खोलकर मुझे बिठाया। मेर और मरे परिवार के बारे में पूछते रहे। मेरे लिये एक कप चाय मंगाई और स्वयं

खड़े होकर कसरत करने लगे—कभी डंड कभी बैठक। बैठक में वे पूरी तरह नहीं बैठते थे—कभी बंगला और कभी अंग्रजी में न जाने क्या-क्या बोलते जा रहे थे....।"

गोवर्धन दास मेहरोत्रा ने बनारस में निराला जी की दिनचर्या का वर्णन किया है।

"50 वर्ष की आयु में भी निराला रोज 2 घंटे मालिश कराने के बाद नदी में तैरते। कभी-कभी इनसे मालिश कराते। गिजा में 5 सेर दूध, 1/2 सेर बादाम की ठंडई, डेढ़ पाव घी, आधा सेर दही का मट्ठा, बेल का मुरब्बा और कभी-कभी गोश्त खाते थे इनका वजन 240 पौंड था। वे बल का पता लगाने के लिए पंजा मिलाते थे।"

लखनऊ में निराला

निराला ने लखनऊ में ही वेट रोड पर भार्गव मैजेस्टिक होटल का एक कमरा ले रखा था। जब होटल टूटने लगा तो निराला जी 58 नारियल वाली गली में रहने लगे। बाद में वे भूसामंडी में रहे। लखनऊ में कुल मिलाकर निराला 14 वर्ष तक रहे।

निराला के मुख से

यद्यपि रामविलास शर्मा निराला के नाम और साहित्य से परिचित थे किन्तु जुलाई 1934 में उनसे उनका पहला साक्षात्कार हुआ। शर्मा जी लिखते हैं—

"निराला से मेरी भेंट सरस्वती पुस्तक भण्डार में हुई थी। स्वामी विवेकानन्द के अनुवाद देखकर उन्होंने पूछा था—यह अनुवाद किसने किया है? एक दिन जब मै वहां 'परिमल' खरीद रहा था तो निराला जी आ गये, मेरे नाम राशि रामविलास पाण्डेय ने परिचय कराया। कुछ दिन बाद उनसे फिर भेंट हुई और उनके साहित्य की।"

रामविलास शर्मा ने 8 दिसम्बर 1933 के एक पत्र में अपने भाई को निराला के बारे में लिखा था। 1934 में वे निराला से रवीन्द्रनाथ की चयनिका पढ़ रहे थे। 1938 में वे लखनऊ विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक हो गये। 1943 में वे बी आर. कालेज आगरा चले गये किन्तु वे निराला की खोज खबर लेते रहे। वे डलमऊ भी गये। इलाहाबाद आकर निराला से भेंट की. निराला को आगरा भी बुलाया।

निराला-आकर्षण के केन्द्र

लखनऊ के जितने नवयुवक लेखक थे वे निराला के प्रति आकृष्ट होकर उनसे मिलते रहते थे। यथा रामेश्वर शुक्ल अंचल, रामरतन भटनागर हसरत, केदार नाथ अग्रवाल, नरोत्तम नागर, बलभद्र दीक्षित पढ़ीस, कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह इनके अतिरिक्त सुमित्रानन्दन पन्त, उग्र जी, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, इलाचन्द्र जोशी, भगवतशरण उपाध्याय, वासुदेव शरण अग्रवाल, जयशंकर प्रसाद, मदन गोपाल, बालकृष्ण राव, नवजादिक लाल, रूपनारायण पाण्डेय, शमशेर बहादुर सिंह आदि भी, आते-जाते रहे। निराला के सुपुत्र रामकृष्ण त्रिपाठी भी हसरत के साथ लखनऊ में ही रहते थे।

इस तरह निराला आकर्षण के केन्द्र बने हुए थे।

नारियल वाली गली में निराला

डॉ. रामविलास शर्मा ने (निराला की साहित्य साधना भाग 1 पृष्ठ 259) निराला के रहन-सहन का सजीव वर्णन किया है—

"दाढ़ी अकसर बढ़ जाती। हफ्ते दस-दिन में नाई से हजामत बनवाते। घर में वह स्वयं शेव न करते। वेशभूषा में एकदम लापरवाह थे। धोती या तहमत, कुर्ता, पैर में चप्पल या पंपशू, कभी नंगे पैर, रूखे बड़े बाल। यह धज थी। धोती पर दवात लुढ़क गई, स्याही का धब्बा लगी धोती को तहमत की तरह बांधे वह अमीना बाद घूमकर आये। कहीं कवि सम्मेलन होता या किसी संस्था में भाषण करना होता तो हजामत बनवा कर, चन्दन के साबुन से मुँह धोकर, बालों में इत्र डालकर, स्वच्छ कपड़े पहनकर निकलते। उनका परिवर्तित वेश देखकर लगता था—कभी तो यह राजकुमार बन जाते हैं, कभी संन्यासी।"

श्रीनारायण चतुर्वेदी के यहां

पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी शिक्षा प्रसार विभाग के अध्यक्ष होकर (1939-40 में) लखनऊ आये तो गणेश गंज में अपने मकान में रहने लगे। वहां पर लखनऊ के साहित्यकारों का जमघट लगता। निराला जी भी जाते। साथ में डॉ रामविलास शर्मा को भी ले जाते। शिवमंगल सिंह सुमन, गिरिजा कुमार माथुर, सोहन लाल द्विवेदी, जगदम्बा प्रसाद हितैषी—ये सब चतुर्वेदी जी के यहां जमते थे।

एक बार निराला ने अपनी कुकुरमुत्ता कविता सुनाई तो हितैषी जी ने उन पर व्यंग्य कसा। फिर क्या था—निराला ने उन्हीं की ओर इशारा करते हुए पढ़ा—

रोज पड़ता रह पानी
तू हरामी खानदानी।

भूसा मण्डी में निराला की दरियादिली

पं. उदयशंकर भट्ट लिखते हैं—

"मैंने चारों ओर नजर दौड़ाई तो अलमारी में कुछ किताबें, जमीन चूमती हुई बांस की खाट, उस पर मामूली दरी, एक तकिया और चादर। खूंटी पर चुन्नट की हुई धोती और एक कुरता। बस।"

एक अन्य रोचक प्रसंग का उल्लेख भी भट्ट जी ने किया है जिसमें एक चाट वाले से हुई उनकी वार्ता का अंश है—

"बाबू जी! निराला जी का लखनऊ में कौन-सा ऐसा मिठाई या चाट वाला है जिस पर इनका ही कुछ न आता हो। चार पैसे की चीज लेकर रूपया दो रूपया फेंक देना इनके बाएं हाथ का खेल है....है कोई ऐसा दरियादिल लखनऊ में ? यह तो मन के बादशाह हैं।"

निराला यानी मिस फैशन

निराला के लम्बे चौड़े शरीर पर लहराती जुल्फें देखकर लखनऊ वाले उन्हें 'मिस फैशन' कहते और खुश होते। स्वयं निराला ने लिखा है—

"मेरे बालों के बाद मेरे मुंह की तरफ देखकर मुझे 'मिस फैशन' कहते थे.... सिपाही भी मिस फैशन से खुश हो रहे थे....मेरे ग्रीक कट पांच फुट साढ़े ग्यारह इंच लम्बे, जरूरत से ज्यादा चौड़े और चढ़े मोढों के कसरती बदन को देखकर किसी को आतंक नहीं हुआ।"

निराला की निगाह में कलकत्ता और लखनऊ का जीवन

डॉ. रामविलास शर्मा ने निराला की साहित्य साधना भाग 3 में निराला के पत्रों का सम्पादन किया है। उसके पृष्ठ 394 में निराला के पत्र में कलकत्ता और लखनऊ जीवन का तुलनात्मक मूल्यांकन हुआ है—

"बंगाल मेरी जन्मभूमि है इसलिए मुझे बहुत प्रिय है। सिटी लाइफ का जो उपयोग और आनन्द मुझे कलकत्ता में मिला वह लखनऊ में नहीं। लेकिन लखनऊ के चौदह साल में मेरा साहित्य सर्जन कलकत्ता के परिमल से अधिक ही महत्त्व रखता है।

पं. दुलारे लाल भार्गव की कृपा से लखनऊ में मुझे बहुत तरह की सहूलियतें रहीं लेकिन कलकत्ता का मुक्त निष्कपट वातावरण लखनऊ में नहीं मिला। कलकत्ता में बाबू महादेव प्रसाद सेठ, मुंशी नवजादिक लाल, पं. लक्ष्मीनारायण गर्दे, पं. अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, बाबू मूलचन्द्र जी अग्रवाल, पं. जगन्नाथ चतुर्वेदी, पं. सकलनारायण शर्मा आदि मेरे मान्य जन थे। मित्रों में बाबू शिवपूजन सहाय, उग्र, पं. रामशंकर त्रिपाठी आदि-आदि थे। अन्तरंगों में शिवशेखर द्विवेदी, स्व. दयाशंकर वाजपेयी, स्व. विजय और दुर्गादत्त त्रिपाठी एम.ए.बी.एल. आदि थे।

स्वास्थ्य लखनऊ में बहुत अच्छा रहा लखनऊ के . से बसवाड़े का वातावरण मुझे पसन्द है। कविता के लिए कलकत्ते का। यों एकान्त प्रिय मैं कलकत्ता में भी था, लखनऊ में आपने मुझे देखा ही है।

बंगाल में पैदा होने के कारण प्रचुर जलाशयता मुझे पसन्द हैं। लखनऊ में इसकी कमी थी।

मेरी बंगला की नफासत लखनऊ की सीढ़ियों में उतरते-उतरते उतर गई हैं। जब तक मेरी आँख खुली है कलकत्ता को भूल नहीं सकता और लखनऊ की श्रेष्ठता मेरी निगाह में आधुनिक नहीं प्राचीन है।"

निराला जी की अन्तिम रेडियो वार्ता

1941 में रवीन्द्रनाथ की मृत्यु पर लखनऊ रेडियो से "रवीन्द्रनाथ का हिन्दी पर प्रभाव" निराला जी की अन्तिम रेडियो वार्ता बताई जाती है। वह 'जीवन साहित्य' के आरम्भिक अंकों में छपी थी।

वैसे निराला जी रेडियों में वार्ता के लिए एकमुश्त राशि मांगते रहे। ज्ञानचन्द जैन ने (अन्तरंग, पृष्ठ 102) एक रोचक संस्करण लिखा है—

"निराला जी को रेडियो पर "इस साल की साहित्यिक प्रगति" पर एक वार्ता प्रसारित करने के लिए आमन्त्रित किया किन्तु बाद में यह वार्ता इसलिए प्रसारित नहीं की गई कि उसकी भाषा में रेडियो-अधिकारियों के सुझाव के अनुसार संशोधन करने से निराला ने मना कर दिया.... भैया साहब ने 1940 के अन्त में 'आकाशवाणी' नामक एक पाक्षिक पत्र निकाला तो इस पत्र में निराला जी की यह वार्ता छपी थी।

डलमऊ में निराला

डलमऊ में निराला जी का ससुराल था। वहीं उनके पुत्र और पुत्री का पालन पोषण हुआ। निराला महिषादल, कलकत्ता तथा लखनऊ प्रवास के समय भी यदा कदा डलमऊ आते रहते थे। यहीं पर उन्होंने 'प्रभावती' उपन्यास लिखा। 'कुल्ली भाट' में निराला ने डलमऊ विषयक अनेक प्रसंग दिये हैं।

निराला बताते हैं कि डलमऊ वाले उन्हें 'कुल कमल' कहते थे।

अपनी सासु और सलहज द्वारा मिलने वाले प्यार को इस प्रकार व्यक्त किया है—

"सासु जी मुझे अपनी बेटी समझतीं और सलहज साहिबा ननद।"

इधर निराला जी विषयक एक नवीन पुस्तक "निराला और डलमऊ" छपी है। इसके लेखक श्री रामनारायण रमण हैं। उन्होंने निराला जी के ससुराल तथा निराला के विषय में कुछ रोचक बातें दी हैं—

निराला का ससुराल डलमऊ के टिकैतगंज मुहल्ले में था। निराला के ससुर का नाम रामदयाल पंडा था। रामधनी इनके साले थे। जिनके पुत्र भारतीशरण द्विवेदी हैं जो प्रसिद्ध चित्रकार हैं।

(सूर्य प्रकाश दीक्षित ने निराला की आत्मकथा'में निराला के ससुर का नाम रामगुलाम दुबे लिखा है जो ठीक नहीं हैं। श्री भारतीशरण द्विवेदी एक बार इलाहाबाद आकर निराला से मिले थे—ऐसा मुझे स्मरण है।)

श्री रामनारायण रमण आगे लिखते हैं—

"निराला जी सेन गुप्ता (निराला जी ने शान्तिपुरी धोती लिखा है) धोती का जोड़ा और सिल्क का कुर्ता पहनते थे। दुपट्टा काँधे पर डालते और घुमाकर कमर में बाध लेते। धोती चुनावदार होती। कभी-कभी हाथ में छड़ी लेते।"

"निराला ने यहीं पर 'प्रभावती' उपन्यास लिखा। इसका समर्पण बीबी के नाम किया है। ये उनकी सलहज (साले की पत्नी) थीं और इनका नाम राम जानकी देवी था।"

भरकोर्रा में निराला

निराला जी अपने मित्र रामलाल गर्ग के गाँव भरकोर्रा में (कर्वी नहीं) एक साल रहे (मई 1942 से आगे) श्री जनार्दन द्विवदी ने 10 नवम्बर 1972 के 'दिनमान' में अपनी भरकोर्रा यात्रा और निराला जी विषयक संस्मरण लिखे हैं—"भरकोर्रा करवी-रीजापुर सड़क पर करवी से चार मील उत्तर लोढवारा से भी एक मील पश्चिम जाकर दो मील उत्तर भरकोर्रा है।.... रामलाल जी से उनकी मित्रता महिषादल प्रवास के समय से थी. रामलाल के भाई रामसहाय भी निराला के सम्पर्क में महिषादल में ही आये थे. निराला जी जब यहां से चले गये तो उन्हें जो पत्र लिखते उसमें खेती-बाड़ी, गाय-बैल-भैंस सबके हाल पूछते।.... निराला जी के हाथ की लिखी हुई बहुत सी सामग्री असंशोधित रूप में उनके घर रह गई थी लेकिन उन्हें मूल्यहीन समझ कर नष्ट कर दिया गया... रामलाल स्वयं कहानियां लिखते थे रामलाल की पत्नी ने इतना ही बताया कि निराला जी ने एक बार कुकुरमुत्ता का साग बनाकर खाया। रामसहाय ने बताया, "उनके सामने परोसी थाली रखी रहती, हम लोग मक्खियां उड़ाते रहते और वे 15-15 मिनट तक मौन बैठ रहते। जो मिल जाता प्रेम से खा लेते। तम्बाकू बड़ी तेज खाते। जब गद्य लिखना होता तो ज्यादातर भाई (रामलाल) को डिक्टेट करते थे। निराला के यहीं रहते हुए एक बार रामलाल के यहां चोरी हुई थी। जैसा कि कुछ लोगों ने लिखा है न तो निराला का कोई सामान चोरी गया, न ही कभी पुलिस वालों ने उन्हें तंग किया। बल्कि जब पुलिस वाले तहकीकात के लिए आये तो उनमें से किसी ने निराला से

पूछा कि आप कौन हैं तो निराला ने बड़ी दबग आवाज में कहा कि तुमसे मतलब ? और सब चुप हो गये। निराला के रहते हुए पुलिस वाले इधर आने में थोड़ा डरते थे। हम लोग उनके रहते बहुत सुरक्षित अनुभव करते थे। यहां वे बीमार पड़ गये थे अतः कुछ दिन के लिए इलाहाबाद चले गये थे। इलाज कराने। बाद में फिर वापस आ गये।.... निराला ने **बिल्लेसुर बकरिहा** यहीं रहते हुए लिखा। आधा **कुकुरमुत्ता** यहीं लिखा।.... निराला जी चील्ह के पंख की कलम से लिखते थे। प्राय: छाती के नीचे तकिया रखकर पेट के बल लेटे हुए। ज्यादातर तहमद लगाते। शिवप्रसाद पहलवान से उन्हें सर्वाधिक स्नेह था.... वे अटारी पर रहते थे।"

दारागंज में निराला

वैसे तो निराला जी 1935 में ईविंग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद एक कवि सम्मेलन में आ चुके थे किन्तु 1936 के प्रारम्भ में वे 'निरूपमा' बेचने लीडर प्रेस आये थे और वाचस्पति पाठक के यहां (क्योंकि काशी में उनसे परिचय था) रूके जिन्होंने उन्हें मछली पकवाकर खिलाई थी, किन्तु स्थायी रूप से निराला 1942 में ही दारागंज आये। पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी ने उन्हें कर्वी(बांदा) से बुलवाकर अपने पास रखा था। तब निराला जी बीमार थे। कुछ दिन इनके यहां रहकर निराला जी दारागंज में ही भगवती प्रसाद वाजपेयी के यहां रहे। फिर मसुरियादीन पंडे के मकान का किराये पर लेकर रहने लगे और 1946 तक यहीं रहे।

श्रीनारायण चतुर्वेदी के यहां आने का वर्णन श्री ज्ञानचन्द जैन ने इस प्रकार किया है (हिन्दी मय जीवनः श्री नारायण चतुर्वेदी 1992)—

"वह जब करवी बांदा में गम्भीर रूप से बीमार पडे तो भैया साहब ने उनको इलाहाबाद बुलवाकर अपने पास रखा और उनका इलाज करवाया।"

"भैया साहब ने अपने निवास स्थान में अपना बैठक का कमरा नया बना लिया था। (पृष्ठ 102) वहां से सामने गंगा जी के दर्शन होते थे। बैठक का कमरा काफी बड़ा था फिर भी अक्सर वहां साहित्यिकों की इतनी भीड हो जाती कि तिल रखने की जगह नहीं रह जाती थी। चाय के दौर के दौर चलते थे।" (पृष्ठ 103)

"चतुर्वेदी जी के अड्डे पर साहित्य चर्चा चल रही थी.... इतने में संयोग से दो महारथी आ पहुंचे। इनमें एक थे निराला और दूसरे थे कानपुर के जगदम्बा हितैषी। उस युग में निराला की कुकुरमुत्ता और खजोहरा कविताएं प्रसिद्ध थीं। न जाने कविता लेखन के संदर्भ में बातें चल पड़ी तो हितैषी जी ने कहा,"तुम्हें अपनी कविताओं का नाज है। ऐसी कविताएं तो मैं बात-बात में लिख सकता हूँ।. . दोनों ने आस्तीन चढ़ाना प्रारम्भ कर दिया और जोर-जोर से बोलने लगे"(पृष्ठ 142-43)

"निराला जी भैया जी को अग्रज रूप में सम्मान देते। उन्होंने अपना काव्य ग्रंथ 'तुलसीदास' उनको इसी संबोधन के साथ समर्पित किया था।"

श्री रामेश्वर प्रसाद शुक्ल अंचल ने (अमृत महोत्सव स्मारिका, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृष्ठ 19) "इलाहाबाद स्मृति संवाद" के अन्तर्गत निराला के दारागंज आवास का बहुत ही जीवंत चित्रण किया है—

"दारागंज में निराला जी एक साधारण गली में एक पंडे के छोटे से घर में रह रहे थे। उसके पहले पर्याप्त समय तक वे कवियत्री चन्द्रमुखी ओझा के सम्मिलित परिवार में रह चुके थे जिन्हें वे पुत्रीवत् मानते थे। उनका अभावमय, अपरिग्रही जीवन देख-देखकर, दूर से उच्छृंखल लगने वाले स्वतन्त्र परम्परा विरोधी क्रियाकलापों के बावजूद, लोगों के भीतर उनके प्रति आदर-श्रद्धा उमड़ती थी। पहले से ही एक साहित्यिक मुहल्ले के रूप में प्रसिद्ध दारागंज उन दिनों इलाहाबाद का सबसे बड़ा साहित्यिक केन्द्र बना हुआ था। श्रीनारायण चतुर्वेदी, निराला लक्ष्मीनारायण मिश्र, क्षेमेश चन्द्र चट्टोपाध्याय, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, दयाशंकर दुबे, प्रभात शास्त्री, डॉ. श्री कृष्णलाल, डॉ. रामानन्द तिवारी (पार्वती महाकाव्य के कवि) हमारे गंगावर्ती पंडों-मल्लाहों के मुहल्ले को अपूर्व सारस्वत छवि प्रदान करते थे... मैथिलीशरण गुप्त, राहुल जी, झूलेलाल गोस्वामी रामकृष्ण दास से लेकर नन्ददुलारे वाजपेयी, हित्णी, रामवृक्ष बेनीपुरी, उदयशंकर भट्ट और दिनकर सभी इलाहाबाद आने पर दिन-दिन भर दारागंज में हम लोगों से मिलते जुलते रहते।"

पद्मसिंह शर्मा कमलेश ने दारागंज में 1945 में निराला से भेंट की थी। इसका विवरण उनकी पुस्तक (मैं इनसे मिला था 1952) में प्राप्त है। दारागंज में पंडे के मकान का वर्णन दृष्टव्य है—

"कोठरी के एक कोने में मिट्टी के तीन-चार बर्तन रखे हैं जिनमें से एक में आटा है। एक में दाल। बाकी खाली पड़े हैं। दो-तीन ईंटों के टुकड़े हैं जो इन बर्तनों को जमाने के काम आते हैं। सूखी सी दवात और सूखा सा होल्डर है जिससे यह कलाकार कलाकृतियों की रचना करता है। दो-तीन बंगला, अंग्रेजी और उर्दू की पुस्तकें हैं। एक दो मासिक और साप्ताहिक पत्र भी बिखरे पड़े हैं। एक ओर छोटा सा ट्रंक है जिस पर 'अपरा' के फार्म रखे हैं। एक खूंटी पर खादी का पुराना कुर्ता टंगा है। एक दूसरे कोने में पुराने जूते रखे हैं। सामने की खिड़की में कड़वे तेल का एक दीपक है जिसके पास ही तेल की एक शीशी है जो खाली पड़ी है। कोठरी के ठीक बीच में एक पुराना फटा सा गुदड़ी है जिस पर शक्तिशाली कलाकार रैन-बसेरा करता है। बड़ी कोठरी भी ऐसी ही है। उसकी छत भी नीचे झुकी है और कड़ियाँ नीचे निकली हुई हैं। उसमें किसी आले में नमक है, किसी में मिर्च और किसी में प्याज और लहसुन की एक-दो गांठें। एक अलमारी में दो बर्तन हैं जिनमें एक घी का है और दूसरे में चूना भीग रहा है। जिसके पास ही पत्ते का तम्बाकू भी रखा है। चौके का भी यही हाल है। फर्श सब कच्चा है।"

कुछ फुटकर बातें

सबसे पुराने विश्व पर्यटक

1947 में निराला ने एक पत्र में लिखा है, "हम सबसे पुराने विश्व पर्यटक हैं। हमने लन्दन में व्याख्यान दिया।"

यह सच है कि निराला अन्तिम समय तक नित्य ही घूमने जाते रहे युवावस्था में कलकत्ते में वे श्मशान तक चले जाते।

उन्होंने "कैलास यात्रा" शीर्षक कविता में विवेकानन्द के साथ कैलास यात्रा का जो वर्णन किया है वह उनके विश्व पर्यटक होने का मानो प्रमाण है।

अंग्रेजी के प्रति प्रेम

10 मार्च 1944 को डॉ. रामविलास शर्मा को निराला ने पत्र लिखा, " अगला उपन्यास अंग्रेजी में होगा। पाली सीख रहा हूँ। साथ अंग्रेजी भी। कामचलाऊ संस्कृत कुछ तेज कर रहा हूँ। उम्र से कमजोरी आती है।"

गंगा नहाने का सुख

दारागंज में रहते हुए निराला जी ने गंगा-स्नान का लाभ उठाया। अपने 19 मई 1946 के पत्र उन्होंने यहां तक लिख डाला कि "गंगा नहाने का सुख शिमला में भी नहीं।"

घटनाचक्र-2

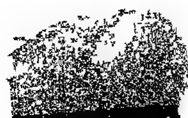
पुनः दारागंज में (अन्तिम 12 वर्ष)

स्फुट प्रसंग

विस्तृत घटनाचक्र-2

(1950-1961 तक)

12.01.50	**अर्चना** लिखना आरम्भ किया।
15.08.50	अर्चना की समाप्ति।
09.02.51	ठा. गोपाल शरण सिंह के अनुज दिवाकर सिंह जी मिले; उन्हें कवितायें सुनाईं।
11 02.51	साहित्यकार संसद में निराला जी की जन्म तिथि मनाई गई जिसमें महादेवी वर्मा, इलाचन्द्र जोशी, रायकृष्ण दास, आदि सम्मिलित हुए।
18.02.51	संध्या समय प्रभाकर माचवे, देवेन्द्र सत्यार्थी तथा सेंगर जी मिले। —वाणी मन्दिर का राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद द्वारा उद्‌घाटन। निराला जी भी सम्मिलित हुये। —अंचल जी ने भेंट की।
22.07.51	मुझे अंग्रेजी पढ़ाना प्रारम्भ किया।
31.01 52	चन्द्रकान्ता जी के घर में निराला जी की 55 वीं वर्षगांठ मनाई गई। धर्मवीर भारती, रमानाथ अवस्थी, सुधा जी उपस्थित।
24.03.52	मुझे बीमार अवस्था में देखने महाकवि 21 शहरारा बाग आये। रात्रि भर रहे। फिर पाठक जी के यहां निमन्त्रण में गये।
16 05.52	महादेवी वर्मा एवं गंगाप्रसाद पाण्डय जी कलामन्दिर में निराला जी से मिले।
26.06.52	निराला जी ने बताया कि उनकी दाहिनी भुजा बेकार हो गई है, हाथ ऊपर नहीं उठता।
29.07 52	ललित कला संघ के द्वारा आयोजित तुलसी जयन्ती में निराला जी ने अध्यक्षता की।
30.07 52	संगीत समिति में एक विराट कवि सम्मेलन का सभापतित्व किया। तुलसीदास नामक कविता का पाठ किया।



राखी बन्धन का दिन था। महादेवी जी ने निराला जी को अपने यहां बुलाया।

आराधना लिखना प्रारम्भ किया।

जानकी वल्लभ जी शास्त्री निराला से भेंट करने आये।

निराला जी ज्वराक्रांत।

बेढ़ब जी 'बनारसी' निराला जी को देखने आये।

इलाचन्द्र जोशी की 51 वीं वर्षगाँठ पर शुभ सम्मति लिखाई।

निराला जी ने हस्ताक्षर करना प्रारम्भ किया।

गीतगुंज नामक वृहत गीत-संग्रह लिखने की योजना बनाई।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने निराला जी को वाचस्पत्य सभासद चुना।

आराधना की पाण्डुलिपि महादेवी जी को दी गई।

रामकृष्ण जी अपनी पुत्री छाया सहित आये।

सी.ए.वी. कालेज के कवि सम्मेलन में भाग लिया। "राम की शक्तिपूजा" सुनाई।

निराला जी की जन्म तिथि। अग्रवाल विद्यालय में संध्या समय विशिष्ट आयोजन। फिल्म ली गई।

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी एवं जगन्नाथ शुक्ल वैद्य निराला जी से होली मिलने गये।

महारानी सरगुजा और सुप्रसिद्ध कलाकार सहगल ने भेंट की।

निराला परिषद् की प्रथम बैठक वेनीमाधव मन्दिर में हुई।

निराला जी ने लक्ष्मीधर वाजपेयी की सहायतार्थ 51/-रू दान दिये।

आचार्य गंगाधर शास्त्री आये।

इलाचन्द्र जोशी, गंगाप्रसाद पाण्डेय एवं ओंकार शरद ने भेंट की।

निराला जी ने मुझे 'मेघदूत' पढ़ाना प्रारम्भ किया।

निराला जी की 'अर्चना' एवं 'आराधना' पर 1000-रू. का उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त पुरस्कार घोषित हुआ।

दाढ़ी और मुच्छें मुंडा दीं

रसाल जी ने निराला जी से भेंट की।

गणेश एवं यदुवंशी मिले।

छोटी कोठी में जवाहर लाल नेहरू से भेंट करने जाने लगे तो पुलिस वालों ने रोक लिया

26 07.53 आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के अभिनन्दन में एनीबीसेन्ट हाल में अंग्रेजी में भाषण दिया। क्षितिमोहन सेन एवं सुमित्रानन्द पंत से उनकी भेंट हुई।

30 08.53 राधाकृष्ण नेवटिया मिले और कलकत्ता में निराला अभिनन्दन की बात कही।

19 09.53 कलकत्ते में महाकवि का विराट अभिनन्दन-समारोह।

20 10.53 निराला जी को नेहरू जी से मिलने को कहा गया परन्तु वे न गये तब निराला परिषद् के सदस्य मिले।

01 12.53 अजमेर के मुख्यमन्त्री हरिभाऊ उपाध्याय मिले।

11 12.53 मैनपुरी में आयोजित ब्रज साहित्य मण्डल के अधिवेशन में भाग लिया।

12 01.54 ठाकुर गोपाल शरण सिंह की हीरक जयन्ती के अवसर पर निराला जी ने अंग्रजी में भाषण दिया।

26 01.54 मदनमोहन मालवीय छात्रावास में कवि सम्मेलन एवं निराला जी का स्वागत।

05 02.54 डॉ. राजेन्द्र प्रसाद निराला जी से मिले।

24.02.54 माघ मेला की भीड़ के कारण रात्रि में निराला जी बाहर सोये और भीग गये।

29.06.54 श्यामू सन्यासी, रमेश सिन्हा मिले।

20.06.54 लखनऊ विश्वविद्यालय के डॉ. त्रिलोकी नाथ दीक्षित मिले।

26.06.54 कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह मिले। दुलारे लाल भार्गव भी आये।

18 07.54 डॉ. उदयनारायण तिवारी के यहां एक भोज में सम्मिलित हुए।

12 09.54 'पहाड़ी' जी मिले।

15 09.54 डॉ. रामकुमार वर्मा के जन्म दिवस पर एक सन्देश लिखाया।

29 09.54 निराला जी के कमरे में पंखा लगा, बत्तियां लगीं और सोने के लिए एक पलंग आया।

01.10.54 डॉ. चन्द्रशेखर दत्त मिश्र एवं जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ने निराला जी की स्वास्थ्य-परीक्षा की। निराला जी 'अस्थिगत संधिरोग' से पीड़ित।

12 10.54 जानकी बल्लभ शास्त्री सपत्नीक आये। संध्या समय दुलारे लाल जी भार्गव ने भेंट की।

19.10.54 महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने निराला जी से भेंट की।

30.11.54 मुख्यमन्त्री पं. गोविन्द बल्लभ पन्त से निराला जी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में निराला परिषद् के सदस्य लखनऊ में मिले।

08 12.54	पं. सुधाकर पाण्डेय मिले। **गीत गुंज** छापकर लाये थे।
19 12.54	आचार्य शिवपूजन सहाय जी का पत्र आया।
10 01.55	केसरवानी पाठशाला में कहानी प्रतियोगिता में आमन्त्रित हुए।
15 01.55	निराला जी को आगरा के पागलखाने में ले जाने का सरकारी आदेश।
24 01 55	जिला नियोजन अधिकारी कैप्टन शूरवीर सिंह मिले। आचार्य गंगाधर मिश्र तथा निराला जी के भतीज केशव आये।
28 01 55	जन्म दिवस के अवसर पर सत्याचरण शास्त्री का भाषण। आचार्य शिवपूजन सहाय द्वारा लिखित 'निराला' जी चिराय हों लेख मिला।
29 01 55	चकोरी जी के पति अरूण जी तथा सीतापुर के माधव जी मिले।
05.02 55	राजर्षि पुरूषोत्तमदास टंडन जी से उनके घर में निराला जी मिलने गये।
06.02.55	सत्यनारायण कुटीर में आयोजित सरस्वती पर्व में भाग लिया। टंडन जी भी आये।
28 03.55	बिहार के कवि रमण और रूद्र जी मिले।
01 04 55	सत्येन्द्र शर्मा देहरादून के एक छात्र, ने भेंट की।
10 04.55	निराला स्वास्थ्य परीक्षा के लिए सरकारी डॉक्टरों का एक दल प्रयाग आया।
01.05.55	पृथ्वीराज कपूर अपनी पार्टी सहित मिले।
03 05.55	निराला जी ने पृथ्वीराज कपूर द्वारा अभिनीत "पैसा" खेल देखा। महादेवी, पन्त, रामकुमार वर्मा भी थे।
22.05.55	डॉ. रामविलास शर्मा आये।
03 06.55	सत्याचरण शास्त्री मिले।
06 07 55	बाहु पीड़ा का प्रकोप।
15 07.55	डॉ बृजबिहारी के अवकाश ग्रहण करने पर दिये गये सम्मान में निराला जी का भाषण।
05 08.55	निराला परिषद् की ओर से एक शिष्ट मंडल डॉ. सम्पूर्णानन्द से महाकवि की परिचर्या के विषय में मिला।
10 12.55	निराला जी के वासस्थान पर गुरू भक्त सिंह 'भक्त' का अभिनन्दन। लक्ष्मीनारायण मिश्र व गिरीश जी भी थे।
27.12.55	महापंडित राहुल निराला जी से मिले।
23 01.56	'जागृति' के सम्पादक चन्द्रभाल ओझा आये।

29 01.56	चीनी शिष्ट मडल का स्वागत किया।
16 02.56	हीरक जयन्ती समारोह। प्रकाशचन्द्र गुप्त सभापति थे। संध्या समय मदनमोहन मालवीय छात्रावास में निराला जी का स्वागत। पन्त, देवी जी, भगवतशरण उपाध्याय जी भी थे।
18 02.56	प्रयाग लाज (डेलीगेसी छात्रावास) के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित। डॉ. सत्यप्रकाश एवं श्री भल्ला जी भी आमन्त्रित।
10.03.56	धर्मयुग के सम्पादक सत्यकाम विद्यालंकार मिले।
29.04 56	पंजाब के अभिनय-पटु कलाकार श्री वसन्त कुमार सेठ ने निराला जी के समक्ष तीन रचनाओं के अभिनय प्रस्तुत किये।
08 05.56	श्री काश्यप बेरी एवं दिल्ली के साहित्यिक श्री यज्ञदत्त शर्मा मिले।
27 05.56	'इण्डियाना' के सम्पादक सतीश चन्द्र गुहा मिले।
29 05.56	हिन्दी विभाग, रूइया कालेज बम्बई के प्राध्यापक डॉ. जगदीश चन्द्र अपनी पुत्री सहित मिले।
16 06.56	सुप्रसिद्ध सिनेमा संगीत लेखक आजाद साहू मिले।
26 07 56	श्री राजेन्द्र शंकर चौधरी, (युग मन्दिर उन्नाव) निराला जी की कृतियों के प्रकाशक, मिलने आये।
18 08.56	महापण्डित राहुल ने भेंट की।
25 08.56	श्री वारान्निकोव एवं उनकी पत्नी महाकवि से मिलीं।
02 09 56	श्री दुष्यन्त कुमार जी मिले।
08 10.56	सेठ गोविन्द दास, वेद्यराज पं जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल के साथ मिले।
16 11 56	श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय मिले।
07 12.56	रमवा के सुप्रसिद्ध पहलवान 'विजयी' ने भेंट की।
05 02.57	वसन्त पंचमी का दिन, निराला जी की 61वीं वर्षगाठ। महापण्डित राहुल ने अभिनन्दन किया। पहाड़ी जी, अमृतराय, आरसी प्रसाद श्रीकृष्ण आदि भी थे।
22 02.57	श्री वारान्निकोव पुन. मिलने आये।
24 05.57	'हिन्दुस्तान' के सम्पादक बांके बिहारी भटनागर ने भेंट की।
21 06.57	मेरी शादी में सम्मिलित हुए। दूसरे दिन कवि सम्मेलन का सभापतित्व भी किया।
16.08.57	फतेहपुर के कवि सम्मेलन में गये। दो दिन वहां रहे।
28 08 57	मथुरा संग्रहालय के क्यूरेटर पं. कृष्णदत्त वाजपेयी जी मिले।

रूस के छात्र श्री चेर्निकोव ने भेंट की। संध्या समय निराला जी पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल की जयन्ती में भाग लने सत्यनारायण कुटीर गये जहां प्रभुदत्त ब्रह्मचारी से भेंट हुई।
महापंडित राहुल अपनी पत्नी, पुत्र एवं पुत्री सहित महाकवि से मिले।
निराला जी ने अपने निबन्ध संग्रह **चयन** के प्रूफ देखे।
'चयन' से प्रकाशक श्री कल्याणदास जी ने निराला जी से भेंट की।
मध्य प्रदेश के गृहमंत्री श्री नरसिंह राव दीक्षित प श्रीनारायण चतुर्वेदी के साथ निराला जी से मिले।
आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने भेंट की।
फिराक जी मिलने आये।
पृथ्वीराज कपूर अपनी पार्टी सहित मिले। एक समारोह हुआ।
सुधाकर पाण्डे ने भेंट की।
डॉ. त्रिलोकी नाथ दीक्षित एवं केशवदेव उपाध्याय मिल'
वसन्त पंचमी के दिन आरा के अध्यापक डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र मिले। दूसरे दिन विरागी जी उन्हें सहसराम ले जाने के लिये इच्छुक थे पर निराला जी नहीं गये।
जानकी बल्लभ शास्त्री जी आये।
'विद्या' नामक कहानी लिखानी प्रारम्भ की।
केरल के संस्कृत विद्वान विद्घनानन्द जी गिरि आये।
डॉ. रामविलास शर्मा एवं अमृतलाल नागर ने निराला जी की वाणी के रिकार्ड लिए।
डॉ. रामविलास, अमृतलाल नागर फिल्म बनाने के उद्देश्य से आये।
रामनारायण शर्मा 'बालक' निराला जयन्ती में सम्मिलित हुए।
रूसी विद्वान श्री ई.पी चेलिशेव डॉ. रामकुमार वर्मा सहित निराला जी से मिले।
मेरी पुत्री का अन्नप्राशन संस्कार किया। बनारस के कवि श्री राहगीर, प्रवासी जी एवं रत्नाकर पाण्डे तथा भसरोल के प्रताप नारायण मिश्र भी थे। एक फोटो लिया गया।
महादेवी जी के यहां मैथिलीशरण गुप्त से भेंट की।
बेरी बन्धुओं को एक नवीन उपन्यास लिखकर देने का वचन दिया।

30.11.59	**इन्दु लेखा** नामक उपन्यास लिखाना प्रारम्भ किया।
01.02.60	निराला जी बनारस गये। वहां भव्य स्वागत हुआ।
27.03.60	कवि सोहनलाल द्विवेदी ने भेंट की।
16.08.60	महाकवि की दशा चिन्ताजनक।
22.10.60	महाकवि की दशा पुनः गम्भीर। शोथ, बुखार एवं खासी से ग्रस्त।
23.10.60	कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह तथा 'स्वतन्त्र भारत' लखनऊ के प्रतिनिधि लल्लन प्रसाद व्यास मिले। बाद में डॉ. सम्पूर्णानन्द, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश भी आये। शाम को मुख्यमन्त्री चन्द्रभान गुप्त (तब कांग्रेस अध्यक्ष) तथा मंगला प्रसाद एवं मुजफ्फर हुसेन मिले। बांके बिहारी भटनागर भी मिले।
27.10.60	डॉ. राममनोहर लोहिया ने भेंट की।
01.11.60	गृहमन्त्री पं. कमलापति जी त्रिपाठी मिले।
23.11.60	आचार्य शिवपूजन सहाय अपने नाती तथा पुत्र सहित निराला जी को देखने आये।
29 11.60	डॉ. धर्मवीर भारती मिले।
29.12.60	नेहरू जी ने निराला से मिलने की इच्छा प्रकट की परन्तु निराला जी आनन्द भवन नहीं गये, केवल एक कविता लिखकर भेज दी।
21 01.61	वसन्त पंचमी। वाचस्पति पाठक, अमृतलाल नागर, श्रीकान्त वर्मा तथा जितेन्द्र सिंह मिले।
26.01.61	डॉ रामप्रसाद त्रिपाठी, इतिहासज्ञ, ने भेंट की।
07.02.61	नगर प्रमुख एवं साहित्यकार श्री बालकृष्ण राव ने भेंट की।
30.06.61	आनन्द भवन देखने गये।
18.07.61	शोथ रोग से पुनः ग्रस्त। हार्निया बाहर निकल आई।
13.10.61	निराला जी की दशा चिन्तनीय।
14.10.61	प्रातः 9 बजकर 23 मिनट पर प्राणांत। गृहमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने शव पर मालायें चढाई।



घटनाचक्र-2

पुनः दारागंज में (अन्तिम 12 वर्ष)

दारागंज निराला के लिए अपरिचित जगह न थी। 1950 के पूर्व वे चार वर्षों से अधिक समय तक दारागंज में रह चुके थे। 1947 से 1949 तक निराला जी इतस्ततः घूमते रहे। 1949 में वे साहित्यकार संसद (रसूलाबाद-गंगातट पर) में रहे ओर वहीं विधिवत् संन्यास ले लिया। 1950 में वे अपने पुराने मित्र श्री कमला शंकर सिंह के मकान 'कलामंदिर'में आ गये और यहीं पर अन्तिम बारह वर्ष बिताये।

मैं दारागंज में निराला ने अन्तिम बारह वर्षों की स्मृतियों का साक्षी रहा हूँ। प्रथम तीन वर्षो (1950-52) तक निराला गीत लिखते रहे। ये गीत हिन्दी की विभिन्न प्रतिनिधि पत्रिकाओं में छपते रहे। जिससे लोगों को पता चला कि निराला सक्रिय हैं। इसका सुखद परिणाम यह रहा कि अगले डेढ वर्षों तक अनेक साहित्यकार तथा राजनीतिक व्यक्ति निराला से मिलने आये। इतना ही नहीं, 1953 में निराला ने कलकत्ता तथा मैनपुरी की यात्राए कीं।

धीरे-धीरे निराला जी के कमरे मे बिजली की बत्ती और पंखा लग गये और तखत की जगह रस्सी से बुनी बड़ी चारपाई आ गई। अक्टूबर 1954 में महापंडित राहुल सांकृत्यायन मिलने आये। 1955 का वर्ष भी सुख से बीता। अनेक समारोह आयोजित हुए और अनेक साहित्यिक आये। निराला के स्वास्थ्य की परीक्षा हुई, पृथ्वीराज कपूर मिले, डॉ. रामविलास शर्मा आये। 1956 में हीरक जयन्ती समारोह में निराला सम्मिलित हुए। जुलाई में राजेन्द्र शंकर चौधरी(उन्नाव) और अगस्त में रूसी विद्वान वारान्निकोव मिले। 1959 की वसन्त पंचमी में राहुल और वारान्निकाव पुन. मिले। अगस्त में निराला जी फतेहपुर के कवि सम्मेलन में गये। सितम्बर में निबन्ध संग्रह 'चयन' के प्रूफ देखे। पृथ्वीराज कपूर तथा फिराक ने आकर भेंट की।

1958 मे जानकी बल्लभ शास्त्री आये और निराला ने 'विद्या' नामक कहानी लिखी। डॉ. रामविलास शर्मा और अमृतलाल नागर ने भेंट की।

1959 में डॉ. रामविलास शर्मा, अमृतलाल नागर, रूसी विद्वान चेलिशेव, मैथिलीशरण गुप्त ने भेंट की। नवम्बर में निराला ने 'इन्दुलेखा' उपन्यास लिखना शुरू किया।

वे 1960 के प्रारम्भ में बनारस गये। इसी वर्ष सोहन लाल द्विवेदी आकर मिले और 16 अगस्त से निराला जी गम्भीर रूप से बीमार रहे। इस बीच बांके बिहारी भटनागर। कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह, शिवपूजन सहाय, धर्मवीर भारती आदि मिले।

1961 में जुलाई से शोथ, हार्निया से पीड़ित रहते हुए भी निराला ने 21 गीत लिखे और अक्टूबर में उनका देहान्त हो गया।

मेरा रोल

इसे संयोग ही कहा जावेगा कि विज्ञान के विद्यार्थी को हिन्दी के महाकवि निराला का सान्निध्य प्राप्त हुआ जो शिष्यत्व की सरणि से होता हुआ मैत्री में परिणत हो गया।

हुआ यह कि 1950 की गर्मियों की छुट्टियों में बी.एस सी. परीक्षा देने के बाद मैं अपने अग्रज के साथ निराला जी के दर्शनार्थ दारागंज गया। मेरे अग्रज 'कल्पना' पत्रिका के सम्पादक कैलाश कल्पित के साथ निराला जी की खोज दारागंज में कर चुके थे। उन्होंने आकर बतलाया तो मेरे मन में उन तक पहुंचने की लालसा जगी। तब तक मैं हिन्दी में विशारद परीक्षा उत्तीर्ण कर चुका था। मुझे निराला जी की कुछ कविताएं स्मरण थीं। यद्यपि निराला के विषय में ढेर सारी असम्बद्ध बातें सुनने को मिलती थीं किन्तु निराला जी से साक्षात्कार नहीं हुआ था।

प्रथम दर्शन के समय मैं निराला के भारी भरकम शरीर, उनकी मूँछ तथा उनके बड़े-बड़े नेत्रों से आतंकित हुआ था। सोच नहीं पा रहा था कि उनसे घनिष्ठता हो भी जाय तो उनके विषय में मनवांछित ज्ञान कैसे पा सकूंगा। किन्तु जब निराला जी ने मुझसे बी.एस-सी. की मेरी पुस्तकें मंगाकर देखने की इच्छा प्रकट की तो मेरे लिए सम्पर्क का सूत्र स्वतः मिल गया। मैं हफ्ते में पहले एक दो बार साइकिल से जाता। फिर नित्य ही प्रातः काल अपने अग्रज के साथ पहुंचने लगा।

पहले तो कुछ काल तक संकोच रहा किन्तु 1955-56 तक मैं उन्हें ठीक से समझने लगा। मैं उन्हें "पंडित जी" या "निराला जी" कहता। वे धीरे-धीरे मुझ पर कुछ अधिक केन्द्रित होने लगे थे। जब मैंने रसायन शास्त्र में डाक्टरेट प्राप्त कर ली तो उनके लिए यह बहुत ही गर्व की बात हो गई। वे मुझे 'डॉक्टर' कह कर पुकारने लगे। कभी-कभी प्रसंगवश कहते, "हमने भी एक डॉक्टरेट प्रदान की है—गंगा प्रसाद पाण्डेय को।" अब वे किसी-किसी बात में मेरी राय भी माँगने लगे—इस गीत में कितने नम्बर देते हो....आदि आदि।

मैं जिस श्रद्धा एवं अकिन्चनता से उन तक पहुंचता, उनकी हर बात को नोट करता चलता, उससे मुझे लगने लगा कि मुझे निराला के साहित्यिक रूप से भी जुड़ना होगा। फलतः मैंने निराला के विषय में लेख लिखने प्रारम्भ किये। इतना ही नहीं, निराला जी को भी उद्दीपित करता कि वे नई रचना लिखें और प्रकाशनार्थ

भेज। निराला बहुत हद तक मेरा मान रखते। एकाध बार मैंने प्रयोग के तौर पर पारिश्रमिक देकर उनसे गीत लिखवाये भी।

निराला के लिए कविता लिखने का सारा साज-सामान जुटाना मेरे जिम्मे था। निराला जी कहते—"हमारा आफिस ठीक कर दो, खाता ला दो, कलम दवात ला दो, हम लिखेंगे।"

निराला जी के पास जितने भी पत्र आते, उन्हें वे सहेज कर रखते और मेरे पहुंचने पर पढ़वाते, उत्तर लिखाने की तिथि निर्धारित करते। तब लिफाफा या कार्ड लाकर उत्तर देना मेरा कार्य होता। वे पत्रों में हस्ताक्षर करते और नहीं भी करते थे।

उनके पास सम्मत्यर्थ जो भी पुस्तकें आतीं उन्हें मैं ही पढ़ता और निराला जी को बतलाता। तब वे प्राय: अंग्रेजी में अपनी सम्मति लिखवाते।

निराला की रचनाओं को विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजने का जिम्मा भी मुझपर था। मैंने इसके लिए एक रजिस्टर बना रखा था। उनके खाते (गीत की कापी) में बगल में लिख देता कि अमुक पत्रिका में गीत भेजा गया है।

इतना सब होने के पूर्व निराला जी ने मेरी अंग्रेजी और संस्कृत पक्की कराई। उनकी चटसार का मैं विद्यार्थी बना। शेक्सपियर के दो नाटक और कालिदास का पूर्वमेघ पढ़ाकर उन्होंने मुझे दीक्षा दी। अप्रेल 1953 में वे डॉ. रामविलास शर्मा को सूचना दे चुके थे कि वे मुझे शेक्सपियर पढ़ा रहे हैं। उनकी कक्षा विकट होती—सर्वप्रथम आदेश मिला कि (Twelth Night) कापी में उतारो। फिर कहा इसे रटकर सुनाओ। फिर उच्चारण का अभ्यास कराते रहे। संस्कृत के कुछ श्लोकों का सस्वर पाठ किया। यत्र-तत्र शब्दार्थ बताये। बंगला का व्याकरण भी नोट कराया। मेरी क्लास 22 जुलाई 1959 से शुरू हुई और सितम्बर 1953 में इस आदेश के साथ समाप्त हुई कि कलकत्ते के लिए अंग्रेजी में एक वक्तृता तैयार कर लो।

हमारी यह पढ़ाई गुरूकुल की पढाई थी। जब पढ़ चुकते तो उनकी बांह में तेल की मालिश की जाती। 1952 में जून मास के अन्त में उन्होंने बताया था कि उनकी दाहिनी बांह ऊपर नहीं उठती। फलस्वरूप वैद्य के परामर्श से महामाष तेल से मालिश होती रही इससे लाभ यह हुआ कि उनका हाथ उठने लगा और दो मास बाद वे 'अराधना' के गीत लिखने लगे।

निराला जी बहुत ही अच्छे आचार्य थे। हमारी जिज्ञासा के शमनार्थ अपने नवीन गीतों के अर्थ भी बताते रहते थे। मुझे अवसर मिला कि मैं निराला के साहित्य का गहन अध्ययन करता चलूं। जब मेरा शोधकार्य पूरा हो गया तो मुझे लगा कि निराला जी की तमाम असंकलित, प्रकीर्ण रचनाओं को क्यों न संकलित किया जाय। फलत: मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग तथा नागरी प्रचारिणी सभा काशी के पुस्तकालयों में जाकर निराला की गद्य-पद्य रचनाएं संकलित करने में जुट गया।

मैंने गीतगुज का परिवर्धित रूप दिया और चयन नाम से निराला जी क असंकलित निबन्धों का प्रकाशित कराया। तब मुझे निराला के गद्य में निहित शक्ति का आभास हुआ।

निराला जी का मुझ पर अतीव स्नेह था। एक बार गर्मियों में बीमार पड़ा तो कई दिनों तक उनके यहां न पहुंच पाया। उन्हें चिन्ता हुई और वे मुझे देखने मेरे डेरे पर आये, रात भर रहे——भूमि शयन किया। इसी तरह पुन· एक बार अपनी पोत्री छाया के साथ मेरे घर आये। एक बार गर्मियों में हमें कलामन्दिर दारागंज में उनके साथ रहने, खाना बनाने, खाने तथा अन्य प्रकार से सेवा करने का अवसर भी मिला।

मैं भाग्यशाली रहा हूँ कि मेरी उच्च शिक्षा के कारण वे मुझे मेरे अग्रज मे अधिक विश्वासपात्र मानते और मेरे हर कार्य में व्यक्तिगत रूचि लेते रहे। एक बार चन्द्रकान्ता जी ने मेरा वैवाहिक सम्बन्ध किसी कन्या के साथ कराने के लिए निराला जी को उस कन्या को दिखलाया तो उन्होंने यह कहकर सम्बन्ध से इनकार कर दिया कि हम इसके लिए काफी लिखी-पढी कन्या ढूंढेंगे। फलतः जब मेरी शादी डॉ उदयनारायण की पुत्री के साथ तय होने लगी (जो शोध छात्री थीं) तो उन्होंने तुरन्त हां कर दी। राहुल जी ने भी ऐसा ही कहा था। निराला के शिष्यों में शायद मं ही ऐसा था जिसकी शादी में द्वारपूजा में वे सम्मिलित हुए। फिर जब मैं अपनी पत्नी सहित उनका आशीर्वाद लेने उनके आवास पर पहुंचा तो उन्होंने मेरी बड़ी पुत्री के अन्नप्राशन में 25. अशोक नगर तक आने का कष्ट किया। बच्ची को खीर खिलाई और उससे कहा, "देखो! तुम्हारे बाबा हम हैं।" उनके साथ काशी से आये राहगीर जी तथा प्रवासी जी भी थे।

मेरा आग्रह निराला जी शायद ही टालते रहे हों। एक बार प्रयाग डेलीगेसी लाज में उन्हें ले गया। मेरी शिक्षा-स्थली फतेहपुर जाने में भी उन्होंने आनाकानी नही की। वहां पर डलमऊ, चांदपुर आदि से आये स्वजनों से बातें कीं। उन्होंने मेरे जनपद की भूमि को पवित्र किया और मुझे भी कृतकृत्य किया।

अन्तिम दो वर्षो में, जब भी मैं जाता तो उनके लिए पान के दो बीड़े लेता जाता। यदि मेरे जाने में अन्तराल बढ़ जाता तो बैसवाड़ी में कहते, "द्याख, जल्दी अइस (देखो, जल्दी आना)।" पर अन्तिम समय वे इतने कठोर बन गये कि मेरी क्या, महादेवी जी तक की बात न मानी। वे अस्पताल नहीं गये।

मैंने उनके चरणों पर बैठकर जो स्मृति-पुष्प एकत्र किये उन्हें उनके चरणों पर सादर अर्पित करता हूँ। मुझमें न तो कविताई है, न वह पाण्डित्य कि चमत्कृत कर सकूं। मैंने तो जो कुछ देखा-समझा उसे उसी रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। मेरा विश्वास है कि मेरे 12 वर्षों के संस्मरणों से निराला के जिज्ञासुओं को अवश्य ही लाभ हो सकेगा।

1950 से 1961 तक का विस्तृत घटनाचक्र दे रहा हूँ। अनुरोध है कि इसे हमारे पाठक अवश्य पढ़ पाएं। और उस परिवेश से परिचित हों जिसमें निराला जी 12 वर्षों तक रहे। एतदर्थ मैंने इस खण्ड के अन्तर्गत—

निराला के मेजबान
चंदो के घर निराला
भइया जी की बगिया
दारागज से अलोपी बाग तक
1 एल्गिन रोड
भारती भण्डार/ लीडर प्रेस
दारागंज से बाहर—यत्र-तत्र सर्वत्र

शीर्षकों का आयोजन किया है। तत्पश्चात् मैंने तिथिवार उन संस्मरणों को प्रस्तुत किया है जो महामानव निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व को समझने में सहायक होंगे। कतिपय प्रसंगों को विस्तारमय से मैंने जानबूझ कर छोड़ दिया है।

इसी खण्ड का एक अंश 'पत्रावली' भी है। उससे निराला के विषय में अधिकाधिक जानकारी मिल सकेगी। मेरे बारह वर्षों की लेई पूँजी का सार यही है।

निराला के मेजबान

निराला जी कलामन्दिर में आकर रहने लगे। कलामंदिर को कमला शंकर सिंह ने किराये पर ले रखा था। यह गली से सटा हुआ मकान था। इसमें निचली मंजिल पर बाहर की ओर जो कमरा था, उसी में निराला जी रहते थे। बगल में शौचालय तथा उसी से लगा हुआ जीना था। भीतर की ओर आंगन था। जिससे लगे हुए बरामदे में रसोई घर था। ऊपर की मंजिल पर कमला शंकर सिंह का परिवार रहता था और सबसे ऊपरी तल्ले पर खुली छत थी जहां गर्मियों में रात में सोया जा सकता था। जब घर में कोई न रहता तो निराला जी ऊपर जाते थे अन्यथा वे अपने कमरे में ही रहते थे। निराला जी के कमरे में दो दरवाजे थे। एक ओर की दीवार में खुली आलमारी के रूप में तीन-चार खाने थे। उसी से सटकर निराला जी की तखत या चारपाई बिछी रहती। जो स्थान बचता उसमें दूसरा दरवाजा आगन्तुकों के प्रवेश का काम देता था। निराला जी अपने बिस्तर के पैताने की दिशा वाले दरवाजे को बन्द ही रखते थे। कभी-कभी कमरे में एक कुर्सी पड़ी रहती जिसमें निराला जी बैठा करते या आगन्तुक आकर बैठते। अन्यथा जमीन पर बिछी चटाई पर बैठना होता।

कमला शंकर सिंह रहने वाले तो बलिया के थे किन्तु इलाहाबाद में सरकारी नौकरी पर थे—चलचित्र केन्द्र में चित्रकार के पद पर। उम्र 40-45 रही होगी। बड़ी ही मस्त तबियत के, हँसमुख। देर से सोकर उठने वाले। घर की व्यवस्था उनके बड़े भाई ठाकुर उमाशंकर सिंह करते थे। उनके कई लड़के तथा लड़किया

थीं। उनमें से कुछ यहीं रहते थे। कमला शंकर जी निःसन्तान थे। उनकी पत्नी कलावती बच्ची छोटे कदकी, भोजपुरी बोलने वाली महिला थीं। वे निराला जी का आदर करतीं। उमाशंकर सिंह के बड़े पुत्र का नाम बुच्चू था। वह प्राय: निराला जी के कमरे में एक तरफ बैठकर चित्र बनाने का अभ्यास किया करता। उसके पिता कुछ ऊंचा सुनते तथा 'कोकिल बेनी' छद्‌मनाम से कुछ लिखा भी करते। वे भी इसी कमरे में जमीन पर बैठकर कुछ लिखते पढ़ते रहते। कमला शंकर की बहन गायत्री थी। निराला के पास चाय, भोजन आदि लाने का कार्य या तो बच्ची जी या गायत्री करती। कभी-कभी निराला जी स्वयं चौके तक जाकर परोसी थाली ले आते और कमरे में कुर्सी पर या चारपाई पर रखकर खाते। जब गायत्री चली गई तो एक अन्य लड़की सुशीला आ गई थी। उसकी शादी के निमन्त्रण पत्र में प्रकाशनार्थ एक कविता निराला जी ने लिखी। कुछ काल तक रामू नाम का एक नौकर भी रहा। वह कम उम्र का था। निराला जी उसे बुलाते, "हरे राम! चाय लावो"। गर्मी के दिनों में जब ठाकुर परिवार बलिया चला जाता तो निराला जी को अपनी भोजन-व्यवस्था स्वयं करनी पड़ती।

ठाकुर परिवार मांसाहारी था अतएव निराला जी के मांसाहार करने या मांस पकाने पर कोई आपत्ति नहीं होती थी। ठाकुर परिवार वाले निराला जी के लिए मास लाने, उसके लिए घी-मसाले लाने की व्यवस्था करते।

एक बार गर्मियों में हम दोनों भाइयों को निराला जी के साथ रहकर भोजन की सारी व्यवस्था करनी पड़ी। हम खाना बनाते, निराला जी को खिलाते (भोजन के पूर्व निराला जी स्नान अवश्य करते)। मैं विश्वविद्यालय चला जाता ओर मेरे भाई रेलवे दफ्तर। निराला जी दिन भर कमरे में अकेले रहते। शाम को पहुंचकर हम लोग चाय बनाते, खाना बनाते, साथ बैठकर भोजन करते। कभी निराला जी अपनी मनपसन्द की दाल बनाते। भोजन में घी अवश्य रहता। वे हमारे सामने मांस का आग्रह नहीं करते थे। इन्हीं गर्मियों में लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी अध्यापक डॉ. त्रिलोकी नाथ दीक्षित भी आकर टिके। वे बता रहे थे कि एक बार निराला जी ने उनके गांव मौरावां में कुछ काल तक अज्ञातवास किया था।

अक्सर माघ आने पर कलामन्दिर में माघ-स्नान करने वाले बलिया के सम्बन्धियों की भीड़ लग जाती। 1954 में माघ मेले के अवसर पर निराला जी को अपने कमरे के बाहर खुले बरामदे में सोना पड़ा तो भीग जाने से बीमार पड़ गये। लेकिन निराला जी चूं तक न करते।

सितम्बर 1954 में निराला जी के कमरे में पंखा और बत्ती लग गई। उसके पूर्व गर्मियों में भी निराला जी को कमरे में ही सोना पड़ता। बाद में जब निराला जी को अस्थि संधि रोग हो गया तो शौचालय में कमोड का प्रबन्ध हुआ किन्तु तो भी निराला जी को शौच में कष्ट होता। पास के कमरे में शौचालय भी दुर्गन्ध व्याप्त हो

जाता। क्योंकि फ्लश लैट्रिन नहीं था।

जब कोई अतिथि आता तो निराला जी अपने मेजबान पर उसका भार न डालते। वे उसके सत्कार के लिए स्वयं बाजार जाकर मिठाई आदि ले आते। प्रारम्भ में हम लोगों को लेकर वे चन्द्रकान्ता जी के यहां चल पड़ते और वहीं चाय पिलाते और पीते।

महिलाओं को अपनी चारपाई पर बैठा लेते और स्वयं कुर्सी पर बैठते या कमरे में टहलते रहते। अस्वस्थ होने पर दवा न करते। प्रायः उपवास रखते। बुखार चढ़ने पर अपनी लुंगी या कम्बल ओढ़ लेते, अपने कमरे के दरवाजे बन्द रखते।

निराला जी नहीं चाहते थे कि उनके लिए किसी प्रकार की आर्थिक सहायता सरकार से ली जाय इसलिए उनकी चोरी-चोरी कमला शंकर सिंह ने भइया जी से कहकर सहायता प्राप्त की। किन्तु निराला जी हस्ताक्षर न करने पर अड़े रहते। एक बार निराला जी की स्वास्थ्य-परीक्षा के लिए सरकारी जांच-बोर्ड आया तो निराला जी संयत रहे। किन्तु बाद में संस्तुत अंग्रेजी दवाएं लेने से कतराते रहे। वैसे निराला जी को देखने आयुर्वेद पंचानन पं जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल तथा म्यूनिसिपल बोर्ड के डाक्टर ब्रिज बिहारी आते ही रहते। इनसे निराला के निजी मधुर सम्बन्ध थे। इनकी दवाएं वे खाते-पीते। बांहु-पीड़ा होने पर जब महामाष तेल की मालिश बताई गई तो वे हम लोगों से नियमपूर्वक मालिश कराते रहे। अन्तिम समय जब निराला मरणासन्न थे तो निराला के मेजबान अत्यधिक चिन्तित होकर सेवा-सुश्रुषा करने लगे।

अपनी रूग्णावस्था में भी निराला जी ने अपनी कापी में अनेक गीत लिखे और इसी कापी को छोड़कर मरे। वह उनके मेजबान की थाती बनी। अपरिग्रही निराला के पास देने के लिए और था ही क्या।

चन्दो के घर निराला

कहने को तो निराला कलामन्दिर में रहते थे किन्तु प्रातः और सायं की चाय पीने अक्सर वे चन्दो के यहां जाते। चन्दो का मकान कलामन्दिर से एक फर्लांग की दूरी पर मुख्य सड़क से हटकर ढाल पर एक गली में था।

चन्दो का पूरा नाम चन्द्रकान्ता त्रिपाठी है। चन्दो के पति दुल्ली सिंह रेलवे में गार्ड थे। चन्दा चन्द्रमुखी ओझा सुधा की बड़ी बहन हैं। चन्दो के पास उनकी माँ भी रहती थीं वे वृद्धा थीं और श्वास की मरीज थीं। चन्दो का घर तंग था और नाली के ऊपर होने से सीलन से भरा था। निराला जी इस घर के दरवाजे पर पहुंचकर सिटकिनी खटखटाते या 'चन्दा' कहकर आवाज लगाते तो दरवाजा खुलता। कमरे के भीतर एक तखत थी और जमीन पर चटाई बिछी रहती। निराला जी उसी पर बैठ जाते और एक प्याला लेकर (बिना दूध की चाय) मांगते, पीते,

थोड़ी देर बैठकर, चन्दो से या उनकी मा से सुर्ती मागते, चन्दों की मा को भी देते और तब उठकर कलामन्दिर चले आते।

हम लोग प्रायः निराला के पास प्रातः काल पहुंचते। वे हमें लेकर तुरन्त चन्दो के घर चल पड़ते। परिचय बढ़ने पर हम लोग भी चाय पाने लगे और निराला जी के साथ चले आते।

पहली बार जब निराला जी मुझे चन्दों के यहां ले गये तो वहां डॉ. रामविलास शर्मा बैठे थे। निराला जी ने परिचय कराया। डॉ. शर्मा हृष्ट-पुष्ट, पैंट बुशर्ट पहने, प्रसन्न मुख दिखे थे। वे अपने साथ 'न्यू लिटरेचर' नामक पत्रिका की प्रति लाये थे। जिसमें निराला पर उनका लेख छपा था। तब वे गोकुलपुरा आगरा में रहते थे।

चन्दो के ही मकान में निराला जी ने प्रमोद शर्मा पारिजात को रखवा दिया था। वह छरहरा, दुबला-पतला चश्माधारी युवक था। संस्कृत बोलता था। निराला जी उसके पिता से पूर्व परिचित थे। वह अपने को पटना वासी बताता था। उसकी आवाज पतली थी। वह बहुत ही खुरापाती निकला। कुछ दिनों बाद ही उसे चन्दो का मकान छोड़कर चले जाना पड़ा।

जब 'आराधना' के मुखपृष्ठ पर निराला का चित्र देने की बात उठी तो सुप्रसिद्ध अर्गल स्टुडियो के अर्गल जी ने निराला का एक चित्र इसी मकान में खींचा। यह चित्र न केवल आराधना में छापा अपितु निराला की मृत्यु के बाद जो डाक टिकट उनकी स्मृति में जारी हुआ उसमें यहीं चित्र था।

चन्दो के ही घर में आचार्य जानकी बल्लभ शास्त्री से मेरी भेंट हुई। वे निराला जी से मिलने आये थे। चन्दो के घर पर ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल भी आते रहते। वे सफेद खादी कुर्ता, खादी धोती और टोपी पहनते थे। बात-बात में खिल खिलाकर हंसते तो पान-सुपारी की पीक उछलने लगता। वे निराला जी को श्रद्धा की दृष्टि से देखते। चन्दो के ही घर पर गोपेश जी, रसाल जी भी निराला से मिले।

निराला जी निःसंदेह चन्दो को पुत्रीवत् मानते। चन्दो अतिथियों का स्वागत करतीं और बातें भी करती। वे कलामन्दिर के ठाकुरों से चिढ़ती थीं। चन्दो अक्सर कहती कि ठाकुर लोग निराला को उनसे दूर रखने का षडयन्त्र रचते रहते हैं। यह सच है कि निराला जी खाने की वस्तुएं, कपड़े आदि लाकर चन्दो या उनकी माँ को भी देते रहते जिससे ठाकुर लोग चिढ़ते। किन्तु निराला ने कभी इसकी परवाह नहीं की।

निराला की यह वैकल्पिक व्यवस्था निराला के चन्दो परिवार से पूर्व परिचय के कारण ही सम्भव हो सकी। सुधा जी उदीयमान कवियत्री थीं—निराला जी उनकी तारीफ करते अघाते न थे। उनके बच्चे भी निराला जी से हिले मिले थे। वे कानपुर में रहती थी किन्तु प्रायः अपनी बहन के घर आती-जाती रहती थीं।

कलामन्दिर की अपक्षा चन्दा क घर के कुछ ही क्षण निराला के मन का संतुलित रखने में निश्चित रूप से सहायक रह।

भइया जी की बगिया

दारागंज के लोग पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी को भइया जी ही कहते थ। निराला जी जिस गली में रह रहे थे उसी मे थोड़ी दूर चलने पर भइया जी की बगिया पड़ती है। (अन्यत्र इसकी चर्चा की जा चुकी है)। कहलाती तो बगिया थी किन्तु इसमें एक बैठका था, जिसे दारागंज का साहित्यिक अड्डा कह सकते हैं। इसके सामन खुला प्रांगण था और उसके किनारे-किनारे फूल लग होते। यह बगिया वसन्त पंचमी के दिन निराला के दर्शनार्थियों से भर जाती क्योंकि कलामन्दिर में स्थानाभाव होने मे प्रायः सरस्वती पूजन का अयोजन इसी बगिया में होता। 'निराला परिषद' की भी बैठकें यहीं होती रहतीं। अक्सर पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी (भइया जी) ऐसे उत्सवों के समय उपस्थित होते। वे लखनऊ मे अपने घर आते रहते थे।

निराला जी भइया जी को 'श्रीवर' कहते और उनका आदर करते। वे लखनऊ से ही उनसे परिचित थे। भइया जी भी निराला का बहुत ख्याल रखते। 1942 में जब निराला जी कर्वी में बीमार पड़े तो भइया जी ने उन्हें बुलवाकर इसी बगिया में रखा था।

भइया जी परम विनोदी थ।(इसलिए उपनाम विनोद शर्मा)। वे परम वैष्णव थे। निराला जी से उम्र में बड़े थे। निराला जी उनका नाम लेते तो उसके बाद (M A , Lond) कहना न भूलते। वे निराला जी से भी चुटकी लेने से न चूकते। वे कमला शकर सिंह को जानते थे। निराला के सुपास को ध्यान में रखकर ही उन्हे सरकारी सहायता दिलवाई थी। 'सरस्वती' सम्पादक बन जाने पर वे निराला जी से रचनाए मागकर छापते और पारिश्रमिक दिलाते। कभी-कभी अंगूरी शराब का भी प्रबन्ध कराते।

जब भइया जी का दरबार लगा होता तो निराला जी अपनी छड़ी लेकर घूमत हुए आते और भीतर जाते। भइया जी बोल पडते, "कहिये निराला जी..." निराला जी हंसते हुए वापस चले आते। तब भइया जी निराला विषयक कोई रोचक संस्मरण सुनाये बिना न रहते। लखनऊ में रहते हुए भी वे निराला जी के स्वास्थ्य का पता लेते रहते। दारागंज आने पर चलकर निराला जी से मिलते। निराला की मृत्यु के बाद उनकी अन्तिम रचनाओं को प्रकाशित कराने में भइया जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

दारागंज से अलोपी बाग तक

दारागंज में निराला जी के बगल में वैद्य जी का मकान था। निराला जी इन्हें बड़ा भाई कहते। इनके यहां संगीत-गाने बजाने की गोष्ठियां होती रहती। निराला

जी उसमें बड़े चाव से सम्मिलित होते. भगवान दास नाई तबला बजाता, वैद्य जी हार्मोनियम संभालते। उत्साहित होने पर निराला जी भी गाते बजाते। अन्यथा हाथ से ताल देते,.... वाह-वाह करते। मैंने एकाध बार इन गोष्ठियों में निराला को शराब पीते भी देखा है किन्तु इनमें मैं कभी सम्मिलित नहीं हुआ। निराला जी ने मुझे बताया था कि 15 अगस्त 1955 को वैद्य जी का देहान्त हो गया। तब निराला जी की बैठक का एक अड्डा टूट गया।

निराला जी भांग भी पीते थे। एक बार मुझे अपने साथ मोती महल वाली गली में दूर तक ले गये। एक पंडे ने निराला जी को भांग के लिए बुलाया था। मुझे भी भांग दी गई। जब मैं अश्वस्त हो गया कि चढ़ेगी नहीं तब गिलास भर बादाम आदि से युक्त वह भांग पी।

मुख्य सड़क पर (कलामन्दिर से 100 कदम चलने पर) राय अमरनाथ की कोठी है और सड़क के दूसरी ओर सामने ही उनके छोटे भाई राय रामचरन (मंझले भइया) की कोठी। एक बार पं. जवाहर लाल नेहरू इस कोठी में आये तो निराला जी चाय की प्याली लेकर नेहरू को देखने गये थे। अन्यथा मुझे स्मरण नहीं कि निराला जी इन कोठियों में कभी गये हों। यही नही, अपनी गली में, कलामन्दिर के ठीक सामने कई मंजिले वाली रामकिशोर राय की कोठी की ओर निहारते तक न थे।

इसी मुख्य सड़क पर आगे चलने पर चन्द्रकान्ता की गली के मोड़ पर सामने पान बीड़ी वाले की दुकान थी। वह अपने को रायबरेली का बताता और निराला का भक्त भी था। निराला जी घूमने जाते तो उसकी दुकान पर रूक कर सुर्ती, चूना, पान आदि लिया करते।

इसी सड़क पर नगरपालिका का अस्पताल है जिसमें ब्रिज बिहारी डॉक्टर थे। निराला जी इस अस्पताल के भीतर जाते, दांत में पीडा होती तो दवा लाते किन्तु सबसे बड़ा आकर्षण था। भार लेने वाली मशीन, जिसे पर निराला जी अपने को तोलते रहते। इससे थोड़ी दूर आगे चलने पर जगन हलवाई की दुकान मिलती जहां से निराला जी मिठाईयां—विशेषतया रसगुल्ले और जलेबी ले जाते थे। आगे चलकर हजारी अग्रवाल की कपड़े की दुकान पड़ती जहां से निराला जी मन चलने से कपड़े खरीद कर ले जाते। इसके यहां भी उधार खाता चलता। फिर भगवान दास नाई का दुकान पड़ती जहां निराला जी दाढ़ी बनवाते, दाढ़ी छोटी करवाते, सिर सफाचट कराते।

तब वेणी माधव मन्दिर पड़ता है। थोड़ा हटकर उसी के सामने 'ज्ञानलोक कार्यालय' में अवस्थी जी के यहां भी निराला जी रूकते। चौराहे पर पहुंचने के पूर्व ब्रजभूषण वाजपेयी (छोटे) की दुकान पड़ती। ये भगवती प्रसाद वाजपेयी के छोटे भाई थे। छोटे प्रायः निराला का दर्शन करने कलामन्दिर पहुंचते।

अड्डे (चौराहे) पर चाय की दुकान वाला निराला का भक्त था। घूमने जाते समय या लौटते हुए कभी-कभी निराला जी यहां चाय पी लेते। अड्डे के ढ़ाल पर देशी शराब तथा भांग की एक दुकान पर भी निराला जी जाया करते।

मेरी शादी में एक बार वे राधारमण इण्टर कालेज के प्रांगण में भी गये। इसी के पास माघ मेला के लिए प्रयाग रेलवे स्टेशन है। उसके गेट पर एक टीन के रोड के नीचे एक भिखारिन वृद्धा पड़ी रहती थी। निराला जी प्राय: अपनी परोसी थाली उठाकर इसे दे जाया करते और स्वयं उपवास करते।

वे कभी-कभी अड्डे पर स्थित डाकखाने में भी चले जाते। एक बार इसके बाबू से झगड भी गये थे। वे दारागंज रेलवे स्टेशन के भीतर भी घूमते हुए चले जाते।

निराला जी कभी-कभी अलोपी बाग तक (अलोपी देवी के मन्दिर के पास तक) चले जाते। मुझे बताया गया कि रास्ते में बन्दरों के उत्पात से अपनी रक्षा के लिए हाथ में पत्थर टुकड़े लिये रहते। वे थाने के पास डॉ. उदयनारायण तिवारी के घर तक जाते, वहां पर बरामदे में बिछी तखत पर बैठते, सुरती खाते और डॉ. तिवारी के अनुरोध पर चाय पीकर लौटते। इसी मकान में 1942 में महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने कई दिनों तक निराला जी का इंटरव्यू लिया था। डॉ. तिवारी इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापक थे। वे निराला के भक्त एव प्रशासक थे, भइया जी की मंडली में नियमित भाग लेने वाले भी थे अत: जब-जब व दारागंज जाते तो कलामंदिर में निराला जी का दर्शन किये बिना न लौटते। उनके पास निराला सम्बन्धी अनेक संस्मरण थे।

निराला जी कई बार चौक (घंटाघर), सिविल लाइन्स, कैलाश कल्पित के घर (चक मुहल्ले में), हमारे घर शहरारा बाग भी गये। वे अग्रवाल विद्यालय, सी.ए.वी. कालेज, हिन्दू होस्टल एवं प्रयाग लाज भी गये।

कहने को तो निराला कलामन्दिर में रहते थे और अस्वस्थ भी थे किन्तु उनकी दौड का दायरा कम न था। भारती भण्डार लीडर प्रेस तथा एल्गिन रोड तो वे प्राय: जाते रहे।

1 एल्गिन रोड

1 एल्गिन रोड, संगीत समिति के पास, चौक से कटरा जाने वाली तथा संगीत समिदि के सामने से सिविल लाइन आने वाली सड़क के संगम पर स्थित श्रीमती महादेवी जी का निवास स्थान था। निराला जी महादेवी जी से भेंट करने कभी रिक्शे से, कभी ताँगे से और कभी गंगा प्रसाद पाण्डेय की मोटर कार से जाते। महादेवी जी प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या थीं। वे विद्यापीठ कैम्पस के उत्तरी पूर्वी कोने पर बने बंगले में रहती थीं। कलकत्ता अभिनन्दन की तैयारी के समय में निराला जी के साथ पहली बार 1 एल्गिन रोड गया.

इस बंगले की बैठक मुख्य गेट के सामने थी। गेट पर 'भक्तिन' नाम की दाई मिली जिसने तुरन्त कहा, "अच्छा, जाकर गुरू जी से बताइत है।" मुझे लगा कि वह निराला जी से परिचित है। जब हम अकेले जाते तो भी भक्तिन ही मिलती। थोडी सी प्रतीक्षा के बाद देवी जी बैठक में आतीं। बैठक में छोटी सी चौकी थी जिसके आगे फर्श पर कालीन पड़ी रहती और पीछे एक शीशे के चौखटे के भीतर बांसुरी बजाती कृष्ण की नीले रंग की मूर्ति थी।

जब मैं पहली बार निराला जी के साथ इस बैठक में गया था तो दाहिने हाथ एक मेज पर निराला की मृ.मूर्ति रखी थी। यह बहुत अच्छी न थी। बरूआ इसे निराला अभिनन्दन के अवसर पर बनवाकर दे गये थे।

जब देवी जी आकर चौकी के सामने विराजीं तो मैंने देखा कि वे बातें करते समय हंसती, फिर संजीदा हो उठती। बहुत ही मृदुभाषिणी थी। निराली जी से कोई विशेष बात नहीं हुई। हम लोग चले आये थे। एक अन्य अवसर पर हम निराला जी के साथ गये तो घंटों रहे। भीतर रसोईघर में जलपान हुआ। गंगा प्रसाद पाण्डेय स यहां पर बहुत कम भेंट हो पाती यद्यपि वे महादेवी जी के कालेज में ही पढाते थे।

निराला जी साहित्यकार संसद से छपी अपनी पुस्तकों की रायल्टी का हिसाब लेने एवं एकाध बार अपने भतीजों केशव तथा बिहारी लाल को आर्थिक सहायता दिलाने के उद्देश्य से एल्गिन रोड गये। अन्यथा प्रायः चिट लिखकर हमें देते या हम उनका संदेश लेकर जाते। देवी जी बड़े मनोयोग से पूरी बात सुनती, सहायता करने का वचन देती, पाठक जी से भी रायल्टी दिलाने का आश्वासन देती। एक बार निराला जी को तेज बुखार था और उनके पास ओढ़ने के लिए कम्बल भी न था तो मै भगा-भगा देवी जी के पास (पहुंचा था)।

देवी जी निराला जी की मुंह बोली बहन थीं। पर निराला एकाध बार ही उनके यहां राखी बंधाने गये। देवी जी ने एक बार कहा था, "निराला जी की दृढ कलाइयां में राखी बांधकर मैं अपनी रक्षा के प्रति आश्वस्त हूँ।"

निराला जी देवी जी की वाग्मिता की प्रशंसा करते न अघाते। वे उनकी हस्तलिपि की भी तारीफ करते।

निराला को मैंने देवी जी पर कभी रूष्ट होते नहीं देखा था। (यद्यपि वे निराला की प्रकाशक भी थीं) किन्तु कलकत्ते में अपने अभिनन्दन के समय वे रूष्ट हुए थे। हाँ, यदि कोई अन्य व्यक्ति महादेवी जी की बुराई करे तो निराला को यह बर्दाश्त न था।

कुछ काल बाद देवी जी 1 एल्गिन रोड छोड़कर अपने निजी मकान में अशोक नगर चली गईं। यह मकान मेरे घर के पास ही है। निराला जी के अनेक संदेश लेकर मैं देवी जी से इस मकान में भी मिला। निराला जी भी दो तीन बार देवी जी से इस नये मकान में मिले।

अपने इसी मकान से देवी जी ने निराला जी की गम्भीर स्थिति का संदेश अपने चपरासी से मेरे घर भेजा था। जब-जब (विशेषतया होली पर) मैं देवी जी से मिलने जाता तो देवी जी निराला जी का हाल अवश्य पूछतीं।

निराला जी की मृत्यु के बाद जब बच्चन जी ने साप्ताहिक हिन्दुस्तान में "यह मतवाला निराला" लेख छापा तो वे क्षुब्ध थीं और कह रही थीं कि बच्चन जी को ऐसा नहीं लिखना चाहिए था।

जब दारागंज के चौराहे पर निराला जी की मूर्ति स्थापित हुई तो देवी जी उसमें सम्मिलित हुई थीं। 1976 की वसन्त पंचमी में वे गढ़ाकोला भी गईं। वे प्राय: यही कहतीं, "हम निराला के लिए कुछ नहीं कर पाये।"

लीडर प्रेस / भारती भण्डार

निराला जी ने लिखा है कि 1936 में जब वे 'निरूपमा' बेचने लीडर प्रेस आये तो वाचस्पति पाठक के यहां रूके थे। निराला 1929 में काशी में वाचस्पति पाठक को प्रसाद जी के यहां देख चुके थे। लीडर प्रेस में निराला जी की कई पुस्तकें छपीं अत: निराला जी रायल्टी के रूपये लेने अक्सर रिक्शे पर वहां तक जाते या फिर चिट लिखकर हमें भेजते।

पाठक जी कुछ उद्दण्ड प्रकृति के कर्कश बोलने वाले व्यक्ति थे जब निराला जी रायल्टी लेने पहुंचते तो पाठक जी सीधे मुंह बात न करते। फलत: कार्यालय में हंगामा मच जाता। और निराला जी बिना कुछ लिये ही वापस चले आते। पाठक जी निराला से हस्ताक्षर करने के लिए कहते और वे इससे इनकार करते। कभी-कभी पाठक जी हम लोगों के सामने कहते—आपको रायल्टी क्यों दें। आप तो रूपये बांट देते हैं। "परोक्ष में यह भी कहते कि निराला ने पुस्तकों का कापीराइट बेच रखा है यह तो बिड़ला वालों की उदारता है कि निराला को रायल्टी दे दी जाती है। बहरहाल, अन्त तक यह तय न हो पाया कि लीडर प्रेस से निराला को कुल कितनी रायल्टी मिलनी हैं। निराला लाखों में बताते किन्तु उधर से कोई उत्तर न मिलता।"

चूँकि महादेवी जी ने साहित्यकार संसद से निराला की जो दो पुस्तकें छापी थीं उन्हें भी उन्होंने लीडर प्रेस (भारती भण्डार) को विक्रय के लिए दे रखा था इसलिए जब निराला जी देवी जी से रायल्टी का हिसाब मांगते तो वे पाठक जी को ही लिखतीं। पाठक जी तब भी निराला को टुनका देते। यदि कोई राशि देते भी तो निराला रिक्शे वाले को तथा यदि कोई रास्ते में असहाय मिल जाता तो उसे देते हुए बहुत थोड़ी राशि लेकर दारागंज वापस आते जिससे दावत दी जाती या फिर किसी दुकानदार का उधार चुकता किया जाता।

एक बार पाठक जी ने निराला को भाँग की दावत दी। निराला रिक्शे से लीडर प्रेस पहुंचे (पाठक जी वहीं रहते थे) किन्तु न जाने क्या बतरस हुई कि वे भाँग की गोली लिए हमारे घर शहराराबाग आ पहुंचे।

मैं ता पाठक जी के व्यवहार से सदैव असतुष्ट रहा एक बार बोल निराला का उपन्यास निरूपमा यद्यपि कोर्स में लगा है किन्तु पजाब के प्रकाशक चोरी-चोरी छाप लेते हैं इसलिए निराला को रायल्टी कहां से दी जाय।" मैं नहीं जान पाया कि पाठक जी को लेखकों की रायल्टी को रोकने या इच्छानुसार देने का यह अधिकार किस तरह मिला हुआ था।

अब तो निराला के युग के सारी पुस्तकों का स्वामित्व अपने हाथ में लेकर उस शोषण की श्रृंखला को समाप्त कर दिया है जिसके निराला सबसे बड़े शिकार होते रहे।

भारती भण्डार में पाठक जी के अतिरिक्त निराला को जानने वाले बिन्दा प्रसाद ठाकुर, परमानन्द शुक्ल, भारत के सम्पादक शंकर दयाल श्रीवास्तव भी थे जो निराला के लिए पलक-पांवड़े बिछाते रहे।

दारागंज से बाहर: यत्र-तत्र-सर्वत्र

निराला जी 1950 के पूर्व कलकत्ता, काशी, लखनऊ तथा प्रयाग के प्रवास काल में कवि सम्मेलनों तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों में देश के विभिन्न भागों की यात्राएं कर चुके थे। यही नहीं, कलकत्ता, लखनऊ तथा प्रयाग से वे गढ़ाकोला, डलमऊ भी जाते रहते थे। लखनऊ से वे उन्नाव भी आते-जाते रहे क्योंकि युग मन्दिर उन्नाव से उनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो रही थीं। निराला जी ने ओडछा तथा चित्रकूट की भी यात्राएं की थीं।

अपने अन्तिम वर्षों में निराला जिन स्थानों में गये वे हैं—कलकत्ता, मैनपुरी, काशी तथा फतेहपुर। कलकत्ता वे 1953 में अपने अभिनन्दन समारोह में भाग लेने गये थे। उसी वर्ष मैनपुरी भी गये। काशी वे 1960 में वसन्त पंचमी पर गये और फतहपुर 1957 में एक कवि सम्मेलन में भाग लेने गये थे। यद्यपि 1958 में आरा ले जाने के लिए कुछ लोग आये थे किन्तु निराला ने ना कर दी थी।

अपने अन्तिम बारह वर्षों में निराला जी न तो गढ़ाकोला गये, न ही डलमऊ। जब उनके भतीजे या ससुराल से कोई आता तो अपनी असमर्थता व्यक्त कर देते, अस्वस्थता का उल्लेख करते।

वे रेलगाड़ी की अपेक्षा मोटर कार या जीप से यात्रा करना पसन्द करते। थोड़ी दूर शहर में रिक्शे से आते-जाते। मन चलता तो पैदल ही ईष्ट मित्रों के यहां पहुंच जाते।

स्फुट प्रसग

निराला के अन्य नाम

निराला का असली नाम तो सूर्यकुमार था। बंगाल में वही सूरजो कुमार, सूर्यकान्त, फिर सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला बना। 'निराला' सम्बोधन यद्यपि मतवाला काल में उपनाम के रूप में प्रयुक्त होता रहा किन्तु कालान्तर में निराला की अर्थ ही पं सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हो गया।

निराला जी 'समन्वय' काल में 'दार्शनिक' तथा 'सूर्यकान्त' नाम से लेखन कार्य करते रहे। मतवाला में 'चाबुक' स्तम्भ के अन्तर्गत वे गरगज सिंह वर्मा या साहित्य शार्दूल नाम से चाबुक चलाते थे (आलोचनाएं लिखते थे) वे जनाब अली और शौहर नाम से भी लिखते रहे।

हाँ, लखनऊ में 'सुधा ' में जो सम्पादकीय टिप्पणियां लिखते रहे उनमें व अनाम बने रहे।

उन्होंने जो भी अनुवाद कार्य किया उसे वे बाजारू काम कहते फलत· उसमें भी उन्होंने अपना नाम नहीं दिया।

दारागंज में अन्तिम वर्षों में निराला डॉ. सय्यद हुसैन हस्ताक्षर अंग्रेजी में करते। वैसे निराला हस्ताक्षर अंग्रेजी में भी करते रहे। कलकत्ता जाते समय आटोग्राफ म **नरेन** लिखा और एक बार मेरी कापी में **जवाहर लाल** लिख दिया। अन्यत्र संक्षिप्त रूप में **नि.**भी लिखा।

मन में मौज आती तो कहते "निराला मर चुका है। यहां निराला नहीं रहता। किस निराला को आप ढूँढ रहे हैं?"

वाह रे निराला !! तेरी चाल निराली, तेरा हर कार्य निराला। मैंने कहीं लिखा भी है—आरती उतारो निराले निरलवा के।

निराला का पुस्तकालय

जिस व्यक्ति ने दर्जनों गद्य-पद्य की पुस्तकें लिखी हों, उसके पास न तो उसकी अपनी पुस्तकों की एक भी प्रति थी, न ही अन्य पुस्तकें ही थीं। निराला जैसे अस्त-व्यस्त जीवन शैली वाले व्यक्ति से उसके कमरे में किसी आलमारी में करीने से सजी पुस्तकों के होने की आशा व्यर्थ थी। फिर भी वे कुछ पुस्तकें रखते रहे। लखनऊ छोड़ने के बाद उन्होंने अपने पुत्र को लिखा था कि हमारी किताबों में बंकिम ग्रन्थावली के छह खण्ड हैं, उन्हें लाना मत भूलना। इसी तरह युग मन्दिर उन्नाव में अपनी बंगला तथा अंग्रेजी पुस्तकें छूटने का उल्लेख निराला करते रहते।

दारागंज में उनके पास गिनी-गिनाई पुस्तकें थीं जो खुली आलमारी में फैली रहती थीं। ये थीं —'शार्टर बास्वेल', 'सो आई बिकेम मिनिस्टर',

'एनसाइक्लोपीडिया', 'टेम्पेस्ट', 'हेमलेट' तथा 'कम्प्लीट वर्क्स आफ मिल्टन।'

वे बताते कि साहित्यकार संसद में भी उनकी कुछ किताबें छूट गईं जो गंगा प्रसाद पाण्डेय के पास हैं। कुछ पुरानी पाण्डुलिपियों के भी उन्हीं के पास होने की चर्चा करते।

निराला जी को जो पुस्तकें भेंट की जाती या सम्मति हेतु आती उनमें से 40-45 पुस्तकें मेरे पास थी। उनमें से कुछ पुस्तकें तथा हस्तलिपियां मैंने प्रयाग संग्रहालय को सौंप दीं। तब डॉ. सतीशचन्द्र काला क्यूरेटर थे।

निराला के पास जितनी भी पत्रिकाएं आती वे ठाकुर परिवार वाले ऊपर उठा ले जाते। भूली भटकी प्रति हमारे हाथ लगती।

पत्र पत्रिकाओं में निराला की रचनाएं एवं प्राप्त पारिश्रमिक

मैंने निराला की रचनाएं भेजने का एक रजिस्टर बना रखा था। आज जब उलट कर देखता हूँ तो 1952 से जून 1954 के बीच 147 पत्र तथा बुक पोस्ट भेजने का विवरण मिलता है। मैंने निराला जी की रचनाएँ धर्मयुग, नई धारा, पाटल, अवन्तिका, प्रकाश (साप्ताहिक पटना) ज्योत्स्ना, आज, अमृत पत्रिका, सरस्वती, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, भारत, कल्पना (हैदराबाद) आजकल, नया पथ, नया समाज (बम्बई), अजन्ता (हैदराबाद) आदि पत्र पत्रिकाओं में भेजीं। इन दो वर्षों में निराला जी की 35 रचनाएँ प्रकाशित हुई और निराला जी को इनसे 867 रूपये पारिश्रमिक के रूप में प्राप्त हुए।

निराला जी को अन्य स्रोतों से भी जो राशि मिली उसका भी मैंने हिसाब रखा। उन्हें कलकत्ता अभिनन्दन के समय एवं साहित्यकार संसद, भारती भण्डार आदि से रायल्टी के रूप में 2500/- रूपये नकद मिले जिसे उन्होंने अपने पुत्र एवं पौत्री छाया को दिया। निराला जी ने गंगा प्रसाद पाण्डेय को भी लीडर प्रेस से 800/- दिलाये। कहा गया कि यह उस ऋण का भुगतान था जो उन्होंने निराला को कभी दिया था।

यद्यपि हिन्दी प्रचारक तथा कल्याण दास के यहां से (बनारस से) रायल्टी की राशि आई किन्तु निराला जी ने उसे नही ली।

निराला जी ने तमाम मनीआर्डर यह कह कर लौटा दिये कि वे हस्ताक्षर नहीं करेंगे। बाद में पोस्टमैन से कहकर कमला शंकर जी के माध्यम से मनीआर्डर की राशि ली जाती रही।

निराला जी का कोई बैंक एकाउंट नहीं था अतः जो भी चेक आते वे या तो पड़े रहते या लौटा दिये जाते।

सरस्वती के इस पुत्र को लक्ष्मी से बेहद अरूचि थी।

बीमारियों का ताँता

1929 से 1961 के बीच निराला जी कई बार बीमार पड़े. कलकत्ते में बीमार पड़े तो 1929 में काशी आकर इलाज कराया। उन्हें भयंकर रोग हुआ था। वाचस्पति पाठक इस गुप्त बीमारी का प्रायः मजाक उड़ाते।

दूसरी बार 1942 में वे अपने मित्र रामलाल गर्ग के घर भरकारी (कल्ली) गये तो मलेरिया से ग्रस्त हो गये। उनका 8 पौंड भार घट गया था। वहाँ से इलाहाबाद लाये गये तो स्वस्थ हुए।

1943 में उन्हें दाँतों की पीड़ा हुई। किसी दवा के लगने से उनके होठ और ठुड्डी का एक हिस्सा जल गया था।

1945 में शिवमंगल सिंह सुमन तथा डॉ. रामविलास शर्मा को लगा कि वे मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं अतः उन्हें ग्वालियर के एक मनोचिकित्सक को दिखाया गया।

1941 में वे डलमऊ में एक महीने शय्याशायी रहे।

1949 में पुनः डलमऊ में अनुष्ठान करने और बाद में सिर पर दो बड़े घावों, उंगलियों के सूजने का उल्लेख निराला ने अपने पत्रों में किया है।

1950 के बाद निराला कई तरह के रोगों से त्रस्त रहे।

1952 में दाहिनी भुजा ऊपर नहीं उठती थी इसलिए लिखने पढ़ने, शौच जाने में तकलीफ थी।

फरवरी 1954 में माघ मेले के अवसर पर घर से बाहर सोये तो भीग जाने से बीमार पड़ गये। अक्टूबर में अस्थि संधि रोग से पीड़ित होने से चलने-फिरने उठने बैठने में कष्ट होने लगा। उन्हें सिविल सर्जन देखने आते रहे।

अप्रैल 1955 में निराला के स्वास्थ्य की परीक्षा के लिए सरकारी डॉक्टरों का एक दल प्रयाग आया।

अगस्त 1960 से निराला की दशा बिगड़ने लगी। वे पेचिश, शोथ, ज्वर तथा खाँसी से ग्रस्त रहे।

18 जुलाई 1961 को उनका शरीर फूल गया। हर्निया बाहर आ गई। 13 अक्टूबर 1961 निराला की दशा गम्भीर हो गई। 16 अक्टूबर 1961 को 9 बजकर 23 मिनट पर प्राणान्त हो गया।

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही



निराला का पागलपन

निराला के 'मूड' तथा पागलपन को लेकर प्रायः बहसें चलतीं। किन्तु निराला का मूड मौसम की तरह परिवर्तनशील तथा किसी भविष्यवाणी के घेरे में नहीं

आया। हाँ और न मानो उनके उष्ण एवं शीतल उच्छ्वास हों। लोग हार गये निराला से।

हाँ, पागलपन के बारे में लोग प्रकट रूप में तथा प्रकारान्तर से बातें करते रहे।

विनोद शंकर व्यास जब निराला से 1923 में मतवाला आफिस में मिले थे तो उन्हें निराला में असन्तुलन का आभास हुआ था। बच्चन जी को (निराला की मृत्यु के बाद) 1941 में अबोहर सम्मेलन के समय निराला में असन्तुलन दिखा।

फरवरी-मार्च 1945 में जब पद्म सिंह शर्मा कमलेश निराला जी के आवास दारागंज में रूके थे तो निराला द्वारा रात में उठकर टहलने और हँसने से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला था कि निराला में असन्तुलन है। वैसे परमानन्द शर्मा ने 1929 में ही निराला जी द्वारा उठ-उठकर टहलने, श्मशान तक जाने और हँसने का अवलोकन किया था। युग मन्दिर उन्नाव में राजेन्द्र शंकर चौधरी के साथ निराला जी ने जो मारपीट की थी, उससे यही प्रचारित किया गया कि निराला पागल हो चुके हैं। 1947 से 1949 के बीच निराला के इधर-उधर आने जाने से उनके परिवार के लोग चिन्तित रहे।

निराला सचमुच पागल हो गये हैं इसका प्रमाण 15 जनवरी 1955 को आये उस सरकारी आदेश से मिला जिसमें निराला को आगरा के पागल खाने ले जाये जाने का आदेश था। इलाहाबाद के साहित्यकारों ने इसका कड़ा विरोध किया तो 10 अप्रैल 1955 को निराला की स्वास्थ्य-परीक्षा के लिए सरकारी डॉक्टरों का एक दल आया। निष्कर्ष यह निकला कि निराला अस्थि सन्धि विकार से पीड़ित हैं। जब निराला पेचिश, शोथ, बुखार, खाँसी, हर्निया से बुरी तरह ग्रस्त हो गये तो सारे लोगों को विश्वास हुआ कि निराला अस्वस्थ रहे हैं—पागल नहीं। उनमें न उद्दंडता थी, न ही पागलों के अन्य मनोविकार।

वैसे निराला के भक्तों तथा प्रशंसकों के निराला को कभी भी पागल नहीं माना। चाहे डॉ. रामविलास शर्मा हों, डॉ. नन्ददुलारे वाजपेयी, पं. जानकी बल्लभ शास्त्री हों या गंगाप्रसाद पाण्डे किसी ने उन्हें पागल नहीं माना।

निराला का निरालापन ही सामान्यजनों को उनके पागल होने का आभास कराता। उनका स्वगत भाषण, रह-रहकर अट्टहास, उनकी व्यंगपूर्ण बातें, उनके कुछ अटपटे शब्द यथा सरकार, नाल, राज, आफिस, आर्डर आदि सामान्य लोगों की समझ की परिधि के परे होते। वस्तुतः वे परमहंस का जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनके कदम धरती पर पड़ते किन्तु उनके मनोभाव आकाश को चूमते। लोगों को वह फक्कड़, मस्तमौला, पागल, विक्षिप्त दिखता। लेकिन वे ही लोग निराला की दानवृत्ति, अनाथों के प्रति उनकी उदारता, उनकी सिंह-गर्जना वाली वाणी से चमत्कृत भी होते रहे।

निराला अपने जीवन काल में पौराणिक पुरूष बन गये थे। न जाने कितनी किंवदन्तियां उनसे जुड़ चुकी थीं।

निराला का निरालापन

निराला नाम उनके निरालेपन के कारण नहीं पड़ा था। साहित्य में वह उनकी अद्वितीयता का सूचक था। किन्तु जीवन के क्षेत्र में—सामाजिक स्तर पर—निराला सचमुच निराले थे। उनके आचार-विचार कभी विशुद्ध वैष्णवों के लगते, तो कभी शाक्तों के।

निराला को उपवास या व्रत में, दुर्गा पाठ में तथा सरस्वती पूजन में अटूट श्रद्धा थी।

निराला में परूषता के साथ संगीतात्मकता थी।

वे अनेक ग्रामीण संस्कारों को जीवन भर छोड़ नहीं पाये—उन्हें गले से लगाये रहे।

उनकी सुरती(खैनी) की आदत, पान खाने की आदत तथा कसरत करने और घी खाने की आदत—ग्रामीण परिवेश से मिलीं।

कान्यकुब्ज कुल में मांसाहार तथा शराब पीना वैध हैं। निराला खुलकर मांस तथा मद्य का प्रयोग करते। जो लोग चिढ़ते उन्हें चिढ़ाने के लिए मांस-मद्य का प्रयोग अवश्य करते।

निराला जी का विश्वास था कि कुछ न खाने से (उपवास) बुखार दूर होता है। फलतः वे हफ्तों निराहार रहते—कभी शाक खाते, कभी दूध पी लेते। वे उपवास और व्रत में भेद करते थे। दुर्गाष्टमी के अवसर पर वे व्रत रखते थे—कहते, इसमें मांसाहार तथा मद्यपान वर्जित हैं। वैसे वे गीता, रामायण, दुर्गापाठ न करते किन्तु दुर्गाष्टमी पर दुर्गा सप्तशती मँगाकर पाठ करते। सरस्वती पूजन भी उनके लिए विशेष महत्व रखता। ये दोनों अनुष्ठान उन्हें बंगाल से संस्कार रूप में मिले थे। संगीत भी वहीं से सीखा और रवीन्द्रनाथ की रचनाओं के प्रथम प्रशंसक होने के कारण स्वय भी संगीत के प्रति उन्मुख होते रहे। वे भातखंडे स्कूल को वरीयता न देते।

निराला का मांस प्रेम

निराला यदि यह न लिखते कि "मनोहर अखंड भारतीय—मैं प्रत्यक्ष राक्षस—रोज मांस खाता" तो शायद यह पता न चलता कि निराला अपने विवाह के समय से ही मांसाहारी थे।

किन्तु निराला को कब मद्य प्रेम हुआ—यह प्रश्नवाचक है। वैसे लगता यही है कि कलकत्ते में उग्र जी की संगति से शराब के प्रति झुकाव हुआ होगा।

'चतुरी चमार' कहानी में निराला अर्जुनवा (चतुरी चमार के लड़के) से गुरू दक्षिणा के रूप में रोज बाजार से गोश्त (मांस) मंगवाते।

1936 में जब निराला लीडर प्रेस आये तो पाठक जी ने उन्हें मछली बनवाकर खिलाई थीं। (यह मछली प्रेम शायद बंगाल की देन है)।

एक स्थान पर निराला ने लिखा है—

"एक दफा लखनऊ में एक मुसलमान सज्जन के साथ में पुलाव कबाब और रोगन जोश आदि खा रहा था। वह मन ही मन यह अक्ल ऐंठ रहे थे कि अब इसे मुसलमान बनाया.... मैंने कहा—मैं मुसलमान नहीं मुसलिम ईमान।"

डॉ. रामविलास शर्मा ने (निराला की साहित्य साधना भाग 1 पृष्ठ 539) में ठीक ही लिखा है—

"मद्यपान और मांसाहार अब बहुत सामान्य हो गये हैं। निराला के यौवन काल में राजसी अथवा ठेठ निम्नवर्गीय संस्कृति के अंग थे। कान्यकुब्जों में बहुत से लोग गोश्त खाते थे शराब पीते थे।"

फिर निराला तो गालिब के प्रशंसक थे। राहुल सांकृत्यायन के साथ "वैदिक भोजन" कर चुके थे।

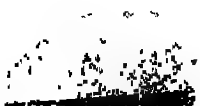
निराला का दुःख

डॉ. रामविलास शर्मा बहुपठित आलोचक हैं। वे निराला के दु.ख को बहुत गहरा बताते हैं किन्तु निराला के भी दुःख से गहरा दुःख मार्क्स का था—उसका पुत्र मर गया था और उसके पास एक भी पाई न थी।

सचमुच साहित्यकारों तथा विद्वानों पर दुःख के बादल छाते ही नहीं रहते, वे अपार पीड़ा की वर्षा भी कर देते हैं।

निराला ने दु.ख को दुःख नहीं माना। दु.ख का तो पहाड़ था उनके जीवन में। वे इस दुर्लंघ्य पहाड़ को भी पार करने का व्रत ले चुके थे। वे चूं भी नहीं करते थे। यह तो देखने वालों को समाज को—अनुभव हो रहा था। यही होना भी चाहिए।

कष्ट की गहराइयों में डूब कर
जो खिला पहले वही जल जाता है।



3

निराला ने जो कहा

संस्मरणों में निराला

(12 वर्ष)

1950 महादेवी समक्ष तथा परोक्ष में

'महादेवी के बारे में मुझे इतना ही ज्ञात है कि समक्ष वे कुछ और हैं और परोक्ष में और। कुछ उन्हें गद्य लेखिका, कुछ कवियित्री कहते हैं परन्तु मेरी दृष्टि में वे एक प्रौढ़ गद्य लेखिका हैं।

एक बार उन्होंने मेरी पुस्तक की भूमिका इतनी सुघर लिखी कि मैं चकित रह गया। परन्तु उसके प्रत्युत्तर में मैंने प्रौढ़तर गद्य लिखा। निश्चय ही वे आगे गद्य में अच्छा नाम कमावेंगी।

हाँ एक बात और वे कवियित्री रूप में जो कुछ हैं वह हमीं से हैं। उनकी गीतियां भी अभिनन्दनीय हैं।'

1951 यहीं मरेंगे

'अब हम प्रयाग छोड़ कर कहीं नहीं जावेंगे। अन्त में हम प्रयाग इसीलिए आये हैं कि यहीं मर जायं।' फिर एक पंक्ति सुनाई "सच कहता हूँ मुझे झूठ बोलने की आदत नहीं।"

1951 प्रयाग नहीं कचपुरवा

मैं 21 शहरारा बाग में बीमार पड़ा तो निराला जी देखने आये। सामने से रेलगाड़ी जाते देखकर बोले—

"यह प्रयाग पहले ऐसा न था। इसे कचपुरवा आज भी कहते हैं जिसका अर्थ है कच्+पुर—पहले रेलें आदि न थीं। यह सामने वाली रेल हमारे आगे आई। इसकी वजह से सामने भरा-भरा लगता है।"

1950-51

देवी जी की अभ्यर्थना

'मेरी समझ में आज तीन ही महिलाएं भोजन-कला में दक्ष हैं—प्रथम सुमित्रा कुमारी, द्वितीय सुधा और तृतीय चन्द्रकान्ता। इन तीनों के यहां मैंने भोजन किया हैं।

हाँ, देवी जी की डिशेज रायल होती हैं। वहां हमने अक्सर भोजन किया है। बीस प्रकार के व्यंजन होते हैं।'

सुमित्रा कुमारी की हस्तलिपि

'सुमित्रा कुमारी और मेरी हस्तलिपियाँ इतना साम्य रखती हैं कि मैं आज ही तुम्हें यह दिलाने के लिए उन्हें पत्र लिखूंगा कि 32 पृष्ठ साफ-साफ लिखकर गीत भेजे दें। लपेटवां लिखावट होने पर भी वह बहुत सुन्दर होती हैं।'

1951

हम अपना समाज न देख पाये

'हमने साहित्य के अध्ययन में इतना समय लगाया कि हमें इतनी फुरसत ही न रही कि हम अपना समाज देख सकते। हमने संस्कृत, फारसी, उर्दू, अरबी, अंग्रेजी, लैटिन, रशन, जर्मन भाषाओं का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। फास्ट का हमें पूर्ण ज्ञान है और टेनीसन आदि अंग्रेजी कवियों ने अति प्रशंसनीय कार्य किया है।'

'हिन्दी साहित्य के अध्ययन के लिए संस्कृत अध्ययन अत्यावश्यक है। कौमुदी के कुछ अंश एवं महिकाव्य तथा नैषध का पाठन आवश्यक है।'

'हम अध्ययन में इतने संलग्न थे कि हमसे समाज की वास्तविक हालत छिपाई गई परन्तु आज हमें उसका वास्तविक रूप दिखाइ देता है। अतः हम बिल्कुल शान्त हैं। कर ही क्या सकते हैं ?'

शिक्षा

हम विदेश गये

'हमने पहले ग्रैजुएशन किया। फिर डाक्टरेट ली और बाद में डी लिट (लंदन) किया।'

'हम विदेश गये। न्यूयार्क, कैम्ब्रिज में हमारे लेक्चर हुए, जितनी किताबें तुम देखते हो वे सब हमारी बनाई हुई हैं।'

'सबसे पहले जब यूनिवर्सिटी खुली थी तो हमने चेयर होल्ड की थी और हमारी स्पीच हुई थी। अब हम गवर्नमेंट से कहकर रिटायर हो आये हैं। अब हमने अपना अलग हिसाब बना रखा है।'

"दिख्यो! य हमार फोटो बिल्कुल कवीन्द्र से मिलत-जुलत ह। हम यही बारे या दाढ़ी तब बढ़ावा रहे"— अपनी एक पुरानी फोटो को देखकर निराला ने ये शब्द कहे।

हिन्दी में बहुत लिख चुका

मैं—पंडित जी! आप कुछ लिखते क्यों नहीं?

निराला—"अब तो मैं अंग्रेजी में कविता लिखने वाला हूँ। शेक्सपियर और मिल्टन का अध्ययन कर रहा हूँ। हिन्दी में तो बहुत कुछ लिख चुका।"

मुझे आटोबायोग्राफी लिखने की आवश्यकता नहीं

मैं—"पंडित जी! आप अपनी बायाग्राफी क्यों नहीं लिख डालते?"

निराला—"मेरे विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, जाकर पढ़ लो लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

मैं—पंडित जी! आप कोई महाकाव्य लिखें।

निराला—अनेक महाकाव्य हैं। तुलसी का मानस क्यों नहीं पढते।

* * *

सरदार वल्लभ भाई पटेल का देहान्त 15 दिसम्बर, 1950 को हुआ। संगम में उनका अस्थि प्रवाह होना था। मैं निराला जी के पास गया था। पूछा आप अस्थि प्रवाह देखने चलेंगे?

निराला "हम नहीं जावेंग। यहीं से हम उनके लिए मंगल पढ़े लेते हैं। वे एक महापुरूष थे।"

* * *

एक प्रेस रिपोर्टर ने पूछा "निराला जी आपके राजनीतिक तथा सामाजिक विचार क्या हैं?" इस पर निराला ने चट से उत्तर दिया—"निराला के राजनैतिक तथा सामाजिक विचार यह हैं कि कुछ नहीं हैं।"

* * *

घी भोजन का सार

एक दिन बोले "तुम दोनों आज यहीं भोजन करोगे।"

मैं—"आप अकेले हैं। भोजन बनाने में कष्ट होगा।"

निराला—"नहीं हम स्वयं बना लेंगे। एक जून बनाकर दूसरी जून के लिए रख देंगे। दाल तो खाते नहीं। पराठे बना लेंगे। घी तो भोजन का सार हैं। यदि घी हुआ तो पूड़ियां बना लेंगे। घी रहे तो कोई चीज हो या न हो काम चल जाता है।"

* * *

चन्दू से बोले—"आज हम तुम्हारे यहां भोजन करेंगे। दाल में 40 जवा लहसुन और कपित्थ डाल देना।"

* * *

हरे राम नाम का एक लड़का कलामन्दिर में नौकर का काम करता था। हम दोनों भाई पहुंचे तो निराला जी उससे बोले, "हरे राम। चाय लाना। ये दो जन भी आ गये हैं।"

* * *

हमें देखकर बोले, "चंदू के हियां तो नहीं गयो ? चलो चली। चाय आज होंइन पी जाय।" दरवाजे पर पहुंचकर जंजीर खटकाई और भीतर जाकर जमीन पर बिछे बिस्तर पर बैठकर बीड़ी सुलगाई और चाय आई तो बोले, "कुछ नास्ता नही है का? नमकीन या काजू लै आवो ?"

भउरी से भउरहा

एक दिन बोले—

"हमें भउरी बहुत पसन्द है। कण्डा के भउर बनाय कै आटा सान कै लोवा बनाय कै डाल दीन कि फूल कै कुप्पा जैसे रोइ जई। फिर निकाल कै चिव, नून या आलू के भर्ता के साथ खायमाँ बहुत मजा आवत हैं। य तो पहलवानन का भोजन आय ओर हमें बहुत पसन्द है। तुम तौ भउंरहा मिसिर हौ। यही से कहित है कि भउरी हमें बहुत पसन्द है। तुम्हें पसन्द हे कि नही? **भउरी से भउरहा** बना है।

महिषादलमां पहिले बंभनन कै पेठ बहुत रही। खासा जमघट रहा। अच्छे पहलवान, मेहनती रहत रहे। बाद मां सब उखड़ गा। दुइ एक पहलवान तुम्हरी तरफ के रहे। हम उन्हें खूब जानित है।"

अब हम कहीं नहीं जावेंगे

एक दिन चन्दो के घर पर अपनी भ्रमणशीलता का वृत्तान्त बताने लगे—

'हम पैदर खूब घूमां। जमुना के तीर-तीर हम प्रयाग से पच्छिम दूर तक गवा। पांवन कै दुर्दशा होइ गै। अब चला नहीं जात। पांव गवाही देत हैं!

चित्रकूट बरसात मां बहुत अच्छा लागत है। बरसात मां एक बार जरूर जाब। हम तो कई बार गवा। अब हम न जइबे। हमसे चला नहीं जात। न हम अब प्रयागे छोंड़बे। तुम लोग चले जाव। चन्दू वौ चली जायं। हमैं बडी तकलीफ होई।'

हजारीलाल अग्रवाल, क्लाथ मर्चेन्ट, दारागंज

पुरजा श्रीमान् पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी जी का

140/- ता. 19.08.50

140/- साड़ी बनारसी 1

81/- ता. 27.11.50

30/- कंभल 1

51/- टुइड ऊनी गज 3

5/- ता. 13.01.51

5/- चद्दरा 1

226/- रुपया

द. हजारी लाल अग्रवाल

30 07.51

बिल (अंग्रेजी में)

जनवरी का बकाया, 14-14-6

1 फरवरी काजू 2 छटांक -9-0

2 फरवरी घी 1 छटाग -5-6

4 फरवरी काजू 2 छटाग -19/ -11-6

छुहारा 1 छटांग -12/6

5 छुहारा 2 छटांग 1-15-0

घी 1 पाव

6 छुहारा 1/2 पाव -11-6

काजू 1 छटांग

सागु 1 छटाग

7 काजू 1 छटांग -4-6

8 काजू 1 छटांग -4-6

9 काजू 1 सेर नं. 2 3-12-3

रेक्सोना

12 दाल उरद, धुली 1 1/4 सेर 1-1-6

17 काजू किसमिस 3/4 पाव -10-6

19 काजू किसमिस 1/2 पाव -7-0

23 दाल उड़द धुली 1/2 सेर -11-6

किसमिस 1 छटांग

26-6-9

31.7.51 को 13 अप्रैल तक का पूरा हिसाब 32-14-3 था।

हम हस्ताक्षर नहीं करेंगे

निराला जी प्रायः उधार सामान लाते रहते थे। एक दिन एक दुकानदार 31 रुपये 13 आने 9 पाई का बिल लेकर निराला के पास पहुंचा तो निराला जी ने उस पर लिख दिया।

Manager Leader Press

Pay the amount of Rs 31/13/9 in presence of an officer

The Founder

दुकानदार लीडर प्रेस गया किन्तु उसे यह कहकर लौटा दिया गया कि जाकर निराला से हस्ताक्षर करा कर लावें।

जब वह निराला के पास आया तो निराला बिगड़कर बोले,"किस निराला के दस्तखत चाहिए। The founder लिखा तो है। जब ऊपर Accounts of Mahakabi Nirala लिखा है तो उससे क्या मतलब निकलता है? चले जाओ—**हम हस्ताक्षर नहीं करेंगे**। उनसे जाकर कहो कि अब वही आवेंगे और पूरा-पूरा राज लेंगे। तब लेने के देने पड़ जायंगे।

बहुत जिद करने पर अन्त में निराला पसीजे ओर बोले अच्छा हमीं किसी दिन तुम्हारे साथ चले चलेंगे।"

पन्त जी तो राजकवि हैं

"पन्त जी तो राजकवि हैं। हमीं इस प्रकार रह रहे हैं। हमारे सभी साथी धन कमाकर आनन्द से रह रहे हैं।"

ब्राह्मण कि ब्राहमिन

निराला जी कलामन्दिर के सामने बैठे पत्र पढ़ रहे थे। एक राहगीर ने पूछा,"ब्राह्मण शब्द की क्या उत्पत्ति है?"

निराला ने गम्भीर होकर कहा, "हम तो अंग्रेजी जानते हैं। उसमें कहीं 'ब्राह्मण' शब्द नहीं है—उसमें 'ब्राह्मिन' है। यद्यपि कान्याकुब्ज तथा वैदिक सम्पत्ति आदि पुस्तकें हैं। किन्तु हमने अंग्रेजी में शेली और शेक्सपियर देखे है। उन्होंने इस शब्द का उल्लेख नहीं किया।

उच्च शिक्षा क्यों ?

एक बार मुझसे रसायन विज्ञान में Practicals कैसे किये जाते हैं इस विषय पर बातें कर रहे थे। थोड़ी देर बाद वे कुछ सोचकर बोले—

"किन्तु यह अर्ध शिक्षित जनता जो चौपायों से थोड़ी ही ऊपर है। किस प्रकार सन्तोष करें कि विज्ञान की प्रैक्टिकल्स (प्रयोगात्मक) प्रणाली उन्हें फायदेमन्द

होगी। जब तक आम जनों (Laymen) के समक्ष विज्ञान का साबुन और अन्लकार खानों के रूप में परिवर्तित करके दिखा न दिया जाय, विश्वविद्यालयों का यह विश्लेषण-प्रयोगात्मक (Analytical Work) कार्य श्लाध्य न होगा। क्या तुम्हारे प्रधानाचार्य यह बता सकते हैं कि तुम्हें इस डिग्री के पश्चात् वे इस कार्य के उपयुक्त समझेंगे कि तुम जनता का हित करोगे। यदि नहीं तो चेयर होल्ड करने का उन्हें कौन सा अधिकार है? यदि तुम्हें नोकरी मिलने या विदेश भेजने का जिम्मा नहीं लेते तो वे तुम्हें उच्च शिक्षा के लिय प्रोत्साहित क्यों करते हैं।"

हम बूढ़े हो गये

हम पहिले ही कह चुके हैं कि भादों-कुँवार में हमारा वजन 10-15 सेर घट जाता है और बाद में वह पूरा हो जाता है। किन्तु शायद अब ऐसा न हो क्योंकि हम **बूढ़े हो गये** हैं। स्वास्थ्य ठीक न रहने से आजकल हमने पढ़ना बन्द कर दिया है।

1952
मैं साहित्यकार संसद नहीं गया

मैंने पूछा, "प. जी! आप श्री गुलाब राय को पुरस्कार मिलने के उपलक्ष्य में तथा मैथिलीशरण गुप्त और महादेवी वर्मा के राज्य परिषद में चुने जाने के उपलक्ष्य में साहित्यकार संसद में जो समारोह हुआ उसमें आप गये कि नहीं ?"

निराला जी अंग्रेजी में बोले, "मैंने इनकार कर दिया। मुकुल नाम के एक कवि आये थे जिन्होंने राजस्थानी में एक सुन्दर कविता सुनाई। वे इलाहाबाद के प्रदीप जेसे थे। राजस्थानी अच्छी भाषा है, ण स भरी हुई।"

संगीत संध्या

जून का महीना था (29.06.52)। कमला शकर सिंह ने श्रीनारायण चतुर्वेदी की बगिया में एक **संगीत समारोह** का आयोजन किया था। कार्यक्रम 6½ बजे शाम से 9 बजे तक चला। इसमें जानकार जी, नाहर जी, कुमारी दमयन्ती बी.ए, कुमारी भाटिया, लीला आदि ने भाग लिया। संगीत शास्त्रीय तथा भावात्मक दोनों प्रकार का था। इस समारोह की अध्यक्षता श्रीमती विद्यावती कोकिल ने की।

निराला जी ने अंग्रेजी में सबों का स्वागत किया। जब एक छोटी बालिका ने निराला को जुही की माला पहनाई तो निराला जी ने वह माला उलट कर उसे ही पहनाते हुए कहा—"यह कोमल सुगन्धित माला तुम्हें ही शोभा देगी।"

कार्यक्रम निराला जी की वाणी वन्दना से शुरू हुआ। अन्य लड़कियों ने निराला के ही गीत गाये। किन्तु दमयन्ती ने पन्त जी की कविता "छोड़ द्रुमों की मृदु छाया—बाले तेरे बाल जाल में उलझा दूँ कैसे लोचन" गाया। निराला जी का ध्यान

आकृष्ठ करने के लिए यह गीत काफी था। उन्होंने अंग्रेजी में कहा, "तुम सर्वश्रेष्ठ गायिका हो। एकान्त मे रियाज करो तो सुधार आवेगा।"

अन्त में निराला जी ने हाथ में हार्मोनियम ली और अपनी गजल प्रारम्भ की। आंगिक संचालन के कारण हार्मोनियम से हाथ अलग हो गया तो एक अन्य व्यक्ति ने हार्मोनियम सभाली। वे पूर्ण ताल के साथ गा रहे थे—बड़ी ताल। गाते-गाते उठने लगे—पसीना आ गया। कहने लगे, "गाने का अभ्यस्त नहीं हूँ फिर कहीं सुनाऊंगा।" यह कहते हुए बाहर चले गये।

1952

कमला शंकर सिंह से बोले

"कल लीडर प्रेस चलना है और अन्तिम बार प्रयास करना है कि आफिस क्लियर हो जाय। नहीं तो अब हम भी कुछ करके दिखावेंगे। हम अपने हाथ का ट्रीटमेंट भी कराना चाहते हैं।"

1952

यह निराला है

एक बार निराला जी दारागंज स्टेशन के प्लेटफार्म में घूमने गये तो ट्रेन आ गई। जब टिकट चेकर ने उनसे टिकट मांगा तो निराला ने जवाब दिया, "क्या तुम नहीं जानते कि यह निराला है। दारागंज ही इसका वास है—अन्यत्र नहीं जाता। तो फिर टिकट का हिसाब कैसा ?" इस पर उस टिकट चेकर ने क्षमा माँगी और कहा कि वह उनसे परिचित न था।

चाय मुसन्नस है या मुजक्कर

नौकर ने कहा, "चाय बन गया"। (नौकर बलिया का था)।

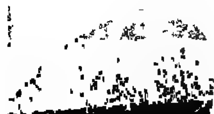
निराला—"चाय मुसन्नस है या मुजक्कर। तो फिर बाहर क्यों आया वहीं रहता।"

1952

तुम्हारे लिए चाय बना लावें

मुझसे बोले, "आटा वगैरह चुक गया है। कमला इत्यादि घर चले गये हैं। लकड़ियाँ भी नहीं हैं। घी लेते आना। हाँ, थोड़ा आटा भी लेते आवो तो और अच्छा। कई रोज से एक जून ही पकाया करते थे। डेढ़ सेर दूध लाते थे। काफी हो जाता था।

बैठो। तुम्हारे लिए चाय बना लावें।"



बिना भोजन के

इसी प्रसंग में चन्दो ने बताया कि हमने निराला जी से भोजन करने के लिए कहा तो बोले, " तो तुम चाहती हो कि हम व्रत तोड़ दें आज व्रत का सातवां दिन है—कमला इत्यादि घर चले गये हैं। यद्यपि निराला जी चंदो के यहां रोज चाय पी जाते थे किन्तु उन्हें यह नहीं बताया था कि वे बिना भोजन किये रह जाते हैं।"

विज्ञान भी पढ़ा है

एक बार बोले, "हम तो वैज्ञानिक हैं। हमें किसी भी वस्तु का वैज्ञानिक सत्य प्यारा है। मैंने विज्ञान भी पढा है यह जो "alkali sats है वास्तव में व अल+कली यानी not festole हैं। Organic chemistory तो मानव जीवन की सार्थक शाखा हैं। गो कि विज्ञान की उपादेयता आज मानव सुखों का प्रबन्ध न कर सके परन्तु उनमें छिपा रहस्य और सत्य वह तथ्य है जो किसी को असत्य न प्रतीत होगा। पहले practical फिर theory बनी। और High Maths का उचित उपयोग इन सत्यों को सूत्रों के रूप में सुरक्षित रखने में है। समय पाकर फिर यही Practice का रूप धारण करते हैं।

अप्रैल, 52

कहो तो यहीं छने

आजकल गर्मी अधिक बढ़ गई है। हम इधर-उधर बका करते हैं। दिमाग ठीक नहीं रहता जिससे इधर-उधर भी बक जाते हैं परन्तु तुम इसका ख्याल न करना एक दिन कहो तो यहीं दारागंज में छने। घी लेते आना। हम भोजन बना देंगे।

बाहुपीड़ा, हमारे बाबा को भी लकवा था

हमारी बाँह की पीड़ा का एक और कारण हो सकता है। हम कुश्ती लड़ते थे तो बुरी तरह से Shocks लगे थे। अब वृद्ध हो गये हैं। 20 सेर वजन कम हो गया है। उम्र दूसरी है। इसीलिए अब दर्द हो रहा है। हाथ ऊपर नहीं उठता। हम सवारी पर (Conveyance) पर अच्छी तरह चढ़ नहीं सकते। इसीलिए कहीं आने जाते नहीं। बड़ी मुश्किल से भोजन कर पाते हैं। हमने Pen hold करना बन्द कर दिया हैं।

अन्य अवसर पर बोले, ' तीन दिन में शाम को कुछ नहीं खाते। देखते हैं कुछ लाभ हो। अब आज से (27/10/52) तेल मालिश बन्द करो। इस जीर्ण हाथ के साथ स्थूल शरीर का कोई मेल नहीं इसलिए इसे सुखा रहे हैं।हमारे हाथ में Paralysis है। हमारे बाबा को भी Slow paralysis हो गया था।"

निराला जी ने 27 11.52 को शिवचन्द्र शर्मा, पाटल सम्पादक को एक पत्र लिखा था—

प्रियवर,

प्रमोद सिविल लाइन्स की तरफ रहते थे। तिवारी के यहां स्थानाभाव कहा गया था। इधर एक अरसे से उनका संवाद नहीं मिला। कुछ जानते हैं तो लिख कर निश्चित कीजिये। बुखार आ गया था। अब अच्छा हूँ। इति

आपका निराला।

शिवचन्द्र शर्मा और पटना से निकलने वाली "पाटल" पत्रिका के सम्पादक के, प्रमोद शर्मा के भाई थे। प्रमोद शर्मा कुछ दिन तक दुल्ली तिवारी (चन्द्रकान्ता के पति) के घर पर आकर रहे थे। निराला जी से प्रमोद शर्मा संस्कृत में बातें करते थे। निराला जी इस दुबले-पतले युवक की संस्कृत वक्तृता से प्रभावित थे। प्रमोद शर्मा निराला के कलकत्ता अभिनन्दन में सम्मिलित हुए थे। बाद में वे तांत्रिक होकर हिमालय की गुफाओं में रहने लगे।

अक्टूबर, 52

हम पक्षपात नहीं करते

निराला जी के पुत्र रामकृष्ण की पहली पत्नी से एक पुत्री थी जिसका नाम छाया था। निराला जी उसे अत्यधिक चाहते थे अतः उसके पत्र निराला जी के पास आया करते थे। उसका एक पत्र आया था जिसमें उसने निराला जी से एक कोट बनवा देने के लिए लिखा था।

निराला जी कहा, "लिख देना कि तुम्हारे बाबा कहते हैं कि उन्होंने 1200/- रूपये पर दस्तखत कर दिये हैं। रूपया मिला तो 400/-रूपये तुम्हें जरूर भेज देंगे। उसका कोट और चेस्टर सिला लेना।"

फिर बोले छाया अकेले तो है नहीं। वहां तीन और हैं। हम Partiality पक्षपात तो बरत नहीं सकतें यदि रूपया भेज दिया गया तो हो सकता है छाया को मिले ही नहीं। उसे लोग दबा लें। अतः छाया को यह भी लिख दो कि यह आकर अपनी बुआ (चन्द्रकान्ता) का कोट ले जाय। फिर व्यंग्यपूर्ण हँसी से नहीं तो चिढाना हो तो लिख दो कि तुम्हारी बुआ के लिए हीरे की चूड़ियां बन रही हैं।

मन नहीं माना तो कहने लगे, "हमने 1200/- रूपये पर अपने हस्ताक्षर तो कर दिये किन्तु अभी कुछ जवाब नहीं आया। कुछ गड़बड़ी हो गई लगती हैं। हम कुछ भी नहीं बोलेंगे। भगवान की मार से सब अपने आप ठीक हो जावेगा। हमारे सन्तोष की कोई बात नहीं....

देवी जी के यहां जाओ और उनसे पूछना कि निराला जी ने 1200/- रूपये पर हस्ताक्षर तो कर दिए किन्तु रूपया कब मिलेगा? अपरा की Advance रायल्टी दे सकें तो दे दें।"

सुधा जन्मजात कवियित्री है

एक बार चन्द्रकान्ता जी की छोटी बहिन सुधा जा कवियित्री हैं, उनके विषय मे चर्चा चली तो निराला जी बोले—

"कोन कहता है कि सुधा कवियित्री नहीं। सुधा तो जन्मजात (Born) कवियित्री हे। कोकिल ओर सुमित्रा तो Begged हैं। हम उनकी शिक्षा के बारे में नही जानते किन्तु हमने कई बार कवि सम्मेलनों में गाते सुधा को सुना है। बहुत ही मधुर स्वर है।"

हम लेक्चर देते थे

एक दिन निराला जी कहने लगे—

"जब हम लखनऊ में थे तो रामविलास अंग्रेजी के डॉक्टरेट के लिए पढ़ रहा था। वह पांच साल तक हमारे साथ रहा। हम प्राय: उसके क्लास लेकर लेक्चर देते थे। किन्तु अब तो हम थ्योरी ओर प्रैक्टिस दोनों स अलग हो गये हैं। हमारे अंग-अंग टूट चुके हैं।.... हमने तुम्हें सभी प्रकार से enlightan करने का प्रयत्न किया आर सफल भी रहे।"

नि. माने निराला

बाँके बिहारी भटनागर 5 दिसम्बर 1952 को आये तो निराला जी ने 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के लिए 4 गीत (आराधना के गीतों मे से) नकल करवाये ओर उनके नीच "हिन्दुस्तान-नि." करके हस्ताक्षर कर दिया। शायद पहली बार निराला नि. लिख रहे थे।

फिर बोले "Power is respected। इसीलिए अंग्रेजी मत भूलो। हम इसीलिए हिन्दी या बंगला नहीं बोलते।"

फिर कहा, "पत्रिका जाकर कहना कि एक डी लिट अंग्रेजी कविता छपाना चाहता है। क्या पारिश्रमिक इस योग्यता वाले कवि को देंगे? हाँ, मेरा नाम मत बताना। हम अब अंग्रेजी में कुछ लिखना चाह रहे हैं।"

तीन प्रकार का सेवन

निराला कमला शकर सिंह से कह रहे थे—

"जवानी मे मछली, मांस और मद्य-तीन प्रकार आवश्यक हैं। इनका सेवन हम करते रहे। लोग मांस खाना जानते ही नहीं। उसमें गुच्छी पड़ती है जो 24 रूपये सेर है। उन्नाव में हमारे जीर्णशीर्ण घर में 1 सेर तक कुकुरमुत्ते उगत थे। हम सुखाकर रख लेते थे। हम तुम्हें साग के साथ मांस बनाकर खिला चुके हैं। तुमने अच्छा मांस खाया न होगा।"

"गुच्छी पजाब में सरस्वती नदी में उगती है फारस में भी उगती है इसके बनाने में आधा सेर घी लगता है दो घट तक तीन पाव पानी डालकर पकाया जाता है बाद में केवल घी रह जाता है।"

1953

पुत्र प्रशंसा

1 जनवरी, 1953 को निराला के आत्मज पं. रामकृष्ण त्रिपाठी अपनी पुत्री छाया के साथ प्रयाग आये। निराला जी ने पत्र लिखकर बुलवाया था।

निराला जी सरकारी रूपयों पर हस्ताक्षर कर चुके थे अतः जो रूपये मिले उसमें से एक साड़ी, कोट का ऊनी कपड़ा तथा 100 रूपये नकद दिये गये। लीडर प्रेस के मेनेजर को भी 400 रूपये रायल्टी से देने को निराला ने लिखा। उसमें से आधे रूपये नगद रामकृष्ण के हाथ में दिये गये और आधे बाद में मनीआर्डर से भेजे गये। इतना ही नहीं निराला जी ने रामकृष्ण को चलते समय 'आराधना' की Rough Copy यह कह कर दी कि जाकर इसका Notation स्वर लिपि तैयार कर लेगें। दो-एक जगह अपने पुत्र का संगीत भी सुनवाया और तारीफ में कहा, "18 वर्ष का अभ्यास हैं अब डॉक्टर से भी ऊपर है। इसे रियाज का मौका मिलता ही रहता है। इसका गला अच्छा हे। पहले कुछ कविताएँ भी लिखता था। इसे हमारी सा-सवा सो कविताएं याद हैं जिनको भलीभाँति गा लेता हे। किन्तु हमारी तुलना रामकृष्ण से नहीं हो सकती।"

मेरे भाई ने इसका प्रतिवाद किया तो मुझसे बोले, "जय गोपाल से कहना कि वह कभी उस बात में हस्तक्षेप न करें जिसमे वह ग्रेजुएट न हो। वह म्यूजिक जानता नहीं तो वह कैसे कह सकता है कि निराला जी रामकृष्ण से अच्छा गा सकते हैं जब कि उसे 18 वर्ष का अनुभव है।"

निराला की चटसार का मैं एकमात्र विद्यार्थी

निराला जी ने 12 जनवरी 1953 को मुझे Twelth night पढ़ाना शुरू किया। कहने लगे, "यद्यपि आलोचक इस नाटक को उतना महत्व नहीं देते किन्तु मेरे विचार से यह अधिक महत्पपूर्ण है। इसमें व्यंग्य का बड़ा सुन्दर पुट हे। हम केवल इसी नाटक से तुम्हें सारा शेक्सपियर पढ़ा देंगे।"

नित्य 7 से 9 बजे प्रातः अंग्रेजी पढ़ाते।

एक दिन बोले "इसके बाद Midsummer night's Dream पढ़ाकर हम तुम्हें बर्नार्ड शा की Preface ला देंगे। Modern English उसी में है। उसके बाद हार्डी, किप्लिंग, गाल्सवर्दी आदि पढ़ लेना। बाद में तुम स्वयं पढ़ सकते हो। 2 साल में तुम्हें हम पक्का कर देंगे।"

जब तक तुम शब्द-ब-शब्द रट नहीं लोगे हम आगे नहीं बढ़ेंगे। अच्छा सुनाओ। शब्दों का उच्चारण नाभि के पास से आना चाहिए। गले से बाहर निकालना चाहिए। जैसे enrugh का उच्चारण एनाफ करो। ऐक्सेन्ट का ज्ञान धीरे-धीरे होगा।

हमें दिखता नहीं (अक्षर छोटे होने से) तुम्हें पढ़ाने में तकलीफ होती है किन्तु पढ़ाना आवश्यक है क्योंकि हमने तो अपने गुरूओं को खदेड़ दिया क्षेत्र से और तुम्हें तैयार कर रहे हैं जिससे तुम हमें खदेड़ सको। (हँसी होती है)

लगभग 3 मास बाद (3 अप्रैल 53) डॉ. रामविलास शर्मा को पत्र लिखवाया जिसमें अंतिम पंक्ति थी—

"I am teaching Shakespeare to him"

"नेस्फील्ड ग्रामर तुम्हारी बाइबिल होगी। याद रखो। इसे सदैव याद करते रहना, नहीं तो कहीं के न रहोगे।"

हमें एक फरसी लेना है

25 जनवरी 1953

जब मैं पहुंचा तो निराला जी बगल में रहने वाले अहीर के पास चिलम पी रहे थे। दोनों हाथों से तम्बाकू भरी चिलम लेकर निराला जी ने एक कश ली और लौटा दिया।

मेरी ओर मुखातिब होकर बोले, "हमें एक फरसी लेना है जिसमें बड़ी भारी डंडी हो और चिलम भी भारी हो। डंडी को अपने बिस्तरे के पास रखकर पिया करें तो जाड़े में बहुत स्वास्थ्यप्रद रहे।"

गालिब का मकान

निराला जी गुनगुना रहे थे "बचपन के दिन भुला न देना—आज हँस कल रूला न देना।"

फिर बोले,"सुनो! हमने गालिब का वह मकान देखा है जहां बैठकर वे कविता लिखते थे। मुंडेर पर काई लग गई थी तो उस समय उन्होंने एक शेर बनाया था। उनका मकान बहुत बड़ा और आलीशान था। दिल्ली में वह अब भी है।"

हम तो जल में रह रहे हैं

"हम इस मकान में ऐसे ही नहीं रहते। यह गर्मियों के योग्य मकान है। निचली मंजिल कम तपती है।"

फिर मुझे तितल्ले पर ले जाकर बड़ी कोठी की सबसे ऊपरी छत पर लोहे की गड़ी हुई छड़ें देखकर बोले "देखो, यह सेंट हेलेना है जहां नैपोलियन रखा गया था। हम लोग तो जल में रह रहे हैं।"



कहीं गवर्नमेंट का पता नहीं

"हमने पढ़ा लिखा, कुश्ती लड़ी, पुस्तकें लिखी, पारिवारिकता देखी। सभी किया। किन्तु अब ऊबकर संन्यास लिये हैं। कहीं भी गवर्नमेंट का पता नहीं।"

रामलाल की लड़की

मार्च 1953 में निराला जी के पुराने मित्र रामलाल गर्ग की पुत्री निराला से मिलने आई। निराला ने मुझसे बताया—

"रामलाल की पुत्री आई थी। हमें बुलाया है। कीटगंज में रह रही है। उसके पति सब इंस्पेक्टर हैं। **रामलाल की मृत्यु** हो चुकी है और वर्षों भी हो गई।.... हमें इस लड़की को कुछ Decoration present करने हैं। बहुत दिनों से कुछ दिया नहीं गया। दस बीस रूपये नहीं चार सौ रूपये में पूरी ड्रेस तैयार होगी।"

हमारे पहिचानी फिराक

भारत के सहायक सम्पादक पं. बद्रीदत्त पाण्डेय निराला से मिलने आये तो निराला जी ने पूछा—"कहाँ तक शिक्षा पाई?" इस पर वे बताने लगे कि एम.ए. में फिराक Romantic poetry पढ़ाते थे।

तब निराला ने रघुपति सहाय फिराक के बारे में बताना शुरू किया।

"पहले तो वे बाबू हो गये थे। फिर देहात से आकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। फर्स्ट आये। **वे हमारे पहिचानी हैं**। एक बार हम उनके यहां गये थे वे आठ घण्टे लगातार बिन स्वर-पात के बोलते रहे। गजब के बोलने वाले। परन्तु अंग्रेजी पढ़ाने के लिए Deligance और Scholar ship बहुत आवश्यक है जो आजकल अधिकांश प्रोफेसरों में lack करती है। एम ए. के विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए बहुत ही एकान्त की आवश्यकता होती है।"

शेक्सपियर : संसार का सबसे प्रतिभाशाली व्यक्ति

चैत्र पूर्णिमा, 1953

निराला जी हमारे साथ गंगा का दर्शन करने गये। वे पीपों के पुल तक गये। आधे घण्टे तक गंगा की धार देखते रहें। अपने वास पर आकर कहने लगे—"शेक्सपियर संसार का सबसे प्रतिभाशाली व्यक्ति था। वह होमर, डान्टे के तुल्य है किन्तु सानेट तथा ड्रामा में लाजवाब है। कालिदास ने केवल छह ग्रन्थ लिखे जिनमें शाकुन्तल, मेघदूत और कुमारसम्भव सर्वश्रेष्ठ हैं किन्तु शेक्सपियर के कम से कम 18 ग्रन्थ अद्वितीय हैं। हमारी समझ में Twelth Night शेक्सपियर की उत्कृष्ट रचना हैं इसमें कोई Flow (दोष) नहीं आने पाया।

शेक्सपियर ने कुल 25000 शब्दों का प्रयोग किया उसी के बाद शब्दकोश बने। उसकी Two Nights, Twelth night तथा Mid summer night's dream ही पढ़ लेना काफी हैं।"

हम तो फाकेमस्ती करने वाले हैं

हम तो Vagabond हैं हमें किसी प्रकार के Accomodation या convenience की जरूरत नहीं। जरूरत से अधिक वस्तुएं अब भी यहा प्राप्य हैं।

हम तुम्हें एक रहस्य बताते हैं

हम तुम्हें एक Secret बताते हैं, "स्त्री के बिना घर कुछ नहीं। दुनिया में Sex की महत्ता बहुत बड़ी हैं। तुम लोग हमारे Fellow consanguineous (अन्तरग) हो और यह हम उन्हीं से कह रहे हैं।"

निराला को ऐसी बातें बताने में कोई संकोच नहीं होता था।

गीतगुंज

'अराधना' समाप्त करने के बाद नये गीतों को "गीतगुंज" नाम से लिखने की योजना बनाते हुए निराला जी बोले—

"गीतगुंज" में हम बहुत से गीत रखेंगे। सदारंग की ठुमरी शास्त्रीय संगीत की अमूल्य वस्तु है। हरेक के पास होनी चाहिए। इसी तरह लखनऊ के कत्थक बिन्दा कालका की गजल बहुत प्रसिद्ध हैं। यह हमारे दोस्त थे।

"लखनऊ में तो उर्दू का ही बोलबाला है। फतेहपुर से हिन्दी प्रारम्भ हो जाती ह और इलाहाबाद में लखनऊ की वस्तुओं से बिल्कुल काम नहीं चलता क्योंकि यहा शुद्ध हिन्दी ही बोली जाती हे। चूँकि प्रयाग मे लखनऊ का स्टेंडर्ड कायम रखना दूभर है इसीलिए हम अंग्रेजी में बोलते हैं। "

"हम यही चाहते रहे कि कोई प्रकाशक हमसे अंग्रेजी की पुस्तक मॉगे परन्तु किसी ने ऐसा न किया।"

हमें रोज कलिया चाहिए

"न हम चन्दन लगाई, न जनेऊ पहिनी। पै हम जानित है कि हम ब्राह्मण आहिन।

हमें चीनी अच्छी नहीं लागत। याही ते बिना चीनी के चाय पीइत है। हम पूडी नहीं खाते क्योंकि हम तेल भी खाते हैं। हमें तो रोज कलिया चाहिए। यही हमारा प्रिय भोजन हैं। बस कलिया और मद्य मिलते रहें तो क्या कहना। जब हाथ चलते थे और हम कमाते थे तो लखनऊ में रोज मांस खाते थे।"

अन्य अवसर पर बोले—

हमें तम्बाकू और मांस चाहिए। तीसरे हमें एकान्त (Seclusion) चाहिए।

जब निराला जी ने हमसे राखी बंधाई

इस बार महादेवी जी लखनऊ गई थीं अतः रक्षा बन्धन के दिन हम लोगा ने निराला के राखी बाँधी। निराला जी तुरन्त 1 किलो मिठाई ले आये।

05 09 53
हम उस आक्सफोर्ड के ग्रैजुएट से कम नहीं

विश्वविद्यालय पत्रिका के लिए निराला की एक रचना के लिए एक विद्यार्थी अनुरोध करने आया था। चूँकि दो दिन पूर्व ही राधाकृष्ण नेवटिया कलकत्ता से आकर निराला अभिनन्दन समारोह के लिए आमन्त्रित करने आये थे इसलिए निराला ने कहा, "अभी तो हम कलकत्ता में होने वाले अभिनन्दन में जाने की तैयारी में लगे हैं। हम Monk हैं। हमें रूपये नहीं चाहिए किन्तु बिना हिसाब के गवर्नमेंट कहा ? जब जवाहर लाल नेहरू दारागंज तक आये थे तो क्या वे हमारे पास नहीं आ सकते थे ? क्या हमारा इतना नाम और धन जो हम छोड़ रहे हैं इतनी भी हस्ती नहीं रखता ? जब हम एम.ए. की कक्षाएं पढ़ा लेते हैं तो उस आक्सफोर्ड या एडिन्बरा के ग्रेजुएट से कम नहीं। फिर मेरी तरफ मुड़कर बोले, "तुम अपनी अंग्रेजी कलकत्ते तक चलते-चलते मजबूत कर लो वहाँ एक अंग्रेजी में और एक हिन्दी में वक्तव्य देना होगा।"

कलकत्ता की तैयारी

पाण्डेय से जाकर कहो कि हमें खुद Marketing करनी है। हमें गेरूए वस्त्र छोड़कर कलकत्ते के लिए ब्रह्मचारी का वस्त्र सफेद वस्त्र धारण करना है। अतः 4 लुंगी, एक सफेद चादर, एक दरी, तकिया, फ्लेक्स या टेनिस के जूते खरीदने हैं। इसमें 200 रूपये लगेंगे। तार द्वारा चिरंजीव रामकृष्ण, केशव तथा शिवशेखर को सूचित कर दो। तीन-चार दिन पहले आ जावें।

फिर 12.09.53 को भारती भंडार के लिए एक पत्र लिखाया कि मुझे एक मुश्त रुपये चाहिए—कलकत्ता जाने के लिए।

मार्च, 1954
कहीं के मूर्ख-निराला के बारे में क्या कहता है

गवर्नर ने निराला को 1000 रूपये मासिक सहायता का पत्र भेजा। यहाँ के जिलाधीश ने एक पत्र भेजा कि केवल 60 रुपये निराला को खर्च के लिए दिए जायें। निराला जी सुन रहे थे, बोले, "You idiot, talk of Nirala and his expenses. यह मकान उसी का है, इसका किराया वही देता है। यहा से यह सभा बर्खास्त करो।"

सैयद हुसैन एम.ए. डीलिट (लन्दन)

15 जुलाई 1954 को महादेवी वर्मा की रजत जयन्ती पर अंग्रेजी में एक लम्बी सी शुभ कामना लिखाई और उसे लीडर प्रेस में प्रकाशनार्थ भिजवाया। अन्त में सैयद हुसैन एम.ए., डी.लिट. (Eng) Lond हस्ताक्षर किये।

जब निराला ने भेंट स्वीकार की

दिसम्बर 1954 में हमारे गांव का केवट निराला के दर्शन करने हमारे साथ गया। निराला ने उसके गाँव, खेत, घर की बातें पूछीं और वह अवधी में उत्तर देता गया। जब चलने की बेला आई तो उसने निराला के चरण छुये और 1 रूपये का सिक्का देते हुए कहा, "महाराज! हम गरीबन क या मान ग्रहण करौ। हम देय लायक नहीं पै हमरे हियां ऐसन रिवाज है। महाराज! दर्शनन ते हमैं सब मिल गवा।"

निराला चकित होकर देखते रहे और वह भेंट स्वीकार कर ली

1955

मनोहरा का स्थान कौन लेगा ?

(20.02.55)

निराला जी की फिल्म बनाने की बात चल रही थी। निराला जी बोले, "मनोहरा को कौन Replace करेगा। हमारे दूसरे साथियों को साथ रहने दिया जायेगा या नहीं। हम नहीं चाहते कि भारत के सभी साहित्यकार बुलाये जावें। मनोहरा का एक चित्र महिषादल में था, उसे मंगाया जाय।"

जब उनसे उनकी 57 वीं वर्षगांठ पर अग्रवाल विद्यालय में तैयार की गई फिल्म के अंश देखने चलने के लिए कहा गया तो वे बोले, "हम फिल्म देखेंगे किन्तु जहां हमारा जीवन है, हम नहीं देखेंगे, चले आवेंगे।"

उसने अंग्रेजी में बहुत काम किया (21.05.55)

डॉ. रामविलास शर्मा प्रयाग आने वाले हैं—यह सूचना मैंने दी तो निराला जी अपनी अस्थि संधि पीड़ा भूल गये और शर्मा जी की विद्वत्ता की तारीफ करने लगे—"उसने अंग्रेजी में बहुत काम किया। हिन्दी, बंगला, फ्रेंच आदि भाषाओं का प्रकाण्ड विद्वान है। उसने बहुत कुछ Contribute किया है।"

बंगलों में रहना कष्टप्रद : दारागंज ही सबसे अच्छा स्थान

मैंने कहा कि हम लोग आपके लिए हैमिल्टन रोड में एक बंगला तलाश रहे हैं जिससे आप ठीक से रह सकें इस पर निराला बोले, "हम यहीं, इसी मकान में अच्छे हैं क्योंकि यहां हमें रहते-रहते मशक हो गया है। बंगलों में रहने से बड़ी तकलीफ होती है.... हम पहले भी बंगले में कष्ट भोग चुके हैं। साहित्यकार संसद में 49 में रह तो बेहद तकलीफ हुई। हमारे सभी मुलाकाती दूर हो गये थे। दारागंज में हमारे तमाम मुलाकाती हैं। किसी तरह गुजार देंगे। दारागंज ही हमारे लिए सबसे अच्छा स्थान है।"

वैद्य जी का अगस्त 55 में देहान्त

तैराक निराला

मेरा प्रश्न था, "क्या आप अब भी तैर सकते हैं ?"

निराला—बचपन में 4-5 मील तैरना सहज काम था। हम तो चन्द्रनगर से कलकत्ता तक तैरते थे। फिर तैराई कई तरह की होती है—हाथ बाँधकर, नदी में जाल पड़ा रहता है, नावें पीछा करती हैं। राबिन चटर्जी अच्छा तैराक है। हम भी उससे पीछे न रहते थे। अब हाथ खराब होने पर भी जल में छोड़ दिये जायं तो डूबेंगे नहीं। पाँव चलाते रहेंगे। किन्तु यह तैरना नहीं कहलायेगा।

19.07.55

बाएं हाथ में भी पीड़ा

तीन दिन से पानी बरसने से नमी थी। मेरे पहुंचते ही बोले, "इधर नमी के कारण पेट में वायु का गोला है, नाभि निकलकर बाहर आ जाती है और हाथ का दर्द तो 2¼ वर्ष पूर्व से है। पहले दाहिना हाथ दर्द करता था। अब बाएं में पीड़ा है। दवाओं से लाभ नहीं हो रहा।"

10.08.55

मुक्त छन्द मुझे अति प्रिय हैं

मेरा प्रश्न था, "पं. जी, अब आप मुक्तछन्द में क्यों रचना नहीं करते ?"

निराला—मुक्त छन्द मुझे अति प्रिय है किन्तु अब गीतों की परिपाटी पुष्ट करना चाहता हूँ। उसी में पक्के गानों का समावेश हो जाता है और मुझे आजकल इसीलिए गीत लिखने में सरलता होती है। यह नहीं है कि मुक्तछन्द में लिखना नहीं चाहता किन्तु लिख नहीं रहा। .. तमाम कवि मुक्त छन्द लिख रहे हैं। मेरी जुही की कली आज भी नई है।

तुम डी.एम. को भेजो

एक दूध वाला और एक दुकानदार अपने बिलों के भुगतान के लिए निराला के पास आये। निराला ने उनकी बातें सुनकर उन्होंने मैजिस्ट्रेट तथा कलेक्टर इलाहाबाद के नाम निम्नलिखित पत्र अंग्रेजी में लिखा और उसके नीचे हस्ताक्षर भी किया।

Dear Sir,

Kindly come to me for a hearing to make room for payment to some shopkeepers

Yours,

Nirala

एक हफ्ते बाद डिस्ट्रिक्ट मेजिस्ट्रट का चपरासी 50 रुपये लेकर आया ता निराला जी ने लेने से इनकार करते हुए कहा—इनसे कुछ नहीं होगा। जाकर डी एम को भेजना। किन्तु कमला शंकर सिह ने उस चपरासी को ऊपर बुलाकर क्या कहा पता नहीं चला।

संगीताचार्य का निधन

एक दिन कातर स्वर में बताने लगे—

"हमारे बड़े भाई संगीताचार्य, हमारे पडोसी वैद्यजी का निधन 15-16 अगस्त को हो गया। छह दिन हुए हम एकाहार कर रहे ह।—पुरश्चरण चल रहा है। अभी हम बाल भी नहीं बनवावेंगे। तेरहवीं के बाद शाम को भोजन कर सकेंगे।"

दुर्गासप्तशती का पाठ
(16.10.55)

मैंने पूछा कि अब आप फिर उपवास क्यों कर रहे हैं ?

निराला—हाँ। अब पारलौकिकता का भी ध्यान रखना है। इतने दिन ता बड़ ही भोगविलास मं बिताये तो परलोक को भी ध्यान में रखना है। 50-60 ही भक्ति क गीत हमने लिखे होंगे। आर लिखने की सोच रहे हैं।

कल से नवदुर्गा व्रत प्रारम्भ किया है' कोई भोजन न करके शाकाहारी रहन चाहते हैं।

इसके बाद निराला जी स्नान करने चले गये और आकर दुर्गासप्तशती का पाठ प्रारम्भ किया।

उनका विश्वास था कि देवी व्रत रखने से शरीर ठीक हो जावेगा।

देवी का प्रसाद

एक सप्ताह बाद कैलाश कल्पित से बातों-बातों में कहा—

कल महाअष्टमी हैं। हम देवी का प्रसाद बनावेंगे। उसमें मद्य मांस दोनों रहेगा। कल तुम्हारा निमन्त्रण ह।

तभी कमला शंकर सिंह बाहर आये ता उनसे निराला जी ने कहा—"कल 2 सर मांस, 1 अद्धा शराब, 1 सेर चावल तथा पाव भर घी का प्रबन्ध करना। महाअष्टमी का प्रसाद तैयार होगा। हम केवल थोड़ा सा मांस और मदिरा लेंगे। बाकी तुम्हारे तमाम बन्धु और ये कैलाश कल्पित रहेंगे।"

हमने अनेक बार उपवास किये हैं

....अपने पहले के उपवासों के बारे मे बताने लगे—

हमने अनेक बार कठोर व्रत किये हैं। तीन-तीन दिन तक कुछ नही खाया 1947 में बनारस में रहकर भी उपवास किया। ऐसा करने से 50 सेर वजन घट गया....”

तुम भी संगीत विशारद हो सकते हो

मैं 'गालिब की शायरी' नामक पुस्तक लाकर निराला जी को दी तो वे उलटते-पलटते रहे। फिर कहा—

“गाना सीख लो, कंठ चलता है, छह सात साल तक पहले खूब चिल्लाओ। फिर आप ही आप संगीत विशारद हो सकते हो। बिना गलेबाजी अथवा अभ्यास के गाना आने का नहीं। गाना सीख लो।” मैं मौन रहा आया।

अंग्रेजी शब्दकोश में सुधार की आवश्यकता

एक दिन निराला जी के यहां पहुंचा तो कम्बल ओढ़े लेटे थे आँखे बन्द किये, मुँह बाहर करके न जाने क्या सोच रहे थे। थोड़ी देर में यह कहते उठ बैठे—Element elemental, elementary and why not elementality take mentality फिर Encyclopedia देखने लगे और Elemental के बाद elementality न पाकर बोले, “अब भी शब्दकोशों में सुधार की आवश्यकता है।”

1956

फारसी का शेर

हमने **फारसी में एक शेर** लिखा है यह उर्दू के किसी कवि के शेर का अनुवाद है— तुम भी नोट कर लो। अनुवादक का नाम लिखा था डॉ. सैय्यद हुसैन।

शेर उर्दू

भले हैं दोस्त से दुश्मन जो बढ़कर नाम लेते हैं।
गुलों से खार बेहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं।।

फारसी में अनुवाद

बले अज दोस्त शह दुश्मन, बलन्दे नाले इस्मानी।
बहस्ती खारे गुल बेहतर, बदस्ते तारे दामानी ।।

हीरक जयन्ती : मैं मृत्यु की ओर अग्रसर हूँ

16 फरवरी 1956 वसन्त पंचमी

इस बार विज्ञापित हुआ कि निराला जी की हीरक जयन्ती मनाई जाय। फलत. इलाहाबाद के सारे साहित्यकार एकत्र हुए—जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पहाडी जी,

प्रकाशचन्द्र गुप्त, प्रभात शास्त्री, डॉ. उदयनारायण तिवारी, नर्मदेश्वर उपाध्याय उमाकान्त मालवीय, आनन्द शंकर, सत्यव्रत अवस्थी, नर्मदेश्वर चतुर्वेदी, काशीनाथ जी, रामकमल राय, श्याम मनोहर पाण्डेय, कैलाश कल्पित. निर्मल जी, जितेन्द्र सिंह, आइजक शर्मा, मैं।

यह समारोह निराला जी के ही कमरे में आयोजित हुआ था। निराला जी के भतीजे बिहारी लाल भी आये थे।

माल्यार्पण के बाद सबों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में निराला जी ने अंग्रेजी में संक्षिप्त भाषण दिया। फिर काव्य पाठ हुआ जिसमें निराला ने दो गीत सुनाये—रंग गई पग-पग धन्य धरा.... तथा भर देते हो बार-बार—

निराला की वक्तृता का हिन्दी भाव इस प्रकार था "सर्वप्रथम मैं देवी सरस्वती को प्रणाम करता हूँ जिनका आज पर्व है। जैसा कि आप लोगों ने पढ़ा होगा मेरी जन्म पत्रिका मेरी छोटी सी पुत्री ने छिन्न-भिन्न कर दी अतः मुझे ठीक से स्मरण नहीं है कि मेरा जन्मदिन कौन-सा था। किन्तु **बहुत दिनों से लोग इसी पुन्य** वसन्त पंचमी को मेरा जन्म दिवस मनाते चले आ रहे हैं। **मैं इसे देवी सरस्वती के पूजन-अर्चन** का दिन समझता हूँ।

मैं आप लोगों को उस पथ का गामी बनने को कहूँगा जिस पर अब मैं चल रहा हूँ—अर्थात् अंग्रेजी साहित्य का। प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्रों की शिक्षा का माध्यम अब भी अंग्रेजी इसलिए रहनी चाहिए क्योंकि ऐसा न होने से वे **बाहरी विद्वानों का मुकाबला न कर सकेंगे**। फिर उन्हें हिन्दी और बंगला का अध्ययन डटकर करना चाहिए. मैं तो क्षेत्र ही छोड़ चुका हूँ और **अब मृत्यु की ओर** अग्रसर हूँ।...धन्यवाद।

उऋण होने के लिए किताब
(25.03.56)

संध्या समय पहुंचा तो कैलाश कल्पित निराला जी के लिए सामिष भोजन लाये थे। निराला जी ने कैलाश जी से कहा "सुनो भाई ! तुम्हारा बहुत खाया। उऋण होने के लिए एक किताब तुम्हें दे रहा हूँ। बताओ, लम्बी कविता छापोगे या गीत।"

अग्रिम की बात कैसी ?
(अप्रैल 56)

निराला जी के कमरे में पंखा लग गया था। गर्मी से कुछ राहत मिल रही थी। मैंने प्रस्ताव रखा, "इस वर्ष आप गद्य लिखें। कहें तो रूपये अग्रिम दिये जायें।" रूपये से निराला का मूड बिगड़ गया। बीच में ही बोल पड़े—"कैसे रूपये ! क्या हमारे रूपये नहीं, कि अन्न नहीं, वस्त्र नहीं, घर नहीं—सभी कुछ है। अग्रिम की बात कैसी ? मैंने शान्त भाव से कहा," एक Impulse देने के लिए आपसे कहा।

निराला—हाँ, तो ठीक है। हमने पहले जो गद्य लिखा वह अच्छा या बुरा जैसा है वैसा है। अब जो कुछ लिखेंगे भी तो उससे अच्छा नहीं लिख पायेंगे। यदि तुम कहो कि 'काले कारनामे' तथा 'चोटी की पकड़' जैसे उपन्यास अधूरे पड़े हैं तो उन्हें पूरा करके ही मैं क्या करूंगा ?

अद्‌भुत स्मरण शक्ति

निराला Curse के पर्यायवाची शब्दों में—Malediction भी है। यह mal+ediction से बना होगा।

मैं—Edict शब्द का अर्थ क्या होगा ?

इस पर निराला जी बोले, "Midsummer's Night Dream में यह शब्द आया है।" मैंने यह ड्रामा पढ़ा था किन्तु edict का प्रसंग और अर्थ स्मरण नहीं आ रहा था। निराला जी बिजली की रोशनी में Act-I,Scene-I की 151 वीं पंक्ति में ढूंढ निकाला तो मैं चकित रह गया। कैसी है **अद्‌भुत स्मरण शक्ति** इनकी। फलतः मैं उनकी प्रशंसा करने लगा तो बोले "जब शब्दों के पीछे तन से मन से लगो तो। अपने को पागल बना दो तभी ये याद होंगे ऐसे नहीं।"

सबसे अधिक सताये उर्दू कवि मीर

उर्दू की शायरी की बात चली तो निराला जी ने दो पंक्तियां सुनाई।

जोबन के दिन जब आये तो आशिक हुए पैदा।
जब फस्ले बहार आई तो गुंजे नजर आये।।

फिर निराला जी कहने लगे, "उर्दू साहित्य में जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण उर्दू शायरों ने रखा वह हिन्दी में दुर्लभ है। हिन्दी की एक अलग ही शैली है। यदि उसे उर्दू से मिश्रित कर दीजिए तो उसकी बहार जाती रहेगी।"

लिख दो निराला साहित्यिक क्षेत्र से विरक्त हैं

'शायर' (बम्बई) के सम्पादक का उर्दू में लिखा पत्र आया था जिसमें 'उर्दू नम्बर' के लिए निराला की संक्षिप्त जीवनी मांगी गई थी। मैंने कहा कि इसका उत्तर लिख दीजिये तो निराला बोले, "लिख दो निराला जी बीमार ही नहीं वरन् साहित्यिक क्षेत्र से विरक्त भी। मैं—लिखने को लिख दूँगा किन्तु इससे काम नहीं चलेगा।

निराला—तो मैं मजबूर हूँ।"

हमके बजाय मैं

निराला जी प्रायः 'हम' शब्द का प्रयोग करते, 'मैं' का नहीं किन्तु 27.04.56 को जब मैं चलने लगा तो बोले "मैंने उपवास पुनः प्रारम्भ कर दिया है। शीघ्र ही स्वस्थ होकर अध्ययन करना है।"

यह पहला अवसर था जब निराला जी ने खड़ीबोली में तथा उसमें भी मैं शब्द का प्रयोग किया। अन्यथा वे बसवाड़ी, बुन्देली या अंग्रेजी में ही मुझसे बातें करते।

शिमला मुझे अच्छा लगा

प्रसंगवश चर्चा चली कि देवी जी पहाड़ जाने वाली हैं। तो मैंने प्रस्ताव रखा "पं. जी आप भी क्यों नहीं पहाड़ चलते ?"

निराला—मैं पहाड़ों की सैर अनेक बार कर चुका हूँ। तुम्हें बताता हूँ—मैं मसूरी, शिमला, दार्जिलिंग, आबू तथा रॉची कई बार जा चुका हूँ। मसूरी तो कलकत्ता-प्रवास काल में गया था। वह मुझे अत्यन्त एकान्त जान पड़ी। वहां की माल रोड तथा कुछ होटल मुझे अब भी याद हैं।

दार्जिलिंग में तो पाइन के अनेक वृक्ष थे। वह समय मुझे याद है जब शिमला में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था। मैं एक पंजाबी महाशय के साथ एक बड़े बंगले में रूका था। ये पंजाबी स्वागत समिति के प्रधान थे, अच्छे व्यापारी एवं लखपति। शिमला ही मुझे अधिक अच्छा लगा।

चारपाई पर जूता पहने बैठे थे
(16.04.56)

निराला जी ने मेरे पहुंचते ही निम्न लिखित दोहा सुनाया—

अंधकार है देश जहां आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है।।

शाम के छः बजे थे। मैं मैकाले की पुस्तक Essays on Milton तथा दुर्गासप्तशती ले गया था। उन्हें दे दी।

कमरे में चारपाई बिछी थी। उस पर नीली धारियों वाली नई दरी बिछी थी। निराला जी जूते कसे-कसे उसी पर बैठकर दोनों किताबें देखने लगे।

हिन्दी पत्रिकाओं के दो दुर्ग

बंगला की एक पत्रिका 'कालकेतु' मेरे हाथ में थी। निराला बोले, "हिन्दी पत्रिकाओं के दो दुर्ग थे—प्रयाग और लखनऊ। अब वे दोनों ढह जैसे गये हैं। मजे की बात तो यह है कि प्रयाग में 'सरस्वती' का पुनरूद्धार श्रीनारायण चौबे द्वारा हो रहा है। किन्तु मैं पूछता हूँ कि रिटायर होने के बाद पत्रिका के सम्पादक का शौक उन्हें कैसे चर्राया। वे कोई हिन्दी के विद्वान नहीं। जब देखो तब गाली। वे गाली के विद्वान हो सकते हैं। यदि ध्रुवनाथ या पृथ्वीनाथ (श्रीनारायण जी के भतीजे) जो नव युवक हैं सरस्वती सम्पादक बनाये जाते तो मेरी समझ में आता कि हाँ, अब पुरानी थाती कई पीढ़ी के हाथों सौंपी जा रही है। किन्तु क्या सबसे वृद्ध होना ही एक मात्र Criteria सम्पादक होने की हैं। तब तो देवीदत्त शुक्ल जो अब भी जीवित हैं उन्हें यह कार्य कर लेना चाहिए।

चौबे न सारी जिन्दगी और कहां का खाक छानी और अब सरस्वती के उद्धार की बान पकड़ी। इस बार चौबे आवेंगे तो मैं अवश्य पूछूँगा कि क्या तुम हिन्दी की पूँछ पकड़कर अपना निस्तार चाहते हो। हिन्दी की पूँछ पहले से ही जैसे किसी जनाने की पूँछ—अस्पश्य हो।"

टिप्पणी निराला जी चौबे जी को अग्रज मानते थे और बड़ा आदर करते थे किन्तु यदि यथार्थ कहना पड़ तो निराला जी संकोच नहीं करते थे। यही उनकी .

मैं डॉक्टर बुलाये लाता हूँ
(27.06.56)

अब निराला जी चन्द्रकान्ता जी के यहां कम जाते थे। जब उन्हें मुझसे पता चला कि चन्द्रकान्ता कच्छाई रोग से पीडित हैं तो वे तुरन्त उन्हें देखने गये और गले की सूजन देखकर एकदम द्रवित होकर कहने लगे, "तुम्हें बड़ा कष्ट है। अभी डॉक्टर बुलाने जा रहा हूँ।" जो निराला अपनी असह वेदना को प्रकट भी नहीं करता वह पर दु.ख से कितना जल्दी द्रवित हो उठता है।

घी आवश्यक

निराला जी एक दिन बोले—"बुद्धिजीवियों के लिए घी आवश्यक है क्योंकि उनका स्वास्थ्य वैसे ही ठीक नहीं रहता और यदि लापरवाही बरती तो प्राण संकट में। तुम कम से कम दो तोला शुद्ध घी खाया करो। इस प्रकार एक सेर को माह भर चलाओ। ठीक हो जाने पर छोड़ भी सकते हो। यह पंडा, जो हमारे साथ पहले रहता था। दाल में एक छटांग घी छोड़ता था किन्तु भोजन केवल एक वक्त ही करता था। अब भी खाता होगा।"

उन्नाव नरेश

राजेन्द्र शंकर चौधरी उन्नाववासी थे। वे निराला के प्रकाशक भी थे। मैं पहुचा तो वे उनके पास बैठे थे। मैंने जिज्ञासा की कि ये कौन हैं तो निराला ने कहा—"इनका पननेम (उपनाम) उन्नाव नरेश है और असली नाम राजेन्द्र शकर चौधरी।"

मैं—क्या, चौधरी साहब !

निराला—हाँ। ये अणिमा, कुकुरमुत्ता तथा बिल्लेसुर बकरिहा के प्रकाशक हैं।

हम अभी बैठे ही थे कि निराला ने कलम उठाई और अपनी कापी में एक गीत लिख डाला—

मालती खिली, कृष्ण मेघ की।
छायाकुल हो गई धरा.... 26.07.56

निराला ने 9 मास के बाद यह गीत लिखा था। बोले छः मात्राओं वाला गीत है— अच्छा है—सखि वसन्त आया जैसी ताल पर है।

फिर चौधरी का आर ध्यान गया ता बाल---य 48 वष क हागे, सुमन्त्रा इन्स दो एक साल छोटी होंगी। इनके दॉत गिर गये हं। इसलिए बुड्ढे लग रहे हं। जव चाधरी ने निराला से काव्य सृजन क विषय में पूछा तो जवाब मिला "अब ता मरना ही शेष है।"

1957
बसन्त पंचमी
(05.02.57)

61 वीं वर्षगाँठ श्रीनारायण जी की वगिया में मनाई गई। निराला ने माटी तहमत लगा रखी थी, कुर्ते के ऊपर काली ऊनी वंडी और सिर में कन्टोप पहने थे। पाँवों में चप्पलें थीं।

इसमें महापण्डित राहुल सांकृत्यायन सम्मिलित हुए।

मेरे विवाह में निराला आये

राधारमण इंटर कालेज में बारात रूकी थी। मैदान में शाम को कवि सम्मेलन का आयोजन था। किन्तु आँधी-पानी आने मे हाल के भीतर आयोजन किया गया। निराला जी कुर्सी पर बेठे थे। जव कई लोग अपनी कविताएं सुना चुके तो निराला जी की बारी आई। उन्होंने हार्मोनियम उठाई और बारातियों को सम्बोधित करते हुए कहा—

"हम एक गाना सुना रहे हे।" यह कहकर विन्दा कवि का एक पद गाय। उस समय स्वर इतना गम्भीर हा गया मानो मेघ गर्जना हो। लगा कि हार्मोनियम चूर-चूर हो जावेगी। 10 मिनट तक स्तब्धता छाई रही। सब ने छककर निराला संगीत का पान किया।

नया पथ के लिए संन्देश

लखनऊ से 'नया पथ' के सम्पादक की चिट्ठी आई थी जिसमें महाकवि से पत्रिका के नये वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष में सन्देश माँगा गया था। मैं कई दिन बाद निराला जी के पास पहुंचा और जब यह पत्र पढा तो निराला जी ने कहा, सन्देश लिख लो इसे भेज देना। यह कह बोलने लगे—

'नया पथ' लखनऊ के व्यवस्थापकों की पत्र प्रकाशन रूचि आन्तरिकता की परिचायिका है। उनसे हिन्दी के उद्यान में नये फूल खिलेंगे, नयी सौरभ नयी सुगन्ध फैलेगी, नये लोग, नये आनन्द से हँसेंगे, नयी बातचीत करेंगे, नई दुनिया में चलेंगे, कुल नया-नया होगा, नई तस्वीरें उतरेंगी, नये तराने सुनने को मिलेंगे. इन सबकी सम्मिलित नई ज्योति बिखरेगी, लोग और समाज, साहित्य व गणित आदि मिलाकर अपने सुधार करेंगे। यह बड़ी खुशी की बात हे।

यह सच है कि गेहूँ, जौ, धान, ज्वार, चना; मूँग, अरहर आदि में सुधार न हो। बिजली और वायुयान आदि की पूर्व सत्ता रहे परन्तु बिगड़ी हुई बहुत सी वे सूरतें नई बनकर तैयार होंगी, जिनके बिगड़ने का कारण पुराना प्रतिबन्ध था। यह बात थोड़े आनन्द की नहीं।

मुझसे कल के योगियों की बातचीत उतनी अपेक्षित नहीं जितनी आधुनिक शिक्षा के सम्बन्ध में पुराने योगी व जटाधारियों की अपेक्षित है। विश्वविद्यालयों की यान्त्रिकता रिसर्च स्कालरों को भी सम्पन्न और सक्षम नहीं कर सकी। यह दुःख का विषय है। कल के कर्णधारों को यह दायित्व संभालना है। यही कहना है। यही संदेश है बस। निराला 20.10.56

रोज ही कुश्ती

मैं—पं. जी, बचपन में आप कुश्ती लडते थे। आपने किन्हें-किन्हें पछाड़ा ?

निराला—रोज ही तो लडते रहते हैं।

मैं चुप हो गया।

अभी खाई नहीं

निराला—आज यहां कलिया बनी थी। कैलाश मछली लेकर आये थे। अभी खाई नहीं।

निराला जी का मछली की अपेक्षा कलिया पसन्द थी।

हम कुछ बोले नहीं

निराला—06 10.57 की शाम को राजा मुनुवा के यहां एक Function था। कमला शंकर सिंह हमें भी ले गये। हम कुछ बोले नहीं। वहां हमें दो प्रमुख साहित्यकार दिखे एक तो फिराक और दूसरे चौबे (श्रीनारायण)। दोनों ही हमारे समवयस्क। फिराक ने तो सुनाया था। हमने अंग्रेजी में छोटा सा भाषण दिया। ... वह शरदोत्सव था।

रूस का नकली चाँद

मैं—आपको बहुत बड़ी खोज बता रहा हूँ। रूस में पहली बार नकली चाँद उड़ाया है जो 18000 मील प्रति घंटे की रफ्तार से घूम रहा है। एक चक्कर में 95 मिनट लगते हैं। 4 अक्टूबर को उड़े चाँद ने सौ से ऊपर चक्कर लगा लिए हैं।

निराला—यह सब भ्रान्ति है। मुझे गोले दगने की बात तो जँचती है पर इतनी ऊँचाई पर वह किस शक्ति से आकर्षित होकर घूमेगा समझ में नहीं आता। आसमान की ओर फेंकी गई वस्तु एक बिन्दु पर जाकर रूक तो सकती है किन्तु चक्कर कैसे लगायेगी ? मैंने उन वैज्ञानिक सिद्धान्तों की चर्चा की जिनके आधार पर कोई वस्तु

ऊपर रह सकती है निराला बोले, ये रूस वाले अच्छे आदमी नही। रूस में वयक्तिक स्वतन्त्रता नहीं है।"

07.11.57

अब बड़े मजे में हूँ—

आचार्य चतुरसेन शास्त्री निराला से मिलने आये तो पहली बात जो कही वह थी, "निराला जी, आप इतने दिन यहां रहे अब दो एक महीने मुझे भी सेवा का अवसर दें, दिल्ली चलें।

निराला—क्या बताऊँ, बहुत पहले इन्हीं दिनों के लिए यह मकान इलाहाबाद में बनवा लिया था। अब बड़े मजे में हूँ। कोई गरीब भी नहीं। हजारों-लाखों की सम्पत्ति हैं। फिर देहात में खेती। वहां जाकर रह सकता हूँ। भूमि इतनी पर्याप्त है कि उससे 16 व्यक्ति वाले परिवार का बसर हो जाय। 64 होने पर भी काम चल सकता है। हमारे परिवार के 100 व्यक्तियों के 100 केन्द्र बन सकते है जो भारत क्या पूरे एशिया पर छा सकते हैं। तो भला बताओ—दिल्ली क्यों चलूँ। वसे दिल्ली अच्छी है।"

13.11.57

सरकार और मध्कार

काशी से पं गंगाधर शास्त्री आये। दो पुस्तको की पाण्डुलिपियां --युगाराध्य महाकवि निराला और गोस्वामी तुलसीदास तथा बच्चो के लिए लिखी कविताएं साथ लाये थे। निराला जी ज्वर से पीड़ित थे फिर भी उन्होंने अपनी सम्मति लिखवाई—

"मैंने पं. गंगाधर शास्त्री की सार्वभौम सुसंगठित साहित्य कृतियां देखी। उनकी कर्मण्यता साहित्य-द्रुम की सभी शाखाओं को पल्लवित, पुष्पित और फलित कर रही हैं। बालक-बालिकाओं के लिए उनकी पद्यबद्ध रचनाएं भी ऐसी ही विजयिनी हैं। उनके अपार श्रम के कण मोती बन-बन कर चमके हैं। काशी के निवासी होने के कारण उनकी भाषा भी प्रभुत्व दर्शित कर रही है। हम लोगों की अर्जित अपार धनराशि जिस पर सरकार और मध्कार सभी प्रतिष्ठित हैं, उनका और वैसों का पथ सुगम करने के लिए थी और है, नहीं तो न हिन्दी विश्वविद्यालय हे न प्रयाग और लखनऊ आदि की यूनिवर्सिटियां। वे दिन भूले न होंगे। आज भी हम विज्ञान शास्त्र लिए विरोधियों से लड़ने को बैठे हैं। काशी का पत्र जिसका एक बड़ा प्रमाण है। भावी शास्त्री जी का मार्ग सुगम करें। इति—

निराला दारागंज 13.11.57"

08 01 58
तीन बीबियां

दारागंज में ही रह रहे मैनपुरी के एक 70 वर्षीय चौबे जी निराला से मिलने आये। निराला जी बैठकर स्वतः सभाषण कर रहे थे—प्रसंग था मेहरारूओं का। चौबे जी ने बीच में टोका तो निराला बताने लगे, "हमारे तीन औरतें थीं---एक गोरी, दूसरी पीली और तीसरी श्यामा। गोरी तो मैनपुरी की ही थी। स्वभाव की कुछ अच्छी, हमसे उम्र में बड़ी। पीली वाली तो डलमऊ की थी, हमसे कुछ ऊँची। यही हमारी असली पत्नी थीं और इंफ्लुऐंजा से मरी। जो तीसरी है छोटी वाली, काली थी, फिर भला वह अच्छे स्वभाव की क्यो होती। पीली वाली तो गढ़ाकोला स महिषादल और फिर वहां से गाँव तक आती जाती रही। बाकी का क्या हुआ, अब नहीं कह सकता। हम तो यहां दूर बैठे हैं। किन्तु यह मकान इसीलिए रखे हे क्योंकि बिना घर के बीबी नहीं रह सकती।"

फिर मुझसे बोले, "आज सुबह ही हमारे साले का लडका आया था। था हृष्ट-पुष्ट किन्तु केवल गंजी पहने था। हमने कहा हमें शरीर न दिखा। जाड़ा लगने ही वाला ह। फिर उसके पॉव देखे। देखकर हमारा मन न माना। अपने चप्पल और कम्बल देकर बिदा किया।"

तुम्हें मालूम हो कि गर्मी से अब तक छह कम्बल खरीद चुके हैं और अब एक भी नहीं है।

डलमऊ की बात छिड़ी तो निराला जी बोले, "जो आनन्द डलमऊ की गगा के स्नान करने में हे वह कही दूसरी जगह नहीं। फिर हमारा तो वहां ससुराल है—हम डलमऊ चल सकते हैं साथ में मिठाई-पूडी रख ली जायेगी। वहां चलकर खीर बनाई जावेगी और भ्रमण किया जावेगा। सारा सामान पंडा के यहा रख दिया जावेगा।" . . फिर बोले, "अब तो चला नहीं जाता। तुम लोग घूम आना।"

हम तीनों खूब हँसे।

24.01.58
इन्हें हलुवा खिलाओ

मैं शादी के बाद अपनी पत्नी सहित निराला जी से मिलने गया था। हम दोनो ने उनके पैर छुए। निराला जी ने पूछा, "प्रसन्न हो ! फिर बातें करने के बाद भीतर आवाज दी, देखा ! शादी के बाद पहली बार ये यहां आई हैं। हलुवा बनाकर इन्हें खिलाओ। इन्हें ऊपर ले जाओ।"

25 01 58

वसन्त पचमी : महाकवि का जन्मदिन : हिन्दी का स्थान

इस अवसर पर जितेन्द्र सिंह, लक्ष्मीकान्त वर्मा, श्री जीवन शुक्ल, रावत ओम प्रकाश, राजकुमार शर्मा, श्याम मनोहर पाण्डेय, मैं, मेरे अग्रज आये हुए थे। निराला जी ने पहले चाय तथा मिठाई मँगाकर सब को दी फिर यह आयोजन भइया जी की बगिया में हुआ।

लक्ष्मीकान्त वर्मा ने निराला जी को 'नई कविता' का जनक बताया और जितन्द्र सिंह ने उन्हें छायावादी युग का महानतम कवि कहा। निराला जी ने अपना भाषण अग्रेजी में दिया—

"मेरा दिल प्रसन्नता से किस तरह हिलोरें ले रहा हे कि हिन्दी अब अग्रेजी का स्थान ले रही है। यदि हिन्दी और अंग्रेजी के बीच कोई अवरोध रहा है तो वह बगला भाषा है किन्तु परस्पर समझौता कर लेना आपका कार्य है।"

संस्कृत माध्यम से विद्वानों ने पाश्चात्य देशों को विज्ञान में भी मात दी थी। संस्कृत के बाद अंग्रेजी ही सब के गले की हार बनी। यदि कुछ लोग हिन्दी को गले लगायें तो बाद में क्या होगा। कह पाना कठिन है।

फिर निराला जी ने 'भारति जय विजय करें', 'भर देते हो बार-बार' तथा 'राम की शक्ति पूजा' कविताएं सुनाई।

निराला ने सफेद लुंगी, काला कुर्ता पहन रखा था। पाँवों मे चप्पल थीं और उनके हाथ में छड़ी थी। दाढ़ी बड़ी-बड़ी। मालाओं से मण्डित निराला अत्यन्त प्रसन्न मुद्रा में थे।

रेडियो की आवश्यकता नहीं

03.02.58 सायंकाल पहुंचा तो निराला जी लेटे-लेटे गा रहे थे। आँख बन्द थीं। मैंने प्रणाम किया। उसके बाद दो गीत गाये जिनकी पंक्तियाँ थीं—

1. होली आज जले चाहे काल जले।
   मेरा साजन घर का घर ही रहे। होली
2. आज रंगीले रसिया दखे मैंन
   दोड झपट गई प्यार करन को
   भीग गई सारी पसीने-पसीने। रंगीले

मैंने कहा, "प. जी यदि आपके कमरे में रेडियो रहता तो उसमें संगीत के तमाम कार्यक्रम सुनने को मिलते।"

निराला ने चट उत्तर दिया, "मडर-मडर मचेगा। रेडियो की कोई आवश्यकता नही है।"

25.05.58

निराला जी के समधी तथा पुत्र रामकृष्ण कई दिन से आये थे। छाया की शादी के लिए रूपये लेने।

निराला जी ने आज रामकृष्ण को भारती भंडार से रायल्टी के हिसाब में से पांच हजार रूपये छाया की शादी के लिए निकालने के लिए एक पत्र लिख कर दिया। पाठक जी बीमार थे अत: वह रूपया उन्हें न मिला।

विद्या कहानी

26.05.58

निराला जी ने 'विद्या' नामक कहानी लिखनी शुरू की। वे इसे बोलकर भइया जी के भतीजे ध्रुव चतुर्वेदी से लिखवा रहे थे।

अनेक वर्षों बाद निराला कहानी लिखाते हुए काफी उत्साहित थे। यह कहानी पूरे एक मास में पूरी हुई। निराला जी ने 27 जून को बताया कि यह कहानी सरस्वती में प्रकाशनार्थ भेज दी गई।

दो दिन बाद श्रीनारायण चतुर्वेदी जी ने कहानी के अंग्रेजी अंशों का हिन्दी अनुवाद करने के लिए निराला जी से अनुरोध किया।

14.05.59

हिन्दी का गद्य-पद्य दोनों समृद्ध

मैंने निराला जी के सम्मुख प्रस्ताव रखा, "बनारस के प्रकाशक आपसे उपन्यास चाहते हैं।"

निराला—उनके चाहने से क्या होता है। अब कुछ लिखा नहीं जा सकता। मरते समय वाणी का अब दुरूपयोग कौन करे। फिर लेटे रहे और कहने लगे—शेक्सपियर के बराबर दूसरा कोई कवि नहीं। चाहे मरचेन्ट आफ वेनिस लो या जूलियस सीजर—सबमें समान रूप से एक ही छटा।

मैं—किन्तु अब हिन्दी का मस्तक उठ रहा है। अंग्रेजी को कौन पढ़ेगा ?

निराला—हाँ, हिन्दी के गद्य और पद्य दोनों ही अत्यन्त समृद्ध हैं। हिन्दी में प्रेमचन्द के उपन्यास बेजोड़ हैं। फिर थोड़ी देर बाद कहने लगे—यदि तुम आ सको तो हम तुम्हें 60-70 पृष्ठ कुछ डिक्टेट करा दें।

18 जून, 59

तूती आम

निराला जी बोले, "देखो! तुम गंगा प्रसाद पांडेय के यहाँ से तूती आम कल ले आना। यह लम्बे आकार का विशेष आम है। उसे तुम खरीद कर, माँग कर या चोरी

करके जैसे भी ले आना, तुम जवान हो, रात में चाहे चोरी ही क्यों न करनी पड़े (हँस कर कहा)।"

मैं—आजकल तो बाजार में दशहरी, लंगड़ा, सफेदा की भरमार हैं।

निराला—हम दशहरी तो खाते नहीं, उससे पेट बिगड़ जाता है। हाँ, लंगड़ा और सफेदा अच्छे होते हैं। चुसनी(तुखमी) भी मुझे पसन्द हैं। तूती के साथ चुसनी भी लाना। तब कल खाया जावेगा। आजकल हम अकेले रह रहे हैं। कमला शंकर सपरिवार बलिया गये हैं।

07.11.59
मेरे गीतों का संग्रह

निराला जी ने बताया कि वे एक मास से तम्बाकू खाना छोड़े हैं और यह प्रयोग कर रहे हैं कि इसके बिना काम चलेगा या नहीं। फिर बोले—

"मैं चाहता हूँ कि 'बेला और नए पत्ते' अन्यत्र से छपें। मैं यह भी चाहता हूँ कि मेरे सारे गीत (600 होंगे) एक जगह से छपें। तुम किताब महल से बात करके देखो।"

1960
बसन्त पंचमी बनारस में

10 बजे प्रात. पहुंचा तो वे हार्मोनियम पर गीत गा रहे थे। बाद में गंगा प्रसाद पाण्डेय, उदयनरायण तिवारी, श्रीनारायण चतुर्वेदी, द्वारका प्रसाद माहेश्वरी आ गये तो उन्होंने दो कविताएं टेप करवाईं।

बाद में दिन में गंगाधर मिश्र बनारस से आये तो उन्हें 2½ बजे टैक्सी में बनारस ले गये। दो दिन बाद लौटकर आये तो मुझसे सारा वृत्तान्त बतलाया, "वहां राष्ट्रभाषा विद्यालय में आयोजन था, तमाम लोगों को दावतें देने में उनके 400-500 रूपये खर्च हुए होंगे। करूणापति त्रिपाठी ने अध्यक्षता की। जगन्नाथ प्रसाद शर्मा तथा विनोद शंकर व्यास भी आये थे। एक युवक गवैया भी था।"

27.03.60
सोहन लाल जी ! दरबारी ठाट में उतरो

भारती भवन लाइब्रेरी की 70 वीं जयन्ती में भाग लेने के लिए पं. सोहन लाल द्विवेदी आये थे। वे निराला जी से मिलने गये।

निराला—कौन-कौन आये थे।

द्विवेदी—महादेवी, श्रीनारायण, सम्पूर्णानन्द तथा मैं।

निराला—बस केवल चार ?

तत्पश्चात् द्विवेदी जी ने सिगरेट निकाली और पूछा "लगे ?"

निराला—हम तम्बाकू खाते हैं। (कुछ सोचकर) अच्छा दो, देखें। यह ता अब्दुल्ला नं मात हे। यह कैसी होती हे ?

सिगरेट पीते हुए बोले, "देखो ! अब अजायबघर की चीजे छोड़कर दरबारी ठाट में उतरो। हम लोगों के लिए गोल्ड फ्लेक या कैप्सटन बहुत हें।"

18.04.60

रजाई की धुलाई

कहते हं कि बीरबल एक बार गधे को धोकर गाय में बदलने का नाटक करके अकबर को अचम्भित करना चाहते। आज जब मे पहुंचा तो निराला जी अपनी रजाई को पानी स धोकर निचोड़ रहे थे। हाँफते देखकर कमला शंकर सिह ने कहा, "लाइये हम निचोड़ दें।"

निराला—नहीं। हम खुद करेंगे। तुम लोगों को दिखाना है कि हमारी रजाई कितनी साफ रहती हे। हमेशा जाडे के बाद रजाई को धोकर रखना चाहिए।

पेचिश से परेशान

निराला जी प्राय. पेचिश की शिकायत करते। और जब ऐसा होता वे बुखार से बुन पड जाते। मई 1960 में निराला के पास केवल नौकर रह गया था। ठाकुर परिवार गाँव चला गया था। उन्हें दाद भी हो गया था। पॉव मे एक जिमा भी था। परशान थे। मैं प्राय· दवाएं दे आता।

अगस्त के मध्य तक निराला जी इसी तरह परेशान रहे। एक मास तक केवल पालक खाते रहे। सितम्बर मध्य में मूँग की दाल खाई।

इस तरह के उपवास तथा शाकाहार से निराला अपनी बीमारी को कब्ज म रखने का प्रयास करते रहते।

अक्टूबर में पुनः निराला जी को पेचिश के साथ ज्वर तथा शोथ था। फलत 17 10 को तार देकर उनके पुत्र को बुलाया गया। तमाम समाचार पत्रों में निराला की बीमारी का समाचार छपा।

निराला जी को खूनी दस्त हो रहे थे। पेट और हाथों में सूजन आ गई थी। डॉक्टरों को दिखाया गया तो पता चला कि उनके यकृत में सूजन आ गई हैं। सुई लगाने से पेट कुछ तुचका था। किन्तु 22/10 को जब मैं उनसे मिला तो उनका शरीर जल रहा था व उटकर बैठ गये और खाँसने लगे। मुझे देखकर बोले, "पान नहीं लाये ?"

मैं सदा की भाँति पान ले गया था। मेरे मित्र रावत ओम प्रकाश सिंह उनका शरीर दबाने लगे। तभी पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी आये। उन्होंने स्वास्थ्य के विषय में

पूछा तो निराला बोले, "डॉक्टर ने नमक खाने के लिए मना किया है। हम केवल दूध और फल खावेंगे।"

अगले दिन सम्पूर्णानन्द जी निराला को देखने आये। उसी दिन शाम को साप्ताहिक हिन्दुस्तान के सम्पादक बाँके बिहारी भटनागर भी मिले।

पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल का वक्तव्य

23.10.60 को 'भारत' में महाकवि निराला की बीमारी के विषय में आयुर्वेद पचानन पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल का वक्तव्य छपा जो दृष्टव्य है—

"मैंने 22/10 को पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के स्वास्थ्य की परीक्षा की। उनका स्वास्थ्य इस समय बहुत चिन्तनीय अवस्था में चल रहा है। . वे वायुविकार एव पेचिश के पुराने मरीज हैं ...इधर यकृत की क्रिया बहुत गड़बड़ हो गई है और हृदय की क्रिया भी मन्द है। परिणामस्वरूप उदरविकार की अन्तिम दशा जलादर की व्याधि उत्पन्न हो गई है—दोनों पैरों से जांघो तक शोथ भी है। रक्तचाप बढ़ रहा है। खाँसी भी अधिक है। निद्रा नहीं आ रही। उठने-बैठने में कष्ट हो रहा है। स्थानीय सिविल सर्जन ने भी स्वास्थ्य का निरीक्षण किया है। इस समय डॉ. दास तथा डॉ. घोष का संयुक्त उपचार चल रहा है। उनके पुत्र को भी तार द्वारा बुलाया गया है... जो साहित्यिक बन्धु एवं हिन्दी प्रेमी लोग प्रयाग पधार रहे हैं उनसे मेरा अनुरोध है कि महाकवि को अवश्य देखें और उनके उचित उपचार की व्यवस्था करें।..."

ऊनी कुर्ता, जर्सी तथा कम्बल

30/10 को निराला जी ने तुरन्त खरीद कर लाया गया ऊनी कुर्ता, जर्सी और कम्बल दिखलाया। कुर्ता काले रंग का था।

राजनीतिक नेताओं में हलचल (दृष्टव्य निराला की बीमारी)

निराला जी की बीमारी से उत्तर प्रदेश के अधिकांश नेता चिन्तित हो उठे। डॉ सम्पूर्णानन्द के बाद शिक्षा मंत्री पं. कमलापति त्रिपाठी ने 1 नवम्बर को भेंट की। कमलापति जी ने कहा कि निराला जी को सिविल अस्पताल के प्राइवेट वार्ड में रखकर दवा की जाय।

अगले दिन 'भारत' में यह समाचार छपा। साथ में यह भी समाचार था कि निराला अस्पताल जाने को तैयार नहीं हैं।

सचमुच ही निराला जी अस्पताल के नाम से चिढ़ते रहे हैं। पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी ने अभिमत व्यक्त किया कि निराला जी को अस्पताल ले जाने से वे सोचेंगे कि मैं बीमार हूँ और मुझे एकान्तवास दे दिया गया है।

अस्पताल चले जाते तो अच्छा होता

04.11.60 सायंकाल 5½ बजे पहुंचा तो निराला जी चारपाई पर बैठे थे। घर में काई नहीं था। वे लोग राशन लेने चौक गये थे। निराला जी की आँखों के नीचे की खाल लटकी सी दिखी तो मैंने पूछा "पं. जी! तबियत ठीक तो है ?"

निराला—हाँ अब ठीक हूँ। अब तक छः इंजेक्शन लग चुके हैं। तभी डॉ. दास इंजेक्शन लगाने आये। इंजेक्शन लेने में गया—नाम था मरकयुरामाइड (2 मिली.)। निराला जी ने बनियान उतार दी और कूल्हें पर इंजेक्शन लगा।

डॉ. के चलते समय निराला जी ने मुझसे कहा "उनकी दवाओं का बक्सा लेकर रिक्शे तक पहुँचा आवो। मैंने रास्ते में डॉक्टर से पूछा, निराला जी स्वस्थ हो रह हैं न।

डॉक्टर—अस्पताल चले जाते तो अच्छा रहता किन्तु वे राजी नहीं हो रहे।"

बीमारी में भी व्यंग्य हास्य

9 नवम्बर को शाम को 5½ बजे पहुंचा तो बताया—आज दाढ़ी और बाल घुटा दिया है। सचमुच निराला का चेहरा विचित्र दीख रहा था। वे अत्यन्त कृश दिखे, पट निकला था।

बोले "तुम्हें कस्तूरी लगवाते हैं। आज मंगाया है।"

फिर कुछ स्मरण करके बोले उद्द की दाल फुद्द-फुद्द चुत्त हैं समझे। कितना बढ़िया उपन्यास है। मैं हँसने लगा।

बाद में पता चला कि कमला शंकर ने निराला जी पर हेल्थ बुलेटिन निकाली है। उसमें महादेवी पन्त तथा गिरिजा कुमार माथुर का निराला को देखने आने का उल्लेख था। मेरे लिये यह नया समाचार था।

लाइलाज मर्ज : इसकी दवा नहीं (17.11.60)

5 बजे सायंकाल पहुंचा तो निराला जी साफा बाँधे, चादर ओढ़े खटिया पर बैठे खाँस रहे थे। बातचीत में इतना ही कहा, "हम लोगों को कड़ू तेल खाना पड़ता है इसीलिए सब लोग बीमार हैं।"

फिर बोले, हम लोगों का क्या बुड्ढे हैं। बीमार हैं। "लाइलाज मर्ज है इसकी दवा नहीं।"

चलो भेज आवें (24.11.60)

निराला की बीमारी का समाचार पढ़कर—मतवाला मण्डल के प्रिय मित्र बाबू शिवपूजन सहाय अपने नाती को लेकर पटना से यहां निराला को देखने आये वे लीडर प्रेस में वाचस्पति पाठक के यहां रूके थे।

जब मिलकर जाने लगे तो निराला बोले, "चलो भेज आवें"।

शिवपूजन—आप आराम करें।

आखिर दोपहर में कलावती बच्ची को साथ लेकर लीडर प्रेस पहुँच गये और पाठक के यहां अपने मित्र से भेंट की।

सुना है लखनऊ में बड़ी सरगर्मी है

(नवम्बर 29, 1960)

मैं शाम को पहुंचा तो निराला जी रजाई ओढ़े लेटे थे। स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो बताया कि ठीक हूँ। फिर वे देर तक जाड़े के आने के बारे में बातें करते रहे—ऐसे जूते हों। ऐसे कपड़े हों। फिर बोले—

जाड़ा 45 दिन रहता है। धन के 30, मकर के 15।

फिर बोले—"सुना है आज कल लखनऊ में बड़ी सरगर्मी है।"

मैं "क्यों न हो। मुख्यमन्त्री का चुनाव है। सम्पूर्णानन्द जी ने पद त्याग करके काशी विद्यापीठ में पढ़ाना स्वीकार किया है।"

17.12.60

कैसी छाया-कैसी माया

निराला जी लेटे हुए खाँस रहे थे। मैंने पूछा—क्या ज्यादा खाँसी आती है?

निराला—हाँ। आज एक दाँत भी उखड़वाया है। सिविल लाइन गये थे।

मैं—क्या रामकेसन भइया नहीं है?

निराला—क्या बतावें, जब से झाँसी से आया बीमार ही रहा। पता नहीं झाँसी में क्या है। कैसी छाया....कैसी माया।

फिर कुछ तन गये, उठ बैठे और स्वतः भाषण करने लगे।

नेहरू से मिलने से इनकार

29/12 को निराला परिषद के जय विशाल अवस्थी नेहरू जी के यहां जाकर (वे 26-28 दिसम्बर आनन्द भवन में ठहरे थे) यह समाचार लाये कि नेहरू निराला से मिलना चाहते हैं। किन्तु निराला आनन्द भवन चलें।

निराला ने जाने से इनकार कर दिया।

1961

आखिरी वसन्त

(21.01.61)

निराला जी गद्दा बिछाये कमरे में बैठे थे। बाहर तख़्त पर पुराना गलीचा बिछा था। मैं अपनी छोटी पुत्री को लेकर गया था। उन्हीं के पास बैठा।

हार्नियम
13 अ
म
तबियत
में हैं।
पा
जो 10
जा
दद
में
नि
चाहते
में
नि
नि
अ
सिलिंड
लगी।

हमारे
प्रा
शेया प
उदासी
नि
बजकर
स
निकल
S
में
रहा।
क
बा
मन-मु

ई गई। निराला ने रवीन्द्रनाथ का गीत "जामिनी जागी . " गाया।
ने निराला के गीत गाये।
ारे लोग चले गये तो भगवान दास नाई ने आकर निराला की

तो मुझे एक कटोरी में थोड़ा सा घी देकर बोले—"जाओ।
खचड़ी खा लो इसी घी का स्वाद लेने के लिए तुम्हें न्योता था"
गये।

ी व्रत नहीं

दर्शनार्थ गया तो पूछा।
लग रहे हैं। क्या फिर बीमार पड गये थे ?
ाँसी आ रही है।....आज रामनवमी होने पर भी व्रत नहीं रखा।
हां रहते-रहते जी ऊबा है। मन करता है कि अच्छा होने पर

लए गीत नहीं लिखते

य परीक्षाओं में व्यस्त रहने के कारण काफी दिनों तक निराला
ाया। अतः आज जब गया तो देखकर भीतर कहलाया, "इन्हें

की कापी मेरी ओर बढ़ा दी। कहा "लो देखो ! इधर के गीत।
ारों तो उतारकर छपने को भेज दो।"
रे। इनमें से एक 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के लिए था। तभी वे
लिए गीत नहीं लिखते।"
तुम्हारी तरफ आवेंगे।"
य सुनकर मैं पुलकित हुआ। सोचा कि निराला जी अब स्वस्थ
रहे हैं।

ई कविताएं छपी हैं। तुम्हें अब एक शानदार दावत देने वाले

वतें दे चुके थे। खीर की दावत नई थी।

हम तो शायर हैं

"देवी जी बाघ की तरह गरजती हैं। हम भी कुछ बोल लेते थे परन्तु प्रयास करने के पश्चात्। हम तो शायर हैं। बस, कविता के क्षेत्र में जो कुछ दे दिया वही है।"

1961

रोग फिर उमड़ा

मंगलवार, 18 जुलाई

अखबार में समाचार पढ़ा कि निराला की स्थिति गम्भीर है। मैं सीधे विश्वविद्यालय से दारागंज पहुँचा। शाम के 6 बजे थे। पानी बरसने से भीग गया था।

जाकर देखा तो निराला जी का चेहरा मुरझाया था, दाढ़ी बढ़ी थी, पेट सूजा था। रह-रहकर खाँस रहे थे। निराला जी देखते ही चारपाई पर से बोले—"कब से तुम्हारी प्रतीक्षा में था। अच्छा हुआ आ गये।"

फिर बोले—"पांच छः दिन से ऐसा है। वही रोग फिर उमड़ आया है। कई दिन से केवल फल खा रहे हैं।"

फिर तीन गीत लिखाये और उनमें से एक को 'आज' में भेजने के लिये कहा। लेकिन हिदायत की किसी को रूपये भेजने के लिए मत लिखना।

अगले दिन गया तो बताया कि दिन में खिचड़ी खाई थी। वे बैठकर आलू परवल तथा प्याज की तरकारी काट रहे थे।

नाभि का सूजा भाग

आधा अगस्त बीत रहा था। निराला की सूजन जा नहीं रही थी। पावों का शोथ बढ़ा था। पेट में से नाभि का हिस्सा लम्बे डण्डे की तरह लटकने लगा था।

मैं चिन्तित था। बोले, "पान नहीं लावोगे ? लो पैसे लो।" मैं पान ले गया था चट से निकाल कर दे दिया।

मुझसे अपने पैर दबवाये। उनमें कठोरता का मुझे आभास हुआ। मैं मन ही मन बेचैन था कि डॉक्टर क्या कर रहे हैं। निराला की बीमारी के कई मास हो गये। वे तो घुले जा रहे हैं।

रक्षा बन्धन पर राखी नहीं बंधाई

मैं अपनी पत्नी और छोटी पुत्री के साथ पहुंचा था। साथ में राखी ले गया था। राखी निकाली तो बँधवाने से नकार दिया। वे मेरी पुत्री को खिलाने लगे। हाँ वे प्रसन्न दिख रहे थे।

निराला जी को स्वास्थ्य लाभ

8 अक्टूबर तक निराला जी स्वस्थ हो चले थे। मैं जब चलने लगा तो बोले जल्दी आना।

हार्निया उलझ गई

13 अक्टूबर को 10¼ बजे प्रातः

महादेवी वर्मा के यहां से एक चपरासी ने आकर सूचना दी कि निराला जी की तबियत खराब है। हार्निया उलझ गई है। यदि अस्पताल न भेजा गया तो प्राण संकट में हैं।

पानी बरस रहा था। मैंने साइकिल उठाई और अशोक नगर से दारागंज की दूरी जो 10 किलोमीटर थी पौन घंटे में पूरी की।

जाकर देखा कि निराला जी कराह रहे हैं और हार्निया की सेंक चल रही है।

दर्द हुआ तो रो पड़े "बप्पा, अरे बप्पा ! क्या पाप किये !"

मैं—आपको कष्ट है। अस्पताल चलें।

निराला—भइया ! हम इसीलिए रो रहे हैं कि ये लोग हमें अस्पताल ले जाना चाहते हैं।

मैं रो पड़ा। "चलिए न अस्पताल।"

निराला—नहीं।

निराला का यह नहीं-नही बना रहा।

अगल दिन करवट बदलते, उठ-उठकर बैठते बीता। 12½ बजे आक्सीजन सिलिंडर आ गया। 4 बजे शाम मूर्छा को प्राप्त हो गये। रात्रि में ऊर्ध्व श्वास चलने लगी।

हमारे निराला नहीं रहे

प्रातः 6¼ बजे पहुंचा तो तेजी से मुंह से श्वास निकल रही थी। मैं उनकी शैया पर बैठ गया। बाहर से निकलने वाले सारे लोग झाँकते हुए जाते—उदासी ही उदासी थी।

निराला को भूमि शयन करा दिया गया। सभी लोग रोने लगे। 2 घंटे बाद 9 बजकर 22 मिनट पर निराला के प्राण पखेरू उड़ गये। रोना-पीटना मच गया।

सारे नगर में निराला की मृत्यु का एलान करा दिया गया। अर्थी 3½ बजे निकली। 4 बजकर 15 मिनट पर शव को चिता पर रखा गया।

5¼ बजे शव जल चुका था।

मैं चिन्तामग्न कभी चिता की क्षार को, तो कभी अपार जनसमूह को देखता रहा।

कहाँ गये हमारे निराला।

बाद में जो हुआ वह मेरे लिए तनिक भी प्रिय न था। तेरहवीं तक पारस्परिक मन-मुटाव चला।



4

निराला पत्रावली

इस संकलन में कुल 78 पत्र हैं जिनमें से 6 निराला जी द्वारा प्रेषित हैं, शेष निराला जी के नाम आये हैं या हमारे नाम से आये हैं। यूँ इन सारे पत्रों का सम्बन्ध निराला से है। ये या तो निराला के पारिवारिक सम्बन्धों को बताने वाले हैं, या निराला जी की अस्वस्थता, उनकी कृतियों के अनुवाद या उनसे रचना माँगने के सम्बन्ध में हैं।

ये पत्र उनके सम्बन्धियों, उनके प्रकाशकों, उनके पुराने परिचितों, उनके श्रद्धालुओं—देशी तथा विदेशी—द्वारा लिखे गये हैं। चूँकि पत्र-व्यवहार मेरे द्वारा ही सचालित था इसलिए निराला के नाम के आये सारे पत्रों को मैं सुरक्षित रखता गया। इन पत्रों के केवल वे ही अंश उद्धृत हैं। जिनका सीधा सम्बन्ध निराला से हैं।

निराला के पारिवारिक पत्रों में रामकृष्ण त्रिपाठी, छाया, रामशंकर शुक्ल, शिवशेखर द्विवेदी तथा केशव के पत्र उल्लेखनीय हैं। इनमें निराला के स्वास्थ्य के प्रति उनकी चिन्ता, उत्सुकता आदि दृष्टव्य है। साथ ही रामकृष्ण त्रिपाठी जिस तरह फैजाबाद से झाँसी गये, कब और क्यों निराला के पास आये, निराला से उन्हें क्या आशाएं थीं, छाया के विवाह, उसकी अस्वस्थता आदि का जिक्र, निराला का उत्तराधिकार पाने, निराला तथा निराला के भक्तों के प्रति आक्रोश—इनका अच्छा खासा स्पष्टीकरण इन पत्रों से मिलेगा। निराला जी ने जो उत्तर लिखाये या लिखे वे अस्पष्ट तथा सन्तोष न देने वाले हैं।

1954 से 1960 तक निराला की अस्वस्थता से उनके श्रद्धालु चिन्तित थे। ये श्रद्धालु पूरे भारत में फैले थे जैसाकि पत्रों से विदित होता है। वे निराला की आर्थिक सहायता भी करना चाहते थे।

कुछ पत्र ऐसे लेखकों या संस्थाओं के हैं जो उनकी कृतियों का मराठी, तेलगु आदि में अनुवाद करने की अनुमति चाहते थे।

कुछेक पत्र सम्पादकों के हैं जिन्होंने निराला जी की रचनाएं प्रकाशनार्थ माँगीं। ऐसे पत्रों की संख्या बहुत हो सकती थी किन्तु उन सबों को जानकर सम्मिलित नहीं किया गया।

निराला के कलकत्ता अभिनन्दन से सम्बन्धित पत्र महत्वपूर्ण हैं। नागार्जुन, जानकी बल्लभ शास्त्री, रामविलास शर्मा के कुछेक पत्र (जिन्हें मैं पा सका था) ही दिये जा सके हैं। मैथिलीशरण गुप्त तथा बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र भी महत्वपूर्ण हैं। राहुल जी ने हमारे पास बहुत से पत्र लिखे होंगे किन्तु उन्हें यहाँ नहीं दिया गया।

यदि कमला शंकर सिंह ने निराला जी के सारे पत्रों को सहेजकर रखा होता, या हम पर प्रारम्भ में प्रतिबन्ध न रहता तो शायद बहुत से अमूल्य पत्र सुरक्षित रह पाते। तो भी हमें विश्वास है कि 12 वर्ष में निराला जी को लोग जिस तरह सर-आँखों पर चढ़ाये रहे उससे निराला के भक्तों का मनोबल बढ़ा, सरकारी व्यवस्था सम्भव हो पाई और निराला निश्चिन्त मर सके।

कोई यह नहीं कह सकता कि हिन्दी का यह संन्यासी, वीतरागी कवि बिना देखरेख के मर गया।



(1)

शिवचन्द्र शर्मा, सम्पादक 'पाटल' पटना के नाम पत्र

प्रियवर !

प्रमोद सिविल लाइन्स की तरफ रहते थे। तिवारी के यहां स्थानाभाव कहा गया था। इधर एक अरसे से उनका सम्बाद नहीं मिला। कुछ जानते है तो लिखकर निश्चिन्त कीजिए। बुखार आ गया था। अब अच्छा है।

इति

—निराला 27 11 52

(2)

निराला का पत्र डॉ. रामविलास शर्मा के नाम — 3.4.53

I am teaching Shakespeare to Shiv Gopal Misra

—Nirala

(3)

बेढब जी के नाम पत्र — 20.1.53

My dear Gaurji

I have received your greetings and an esteemed friend like you should be conferred upon all belongings without restriction The Aradhana is given to the Press by Mahadevi the Sahityakar Sansad and I request you to receive the next one for Prasad Parishad

With best wishes

Your most intimating
Sd Nirala

(4)

महाकवि निराला अभिनन्दन समिति
185, हरिसन रोड, कलकत्ता
2 सितम्बर, 1953

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
दारागंज इलाहाबाद

आदरणीय पंडित जी

हमारे व्यक्तिगत निवेदन को आपने स्वीकार किया है यह समाचार सुनकर अखिल वंग महाकवि निराला अभिनन्दन स्वागत समिति के सभी सदस्य विनीत भाव से कृतज्ञ हैं और इस बात से समस्त कलकत्ता के हिन्दी नागरिकों में अपूर्व हर्ष छा गया है। मैं व्यक्तिगत रूप से आपकी सेवा में अपना आदर दे रहा हूं कि आपने अपने महामहिम आतिथ्य से मुझे और श्री बरुआ को कृतार्थ किया है। अब आप नियमित समय पर कलकत्ता का आतिथ्य स्वीकार करने आ रहे हैं इस शुभ प्रतीक्षा में

....17 सितम्बर को पधारने की कृपा करेंगे व कलकत्ता का अभिनन्दन स्वीकार करके बंगाल के हिन्दी इतिहास में नया जागरण उपस्थित करेंगे।

सादर !

—राधाकृष्ण नेवटिया



पं. रामकृष्ण द्वारा लिखे गये पत्र—निराला के नाम

(5)

प्रयाग, 28.11 53

आदरणीय पिता जी,

मैं संसद का भवन देखने रसूलाबाद जा रहा हूँ। देवी जी इस कार्य मे सहायक होंगी। किन्तु वह चाहती हैं कि आप उन्हें लिख दें कि जब तक रामकृष्ण की जीविका तथा रहने का कहीं प्रबन्ध न हो जाय आपकी सहायता अपेक्षित है। दो सौ रुपये पहले ही देने के लिए भी लिखें.... .

(6)

झांसी

18.1 54

पूज्य पिता जी,

अनेक अभिवादन।

....मकान मिल गया है। मैंने आपसे अथॉरिटी लेटर की प्रार्थना की थी ताकि मैं प्रकाशन सम्बन्धी हिसाब देख सकता और आपके सामने ही उस पर मेरा अधिकार हो जाता। आप देख लेते कि ये प्रकाशक मेरे साथ कैसा व्यवहार करते हैं। अन्यथा, ये लोग जब आपको परेशान करते हैं, आपके माँगने पर भी टाला बताते हैं तो फिर मुझे तो यह कभी कुछ नहीं देंगे।.. .

(7)

झांसी

15.3.54

परमाराध्य पिता जी

चरणों में सभक्ति प्रणिपात।

.. . ज्ञात हुआ कि आपकी पैर वाली व्याधि अच्छी नहीं हुई बल्कि बढ़ गई है .... अब आपसे यही प्रार्थना है कि उसके लिए जो भी अच्छा इलाज हो उसे स्वीकार करें। यदि मेरी आवश्यकता होगी तो मैं भी छुट्टी लेकर चला आऊंगा। रहने की व्यवस्था करके बच्चों को भी ला सकूंगा।....

(8)

झांसी

8.4.54

....सुना है कि आपके स्वास्थ्य सम्बन्ध में कुछ वितडावाद पत्रों में चला है जिसमें एक पक्ष आपकी अस्वस्थता और दूसरा आपकी स्वस्थता का प्रतिपादन करता है। इससे मैं तथा समस्त हिन्दी प्रेमीजन चिन्तित हैं।.... छाया के लिए वर ढूँढ रहे हैं. ..

(9)

झांसी, 20.4.54

परम पूज्य पिजा जी

सभक्ति चरण स्पर्श।

... मैं पाण्डेय जी को रूपये दे रहा था। किन्तु उन्होंने लिए नहीं। मेरे पास आपके रुपये पोस्टऑफिस में है। आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त भेजूंगा या लेकर आ जाऊगा....

(10)

झांसी, 1.5.55

आदरणीय पिता जी

चरणों मे अनेक प्रणाम।

.... जुलाई से 45/- रु माह पर कार्य करता रहा और अपने सही ग्रेड के लिए लडता भी रहा जिससे लखनऊ तथा इलाहाबाद कई बार जाना पड़ा। अत: काफी खर्चे में आ गया था। सम्भवत आपसे कुछ माँगा भी था पर नमीहत ही पा सका था। मैंने समझा अब आप बूढ़े हो गये क्योंकि बुड्ढों को अपने धन से अधिक प्रेम होता है परिवार से कम।....समाचार पत्रों से आपकी भी खबर लेता रहा क्योंकि इसके सिवा ओर चारा न था। आपके ही आशीर्वाद से मैं स्थायी सेलेक्शन में आ गया।

..छाया जब से नाना के यहा गई अस्वस्थ है। उसके नाना शादी के लिए चिन्तित है , आप रुपये दे तो हो सकेगा। लड़का अच्छा है। लखनऊ के वाजपेयी है।

(11)

झांसी, 4.11.55

आदरणीय पिता जी सभक्ति चरण वन्दन।

... एक मास पूर्व मेरे पैरों में पेरालिसिस का आक्रमण हो चुका है। जो कुछ मेरे पास पूँजी थी वह समाप्त प्राय हो चुकी है। भविष्य में क्या होगा ईश्वर ही जाने।....

12

झांसी, 7.9.57

आदरणीय पिता जी

सभक्ति प्रणिपात।

संभवतः फतेहपुर वालों से और कुछ न मिला होगा.... कृपया अपनी तबियत के हाल लिखें कि अब कैसी है। यहां सभी अच्छे हैं....। (छाया का) सम्बन्ध पक्का करने में वर रक्षा और यात्रा का खर्च तो अपेक्षित ही है जिसमें लगभग दो-ढाई सौ रुपये लगेंगे। यदि आप ये रुपये भेज दें तो नवरात्रि में पक्का कर लूं। या आप लिख दें तो कुछ हिसाब हिन्दी प्रचारक मण्डल में पड़ा है, उन्हीं से ले लूँ ...

(13)

रामकृष्ण के नाम पत्र निराला का

दारागंज

10.3.56

आपका एक पत्र कुछ दिन पूर्व आया था। खुश रहिये। हजारों लाखों की आमदनी यहां रक्खी है किन्तु रुपया हम किन्हीं तक नहीं पहुंचा पाते, वजह हम नहीं बता पाते।

निराला ही अस्वस्थ हैं, मगर चिन्तनीय दशा में नहीं हैं कमजोरी और बेताबियत बढ़ रही है....



(14)

निराला जी की पौत्री छाया के पत्र : निराला के नाम

झांसी, 14.2.56

आदरणीय बाबा जी

सभक्ति अभिवादन।

....आशा है आप स्वस्थ होंगे... सबकी दवा हो रही है.. आपका पत्र पाने की उत्सुकता रहती है .

आपकी आज्ञाकारिणी पौत्री

छाया

(इसी पत्र में पं. रामकृष्ण ने नीचे लिखा है.... बीमारी के कारण अर्थाभाव रहता है इससे नहीं आ सका। क्षमा करेंगे....)

(15)

पुरवा पच्छू टोला, उन्नाव

10 12.56

आदरणीय बाबा जी

सभक्ति अभिवादन।

.... आपको मालूम हो कि आजकल मै यहीं पर हूं। कार्तिक पूर्णमासी को मैं झांसी से आ गई... नानी जी कहती हैं कि हम लोगों को आपने बिलकुल भुला दिया.... पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में।

(निराला जी ने इसका उत्तर 20.12.56 को लिख भेजा।)

(16)

प. रामकृष्ण त्रिपाठी के श्वसुर रामशंकर शुक्ल के पत्र निराला के नाम

पुरवा पच्छिम टोला
1 12.54

प्रिय निराला जी नमस्कार।

.. .आगे हम 24.10.54 को झांसी गये थे छाया को ले आये हैं। उसकी खांसी आज सालों से चल रही है। ठीक कोई इलाज नहीं हो पाया.... गरमी की छुट्टी में हम आपसे जाकर मिलेंगे।

शुभ !

रामशंकर शुक्ल

(17)

पुरवा, 16.12 56

प्रिय भाई साहव को नमस्कार !

.... आगे आपको रामविलास के भाई के हाथ एक पत्र भेजा था जिसका उत्तर नहीं मिला ... आगे कार्तिक पूर्णमासी को झांसी जाकर छाया को लिया लाया हूं, आगे आपको पुरानी बातों का ख्याल करना जरूरी है। छाया की शादी में मुंह मांड़ना मुनासिब नहीं होगा। आगे रुपैया के लिए आपको रामकृष्ण को इजाजत दे देना है बाकी लड़का ठीक हो जावेगा जो पैसा आपका है व फिर किस काम लगेगा।

रामशंकर

(18)

निराला द्वारा लिखाया गया पत्र

दारागंज, इलाहाबाद
15.7.58

प्रिय भाई साहब,

खत आपका मिला। सरकार जहां कच्ची होगी, वहां किताबत की पूरी पकड़ के साथ हम जल्दी या देर से गुजर रहे हैं। जो विद्वान बच्चे हैं, उनको राज समझा जाते हैं। ज्यादा हम क्या लिखें जब खाते-पीते घरबार करते बहुत रंग रगाये जा चुके हैं। विवाह शास्त्रोक्त रीति से कहां तक बन पड़ेगा इसकी निगरानी आप खुद कीजिये। हम शास्त्र से बाहर हैं गोकि बाउन्ड्री के बाहर जाना ही पडा, मुमकिन पड़ता भी हो। हम खाने पीने का इंतजाम कर जावेंगे तो दूसरे मंतजिम भाड फोडने वाले चने या चिल्ले तैयार करेंगे तो कोई समझौता क्यों होगा। रंग आदि का व्यावहारिक ब्योग संसार ही की तरह बड़ा है, थोड़े में क्या आवेगा।

ह सूर्यकान्त

चिरन्जीवि छाया,

यह खत डॉ शिवगोपाल से लिखा रहा हूं। तुम्हारे दोनों पत्र मिले। पढाइ आर लिखाई अभी बहुत कच्ची है। किताबें लकर हिन्दी पका लो। हमारा हिसाब तुम्हारी समझ मे न आवेगा। वहां से गांव तक मिले मिलाये खाते रहना। जाति, वर, घर आदि के निश्चय विना तुम्हारे विवाह की ठान नहीं सकता। इतर विवाह हमको धोखे जान पड़ते हैं। तुम्हारे घर में बूढ़ी-वूढ़े हैं, उनकी सेवा कौन करेगा।

तुम्हारा बाबा
निराला जी

श्री रामशंकर जी शुक्ल
पच्छी टोला, रनजीत पुरवा
उन्नाव।

(19)

शिवशेखर द्विवेदी का पत्र

43, गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ

9.4.54

(यह पत्र रामकृष्ण त्रिपाठी द्वारा कला भवन या निराला, दारागंज, इलाहाबाद के पते पर भेजा गया था)

श्री त्रिपाठी जी नमस्कार

श्री निराला जी की बावत इधर उनके वक्तव्य पढ़े। उनकी स्थिति और वक्तव्यों के उद्देश्य की बाबत बहुत कुछ तथ्य एकत्रित करने की हमने चेष्टा भी की।

... आप उन्हें यदि स्थान से अलग कर सकें और सहायता के लिए जो ढंग सूचित किया है उससे भिन्न स्वीकार करें, एक वक्तव्य जैसा जरूरी है, उन्हीं का प्राप्त कर सकें तो समस्त चालबाजी व्यर्थ हो जायेगी। इसीलिए हम आपकी तलाश में भी थे। उत्तर तुरन्त। सबको....

—शिवशेखर द्विवेदी

(20)

शिवशेखर द्विवेदी का पत्र

संभावित तिथि, जून 1954
शारदा स्टोर्स, 15 ए क्रास
स्ट्रीट, कलकत्ता

श्री चरण कमलेषु,

मैंने दो पत्र श्रीमती चन्द्रकान्ता को भेजे। उत्तर न मिला। इसीलिए सीधे आपको लिख रहा हूं। मुझे पता है स्वार्थियों के घेरे में हम लोगों के पत्र आपको नहीं मिलते। पत्र चोरी भी होते हैं, आप ध्यान रखें कारण कुछ करने में ऐसी नीति बाधक है।

आप यदि अपनी व्यवस्था की बाबत कुछ बता सकें तो अधिक अच्छा हो। कल जो जाल आपने इलाहाबाद में जान या अनजान में अपने चारों ओर फैलने दिया है वह प्रिय नहीं। लाभप्रद भी नहीं। हमारे लिए बिल्कुल त्याज्य और अविश्वसनीय है।

इसीलिए हम लाचार हैं, फिर भी यहां से जो कुछ किया जाना सम्भव है और सभालना भी सम्भव होगा। उसी की बाबत यहां कुछ हम लिख रहे हैं। उत्तर अवश्य देंगे।

'सन्मार्ग वालों' का यहां के ग्रुप से संबंध था और उसने बड़े-भद्दे तरीके से रकम इकट्ठी की है। हमारे आने पर विज्ञापन बन्द हो गया। इसके सिवा 2300/- नेवटिया कमेटी के पास पहले से ही है आपके स्वास्थ्य के लिए खर्च करने को। वे उसी मद से खर्च करेंगे और जरूरत पड़ने पर संग्रह भी करेंगे। यह उन्होंने स्वीकार किया है गोकि यह रकम बरुआ भी हजम करना चाहते थे देवी जी तकाजा कर चुकी हैं। पर अब सुरक्षित है।

इस कमेटी की इच्छा है कि आप इलाहाबाद प्रपंच से मुक्त होकर 3-4 महीने या छः महीने अच्छी जगह में एकदम निष्क्रिय रहें, उपचार भी आवश्यक हो। इस ख्याल से पहाड़ी जगहों में रांची को अधिक पसन्द किया जा रहा है।

आपके लिए प्रति मास वहां 400/- खर्च किया जायेगा और आप यदि अधिक ठहरना चाहेंगे तो जब तक ठहरेंगे कलकत्ता खर्च बर्दाश्त करेगा। स्वस्थ होने पर आप जहां चाहें रह सकेंगे। साथ ही यदि मौका देंगे, तो प्रकाशन भी धीरज से स्वतन्त्र कर लिया जा सकेगा—जो पं. रामकृष्ण के भावी जीवन के लिए सुखद होगा। गोकि उनके प्रति यहां अच्छी धारणा नहीं बनी। पर काम बनाया जा सकता है। इलाहाबाद के प्रति यहां की मनोवृत्ति बहुत दूषित हो गयी है। खैर, रुपया रुक गया है। अब आप जैसा उचित समझें तुरन्त हमें लिखें। हम चेष्टा करें, मामला काफी अनुकूल है।

हम भी यही ठीक समझते हैं, आप कुछ दिन सबसे दूर एकान्तवास करें—केवल स्वास्थ्य का ही ख्याल करेंगे। सेवा के लिए केशवादि में जिसे सुविधा हो, और जो आपको अधिक पसन्द हो उसे साथ रख लें। यदि उक्त व्यवस्था ठीक जँचे तो पत्र पाने पर ठहरने के लिए बंगले का प्रबन्ध तुरन्त किया जावेगा।

आशा है आप तुरन्त उत्तर देंगे। पत्र पढ़कर नष्ट कर देंगे ताकि किसी के हाथ न लगे।

आपका
शिवशेखर द्विवेदी

(21)

पं. रामकृष्ण त्रिपाठी के पत्र : हम लोगों के नाम

300, रकाबगंज, फैजाबाद
4.11.52

प्रिय बन्धु,

भाई, राज या रहस्य यहां कुछ भी नहीं है। मैं तो किसी प्रकार सुबह से शाम तक बच्चों के खाने का ही प्रबन्ध कर पाता हूं और इसे भी पिता जी का ही आशीर्वाद समझता हूं। मेरी सर्विस अस्थायी है। बच्चों का एज्यूकेशन और छाया का पाणिग्रहण तथा पिता जी का स्वास्थ्य ही मेरे राज की बातें हैं किन्तु क्या करूं, किससे कहूं....पिता जी यदि अपना उत्तराधिकारी मुझे घोषित कर देते तो अब भी



उसका प्रबन्ध हो सकता था। बाद में यह व्यूह तोड़ना कठिन हो जावेगा। आप पिता जी को समझाइये कि वह अभी से अपनी स्थायी संपत्ति का प्रबन्ध भार मुझे या जिसे वह योग्य समझें छोड़ें और देखें कि प्रबन्ध कैसा होता है। ठीक न होने पर वह अपना अधिकार छीन सकते है।

(22)

रकाबगंज, फैजाबाद

29.11.52

प्रिय बन्धु

... प्रगति प्रकाशन, दिल्ली से निराला जी की एक पुस्तक सरकार की आँख' छपी है . इसे आप समझियेगा। 'आराधना' का यदि किसी दृढाधार से अन्यत्र प्रकाशन कराना चाहते हैं तो मैं सहमत हूं. ..

(23)

फैजाबाद

6 1 53

प्रियवर,

... हम सकुशल आ गये.... आप लोगों को देखकर अपर साहित्यिक मिश्र बन्धु हिन्दी साहित्य मे अवतरित हो गये. ऐसा प्रतीत होता है. . कमला शंकर जी से हिसाब आउट करने को कहें.. . मिठाई और सब्जी वालों को कमला शंकर से या पिता जी के पुरस्कार वाले रुपये दिला देंगे।

(24)

फेजाबाद, 25.4 53

प्रिय बन्धु,

.... भाई, मैं तो कई पत्र पिता जी को दे चुका.... इधर उनके दो पत्र प्राप्त हुए हैं। उन्होंने मुझसे 40-45 रु. पाठक जी से मांगने के लिए लिखा है जो अलग से जमा हे। रायल्टी के रुपयों में से 500/- देने को कहा है। मैंने पाठक जी को रुपये भेजने को लिखा है। परन्तु क्या पिता जी को उन्होंने अब तक का हिसाब दिया है ? कुछ ज्ञात न हुआ.. .।

(25)

फेजाबाद, 5.5 53

प्रिय बन्धु,

....मैंने एक पत्र पिता जी को लिखा हे, उसमें अपने इलाहाबाद आने के सम्बन्ध मे लिखा हे.. बात यह है कि कमला शंकर का मुझे विश्वास नही, अब मेरा मन उससे हट गया है। आपको कुछ दिनों पहले लिखा था कि कोई मकान लेकर निराला जी को वहां से हटा लिया जाय। ..

(26)

डलमऊ, रायबरेली, 27 6.53

प्रिय मिश्र जी,

...आप लोगों से भेंट न हो सकी. .. घर में ताला बन्द था। पू. पिता जी को आर्थिक कष्ट था और भोजन अपने हाथ से बनाते थे। उन्होने पाठक के पास मुझ भेजा था पर उसने कुछ दिया नहीं। 2 जुलाई को निराला जी की रसीद पर देने को कहा है—इधर में सेक्रटरी को पुरस्कार के रुपये इलाहाबाद भेजने को लिख रहा हूं। पत्रोत्तर फैजाबाद भेजें।

(27)

फैजाबाद, 4.1.253

प्रिय....

ज्ञात होना चाहिए कि मैं झांसी भेज दिया गया। अब सभवत. आप लागो से कम भेंट हुआ करेगी। इलाहाबाद की धींगा धीगी अब और बढ़ेगी। निराला ग्रन्थावली का प्रकाशन तो अनिवार्य है।....

(28)

झासी, 17.12 53

प्रिय....

मैनपुरी के हाल पाण्डेय जी से ज्ञात हुए। साथ ही यह भी ज्ञात हुआ था कि यही लोग निराला जी से अनुचित लाभ उठा रहे हैं। उनका मतलब तुम लोगों से था। वह लोग जो अपना स्वार्थ हल करते हैं और बदनाम दूसरों को करते हैं उन्हीं लोगों ने कहा होगा। खैर उन लोगों को मैंने समझा दिया। असलियत जानकर वह लोग मौन हो गये। अब कहना यह है कि वह रुपया देवी जी को प्राप्त हुआ और अन्यत्र का भी तो उसका हिसाब वह किस प्रकार रखती है यही देखना है। निराला जी बेकार चिन्तित होते हैं। क्योंकि मेरे लिए वह कुछ करना नहीं चाहते। उनके पैसे का उपयोग या आगे भी उनकी रायल्टी आदि मुझे न प्राप्त होगी, मैं जानता हूं।. .

29

झांसी, 13 1 54

प्रिय....

परमानन्द जी को लिखकर ज्ञात करें कि कलकत्ते के रुपये देवी जी के पास आए या नहीं। मैनपुरी के रुपयों को किस प्रकार देवी जी ने प्राप्त किया निराला जी के लिए या संसद के लिए ? .... पिताजी को एक पत्र दिया था.. .

(30)

झांसी

5.2.54

आपका पत्र पिता जी के पत्र के साथ ही मिला। अवश्य ही वह बड़े काम का है। लेकिन अभी भी इससे अथारिटी न प्राप्त हुई जिससे कि मैं कुछ कर सकता। तो भी है महत्त्व का। ....बोर्ड ने भी अपनी परीक्षाओं के कोर्स में निराला को कोई खास स्थान नहीं दिया है। इसके लिए आन्दोलन होना चाहिए....।

(31)

झांसी

10.3.54

प्रिय

पिता जी का हाल सुनकर दुःख हुआ। आप किसी योग्य डाक्टर को दिखाकर इन्जेक्शन की व्यवस्था करें। इस सम्बन्ध में जो व्यय होगा, वह मैं दूंगा, उसमें किसी की आवश्यकता नहीं। ....मेरा पत्र पिता जी को दिखा देना.... यह बड़ा ही भयानक रोग है। इसमें दर्द बहुत होगा और अंत में पैर सूख कर कांटा हो जावेंगे। सचेत एवं सचेष्ट रहो। तुम्हारा...

(32)

झांसी

12.11.54

प्रिय

....विदेश में यदि इलाज होने से लाभ हो सकता है तो उसकी व्यवस्था की जाए। निराला जी से इस सम्बन्ध में पूछकर हमें लिखो वह चलेंगे बाहर ?



(33)

झांसी, 6.2.55

प्रिय

.... पिताजी को आगरा भेजने का सरकारी मकसद जो ज्ञात हुआ है वह यह है कि सरकार महाकवि को पागलखाने में रखना नहीं चाहती वरन् वहां उनके किसी मित्र अथवा किसी अन्य जगह, जहां वह चाहें, उन्हें रखकर उनके स्वास्थ्य का परीक्षण चाहती है। जहां वह रहेंगे वहीं बोर्ड बैठ जायेगा.... हां अलबत्ता पिता जी की अस्वस्थता से जिन लोगों को लाभ पहुंच रहा है जो उनका सर्वस्व हड़प रहे हैं उनकी चैन की वंशी बजती रहेगी।।

(34)

झांसी, 12.7.55

प्रिय शिवगोपाल जी,

सप्रेम हरिस्मरण

.... मैं पुरवा में था, छाया की अस्वस्थता के कारण सपरिवार वहां चला गया था। बिहारी लाल जी की कन्या की शादी में हम सभी गये थे.... छाया के लिए भी चिंता है, वर खोज लिया है.... पिता जी की अस्वस्थता दीर्घकालिक है। औषधि और सेवा से उन्हें टिकाया जा सकता है। कमला शंकर के मेरे ट्रान्सफर को कैन्सिल करा देने के कारण फिर सिंह सरकार से कुछ निवेदन करना उचित नहीं समझा। निराला जी की संपत्ति का मुझे कोई भरोसा नहीं अतः नौकरी छोड़ नहीं सका। अब सरकार और निराला भक्तों को जैसा समझ पड़े, करें।

(35)

झांसी, 1.8.55

प्रिय भाई

.... वर्तमान युग के अग्रणी शासक तथा साहित्यकार सभी तो प्रतिकार चाहते हैं क्योंकि इनमें शायद ही कोई हो जो निराला द्वारा पिटा न हो। निराला और निराला साहित्य की दुर्दशा का एकमात्र यही कारण है। ये लोग कभी न चाहेंगे कि निराला स्वस्थ हों, उनका अच्छे से अच्छा इलाज हो। आज जिस चक्रव्यूह में निराला फंसे ....

(36)

कृपाल नाविक का पत्र : निराला के नाम

(27.11.56 की मुहर पड़ी है)

श्रीमान पूज्य पिता जी को पं. कृपाल का चरन छूना स्वीकृत। सेवा में निवेदन है यह कि अब प्रार्थी के पास सिवा ईश्वर के भजन और कुछ नहीं रहा। मकान वगैरह सब ईश्वर के नाम अर्पण करके गंगा के किनारे जीवन नैया में रह करके जीवन को परिश्रम करके व्यतीत कर रहा हूं। अभाग्यवश आपके दर्शन नहीं होते। आप मुझ तुच्छ को भूल गये। आपके दर्शनों को महान संकट बना रहता है। आशा करता हूं आप कभी मुझ तुच्छ के यहा आकर ककृतार्थ करेंगे। आप कभी मुझ तुच्छ से सवक को अपने कर कमलों से कोई पत्र का जवाब न दिया। उसके लिए उम्र भर आभारी हूं।

(37)

केशव के पत्र हमारे नाम

डलमऊ, 6.5.54

भाई कुम्भ मेले से कोई हाल नहीं मिले.... रामकृष्ण का पत्र आया था। लिखते हैं कि पिता जी की बीमारी का तार देवी जी ने भेजा था। मैं गया था और निकट के सेवकों में आप हैं। बिहारी दादा भी गये थे। ... रामकृष्ण मेरे पास लिखते हैं कि वश; की कन्याएं हैं सब कोई मदद करो। निराला को इस टाइम खुद रुपये की जरूरत है। भगवान जाने मैं तो इसी तरह आज दो साल से सुनता आ रहा हूं कि कन्याओं का विवाह महाकवि करेंगे... सन् 37 से 52 के कुछ पत्र मेरे पास हैं ....इति

केशव लाल



(38)

डलमऊ, 18 5 54

प्रिय भाई,

महाकवि अब कुछ ठीक हुए या नहीं। मैं 10 या 15 दिन में दर्शन करने आऊँगा.... मेरे पास सन् 19 व 20 तक के पत्र हैं कम से कम 200 हैं। दो पत्र निराला जी के इस पर भी है कि 40 हजार का मकान खरीदा गया है। क्या कोई बता सकते हैं। इसको आप अखबार में छपवा दो।

बिहारी लाल दादा की कन्या का ब्याह रुक जावेगा क्योंकि महाकवि स्वस्थ नहीं हैं। बिहारी लाल के पास मूल हिसाब नहीं है। आने पर बात करूगा।

आपका

केशव लाल त्रिपाठी

(39)

डलमऊ, 18.4.55

... कल बिहारी दादा के पास से पत्र आया है, बिन्दा की शादी ठीक हो गई है। बिना रुपयों के पक्की न हो सकी ....बिहारी दादा ने कलेक्टर साहब के पास भी पत्र भेजा है और आप व कमला शंकर मिलके महाकवि से कह कर बिन्दो के संस्कार को पूरा करें... आप लोगों को मालूम होना चाहिए कि निराला पागल नहीं है। हां ध्यान देने की बात है, त्याग देखते हुए भी परिवार की चिन्ता प्रत्येक समय दिमाग में गूंजा करती है। क्या इतने दिनों से आप या कमला शंकर बाबू नहीं जानते। मैं भी निराला जी के नेचर की बातें सन् 1923 ई. से आज तक की कुछ लिखूंगा.... आम खूब फले हैं। निराला जी को आमों की तरफ ध्यान दिलाना क्योंकि आप की बात मानते हैं।

केशव लाल त्रिपाठी

(40)

डलमऊ, 13.3.55

....महाकवि काका से बिदाई 7/- रु. मिल चुके थे। काका से मैंने डरते-डरते विदा होने की आज्ञा मांगी.... आपने लिखा है कि निराला जी का फिल्म बनने जा रहा है.... महाकवि की सुसराल भी रास्ते में है और किस तारीख को आप लोग आवेंगे.... भाई निराला जी की ससुराल यात्रा नवजीवन में देखा है. .. मेरे बाबा 4 भाई थे, 4 भाईयों में दो भाई हुए दो में से पांच अब एक-एक का नाम अलग-अलग

1. बिहारी लाल में पुत्र पुत्री के पांच, 2. रामगोपाल में स्त्री पुत्र पुत्री के 4 चार 3. केशव जी में स्त्री पुत्र के 4 चार, 4. कालीचरण में स्त्री पुत्र पुत्री के 6 छः, 5. रामकृष्ण में स्त्री पुत्र पुत्री के 5 भाई शिवगोपाल मिश्र जी वंशावली मेरे लोगों की इस ढंग की है... और कुछ पत्र बंगला में हैं. ..

(41)

देवेन्द्र नारायण वर्मा का पत्र

ग्वालियर, 21.4.1954

प्रिय भाई सप्रेम वन्दे। इधर समाचार पत्रों में और विशेषकर आपके द्वारा 'नया पथ' तथा 'हिन्दुस्तान' आदि में लिखित पत्रों से निराला जी की अस्वस्थता का हाल जानकर चिन्ता हुई। ....सोमवार दिनांक 19.4.54 को साहित्य साधना संसद की साप्ताहिक गोष्ठी में श्रोताओं और संसद-सदस्यों ने 51/- की धनराशि हमें प्रदान की जो कल तार-मनीआर्डर के पते पर रवाना कर दी गई। कृपया आप वह धन प्राप्त कर लें.... हमें निराला जी के सम्मान का पूरा ध्यान है। उनसे हमारी ओर से चरण स्पर्श कहकर निवेदन करें कि प्रस्तुत अल्प सेवा उनके बच्चों ने प्रेषित की है—पिता की भांति उसे स्वीकार करें। गरीब हिन्दी सेवियों की मेहनत की कमाई का वह एक अंश है, किसी शोषक पूंजीपति के दान का भाग नहीं।... उनकी परिचर्या में रत वहां उनके शुभचिन्तकों को कोई आपत्ति न हो तो ग्वालियर में



निराला जी की चिकित्सा का प्रबन्ध किया जावे। यहां के जयारोग्य हास्पिटल की भारतवर्ष के बड़े और अच्छे अस्पतालों में गिनती है.. यह पहली किश्त है जो भेजी गई है..

देवेन्द्र नारायण वर्मा

(42)

Surya Narayan Misra
9, Bihar Signal Section NCC
Main Road, Ranchi Town

Respected Shri Misra Ji,

I have been reading about the illness of our great national poet Sri Nirala Ji since many months. It is a great pity and a matter of great shame that government did not do any thing so far

Dinkar Mahadevi Verma, Pant, Maithili Saran Gupta are financially better off They are also enjoying government patronage

Nazrul Islam could be sent to London for expert treatment. Felik Topolski can visit Delhi as a state guest but our truely great poet is allowed to

Every student of literate known that Nirala is not in any way lesser to Gorki Ravindra Nath Milton or Goethe He is a great genious

I wish therefore to send some thing out of my miserable salary which may kindly be utilized for his treatment Please send Nirala's address

(43)

Mehar Chand M A , LLB.
Lecturer in Philosophy
Govt College, Maler Kotla, Pepsu
28 4 54

Dear Sheo Gopal Ji & Respected Nirala Ji

. I was distressed to know that our dear great poet is not feeling well and that he can hardly walk May God cure him and give him health

. If needful make arrangements for sending him abroad for expert medical treatment The Govt help ought to be forthcoming

(44)

कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह का पत्र

युवराज दत्त डिग्री कालेज
लखीमपुर-खीरी
28.7.54

प्रिय भाई

.... अर्चना और आराधना की एक-एक प्रति जैसे भी सम्भव हो महाकवि के हस्ताक्षर करके भिजवा दीजिये। .... यदि आपकी सेवा साधना ने महाकवि को पुनः लेखनी उठाने को प्रेरित किया तो हिन्दी को आप युग-युग के लिए उपकृत करेंगे।

इस महीने में प्रयाग पहुंचकर महाकवि के दर्शन करने का विचार था। उनकी प्रिय तम्बाकू भी मैंने मंगाकर रख ली थी। पर कतिपय परिस्थितियां बाधक हुईं।

सस्नेह !
चन्द्रप्रकाश सिंह



(45)

प्रसन्न चन्द्र पंकज
37, अधीपाय्या नायक स्ट्रीट
साहुकार्पेट, मद्रास-1
2 3 55

प्रिय...

मैं इस पत्र के द्वारा पूछना चाहता हूं कि हिन्दी के महाप्राण निराला का स्वास्थ्य कैसा है ? मै चाहता हूं कि अपने साथियों से कुछ सहायता लू और निराला जी को सहायता पहुंचाऊं। वह सहायता तो नहीं पर निराला के कमल चरणों मे श्रद्धा के फूल हैं।

(46)

कविराज विष्णु दत्त शास्त्री आयुर्वेदाचार्य
82, कसेरा बाजार, इन्दौर सिटी
19 7 55

माननीय डॉ. साहब

मैं दवा के साथ मालिश का तेल भेज रहा हूं। यह तेल कबूतर से बनाया गया है जिस बाएं हाथ में दर्द होता हो उस पर हल्के हाथ से मालिस करें तथा तेल मालिश करके तुरन्त हाथ को कपड़े से ढक दें। तेल जहरीला है इसलिए मालिश के बाद हाथ साबुन से धो डालें।

(47)

एक्सरे क्लिनिक, *भगवान दास रोड,*

जयपुर, 8 2.55

प्रिय...

अभी दो तीन दिन पूर्व के नवभारत टाइम्स में पढ़ा कि निराला जी को आगरा के पागलखाने में भेजा जा रहा है ? क्या यह सच है ?

सुरेन्द्र देव

(48)

ए. चेलिसेव का पत्र

इंस्टीट्यूट आफ ओरियंटल स्टडीज

मास्को, 10 अप्रैल, 57

प्रिय मिश्र जी

....महाकवि निराला के अस्वास्थ्य के समाचार से हमें बड़ा कष्ट हुआ—कृपया उनके विषय में हमें शीघ्र ही लिखें कि अब वे कैसे हैं।

निराला जी की कविताओं के रूसी अनुवाद का काम चल रहा है।

आपका सस्नेह

ए. चेलिशेव

(49)

मास्को

12.12.57

प्रिय भाई शिवगोपाल मिश्र जी

... बड़ी खुशी की बात है कि महाकवि निराला का स्वास्थ्य अभी अच्छा है। आशा है वे बहुत से नई कविताएं लिख सकेंगे।

ए. चेलिशेव

इसी पत्र के साथ निराला जी को भी पत्र था

....अभी मैं आपकी कविताओं का अध्ययन और अनुवाद करना जारी रखता हूं.... तुलसीदास और दूसरी कविताओं का अनुवाद करने का अवसर मिलेगा। मुझे अफसोस है कि दो महीने हुए मैं भारत में गया और आपसे मिलने का मुझे सुअवसर न मिला। आपके अच्छे मित्र श्रीमान सुमित्रानन्दन पंत से मैं मिला और हिन्दी कविता के बारे में तथा आपकी कविता के बारे में बहुत बातें कर रहे थे। आशा हे कि निकट भविष्य में मैं भारत फिर आऊँगा और आपसे जरूर मिल सकूंगा।

(50)

स्वागत समिति
आन्ध्र प्रदेश हिन्दी विद्यार्थी सम्मेलन
सोमजजाही मार्केट, हैदराबाद
19.11 57

आरदणीय महाकवि निराला जी !

सादर प्रणाम।

....हमारी यह अभिलाषा नहीं थी कि महाकवि का किसी प्रकार से निरादर किया जाय। . समाचार प्राप्त होने का एकमात्र साधन दैनिक पत्र ही हे जिसके द्वारा हमें यह ज्ञात था कि महाकवि जी अपनी अस्वस्थता के कारण आर्थिक कठिनाई से गुजर रहे हैं। इसी कारण आर्थिक सहायता को ध्यान में रखते हुए उनसे शुभ सन्देश की ही इच्छा थी.. . उनकी साहित्यिक सेवा का मूल्यांकन हम आर्थिक पहलुओं से नहीं करना चाहते... हमे क्षमा प्रदान कर कृतार्थ करेंगे।

भवदीय
सत्यनारायण गुप्त

(51)

लोक सम्पर्क विभाग, शिमला-4
30.10.1960

प्रिय भाई

इधर समाचार पत्रों में निराला जी की बीमारी का समाचार पढ़कर चिन्तित हूं। कृपया लौटती डाक से उनके स्वास्थ्य के बारे में विस्तार से लिखें।

सत्येन्द्र शर्मा

(52)

2 डी मिन्टो रोड, इलाहाबाद-2
14.10.54

मान्यतमेषु शतं प्रणतीनाम्

मेरी प्रबल इच्छा थी कि आपसे मिलूं। मगर कल से दमा ने हमला बोल दिया है... हाँप हॉप कर उठता हूं।

दिसम्बर में फिर आना होगा, तब अवश्य मिलूंगा। आजकल आसन पढ़ने में जमा रखा है। वहां का पता—द्वारा पापुलर बुक हाउस, पटना-4 (बिहार)

आपका
नागार्जुन

(53)

विद्यापति वाचनागार, देवेन्द्र दास लेन,
पटना-4, 12.12.54

महामान्येषु प्रणतीनाशतम्

आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। मगर अखबारों से यह जानकर कि आपका स्वास्थ्य इधर फिर शिथिल हो गया है, चिन्ता हुई....

मैं भी इधर दमा से जूझता रहा। शिवपूजन बाबू साधारणतः स्वस्थ हैं। आफिस 11 से 5 तक बैठते हैं मगर इस तरह छः घंटे आसन कराकर प्रकार का अत्याचार ही समझिये।

आपका
नागार्जुन

(54)

नागार्जुन के नाम निराला का पत्र
8 12 54

आपका पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। जवाब में देर आने की वजह-लिखने वाले जयगोपाल मिश्र हजरत हाजिर न थे या मेरे दिमाग की ही गैरहाजिरी थी।

आपके जैसे कलीम दोस्त के खत से जैसा गालिब ने लिखा है—"लिखने वाले ही से चार आंखें होती है।" आप खुश रहें और हर हालात से वाकिफ करते रहे यह आपसे अर्ज है।

आपका
निराला

प नागार्जुन जी
पटई कोठी, लंगर टोली, पटना-4

(55)

श्री मैथिलीशरण गुप्त का पत्र 6-सी, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली

(प्राप्त 20.3.1954) 4.12.2010

प्रिय....

.... लगता है श्री निराला जी से लोग उपकृत हो सकते हैं उनका उपकार नहीं कर सकते। वे इतने उदार न होते तो यह सब क्यों होता।

आपका

मैथिलीशरण

(56)

99, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली

2 8 1955

प्रियवर

कविवर निराला जी के विषय में प्रयाग के साहित्यिक तथा राजनैतिक नेता ही कुछ कर सकते हैं। इस विषय को इतना विवादग्रस्त बना दिया गया है कि कोई बाहर वाला इसे हाथ में लेने में संकोच ही करेगा।

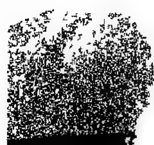
मेरे जैसे आदमी के लिए तो यह और भी कठिन है क्योंकि मेरे कुछ भी लिखने से गलतफहमी पैदा होने की आशंका है।

क्षमा प्रार्थी

बनारसीदास चतुर्वेदी

श्री कैलाश कल्पित

65, चौक, इलाहाबाद



(57)

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
ज्ञानवापी, वाराणसी
31.12.1956

प्रिय भाई

पत्र तुम्हारा 26.12.56 का मिला।

निराला जी के गीत गुंज का द्वितीय संस्करण भी फरवरी में करूंगा और जो गीत बढ़ाने हों उन्हें आप शीघ्र भेज दें।

उन लेखों के संग्रह के बारे में यह निश्चय कह सकता हूं कि इसके प्रकाशन का कार्य हम लोग जुलाई के बाद अगस्त में ही कर सकेंगे।....

तुम्हारा ही
ओउम प्रकाश बेरी

(58)

रामदयाल सिंह कालेज
मुजफ्फरपुर (बिहार)
13.1.57

परम पूज्य

श्री चरणों में सविनय प्रणतिति।

.... कभी-कभी आपके सम्बन्ध में समाचार भी पढ़ने को मिल जाते हैं। उतने से ही तृप्त होना पड़ता है। घर और नौकरी के चक्कर : दो पाटन के बीच ...

तीन नव प्रकाशित पुस्तकें भेज रहा हूं। कृपया कुछ पंक्तियां (आशीर्वाद के रूप में) अवश्य लिख भेजें। 'प्राच्य साहित्य' नामक चौथी पुस्तक भी छपकर तैयार है. ..

पत्र वाहक मेरे जामाता हैं। गतवर्ष शैल का विवाह किया था न।....

आपका कृपापात्र
जानकी वल्लभ

(59)

28.9.80

प्रिय डॉ. शिवगोपाल मिश्र

तुम्हारा 23/9 का पत्र मिला।

क्या जो निराला के प्रति अनुदार रहे हैं उन्हें बख्श दिया जाय ? कुछ को इतिहास मार देता है, कुछ इतने तुच्छ हैं कि उनका जिक्र न करना ही उचित है। जो अनुदारता इतिहास मे उल्लेखनीय हो उसे न भुलाना चाहिए। वह विवेच्य हैं।

यह कहना कठिन है कि और भी ज्वालामुखी फूट सकते हें या नही पर निराला को लेकर बहस सदियो तक चलेगी। अभी तो शुरुआत है।....

स्नेह सहित

रामविलास शर्मा

(60)

कविता *व्रज किशोर पथ पटना-1*

27.1 54

मान्यवरेषु प्रणितिपर्यायाः

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हम पटने से 'कविता' नाम की एक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भिक आयोजन पूरा कर चुके हैं।

.. उसके संपादक होने के नाते में आपका आशीर्वाद और एक कविता अविलंब चाहता हूं। मुझे विश्वास है, आप निराश नहीं करेंगे।

सादर

नलिन विलोचन शर्मा

(61)

अवन्तिका कार्यालय
3/5, आर ब्लाक, पटना
27.7 55

प्रिय बन्धु

निराला का गीत मिला। अवन्तिका के अगले अंक में प्रकाशित कर दूंगा।

आपको एक कष्ट देना चाहता हूं.. यदि आप निराला जी से बातचीत के सिलसिले में ही उनके कवि जीवन के संस्मरण एकत्र कर सकें तो आपकी बड़ी कृपा होगी...

भवदीय
लक्ष्मीनारायण सुधांशु

(62)

हिन्दी पंच
डिप्टीगज, दिल्ली
13.10 55

प्रिय निराला जी,

विश्वास है दो चार पंक्ति आप हिन्दी पंच के लिए लिखने की कृपा करेंगे। जय हो।

वही
पाण्डेय वेचन शर्मा 'उग्र'

(63)

18 फरवरी, 1957

आदरणीय,

भारतीय कविता 1954-55 के लिए आपकी रचना मिली। एतदर्थ हार्दिक आभारी हूं। आशा है आप प्रसन्न हैं। आपका सहयोग पाकर मैं जिस गर्व से अनुभव कर रहा हूं उसे बता सकना कठिन है। आपके आशीर्वाद का अभिलाषी।

सादर आपका
हरिवंश राय बच्चन

(64)

साहित्य अकादमी
37, थियेटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिग
कनाट सर्कस, नई दिल्ली

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
साहित्यकार संसद, इलाहाबाद

आदरणीय,

आपकी सेवा में 18 सितम्बर ओर 11 जनवरी को इस आशय के पत्र भेजे जा चुके है।

साहित्य अकादमी की ओर से 'भारतीय कविता 1954-55' के नाम से ऐसा संग्रह प्रकाशित करने की योजना है जिसमें भारत की सब भाषाओं के विशिष्ट कवियों की ऐसी 500 उत्कृष्ट पंक्तियां संग्रहीत की जायें जो 1 जनवरी 1954 से 31 दिसम्बर 1955 के भीतर प्रकाशित हुई हों।

. .आपसे अनुरोध है कि 50 पंक्तियों तक की अपनी कोई ऐसी कविता हमारे पास भेजने की कृपा करें जिसका प्रकाशन उक्त काल के अन्दर हुआ हो।

हरिवंश राय बच्चन
संयोजक

(65)

Chetana Gohıtı, Vıjayawada
18 11 57

We would lıke to brıng ın Telugu more tıtles of great poet Nırala The prıntıng of Bileswar Bakarıha will be commenced in December along wıth other tıtles ıf you grant us permıssıon We will arrange to send the token money alongwıth five copıes of each tıtle ın Telugu. So could you kındly grant us permıssıon to translate the followıng

Kullibhat
Choti Ki Pakad
Chaturı Chamber

Thankıng you !

\ Bhasker

(66)

शिमला, 21 10.1960

प्रिय भाई,

श्री निराला जी से गुरुदेव सम्बन्धी कुछ विचार उन्हीं की लेखनी में अवश्य ही भिजवाने का प्रयत्न करना।

सत्येन्द्र शर्मा

(67)

Czechoslovakia
10th June, 1954

Dear Sir,

Allow me to send kind regards and best wishes for you and your country Being the teacher of Hindi Bhasha and Modern literature, I do translations from Hindi to Czech for our magazeen 'New Orient"

I know only by names your outstanding works but I have no possibility to read and translate it to Czech as in my country we have no your works I should be glad you to send me some of them on the address below written

With warm regards

Yours sincerely
Prof Odolen Smekal
Nova Dedina
P V. Kvasice
Czechoslavakia

(68)

वर्धा, दिनांक 17-7-54

आदरणीय निराला जी

सादर निवेदन

मैंने आपक 'तुलसीदास' खण्डकाव्य का मराठी अनुवाद किया है। उसे प्रकाशित कराना चाहता हूं। अतः आप तुलसीदास काव्य को मराठी में प्रकाशित करने की अनुमति देंगे, जैसी मुझे पूरी उम्मीद है। ....मैं आपका चिरऋणी रहूंगा।

कृपाभिलाषी
रामदास उत्तर दे
राष्ट्रभाषा प्रचार
समिति, हिन्दी नगर वर्धा
(म.प्र.)

(69)

केदारनाथ अग्रवाल बांदा, 25.10.58

मान्यवर निराला जी,

आपकी कविता तुलसीदास का अनुवाद (यह अंग्रेजी में था) मेरे प्रिय मित्र श्री इन्द्रजीत सिंह ने किया है। उस अनुवाद की एक प्रति आपकी सेवा में भेज रहा हूं। आप इसे पढ़ने की कृपा अवश्य करें...

आपका

केदारनाथ अग्रवाल

(70)

पत्र श्री परमानन्द शर्मा के

15, भवानी दत्त लेन, कलकत्ता

3.3.54

प्रिय शिवगोपाल जी

प्यार!

....निम्नांकित पुस्तकें पुस्तकालयों में मेरे दृष्टिपथ से गुजरी हैं—

1. राणा प्रताप, 2. हि.बं. शिक्षा, 3. रवीन्द्र कविता कानन, 4. मनहर चित्रावली, 5. अनामिका। अन्य पुस्तकों का पता लग रहा है।

निहालचन्द्र के लड़के आदि जो इस समय मालिक हैं उनके कथनानुसार वात्स्यायन कामसूत्र उन लोगों ने अपने हाथों उस पुस्तक की पाण्डुलिपि सुश्री महादेवी जी वर्मा को दे दिया गत वर्ष ही। इस रस अलंकार वाली पुस्तक लहेरिया सराय बिहार से निकली थी, कहीं नहीं मिलती। नाटकों का भी पता नहीं। भीष्म और ध्रुव का पता लगा रहा हूं। अन्य पुस्तकों एवं अन्य तथ्यों का भी पता लगाकर सूचित करूंगा।

परमानन्द शर्मा

(71)

कलकत्ता, 9 7 54

श्री मिश्र बन्धु सादर अभिनन्दन

....निराला साहित्य के एकत्रीकरण में आपने कहां तक सफलता प्राप्त की, लिखें तो आगे यथाशक्ति सहायता देने की चेष्टा करूं। ....बंगला के भक्ति कवि गोविन्ददास की पदावली का कभी अनुवाद किया था। यहीं पड़ी थी फिर निराला जी अपने साथ कलकत्ता से लखनऊ ले गये। अब पता नहीं किसके पास है . निराला जी ने इतना लिखा था जितना इस युग के किसी महापुरुष ने नहीं लिखा।

परमानन्द शर्मा

(72)

गंगा पुस्तक माला, 36 गौतम बुद्ध मार्ग
लखनऊ, पत्रांक 4794
दिनांक 27 12.54

महोदय,

... उत्तर में निवेदन है कि रामायण की टीका श्री निराला जी की है। आप किसी प्रकार के भ्रम में न पड़ें। महाभारत भी उन्हीं की लिखी है।

....व्यवस्थापक



(73)

पं. कृपाल नाविक गंगातट डलमऊ
जिला रायबरेली
दिनांक 18.1.62

श्रीमान जी आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। आपने मुझे श्री निराला जी के पत्रों के प्रति लिखा। मेरे पास कोई भी पत्र नहीं है। वैसे मैं उन्हें बराबर पत्र लिखता रहा और समय-समय पर स्वयं सेवा में उपस्थित होता रहा लेकिन उन्होंने एक पत्र का भी उत्तर नहीं दिया। एक बार स्वयं उपस्थित हुआ तो उन्होंने यह शब्द कहा धीरे में कि क्या करूं। मैं आपके पत्रों का उत्तर नहीं दे पाता। इसके सिवा कुछ शब्द नहीं कहे।

आपका
कृपाल नाविक, डलमऊ

(74)

पटना
30 जून, 1962

आदरणीय मिश्र जी
सादर प्रणाम

24 जून 63 के पत्र के लिए धन्यवाद। बाबू जी की मृत्यु के समय में बहुत छोटा था इसलिये उस समय का कोई साहित्यिक संस्मरण मुझे याद नहीं। उनके समय की कोई भी चिट्ठी घर में नहीं है। घर में बहुत-सी पत्र- पत्रिकाएं थीं जिन्हें मेरे बचपन में ही मेरे चाचा जी ने टके सेर के हिसाब से बनिये के हाथ बेच दिया। जहां तक मुझे याद है 'अनामिका' की एक प्रति घर में है।

....

सन् 1948 में मुझे निराला जी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला था। उस समय वे गायघाट काशी में रहते थे.. . वहां दो एक आदमियों के अलावा एक तख्त पर एक भीमकाय लंगोटधारी बैठे थे। मेने पूछा 'निराला जी हैं ?' लंगोटधारी सज्जन ने ही बतलाया 'मैं ही हूं। आप उस ओर से आइये'.... मैंने दरवाजा खटखटाया तब बकायदा उन्होंने दरवाजा खोलकर मुझे बिठाया। मेरे और मेरे परिवार के बारे में पूछते रहे। मेरे लिए एक कप चाय मंगाई और स्वयं खड़े होकर कसरत करने लगे, कभी डंड कभी बैठक। बैठक में वे पूरी तरह नहीं बैठते थे... कभी बंगला और कभी अंग्रेजी में न जाने क्या-क्या बोलते जा रहे थे। कभी छत की ओर देखते थे और कभी दिवाल की ओर।

....

*प्रकाशचन्द्र श्रीवास्तव**
तपन प्रिंटिंग प्रेस
मछुआटोली, पटना-4

---

* *श्री नवजादिक लाल के पुत्र*

(75)

रामविलास शर्मा

3, नई राजामंडी, आगरा
17.1.62

प्रिय भाई

तुम्हारा कार्ड मिला।.... अन्तरवेद के लिए कुछ न भेजने का बुरा न मानो। ... मेरा सुझाव है कि सारी शक्ति पहले निराला जी का असंकलित साहित्य बटोरने में लगाओ और पुस्तक रूप में अपने सस्मरण छपवाओ।

रामविलास



(76)

वासुदेव शरण अग्रवाल 12.1.62

काशी विश्वविद्यालय

प्रिय श्री शिवगोपाल जी

पत्र मिला। अन्तरवेद के निराला स्मृति अंक की सफलता चाहता हूँ।

महाकवि निराला जी वाणी के उच्च साधक थे। भारतीय संस्कृति के आदर्शों के प्रति उनकी जो निष्ठा थी उससे मुझे विशेष प्रसन्नता मिली है।

आपका

वासुदेव शरण

(77)

3.3.1962

प्रिय भाई,

तुमने मेरे लेखों के बारे में पूछा है।

17 दिसम्बर, 1961 के *New Age (Delhi)* में *Nirala —A Homage* लेख निकाला है।

हिन्दी टाइम्स (दिल्ली) में 'ये श्रद्धांजलियां' प्रकाशित हुआ है। यह लेख अक्टूबर या नवम्बर के आरंभ में छपा होगा।

शिक्षा मंत्रालय की पत्रिका 'भाषा' में 'स्वाभिमानी निराला' एक छोटा सा लेख अभी प्रकाशित नहीं हुआ।

एक लेख 'जनयुग' के विशेषांक के लिए लिखा था। 'जनयुग' वाले विशेषांक न निकाल सके। उसे मैं तुम्हारे पास भेज रहा हूं। 'अन्तर्वेद' में उसका उपयोग कर सकते हो।

मेरा विचार निराला जी पर एक नई पुस्तक लिखने का भी है।.... मुख्यत: जीवनी के रूप में..।

जिसके पास भी निराला के पत्र हैं वह या तो उन्हें अच्छे दामों में बेचना या उनसे रायल्टी खाना चाहेगा। मेरी स्थिति यह है कि यदि रामकृष्ण जी पत्र संग्रह स्वय छापें तो मैं उन्हें अपने संग्रह के पत्र दे दूंगा। या फिर नागरी प्रचारिणी सभा छापे और उससे रामकृष्ण जी को रायल्टी दे। जानकी बल्लभ जी का पत्र मेरे पास आया है। वह 8-10 खंडों में विशद निराला ग्रन्थ छापेंगे....

छपवाते—बहुत अच्छा होता यदि तुम अपने संस्मरण से नहीं तो कुछ अंश....

रा.वि.

(78)

श्री सीताराम

भगवान रोड, मीठापुर, पटना-1

मंगलवार 16.1 62, एकादशी

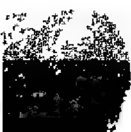
परमादरणीय श्रीमान् पंडित जी

सादर सविनय प्रणाम।

आपके दोनों कृपा पत्र मिले। आठ पोस्ट कार्ड श्री निराला जी के लिखे भेजता हूं। मेरे अत्यन्त प्राणप्रिय पत्र हैं। केवल आपके आदेश को शिरोधार्य करके भेज रहा हूं। 'त्रिपथगा' में भी भाई बेधड़क जी को भेजा था। नम्र निवेदन है कि प्रतिलिपि शीघ्र करा लीजिये और अविलम्ब मुझ लौटाने की कृपा कीजिए। जब तक वापस न पाऊँगा, अहर्निश चिन्तित रहूंगा। उत्सुकता से प्रतीक्षा करता रहूंगा। अन्य पत्रों को इस समय खोज न सका। अस्वस्थ और कार्यव्यस्त रहने के कारण क्षमा प्रार्थी हू। नेत्र दोष में भूल हो तो क्षमा करेंगे। अब प्राय: अस्वस्थ ही रहता हू।

कृपाकांक्षी

शिवपूजन



5

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मैं निराला को जितना ही समझने का प्रयास करता उतना ही वे गुह्य या गूढ़ लगते। जब मैं उनसे कोई जिज्ञासा करता, वे कहते 'मुझे मेरी कृतियों में ढूंढो।'

मैं था कि उनके दैनंदिन कार्यकलापों से उनके जीवन की तह तक जाना चाह रहा था। किन्तु वह तह मिल ही नहीं पा रही थी।

मैंने घटना-चक्र खण्ड में निराला के जीवन भर के विविध पक्षों का, विशेषतया अन्तिम बारह वर्षों को, नाना प्रकार से उजागर करने का प्रयास किया है। मुझे लगा कि जब तक निराला के व्यक्तित्व विवरण को, जैसा कि प्रशंसकों या आलोचकों ने यत्र-तत्र अंकित किया है, एकत्र न कर लूं, तब तक मेरा शोध पूरा नहीं होता।

और जब व्यक्तित्व के बारे में लिखने बैठा तो लगा कि कृतित्व के उस पक्ष पर भी कुछ शोध करूं जो उनके व्यक्तित्व से जुड़ा हुआ है। फलस्वरूप इस व्यक्तित्व और कृतित्व खण्ड की सर्जना हुई है।

इसी शोध में मैंने निराला जी की कृतियों की एक प्रामाणिक सूची भी तैयार की जिसे इस खण्ड में सम्मिलित किया जा रहा है।

किन्तु मेरा शोध तो मेरे भीतर चल रहा था। विश्वविद्यालयों में डाक्टरेट डिग्री के लिए निराला पर जो शोध कार्य हुआ है उस पर दृष्टिपात जरूरी जान पड़ा। अतः 1966 से 1974 की अवधि में सम्पन्न शोधकार्य का विवेचन भी मैंने कर डाला।

और आलोचकों तथा जीवनी लेखकों की प्रखर दृष्टि, साहित्य आकाश में सूर्यकान्त के सूर्य की गति पर लगी रही है। उनकी रचनाओं की जंत्री देना भी, मैंने प्रासंगिक समझा। मैंने ऐसी 85 रचनाओं के नामों की एक सूची भी दे दी है।

निराला का व्यक्तित्व ऐसा था कि आलोचकों को निराला में अन्य महापुरुषों से समानता दिखायी देती रही। किसी ने उनमें विवेकानन्द के दर्शन किये तो किसी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी के।

वस्तुत: निराला का जीवन एक खुली पुस्तक के समान था जिसके प्रत्येक पृष्ठ की प्रत्येक पंक्ति ही क्यों, अक्षर अक्षर को अपनी मति के अनुसार पढ़ा जा सकता था। निराला के समकालीन कवियों में से किसी का जीवन इतना खुला न था। निराला तक पहुंचने के लिए किसी प्रकार का परिचय पत्र दना (विजिटिंग कार्ड), उनसे मिलने की तिथि नियत करने या मिलने के पूर्व प्रतीक्षा करने की आवश्यकता न थी। आप सीधे उनके कमरे में प्रविष्ट होकर उनसे मिल सकते थे। उनके आसपास आपको उनकी सारी वस्तुएं दिख सकती थीं। उनकी आय, उनके बेंक खाते के बारे में आपकी सारी अटकलें तब निरर्थ हो जाती जब आपको उनके अपरिग्रही जीवन का दर्शन ज्ञात होता।

निराला की चर्चा इसीलिए चलती रही है और आगे भी चलती रहेगी।

व्यक्तित्व

क्या क्या दिन देखे, क्या न सहा
क्या क्या विपदाएं नहीं दहीं
फिर भी तुम जिसने आज तलक
अपनी अस्फुट धीमी उसास भी
मुक्त-व्योम से नहीं कही।
तुम एकाकी अजनबी बने,
दरदर घूमे, भटके व्याकुल
सूने में सिसके अकुलाए
पर देख नहीं पाया कोई
गीले कपोल भीगा आंचल।

—डॉ शिवमंगल सिंह 'सुमन'

छत्तीस रुपये का जूता पहने वह ग्वाला
कीमती शाल ओढ़ गली के नुक्कड़ पर
भीख मांगती हुई अंधी बाला
इस बात का प्रमाण देते हैं
कि यहां रहता था 'निराला'।

—सुरेन्द्र तिवारी



पागल और न जाने क्या क्या
कह कह कर उसे प्रताड़ित,
भरमाया
पर जग ने पाया
निश्चय एक प्रचण्ड निराला।

—माखनलाल चतुर्वेदी

डॉ. रामविलास शर्मा : मुझे उससे बड़ा लाभ है

अपनी धरती अपने लोग में (भाग 3, पृष्ठ 89) डॉ. रामविलास शर्मा द्वारा 30 7.34 को अपने भाई के नाम लिखे पत्र में निराला के व्यक्तित्व का जो अंकन हुआ है वह लखनऊ के निराला को मूर्तिमन्त करने वाला है—

"इन महाशय को जो मुझसे पूरा अपने सिर भर ऊंचे हैं अमीनाबाद में शाम को मैली तहमत पहने अथवा मैला कुर्ता, फटी चप्पल पहने अथवा साफ धोती, जरा मैला कुर्ता अथवा बिल्कुल धवल और पैर में पंप फुल स्लीपर भी सभी वेशों में देख सकते हैं। कंधे तक काले, ऊपर कुछ सफेद जो दूर से न मालूम हों, बाल कंधे तक लटकते हुए। मस्तानी चाल, बड़ी आंखें। लम्बी नाक पर बहुत नोकदार नहीं। गालों की हड्डियां उभरीं। बंगालियों का सा चेहरा। दाढ़ी मूछ साफ। फेस में प्रामिनेंट आंखें हैं बड़ी मतवाली, वासना और विषय से भरी। वे पैदा बंगाल में हुए थे। पास एन्ट्रेंस भी नहीं। उस दर्जे तक शिक्षा बंगाल में हुई थी। कालिक पेन (Cholic pain) के कारण परीक्षा में न बैठे थे। स्वाध्याय बहुत काफी है। बंगला हिन्दी को अपनी मदर टंग बताते हैं। संस्कृत-इंगलिश भी अच्छी जानते हैं।

ये बड़े रवीन्द्र भक्त हैं। अपने लम्बे हाथ फैला उस कवि की कविताएँ प्रायः रोज ही इनके मुख से सुनने को मिलती हैं। यह जब बोलते, पढ़ते या कविता सुनाते हैं तो हाथ पैर हिलाते ही रहते हैं। आज मुझे अपने भी आठ-नौ गीत जो इनकी 'गीतिका' पुस्तक में छपने जा रहे हैं, सुनाये। काफी अच्छे थे। शाम को तुलसीदास के विषय में प्रायः डेढ़ घंटे तक बातचीत या उनका व्याख्यान हुआ, सरस्वती भण्डार की दुकान पर कहा—रवीन्द्र ठाकुर क्या हैं तुलसी के सामने। He was a super man उसकी language की तारीफ की। पर सबसे अधिक तुलसीदास के indirectly expressed ज्ञान अथवा mysticism की। कहा—Tulsidas was a much greater mejistic poet than Tagore कहा—अभी मेरी आवाज छोटी है। नहीं तो रवीन्द्रनाथ की पोल खोलता.... अधिकांश अवधी में बोलते हैं। कभी अपनी अटकती हुई अंग्रेजी में।

... हमारा स्वप्न यह सदा रहा कि गंगा के किनारे नहाय कै भीख मांगि कै औरु तुलसीदास का पढी।

....मुझे इस पुरुष से मिलकर वास्तविक हर्ष है, इसलिए नहीं कि वह एक प्रसिद्ध पुरुष है वरन् इसलिए कि **मुझे उससे बड़ा gain लाभ है**। प्रतिदिन परिचय बढ़ता जाता है। दो दिन साथ चाय पी चुके हैं। परसों साथ चंडीदास सिनेमा देखने गये थे। उसे मेरे साथ पांचवीं बार देखने गये थे।"

अर्धनारीश्वर (निराला की साहित्य साधना भाग 1)

"निराला अर्धनारीश्वर थे। देखने में सुन्दर, बड़ी-बड़ी आंखें, लहरियादार बाल, कलकतिया धोती, कुल्लीभाट उन पर मुग्ध हुए, वह जानते थे। वह स्वय अपने रूप पर मुग्ध थे इसलिए दूसरा मुग्ध हो तो उन्हें प्रसन्नता होती थी। मतवाला मंडल में महादेव प्रसाद सेठ उनके रूप के प्रशंसक थे। मुंशी नवजादिक लाल उनकी भौंहों की तुलना बिहारी की नायिकाओं की भौंहों से करते थे। हर पुरुष में स्त्रीत्व भी है, इसे वह कामशास्त्र और आधुनिक विज्ञान की विशेष खोज मानते थे। बहुत दिन बाद तुलसीदास में छपने के लिए जब उन्होंने फोटो खिंचाई तब उसमें अपने 'फेमिनिन ग्रेसेज़' पर खुद भी मुग्ध हुए। अपने को स्त्री मानकर उन्होंने कुछ कविताएं लिखी थीं। जैसे—पहली 'अनामिका' में 'प्रातः क्यों जगाया नाथ'। नारीत्व की भावना, आत्मरति, समर्पण का भाव—इनके साथ पुरुपत्व आसक्ति, आक्रामक व्यवहार—यह सब उनमें था।"

डॉ. बच्चन सिंह (निराला राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1969)

"हृष्ट-पुष्ट लम्बा शरीर, गठी हुई मांस पेशियां, उन्नत ललाट, विस्तृत वक्ष, गारवर्ण, सिन्धुतटवासी ऐतिहासिक आर्यो के जीवन्त प्रतीक.... खादी का लम्बा पजाबी कुर्ता, लुंगी, पैरों में चप्पल अथवा उसका भी अभाव—ऐसे वेश में दारागज की सड़कों से गुजरते इन्हें कोई भी दख सकता है। कुछ समय पहल निराला का वेश विन्यास बड़ा ही रोमाण्टिक था। धोती ओर कुर्ता साफ, धुले हुए। इत्र स चुपड़ी हुई, आस्कन्ध केशराशि इनके व्यक्तित्व में एक नवीन आकर्षण भर देती।"

पद्मसिंह शर्मा कमलेश (मैं इनसे मिला, 1952)

"उस समय उनके सिर पर एक पुराना ऊनी टोप था। बदन पर चार-पाच साल पहले का एक फटा कोट था, जिसे वह रात को ओढकर सोये थे। कमर में तहमद था मैला सा और पैरों में सवा रुपये वाल बाटा के गेहुंआ रंग के फ्लीट जूते जिनका पिछला हिस्सा गायब था और जिनमें बिवाइयों से भरी एंडियां बाहर निकल रही थीं ...

मेरा विश्वास है कि हमें निराला जैसा कलाकार चाहे मिल जाय पर निराला जैसा मानव नहीं मिल सकता।"

रामखेलावन पाण्डेय (निराला . राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1969 में पृष्ठ 84 पर)

"निराला में अपने व्यक्तित्व का मोह है, निजीपन की रक्षा की आकांक्षा है अपनी प्रतिभा पर विश्वास है और अपनी रचना पर आस्था। इस प्रकार आत्मकेन्द्रित चेतना का आग्रह।"

वेदव्रत शर्मा (निराला के काव्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन से)

"आधुनिक कवियों में निराला का व्यक्तित्व सबसे अधिक जटिल है और विरोधों का घटाटोप दिखाई देता है। उसमें न तो वाग्चातुर्य है और न वैसी सतर्कता। वे सहज सरल...." (पृष्ठ 52-55)

'निराला के व्यक्तित्व में काली की कठोरता और सरस्वती की कोमलता का निराला सम्मिश्रण था और यह उन्हें बंगाल जीवन के संस्कारों के रूप में मिला था। निराला जितना दिखने में महामानव थे उतने ही कविता में।"

"व्यग्रता भी निराला के व्यक्तित्व की विशेषता है जिसका परिचय उनकी शैली की वक्रता में मिल जाता है। उनकी काव्यधारा का प्रवाह कवि के अस्त-व्यस्त जीवन की ओर संकेत करता है।" (वही, पृ 293)

"निराला अपने आप में विरोधाभास थे ... निराला सच्चे अर्थ में साहित्यकार थे। वे राजनीतिक दलदल में कभी नहीं उतरे।" (पृष्ठ 383-385)

अतुल तुलनीय निराला

कबीर के तुल्य : डॉ. भागीरथ मिश्र (निराला साहित्य सन्दर्भ, पृष्ठ 22)

"अपनी उग्र स्वच्छन्दता और फक्कड़पन में निराला कबीर से तुलनीय हैं। वैसे ही मस्तमौला, वैसी ही ललकार, वैसा ही फक्कड़पन, वैसा ही क्रान्तिकारी स्वर और वैसी ही प्रगाढ़ तन्मयता, दोनों की ओज भरी वाणी रूढ़ियों और बन्धनों के विरोध में बलराम रही। दोनों की करुणा दीनों के लिए फूट-फूट कर बहती रही। दोनों में लोगों को प्रसन्न करने की प्रवृत्ति नहीं थी। स्वाभिमान भी दोनों में ऊंची श्रेणी का था। अन्तर केवल इतना ही था कि एक सन्त पहले और कवि बाद में था और दूसरा कवि पहले और सन्त बाद में। किन्तु निराला ने भी लुकाठी ले अपना घर जलाकर ही साहित्य रचा था।"

महावीर प्रसाद द्विवेदी से साम्य : डॉ. रामविलास शर्मा

(निराला की साहित्य साधना खण्ड 1, पृष्ठ 47-49)

"सूर्यकान्त त्रिपाठी और महावीर प्रसाद द्विवेदी में बहुत सी बातें सामान्य थीं। द्विवेदी जी के पिता फौज में काम कर चुके थे। पिता के समान उनका शरीर भी स्वस्थ और पुष्ट था।. सूर्यकान्त के समान द्विवेदी जी के संस्कार मूलतः बैसवाड़ी किसान के थे। वह अत्यन्त स्वाभिमानी, बातचीत और व्यवहार में अक्खड़ पर अन्दर से कोमल वृत्ति वाले और बहुत ही भावुक थे... लोग प्रणाम करते तो संकोच से आशीर्वाद तक नहीं देते, नमोनम. कह देते। पत्नी का स्वर्गवास हो गया है। चालीस साल हो गये। सूर्यकान्त से उम्र में थोड़ा ही बड़े रहे होंगे जब यह विधुर हुए। पर कैसी साधना ! अपनी सारी शक्ति हिन्दी की सेवा में लगा दी। उन्होंने सूर्यकान्त को अपनाया है। परिश्रम से जमकर हिन्दी सेवा करने को कहा है।

सूर्यकान्त ने जैसी कल्पना की थी अपने गुरु को उससे भी भव्य पाया।"

(1921 के पत्र में निराला जी ने द्विवेदी जी के पास जो अपना परिचय भेजा था उसके अन्त में लिखा था—हिन्दी सिखाईयेगा।)

विवेकानन्द के साम्य : डॉ. धनञ्जय वर्मा (निराला : काव्य और व्यक्तित्व, पृष्ठ 50)

डॉ. धनञ्जय वर्मा को निराला और स्वामी विवेकानन्द में साम्य दिखा। अन्यत्र वे उन्हें परमहंस (रामकृष्ण) और रवीन्द्रनाथ टैगोर के समान दिखते हैं—

"विद्रोही, तेजस्वी स्वामी विवेकानन्द के चरित्र में निराला का व्यक्तित्व समर्थन प्राप्त हुआ। तेजस्विता और दूसरों को दुःखी देखकर विकल होना और विपत्ति में धैर्य न छोड़ते हुए भी निर्विकार चित्त से कर्तव्य करते जाने की निराला की साधना को स्वामी विवेकानन्द के चरित्र में भी वही तत्व मिले....। विवेकानन्द क्रिकेट के उत्कृष्ट खिलाड़ी थे। निराला ने भी हजारी पहलवान के अखाड़े में कुश्ती की शिक्षा ली थी। संगीत में स्वामी विवेकानन्द दक्ष थे। प्रारम्भ से ही निराला भी शास्त्रीय संगीत के अच्छे ज्ञाता थे।... स्वामी जी एक योद्धा संन्यासी कहे गये हैं और कौन निराला को निर्लिप्त निर्विकार गृहस्थ नहीं कहेगा। उदारता के विषय में दोनों में कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता। स्वामी विवेकानन्द जब अपने भाषणों के पश्चात् यथेष्ठ धन प्राप्त हो जाता था तो वे उसे पाने के पहले ही दान कर दिया करते थे।.... निराला ने भी कवि सम्मेलनों आदि से प्राप्त धन का हाथों में आने के पहले ही विभिन्न संस्थाओं को दान कर दिया। निराला की उदारता का यह आख्यान यों भी अप्रतिम है।.... जिस ऐतिहासिक बोध, जातीय विशेषता और हिन्दुत्व का उद्घोष युगप्रवर्तक विवेकानन्द ने किया था उसकी प्रतिध्वनि मूलध्वनि बनकर निराला के शिवाजी के पत्र, जागो फिर एक बार आदि कविताओं में मिलती

है।"....

"जहां तक व्यक्तित्व का प्रश्न है स्वामी विवेकानन्द और निराला के व्यक्तित्व में मुझे आश्चर्यजनक समता मिलती है.... निराला की वाणी ही नहीं जीवन भी **वेदान्ती संत** का जागृत उदाहरण है।"

परमहंस रामकृष्ण से साम्य : डॉ. धनञ्जय वर्मा (निराला · काव्य और व्यक्तित्व, पृ. 53)

"परमहंस की तरह निराला की भाव साधना की तल्लीनता के भी एकाधिक उल्लेख मिलते हैं.... निराला के **भावावेश की दशा** की स्थितियां कई अर्थों में रामकृष्ण परमहंस की भाव समाधियों के निकट रखी जा सकती हैं। यह स्थिति 1923-24 से ही रही है। .... वे भावावेश की स्थिति में रहते थे जिसे पूर्ण उन्माद या विक्षिप्तता नहीं कहा जा सकता।"

परमहंस निराला

मैंने निराला को श्रीमद्भागवत में वर्णित परमहंस के लक्षणों से युक्त पाया। उनकी भावदशा श्री चेतन्य महाप्रभु की सी भावदशा थी।

(हिन्दी काल निर्णय, दीपावली, 1996 अंक, पृष्ठ 131)

रवीन्द्रनाथ टैगोर से साम्य : धनञ्जय वर्मा (निराला की तुलना बगाल के महाकवि रवीन्द्रनाथ टेगोर से करते हैं)

"यह तो सही है कि जैसी ख्याति और कीर्ति रवीन्द्रनाथ को मिली वैसी ख्याति और स्थान निराला को नहीं मिल पाया, यद्यपि हिन्दी के लिए निराला रवीन्द्र से कम नहीं। रवीन्द्र विश्व भ्रमण कर सके, राष्ट्र सम्मान पा सके, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न रहे, पारिवारिक सौख्य भी मिला। उसी के स्थान पर निराला को निरन्तर विरोध मिला, शासन से तो सही ही, अपने सहकर्मियों से भी। जीवन भर वे आर्थिक विपन्नता में रहे और पारिवारिक सुख का अस्तित्व जीवन में अनुभूत न कर पाये। ये वे प्रतिक्रियाएं थीं जो उनके अन्तर में चलती रहती थीं।"

वज्र देहाती : डॉ. रामविलास शर्मा (निराला की साहित्य साधना भाग-1, पृष्ठ 480)

"निराला के साहित्यिक मित्रों और परिचितों में प्राय: सभी रईस थे—कुछ साधारण, कुछ असाधारण, कुछ बिगड़े हुए रईस। महादेव प्रसाद सेठ, जयशंकर प्रसाद, रायकृष्ण दास, विनोद शंकर व्यास। उनकी मित्रमंडली में ऐसे लोगों की कमी न थी जो रईस न होते हुए भी रईसी की नकल करते थे। कुछ रईसों के मुसाहिब होने में गर्व का अनुभव करते थे। निराला इन **सबमें वज्र देहाती** थे।

शिवपूजन सहाय, नवजादिक लाल, उग्र, राधामोहन गोकुल जी तक निराला को देखते भद्र नागरिक मालूम पड़ते थे। ये सब बिना प्रयास के घंटों खड़ीबोली बोल सकते थे। निराला दो चार वाक्य के बाद बैसवाडी पर उतर आते।.... वैसे बैसवाडी से देहातीपन का कोई घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं। मिश्रबन्धु घर में अवधी बोलते थे पर उनका रहन-सहन उच्चवर्गीय नगरवासियों का था।"

"हां निराला कविता में यह रूप छोड़ कर **सभ्य वेश** धारण करते.... जितना ही वैभव विलास के सपने कविता में आंकते उतना ही उनकी **अलंकरण** प्रवृत्ति जोर मारती। रवीन्द्रनाथ या जयशंकर प्रसाद से संस्कृत ज्ञान में वह पीछे न रहे। रचना पढ़कर कोई यह न कहे कि निराला की शिक्षा अधूरी है। रईसों के बीच रईसी ठाट, उसी के अनुरूप अभिजात वर्ग के उपयुक्त जनसाधारण से दूर कविता की अलंकृत पदावली। साथ ही एक यथार्थवादी रुझान, अपनी और दूसरों की सही हालत बयान करने की इच्छा, उर्दू प्रभाव, गालिब प्रेमी महादेव प्रसाद सेठ के साथ—यह सब तत्सम बहुल शैली में उन्हें दूर ठेलता था। मन के रचनात्मक क्षमता वाले कोठे में यह एक और द्वन्द्व था—**मदेस और संस्कृत, अभिजात और साधारण का संघर्ष**।"

मेरी समझ में डॉ. शर्मा ने निराला का बहुत ही सही मूल्यांकन किया है। निराला की साहित्य साधना भाग-1, पृ. 539 की निम्नलिखित पंक्तियां उद्धृत करने का मैं लोभ संवरण नहीं कर पा रहा—

"जिनके लिए निराला देवता और सन्त न थे उनके लिए वह ऐसे कवि थे जिनमें जरूरत से ज्यादा अहंकार था, जो शराब और गोश्त के शौकीन थे और जो बाद में पागल हो गये।"

"निराला की देवमूर्ति से घबड़ा कर कुछ लोगों ने अपने लेखों और संस्मरणों में उनके **उनके अहंकार और मद्यपान की चर्चा** बार-बार की है।"

"निराला इतने बड़े हैं कि उन्हें देवता और सन्त कह कर और बड़ा नहीं बनाया जा सकता। उन्हें शराबी-कबाबी और पागल कहकर उनके बड़प्पन को खत्म भी नहीं किया जा सकता।"

कृतित्व

निराला की कुछ पंक्तियां दृष्टव्य हैं—

मैं कवि हूं, पाया है प्रकाश
* * *
मैंने 'मैं' शैली अपनाई
* * *
दिये हैं मैंने जगत को फूल-फल
किया है अपनी प्रभा से चकित चल
पर अनश्वर था सकल पल्लवित पल
ठाठ जीवन का वही जो ढह गया है
* * *
मैं ही वसन्त का अग्रदूत
* * *
अभी न होगा मेरा अन्त
* * *
मैं अकेला मैं अकेला

अन्य कवि की पंक्तियाँ

जितना कष्ट कंटकों में है
जिसका जीवन सुमन खिला।
गौरव गन्ध उसे उतना ही
यत्र-तत्र सर्वत्र मिला।।

पुस्तक समर्पण

'अभ्युदय' (1932) में निराला जी लिख चुके थे—"मैं समर्पण करना अच्छा समझता हूं, भूमिका लिखाना बुरा।"

किन्तु निराला जी की पुस्तकों में उनके घनिष्ठों द्वारा लिखी गई भूमिकाएं मिलेंगी। समर्पण तो उन्होंने अपने मन से किया है अपनी पुस्तकों का। उन्होंने जानकी बल्लभ शास्त्री, कुंवर चन्द्रप्रकाश, रामविलास शर्मा, श्रीनारायण चतुर्वेदी, गंगा प्रसाद पाण्डेय तथा महादेवी वर्मा को अपनी पुस्तकें समर्पित की हैं। ये लोग निराला के या तो शिष्य थे या उनके सम्मान्य व्यक्ति। केवल दो पुस्तकें अपने आत्मीयों को समर्पित की हैं। एक है प्रभावती और दूसरी है गीतिका।

गीतिका का समर्पण अपनी स्वर्गीया पत्नी मनोहरा को जिस श्रद्धा और आत्मीयता से किया है वह अलौकिक है—

"जिसकी हिन्दी के प्रकाश से, प्रथम परिचय के समय, मैं आंखें नहीं मिला सका—लजाकर हिन्दी की शिक्षा के संकल्प से, कुछ काल बाद देश से विदेश, पिता के पास चला गया था और उस हिन्दी हीन प्रान्त में, बिना शिक्षक के सरस्वती की प्रतियां लेकर, पद-साधना की और हिन्दी सीखी थी, जिसका स्वर गृहजन, परिजन और पुरजनों की सम्मति में मेरे स्वर को परास्त करता था, जिसकी मैत्री की दृष्टि क्षण मात्र में मेरी रुक्षता को देखकर मुस्कुरा देती थी, जिसने अन्त में अदृश्य होकर मुझसे मेरी पूर्ण-परिणीता की तरह मिलकर मेरे जड़ हाथ को अपने चेतन हाथ से उठाकर दिव्य शृंगार की पूर्ति की उस सुदक्षिणा स्वर्गीया प्रिया प्रकृति श्रीमती मनोहरा देवी को सादर—

निराला, 27/7/36।"

'प्रभावती' का समर्पण ऐसी महिला को किया जिससे कुछ ही लोग परिचित थे। उसे उन्होंने 'बीबी' के नाम से सम्बोधित किया है। ये उनकी सलहजा (साले की पत्नी) थीं। इन्होंने ही निराला के पुत्र तथा पुत्री को डलमऊ में बड़े ही लाड प्यार से पाला था। (कृष्णानन्द ने निराला की कृति सूची देते हुए टिप्पणी लिखी है कि निराला ने यह पुस्तक दिवंगता पत्नी को सश्रद्धा समर्पित किया—वस्तुत: यह भ्रमवश ऐसा लिया गया है)

"प्रिय बीबी !

बहुत दिन हुए—अठारह वर्ष-पन्द्रह की तुम नववधू होकर घर आई हुई थी, जहां बिना मां के दो शिशुओं की सेवा में तुम्हें शृंगार की साधना का समय नहीं मिला, तुम्हारे ऐसे हस्त संसार के किसी भी पुरस्कार से पुरस्कृत नहीं किये जा सकते, मैं केवल अपनी प्रीति के लिए यहां यह पुस्तक नयस्त करता हूं, जानता हूं, कालिदास भी तुम्हें 'वीणा पुस्तक रंजित हस्ते' नहीं कर सकते किन्तु तुम तब से आज तक 'शिशुकर-कृत-कपोल-कज्जला' हो।

सस्नेह निराला

लखनऊ, 1/3/36।"

बीबी सम्बोधन छोटी बहन, भतीजी, लड़की, भयाहू आदि के लिए किया जा सकता है—ऐसा निराला जी ने 'सुकुल की बीवी' में लिखा है।

निराला जी दारागंज में कलावती बच्ची को प्राय. 'बीबीजी' ही कहकर पुकारते रहे।

डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है (निराला, पृ. 20)

"जहां अन्य लेखकों ने अपने ग्रन्थों को अपने साहित्येतर ईष्ट मित्रों, स्नेहियों तथा पारिवारिक व्यक्तियों को अधिक संख्या में समर्पित किया वहां निराला ने गीतिका के अतिरिक्त, जिसे इन्होंने अपनी पत्नी को भेंट किया है। अपने सभी ग्रन्थ महादेव बाबू, पुरुषोत्तम दास टंडन, नन्ददुलारे वाजपेयी, श्रीनारायण चतुर्वेदी, रामविलास शर्मा आदि अनेक गण्यमान साहित्यिकों को समर्पित किये हैं। इनमें सभी उनके घनिष्ठ हैं।"

(टिप्पणी : निराला ने प्रभावती पुस्तक भी अपनी सलहजा को समर्पित की है।)

पुस्तकों की भूमिका

निराला अपनी किसी पुस्तक की भूमिका किसी अन्य से लिखाना अच्छा नहीं समझते थे। इसलिए प्रायः अधिकांश पुस्तकों की भूमिकाएं उन्होंने स्वयं लिखीं हैं। ये भूमिकाएं संक्षिप्त, व्यंग्यपूर्ण होतीं। फिर भी कुछ पुस्तकों की भूमिकाएं अन्यों ने लिखीं। यथा 'गीतिका' का भूमिका राधाकृष्ण दास ने, 'विनय खण्ड' की भूमिका डॉ. रामविलास शर्मा ने, 'गीतगुंज' और 'चयन' की भूमिका मैंने (डॉ. शिवगोपाल मिश्र) तथा निराला के मरणोपरान्त 'सांध्य काकली' की भूमिका पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी ने लिखी है।

वस्तुतः निराला जी ने अपने स्नेहियों एवं शिष्यों को ऐसा अवसर प्रदान किया अन्यथा निराला की पुस्तक में भूमिका लिखने की योग्यता किसमें थी ?

निराला ने भले ही किसी अन्य की पुस्तक पर सम्मति दी हो लेकिन भूमिका लिखने का केवल एक ही उदाहरण है पंत जी की एक पुस्तक की।

'कुकुरमुत्ता' का जब नवीन संस्करण 'लोकभारती' से छपा तथा 'गीतगुंज' का नवीन संस्करण प्रयाग से छपा तो दूधनाथ सिंह तथा डॉ. जगदीश गुप्त ने अपनी-अपनी भूमिकाएं जोड़ दीं। इन भूमिकाओं के लिए निराला की सहमति नहीं थी। इन भूमिकाओं के लेखकों ने भूमिकाओं में अपने मनोविकारों को स्थान देकर अपनी ही तुच्छता दिखाई है।

निराला का उपहार

अपने परिचितों को निराला तरह-तरह के उपहार देते रहे किन्तु अपने शिष्यों या मित्रों को पत्र लिखते समय अपनी नवीन रचनाएं भी लिख भेजते थे। यह स्नेहोपहार सबको नहीं मिल पाया किन्तु डॉ. रामविलास शर्मा तथा पं. जानकी बल्लभ शास्त्री इस मामले में परम भाग्यशाली रहे।

कभी-कभी आटोग्राफ देते हुए भी निराला जी अपनी ही कविता की कोई पंक्ति या किसी अंग्रेजी कवि या लेखक की पंक्ति लिख देते थे।

रायल्टी पर लिखी गई पुस्तकें

निराला ने अपनी अधिकांश पुस्तकें बिना किसी अनुबन्ध के प्रकाशकों को दे रखी थीं। किन्तु युग मन्दिर उन्नाव से उनकी जो तीन पुस्तकें छपी हैं—'बिल्लेसुर बकरिहा', 'कुकुरमुत्ता' तथा 'अणिमा', वे रायल्टी पर थीं—ऐसा निराला जी के एक पत्र से पता चलता है। साहित्यकार संसद से 'अपरा' संग्रह प्रकाशित हुआ, उसका अनुबन्ध था कि नहीं यह ज्ञात नहीं हो सका, किन्तु निराला जी महादेवी जी के पास इस पुस्तक की रायल्टी के लिए पत्र लिखवाते रहते। 'आराधना' का भी कोई अनुबन्ध नहीं हुआ था। देवी जी ने कहा था कि हम गीत पुस्तक छापेंगी और निराला जी ने आराधना की स्वच्छ प्रतिलिपि कराकर भिजवा दिया था।

लीडर प्रेस से निराला जी की जितनी पुस्तकें छपी हैं उनके अनुबन्ध हुए या नहीं कुछ ज्ञात नहीं हो सका। 'निरुपमा' को निराला 1936 में बेचने आये थे। स्पष्ट है कि यह पुस्तक रायल्टी पर नहीं थी।

'किताब महल' से भी निराला को कभी नियमित रायल्टी नहीं मिली। 'हिन्दी प्रचारक' तथा 'कल्याण दास'—ये दो प्रकाशक बनारस के थे जिन्होंने अनुबन्ध किया था और रायल्टी भी दी थी।

निराला जी प्रायः अपने पारिवारिक पत्रों में लाखों रुपये की रायल्टी का उल्लेख करते जिससे उनके भतीजे आदि आर्थिक सहायता के लिए निराला के पास आते रहे।

जब डॉ. रामविलास शर्मा ने 'नया पथ' में प्रकाशकों द्वारा निराला के शोषण के बारे में आवाज उठाई तो लोगों की आंखें खुलीं। निराला की मृत्यु के बाद उनके पुत्र रामकृष्ण त्रिपाठी ने एक-एक करके सारी पुस्तकों का स्वामित्व अपने हाथ में ले लिया और 'निराला रचनावली' के प्रकाशित हो जाने पर एक दुःखद प्रसंग का अन्त हो गया। दुर्भाग्यवश, निराला के जीते जी ऐसा नहीं हो सका।

मिल्टन की टक्कर का कवि

डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा है कि 1930 में उन्होंने शान्तिप्रिय द्विवेदी द्वारा संपादित 'चयन' नामक काव्य संग्रह में सर्वप्रथम निराला की कविताएं पढ़ीं। इन्हें पढ़कर उन्हें लगा कि 'मिल्टन की टक्कर का हिन्दी में यदि कोई कवि है तो वह निराला है। एक बिल्कुल नई तरह का अनुभव हुआ कि हिन्दी में शक्ति है।'

(अपनी धरती अपने लोग, भाग-1, 1996 पृष्ठ, 55)

निराला का कविता पाठ यानी आवृत्ति

निराला जिस ढंग से अपनी कविताओं का पाठ करते थे, उनका वाचन करते थे वह अपने में निराला था। निराला जी इसे **आवृत्ति** करना कहते—अंग्रेजी में recitation या delivery

अपने एक पत्र में निराला जी ने लिखा है—"कलकत्ते में बहुत से लोग आवृत्ति के कारण मेरे प्रशंसक बने। ... मैंने चीजों का आवृत्ति द्वारा जितना प्रदर्शन किया है और इस तरह विरोध न होने का निराकरण, उतना मेरे साथियों में किसी ने भी नहीं किया। न किसी ने आवृत्ति में वैसी ख्याति पाई। फिर भी जब विरोध होता है तो यही निष्कर्ष मेरी दृष्टि में है कि यह विरोध का मनुष्य का स्वभाव है।"

उदयशंकर भट्ट ने लाहौर कवि सम्मेलन (1941) का संस्मरण लिखते हुए कहा है—"निराला जी के कविता पढ़ने के ढंग से लोग प्रभावित हुए—यह आदमी सिर से पैर तक पोएट है।"

निराला की गुणग्राहकता

फरवरी 1928 की माधुरी में निराला ने प्रदीप के स्वर की प्रशंसा में लिखा है—

"इतना अच्छा स्वर मैंने हिन्दी में दूसरा नहीं सुना। प्रदीप का स्वर ईश्वर प्रदत्त है।"

प्रदीप का पूरा नाम रामचन्द्र दुबे था। यह गुजराती ब्राह्मण था और उज्जैन का रहने वाला, 21-22 वर्ष का नवयुवक था। यह निराला की अन्वेषिणी दृष्टि तथा गुणग्राहकता ही कही जावेगी कि एक अज्ञात तरुण के स्वर की इतनी प्रशंसा की।

मुक्त छन्द और निराला

डॉ. रामविलास शर्मा ने (निराला की साहित्य साधना, भाग-3, पृष्ठ 33) लिखा है—

"महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा जयशंकर प्रसाद ये दो उच्च श्रेणी के साहित्यकार थे जिन्होंने निराला के मुक्त छन्द का समर्थन किया।"

'परिमल' की भूमिका में निराला जी ने स्वयं लिखा है—

"मुक्त छन्द तो वह है जो छन्द की भूमि में रहकर भी मुक्त है.... मुक्त छन्द का समर्थक उसका प्रवाह ही है.... पंक्तियों का आकार बड़ा-छोटा होना भी मुक्त छन्द का लक्षण नहीं। मुक्त छन्द सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त होता है।"

उर्मिला कपूर ने (महाप्राण निराला, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1969) निराला को स्वच्छन्द कवि कहा है और स्वच्छन्द का अर्थ स्व+छन्द यानी 'स्वयं की इच्छा से' किया है। स्वच्छन्द होने का तात्पर्य परम्परा से चले आने वाले नियमों की अपेक्षा अपनी इच्छा को प्रमुखता देना, उसका अनुसरण करना।

निराला ने स्वयं भी लिखा है—

"मैं बचपन से आजादी पसन्द था। दबाव नहीं सह सकता था।"

"मेरा लिखा मुक्त छन्द पौराणिक नाटकों के लिए उपयोगी है.... पहले मैंने उसे मिल्टन की तरह क्लिष्ट भाषा पूर्ण कर दिया पर मेरा असली मतलब उसे पोराणिक नाटकों में लाना था।

मैंने पढ़ने और गाने दोनों के मुक्त रूप निर्मित किये। पहला वर्ण वृत्त म हे दूसरा मात्रा वृत्त में। इनसे हटकर मुक्त रूप में छन्द जा नहीं सकता।"

साहित्य सबको लेकर

प्रायः निराला जी समाज और साहित्य शब्दों की व्याख्या अन्त तक करते रह। 19 मार्च 1941 को जानकी बल्लभ शास्त्री को लखनऊ से उन्होंने एक पत्र लिखा ज़िसमें साहित्य की अत्युत्तम व्याख्या हुई है—

"हिन्दी को अधिक से अधिक अलग-अलग विषय के विद्वान सेवक चाहिए थे। मिलते जा रहे हैं। साहित्य सबको लेकर है। इसलिए सबकी श्रेष्ठता जरूरी है।"

पत्रकार निराला

श्रीरामप्रीत उपाध्याय ने (निराला जीवन और साहित्य, 1964, पृष्ठ 81) निराला जी से सम्बन्धित कलकत्ता के **पांच** प्रमुख पत्र बतलाए हैं—

1. **समन्वय** (प्रारम्भ संवत 1978)—इसका कार्यालय 28 कालेज स्ट्रीट मार्केट में था। इसमें निराला की रचनाएं वर्ष 8 अंक 8 तक छपती रही।

2. **मतवाला** (प्रारम्भ से 1980)—इसके सम्पादक महादेव प्रसार सेठ थे। यह उनके प्रेस बालकृष्ण से छपता था। यह साप्ताहिक पत्र था जिसके 50 अंक निकले। इसमें निराला की रचनाएं मुख पृष्ठ पर छपती थीं। मतवाला के ही तुक पर 'निराला' उपनाम प्रचलित हुआ।

3. **रंगीला** (प्रारम्भ संवत 1988-89)—इसका कार्यालय कलाकार स्ट्रीट में था। इसके 7-8 अंक निकले। निराला ने केवल तीन अंकों तक कार्य देखा। उसके बाद शिवशेखर द्विवेदी उसे चलाते रहे।

4. **सरोज** (प्रारम्भ सं. 1985)—इसके सम्पादक मुंशी नवजादिक लाल थे। यह 151 मछुआ बाजार स्ट्रीट से निकला और तीन वर्ष बाद बंद हो गया।

5. **मौजी** (प्रारम्भ सं. 1983)—यह एक वर्ष छपा। इसमें भी निराला लिखते थे।

अनुवाद कार्य

निराला ने जीविकोपार्जन के लिए जो अनुवाद कार्य किया उसे वे **बाजारु कार्य** कहते रहे। 1943 के एक पत्र में उन्होंने बताया है—

"मैंने रामकृष्ण मिशन में प्रायः दो हजार सफों का अनुवाद किया। . **वात्सायन कामसूत्र** और कुछ **बंगला पुस्तकों** का अनुवाद दूसरों के नाम से

किया है। हिन्दी में लिखी पाण्डुलिपियां शुद्ध की हैं। तुलसीदास की रामायण पर टीका लिखी है। पत्रों में बहुत से लेख और नोट लिखे हैं जो मेरे संग्रह में नहीं आये। कलकत्ता से निकली छः किताबें मेरे नाम से हैं जो बाजार के लिए लिखी गई हैं। दो नाटक हैं जिनमें एक **समाज** है और दूसरा **शकुंतला** जो अभी तक प्रकाश में नहीं आये। 'समाज' को हम लोगों ने कलकत्ता के मोहन स्टेज पर खेला था। कुछ पहली-दूसरी किताबें लिखी हैं जिन पर मेरा नाम नहीं है। एक **रस और अलंकार** पुस्तिका लिखी। वह निकली या नहीं, मालूम नहीं।"

1947 में निराला ने ईसप फेबुल का अनुवाद 'सीख भरी कहानियां' के रूप में किया। इसका प्रकाशन 1969 में हुआ।

निराला का विरोध

धिक् जीवन, जो पाता ही आया है विरोध
धिक् साधन, जिसके लिए किया है सदा शोध

—निराला

* * *

हारता रहा मैं स्वार्थ समर

—निराला

1935 तक निराला को दो बड़े और एक अपेक्षाकृत छोटे विरोध का सामना करना पड़ा।

1. भावों की भिड़न्त, 2. साहित्यिक सन्निपात, 3. निर्मल द्वारा किया गया प्रोपैगंडा

भावों की भिडन्त शायद नौसिखिये निराला की असावधानी से हुई। निराला ने विवेकानन्द तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर की कुछ कविताओं का भावानुवाद किया था किन्तु उनके फुट नोटों में इसका स्पष्टीकरण नहीं हुआ था।

"साहित्यिक सन्निपात" 'विशाल भारत' के सम्पादक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा निराला के निबन्ध 'वर्तमान धर्म' को लेकर चलाया गया अभियान था जिसके द्वारा वे निराला को पागल सिद्ध करना चाहते थे।

तीसरे विरोध में ज्योति प्रसाद मिश्र निर्मल ने जून 1934 में 'अभ्युदय' पत्र में प्रसाद-पन्त-निराला शीर्षक एक प्रोपैगंडा किया था जिसका निराला को उत्तर देना पड़ा।

इन विरोधों से निराला जी को ग्लानि हुई, नीचा भी देखना पड़ा और उनका तमाम बहुमूल्य समय नष्ट हुआ जिसका सदुपयोग उन्होंने किसी सृजन कार्य में किया होता।

इसी शृंखला में निराला की पुत्री सरोज की मृत्यु सबसे बड़ा आघात सिद्ध हुई।

यथार्थ साहित्य लिखने या किसी साहित्यकार को सीधा लिखने के लिए मजबूर करना उसे अपमानित करना है। निराला जी ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये हैं। उदाहरणार्थ—

निराला जी द्वारा सुधा में (1933) लिखी गई टिप्पणियों का निम्नलिखित अंश—

"वर्ड्स्वर्थ, शैली और कीट्स का उनके घर में ही विरोध हुआ। रवीन्द्रनाथ का भी विरोध हुआ।.... सत्समालोचकों के अभाव के कारण हमारे यहां प्रतिभा का स्फुरण नहीं हो पाता . "

"साहित्यिक को सीधा लिखने के लिए मजबूत करना उसे साहित्यिक से मजदूर बनाना है।"

"यथार्थ साहित्य के निर्माता आज भी उसी प्रकार अपमान का भार रखे हुए झुके हुए जाति, भाषा तथा साहित्य की ओर देखते-देखते चुपचाप सरस्वती के इंगित पर चले जा रहे हैं, कोई साथ नहीं, अक्षम, अज्ञान, रीतिवादग्रस्त असाहित्यिकों के विष-बुझे व्यंग्यबाण सहते जा रहे हैं।"

यद्यपि निराला ने लिखा है कि "जुही की कली" न छापकर पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पहला विरोध किया किन्तु डॉ. रामविलास शर्मा का मत है कि महावीर प्रसाद द्विवेदी की टक्कर पन्त से हुई थी, निराला से नहीं (निराला की साहित्य साधना, भाग-2, पृष्ठ 24,31,34)

निराला के विरुद्ध षडयन्त्र : उसका प्रतिवाद

25 जून, 1934 के 'साप्ताहिक अभ्युदय' में ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' ने 'पन्त, प्रसाद और निराला' शीर्षक लेख लिखा। निराला को लगा कि यह पन्त जी की प्रशंसा में उतना नहीं जितना कि निराला को ही नीचा दिखाने के लिए है फलतः उन्होंने 16 जुलाई, 1934 के साप्ताहिक अभ्युदय में इसका प्रतिवाद प्रकाशित किया। उसके प्रासंगिक अंश उद्धृत किये जा रहे हैं—

"अभी 25 जून 1934 के अभ्युदय में 'पन्त, प्रसाद, और निराला' शीर्षक एक प्रोपैगंडा श्री ज्योतिप्रसाद निर्मल का किया हुआ प्रकाशित हुआ है। इसमें झूठ के शून्य पन्त जी की संख्या के बाद आकर जिस तरह दस-दस गुना बढ़ाये गये हैं, प्रसाद जी की और मेरी संख्याओं के पहले आकर उसी तरह दस-दस गुना उन्हें घटाया गया है।

इस आलोचना या प्रापेगेंडा में आलोचक का उद्देश्य पन्त जी को सर्वश्रेष्ठ साबित करना है.... 'गुणदोषमय विश्व' में पन्त जी का हिस्सा सोलहों आने पवित्र है। ... प्रसाद जी का हिस्सा पन्द्रह आने स्याह है और मेरा पन्द्रह आने ग्यारह सही

निन्यानबे बटे सौ पाई.... प्रसाद पर कम्युनिज्म का अपराध लगाया जाता है श्री विनोद शंकर व्यास के अधिकार से 'जागरण' का प्रकाशन प्रसाद जी के प्रापेगेंडा के लिए हुआ। प्रमाण ? कुछ नहीं, आलोचक ने सुना है।

...सचमुच पन्त की कविता भावपूर्ण होते हुए भी सन्निपातिनी नहीं। इस 'सन्निपात' शब्द के साथ मेरा ही सम्बन्ध स्थापित हुआ है। 'विशाल भारत' में इसके प्रमाण हैं। अभ्युदय में छपा कि—

"एक दिन मुंशी जी (नवजादिक लाल श्रीवास्तव, संपादक चांद) ने मुझसे कहा कि मतवाला में निराला जी की रचना हमने खासतौर से छापी, श्री महादेव प्रसाद सेठ उसका विरोध करते थे, वे कहते थे कि ये कविताएं समझ में भी आती हैं या छपती ही हैं। मैंने कहा कि हां मेरी समझ में ये कविताएं आती हैं लेकिन यदि मैं आपको समझाऊं तो आपकी समझ में न आवेंगी।.... यह एक नवयुवक साहित्यिक है... इन्हें प्रोत्साहन देना बहुत अच्छा है।"

यह सोलहों आने झूठ है। मतवाला के निकलने के पहले से महादेव बाबू मेरे पद्य के प्रशंसक रहे हैं। मतवाला का मोटो मेरा लिखा हुआ था.... तब मैं 'समन्वय' का कार्यकारी सम्पादक था... मतवाला निकलने से पहले मैंने 'अनामिका' लिखी थी।

आपने और भी लिखा है 'भावों की भिड़न्त' (प्रभा में 1924 में प्रकाशित, बालकृष्ण शर्मा नवीन, तब सम्पादक थे) लिखकर इनके बादल राग आदि कविताओं का रवीन्द्र बाबू की कविता से ज्यों का त्यों साम्य दिखलाया था, उसके प्रकाशित होने पर बड़ा दुख:प्रद भण्डाफोड़ हुआ... मालूम होना चाहिए कि बादल राग शीर्षक मेरी छह रचनाओं में किसी का भाव बाहर से नहीं लिया गया'

'भावों की भिड़न्त' से पहले मतवाला में मेरा पत्र प्रकाशित हुआ था जिसमें मैंने लिखा था कि मेरी अब तक की प्रकाशित 70-80 कविताओं में 3-4 ऐसी हैं जिन्हें मैंने रवि बाबू की कविता से लेकर लिखा है, यह देखने के लिए कि वे कैसी चमकती हैं। इसका बहुत बड़ा इतिहास है....

भाव प्राय. सभी कवि ग्रहण करते हैं। तुलसीदास, कालिदास और रवीन्द्रनाथ ने भी दूसरी जगहों से भाव लिए हैं। इससे प्राय· कला पुष्ट होती है ...

परिमल और अप्सरा दुरुहता के कारण विशेष रुचिकर नहीं है। यह भी गुरुडम के पक्षपाती हैं· एक उत्तेजक व्यक्ति हैं। स्वर्गीय पद्म सिंह शर्मा इन्हें 'अहम्मन्यता की मूर्ति' उपाधि से विभूषित करते थे...।"

बदनामी में पहला

निराला जी ने लिखा है—

"मैं तारीफ वाली बातों में सबसे पीछे रहा। किताबों का गेटअप साधारण,

तस्वीर नदारद, छपाई मामूली।.... पर हर तरह से बचता हुआ मैं बदनामी में पहला। लोगों ने अपना कॉवला भूलकर मुझे पीला बतलाया।"

* * *

"मेरा कवि सदा निरपराध रहा पर दुर्घटनाएं मेरे ही साथ हुईं।"

* * *

"एक बार धोखा खाकर बार-बार धोखा खाता रहा।"

* * *

"आजकल जिस तरह लोग मेरा व्यंग्य नहीं समझ पाते उसी तरह पहले लोगों का व्यंग्य मेरी समझ में नहीं आता था।"

मैं तो केवल साहित्य लिखता

निराला ने लिखा है—

" मैं साहित्यिक वर्ग में भी नहीं आता क्योंकि मेरे जीवन का स्पन्दन श्रमसाध्य है और साहित्यिकों के पास दूसरे-दूसरे ठिकाने ही हैं। कोई प्रिंसिपल है तो कोई प्रोफेसर, कोई सम्पादक है तो कोई प्रकाशक। मैं तो केवल साहित्य ही लिखता, खाता और पहनता रहा हूं। साहित्य मेरा प्रमुख कार्य है, औरों का गौण, मन की मौज।"

निराला के समर्थक

1943 में निराला जी से पूछा गया था कि आपके प्राथमिक समर्थकों में सुमन, नन्ददुलारे वाजपेयी के अतिरिक्त कौन लोग रहे हैं ? (निराला की साहित्य साधना, भाग-3, पृष्ठ 398)

निराला ने उत्तर दिया था—

"बाबू महादेव प्रसाद जी सेठ, मतवाला सम्पादक मेरे सबसे पहले सम्मान्य समर्थक थे। हिन्दी के लिए उनका जैसा प्यार मैंने अन्यत्र नहीं देखा। मतवाला के निकलने का एक मुख्य उद्देश्य मेरी कविताओं को प्रकाश में लाना ही था। वह महत चरित्र थे.... कलकत्ता में उनके पृष्ठ पोषण के कारण मेरे अनेक प्रशंसक थे। बहुत से आवृत्ति के कारण हुए।...."

"मुंशी जी और शिवपूजन जी.... पं. सकलनारायण शर्मा, पं. लक्ष्मीनारायण गर्दे, पं. चन्द्रशेखर शास्त्री और पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी मेरे समर्थक ही थे। मुझे स्नेह करते थे, प्रोत्साहन देते थे। पं. जगन्नाथ चतुर्वेदी भी मुझ पर कृपा करने वाले व्यक्तियों में थे।"

"प्रसाद जी. .. नवीन जी मेरे प्रशंसकों में हैं और अमर शहीद पूज्यपाद गणेश शंकर जी विद्यार्थी भी। सुमन और नन्ददुलारे तो हैं ही।"

18 फरवरी 1943 के पत्र में निराला जी ने डॉ. रामविलास शर्मा को सूचित किया था कि कृष्णदेव प्रसाद गौड, बाबू गुलाबराय, श्री अवध उपाध्याय भी उनके समर्थक रहे।

डॉ. रामविलास शर्मा ने (निराला की साहित्य साधना, भाग-1, पृष्ठ 535) निराला के समर्थकों की एक लम्बी सूची दी है जिसमें 42 नाम हैं। मुझे लगता है कि यह सूची और भी लम्बी हो सकती है क्योंकि इसमें चन्द्रकान्ता त्रिपाठी, कैलाश कल्पित, डॉ. रामकुमार वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, वारान्निकोव, चेलिशेवक, ओडोलेत स्मेकाल, जयकुमार जलज, पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल पंचानन, जयविशाल अवस्थी नागार्जुन, गंगा प्रसाद पाण्डेय, अंचल जी, शमशेर बहादुर, बालकृष्ण शर्मा नवीन, पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र, श्री त्रिलोचन, डॉ. बच्चन सिंह, भगवतशरण उपाध्याय, आदि के नाम नहीं हैं जो किसी न किसी रूप में निराला के प्रशंसक रहे।

निराला जी ने अपनी सूची में जानकी बल्लभ शास्त्री और डॉ. रामविलास शर्मा के नाम जानबूझ कर नहीं दिये हैं। जानकी बल्लभ शास्त्री ने अपने को निराला का मित्र और **सहकर्मी** स्वीकार किया है (निराला के पत्र, पृ. 32)।

डॉ. शर्मा ने सुमित्रानन्दन पन्त तथा महादेवी वर्मा को उनका **सहधर्मी** कहा है।

(निराला जी ने नवीन, अंचल तथा नन्ददुलारे वाजपेयी पर आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखे हैं।)

यद्यपि वाचस्पति पाठक को डॉ. शर्मा ने निराला के समर्थकों में गिनाया है और काशी प्रवास के समय पाठक जी निराला के समर्थक रहे किन्तु लीडर प्रेस में निराला के साथ उनका व्यवहार अभद्रता की सीमा तक पहुंच जाता। स्वयं निराला ने 25/7/41 को जानकी बल्लभ शास्त्री को लिखे पत्र में बतलाया था "पाठक जी से मेरे अच्छे व्यवहार नहीं। इस बार मैं एक दूसरे मित्र के यहां ठहरा था।"

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों में निराला

निराला 1924, 1931, 1936, 1939 तथा 1941 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों तथा कवि सम्मेलनों में सम्मिलित हुए।

दिल्ली सम्मेलन, 1924

निराला जी महादेव प्रसाद सेठ के साथ दिल्ली में होने वाले साहित्य सम्मेलन में भाग लेने कलकत्ता से दिल्ली आये थे। इसका बहुत ही अच्छा विवरण डॉ. उदयनारायण तिवारी ने (हिन्दी मय जीवन-श्रीनारायण चतुर्वेदी, 1992 पृष्ठ 124) दिया है—

"1924 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन दिल्ली में हुआ। इस अधिवेशन के सभापति अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

थे। स्वामी श्रद्धानन्द, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, पं. जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, पं. नाथूराम शर्मा शंकर, पं. पद्म सिंह शर्मा, पं. गया प्रसाद शुक्ल स्नेही, पं. रामजी लाल शर्मा जैसे साहित्यिक इस सम्मेलन में उपस्थित हुए थे। प्रयाग से पं. द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी, पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, पं. लक्ष्मीधर वाजपेयी एवं. पं रामनरेश त्रिपाठी सम्मिलित हुए थे। इन वयोवृद्ध एवं वरिष्ठ साहित्यिकों के बीच दो युवक साहित्यिक इस सम्मेलन में आकर्षण के केन्द्र बिन्दु थे। इनमें एक थे पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी तथा दूसरे थे पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला। उन दिनों निराला जी कलकत्ता से प्रकाशित प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र 'मतवाला' के सम्पादक मण्डल में थे। निराला जी अपनी बंगाली सजधज में निराले थे और चतुर्वेदी जी रामानुजीय तिलक धारण किये थे।"

कलकत्ता सम्मेलन, 1931

निराला जी मई 1931 में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन कलकत्ता में भाग लेने लखनऊ से कलकत्ता गये। वहां उन्होंने 'वर दे वीणा वादिनि' का सस्वर पाठ किया

फैजाबाद सम्मेलन, 1936

फैजाबाद प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन, 1936 में निराला जी फैजाबाद गये तो पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी के यहां रुके। इस सम्मेलन का वर्णन स्वयं निराला ने किया है (निराला की आत्मकथा, डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, 1970, पृष्ठ 142)। इसमें निराला जी तथा पुरुषोत्तमदास टंडन के बीच वाग्युद्ध हुआ।

शिमला सम्मेलन, 1939

बच्चन जी ने 11 फरवरी, 1962 के 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान में लिखा है कि शिमला साहित्य सम्मेलन में कवि सम्मेलन के अवसर पर हंगामा मच गया। निराला पीने लगे थे—रूढ़िसुधारवादी त्रिपुडियों को दिखाकर पीते थे, उन्हें छेड़ने के लिए पीते थे।

अबोहर सम्मेलन, 1941

बच्चन जी तथा उदयशंकर भट्ट (महाप्राण निराला - प्रकाशन विभाग 1969) ने इस सम्मेलन के विवरण दिये हैं।

बच्चन—

दिसम्बर 1941 अबोहर सम्मेलन के अवसर पर मुझे पहली बार निराला के मानसिक असन्तुलन का आभास मिला। वह सम्मेलन में सबसे अंग्रेजी में बहस करते फिरते थे... निराला ने तीन-चार दिनों के अन्दर इतने मुर्गे खाये कि बिल देखकर सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष केशवानन्द अपना सिर पीटने लगे।

उदयशंकर भट्ट—

निराला ने इस सम्मेलन में कवि सम्मेलन का सभापति बनने के लिए 500 रुपये की मांग की थी। जब निराला लाहौर कवि सम्मेलन में गये तो उन्हें एक जैनी के यहां ठहराया गया। निराला द्वारा मांस-मदिरा की मांग पर जैन महोदय तुनके किन्तु जब भट्ट जी ने समझाया तो मान गये।

यहां निराला जी के कविता पढ़ने के ढंग से लोग प्रभावित हुए। उर्दू के शायर भी कहते सुने गये, "जो भी हो, आदमी दबंग और खूबसूरत था, बड़ा भारी है।" दो अंग्रेज महिलाएं भी आईं जिनसे निराला ने अंग्रेजी में बातें कीं। वे निराला की घन गम्भीर वाणी से प्रभावित हुईं।

अन्य लोगों ने कहा "यह आदमी सिर से पैर तक पोएट है और कुछ नहीं।

निराला ने पंजाब के भावप्रवण श्रोताओं को वशीभूत कर लिया।"

इतने सम्मेलनों में भाग लेने के बाद भी निराला ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग को 'आधुनिक कविमाला' के लिए अपना प्रतिनिधि काव्य संकलन नहीं दिया और अन्तकाल तक वे सम्मेलन से चिढ़े रहे। महापंडित राहुल ने मुझे बताया था कि निराला अग्रिम की मांग कर रहे थे और सम्मेलन के अधिकारी इसके लिए तैयार नहीं थे।

मुझे लगता है कि निराला की नाराजगी का अन्य कारण भी था। मंगला प्रसाद पुरस्कार को लेकर निराला के विषय में जो वाद विवाद चला था उससे निराला मर्माहत थे।

यह तो निराला की उदारता थी कि एक बार वे साहित्य सम्मेलन संग्रहालय में कालिदास जयन्ती पर तथा एक अन्य अवसर पर सत्यनारायण कुटीर में भी गये।

यह मतवाला निराला

निराला की मृत्यु के बाद 11 फरवरी, 1962 को 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' का निराला स्मृति अंक प्रकाशित हुआ। इसमें डॉ. हरिवंश राय बच्चन का लेख "यह मतवाला निराला" छपा।

उन्होंने लिखा है कि 1928-29 में जब बच्चन जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र थे तो निराला जी एक कवि सम्मेलन में विजयानगरम हाल में आये थे—

"शरीर से लम्बे, दुबले, सांवले, सिर पर लम्बे काले बाल, दाढ़ी-मूंछ मुंडे, तहमत पर उन्होंने लम्बा कुरता पहन रखा था। तन्मयता, उच्चारण की स्पष्टता, **वाणी की ओजस्विता** उनकी विशेषता थी।

.... करुणा के चित्रण में निराला अद्वितीय हैं—एक और चीज जिससे मैं प्रभावित हुआ वह था निराला का **पौरुषपूर्ण नर-स्वर**। छायावाद का व्यापक स्वर नारी स्वर था।"

"1935 में इर्विंग क्रिश्चियन कालेज में एक कवि सम्मेलन के अवसर पर पुनः भेंट हुई तब निराला का शरीर भारी हो चला था, बाल पक चुके थे। मेरे नाम-काव्य से शायद वह परिचित हो चुके थे।"

"1939 में शिमला साहित्य सम्मेलन के अवसर पर निराला पीने लगे थे।"

"दिसम्बर 1941 में मुझे पहली बार निराला के मानसिक असन्तुलन का आभास मिला।"

बहुभाषाविद निराला

निराला जी हिन्दी के अतिरिक्त बंगला, उर्दू, फारसी, संस्कृत तथा अंग्रेजी भलीभांति जानते थे। प्रायः वे अंग्रेजी में बातें करते और अंग्रेजी में लिखने की सोचते किन्तु 1953 से 1958 के बीच उन्होंने उर्दू और फारसी में कई शेर लिखे या शेरों का छायानुवाद किया। ऐसी रचनाएं वे अपनी कापी के अन्तिम पृष्ठों पर लिखते जाते थे, सुनाते भी थे और उनमें निहित व्यंग्य को स्पष्ट भी करते थे।

1 जुदागाना न हुआ होकर भी, आबोहवा-ओ-अर्जोसमा
अभी मिले तो कभी बिछड़े थे, हुए फस्ले-बहार के पत्ते

2. अज़ दुआये जाने मन् फरसा जवीं
अस्ता जाने मन् दुआये अर्स नूर।

10.8 1953

3 इज् तशबेरश्क जिन्दगानी है
फूल हैं आग बर्फ पानी है

4 उम्र जब सारी कटी जंगवजदालां, यारो
आखिरी वक्त में क्या शुक्ल क्या पांडे होंगे

5. शफीक अपनी ही राह जाता है
आशिक है जो, मुंह की खाता है

6 पसेमर्गन समझ में आवेंगे ये कौन हमदम थे
समर-ओ-गुल खिजां में गरमियों में आबे जमजम थे

13.1.56

7. उर्दू का शेर है—भले हैं दोस्त से दुश्मन जो जलकर नाम लेते हैं
इसका फारसी अनुवाद निराला ने लिखा—

वले अज़ दोस्त शइ दुश्मन बलन्दे नाले इस्मानी
बहस्ती खारे गुल बेहतर, बदस्ते तारे दामानी

22 1 56

8. एक बार पं. शिवाधार पाण्डेय ने निराला जी के पास दो पक्तियां लिखकर भेजीं—

सूर्यकान्त है जे द्रवे करिबे अमर विहान
शतंजीव तिनको मिले सरस्वती वरदान

इसके उत्तर में निराला जी ने निम्नलिखित शेर 17.2.56 को लिख भेजा—

तुम्हारी कस्म जाने है अन्दाज
साजे नौ आ बेनवा, नवाए साजे नौसे बाज

9. एक बार नेहरू जी राजर्षि टण्डन को देखने प्रयाग आये। किसी ने जाक कहा कि निराला जी से भी मिल लें। नेहरू जी ने कहा कि हमारी मोटर से उन्हीं ले आओ। निराला जी ने एक चिट उठाई और लिखा—

एक शायर ने कहा है—

हैं तिल्फ दबिस्तान फलातूं तेरे आगे
क्या सच जो अरस्तू भी करे चूं तेरे आगे
और मैं कह रहा हूं कि—
मुरगान चमन की है गुटुरगूं तेरे आगे
मुझ जैसे रकीबों की हैं हूं हूं तेरे आगे

10. इसी तरह एक बार हंसते हुए बताया कि हमने बलिया वालों पर तीन श लिखे हैं, तुम्हें सुनाते हैं—

मर्दानगी-ई-बलिया ने जनानऽ कर दिया
रिन्दों की कायनात को मयखाना कर दिया।।
जिस ओर नजर डाली बलिया ई बलिया हं
दुरबिल दुकानदारों को दीवाना कर दिया।।
अल्लाह इलाहाबाद के हैं होश फाख्ता ,
रानों को भी रानाई से तिफलाना कर दिया।

179.5

11. हितैषी जी की एक कविता सुनाने के बाद बोले, हमने भी एक बनाई ... ारा मजा चखो—

जगने न दिया जो दिया जग ने मग में मंगने को गने ही रहो
अति पात के गात बिसातन बाहुलता के बितान तने ही रहो
छवि सावन के सुख झूले में झूले रंगों के सनेह घने ही रहो
यहां जैसे कसाले से वैसे कसाले रिसाले के साल बने ही रहो

16.12.5

इसके बाद निराला जी ने अन्य कोई कविता नहीं लिखी। वे अपनी बंग ...विताओं में 'अणिमा' में संग्रहीत पं. विजयालक्ष्मी के घर लिखी कविता या ... सुमित्रानन्दन पन्त को लिखे गये बंगला कवितामय पत्र का उल्लेख करते रहते।

कालिदास जयन्ती पर एक बार उन्होंने संस्कृत में भाषण भी दिया था। एकाध पत्र भी संस्कृत में लिखते थे।

'बेला' लिखकर निराला उर्दू बहरों पर अपनी पकड़ का परिचय पहले ही दे चुके थे।

निराला साहित्य

निराला द्वारा रचित साहित्य प्रचुर है। मौलिक कृतियों के अलावा उनके द्वारा अनूदित साहित्य भी कम नहीं है। उन्होंने प्रारम्भ में बालोपयोगी साहित्य की भी रचना की—यथा भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद, भीष्म, महाराणा प्रताप आदि। उनकी कुल कृतियां 53 हैं, जिनमें से काव्य कृतियां 17 (जिनमें अपरा, कविश्री तथा राग-विराग संकलन हैं), आलोचनात्मक कृतियां 4, निबन्ध संग्रह 4, कहानी संग्रह 5, उपन्यास 7 और रेखाचित्र 2 हैं। विवेकानन्द तथा रामकृष्ण परमहंस साहित्य का जो अनुवाद किया है उसमें भी बहुतों में निराला का नाम है। महाभारत, रामायण की टीका आदि लोकोपयोगी मौलिक पुस्तकें हैं।

1983 में डॉ. नन्दकिशोर नवल ने निराला की समस्त रचनाओं का सम्पादन 'निराला रचनावली' नाम से आठ खण्डों में करके अति सराहनीय कार्य किया है। निराला का कुल गद्य-पद्य सहित लगभग 3200 मुद्रित पृष्ठों में है। यदि निराला जी द्वारा लिखे गये पत्रों को भी सम्मिलित कर दिया जाये (354 पृष्ठ) तो सम्पूर्ण साहित्य 3541 पृष्ठों का है।

निराला द्वारा अनूदित साहित्य (उन्हीं के अनुसार) लगभग 2000 पृष्ठ का होगा। इस तरह निराला ने 5000 से अधिक पृष्ठों का साहित्य रचकर कीर्तिमान स्थापित किया है।

'निराला रचनावली' के विविध खण्डों का परिचय इस प्रकार है—

		पृष्ठ संख्या
प्रथम खण्ड	काव्य	417
द्वितीय खण्ड	काव्य	496
तृतीय खण्ड	उपन्यास	433
चतुर्थ खण्ड	कहानियां	448
पंचम खण्ड	निबन्ध	535
षष्ठम खण्ड	स्फुट निबन्ध	540
सप्तम खण्ड	बाल साहित्य (गद्य)	318
अष्ठम खण्ड	पत्रावली	354
		3541

निराला साहित्य

मौलिक ग्रंथ

1. अनामिका	(काव्य) नवजादिक लाल श्रीवास्तव, कलकत्ता, 1923; दूसरा संस्करण (संशोधित) भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1938; 194 पृ., 22 स.मी., द्वितीय संस्करण 1948, मू. 5.00, पृ. 194
2. भक्त ध्रुव	(जीवनी) द पापुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता, 1926; दूसरा सं. 1930; 96 पृ., 18 से.मी.।
3. महाराणा प्रताप	(जीवनी) द पापुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता, 1925; दूसरा सं. 1929; 126 पृ., 18 से.मी., मू. 1.00
4. भक्त प्रह्लाद	(जीवनी) द पापुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता, 1925, दूसरा संस्करण 1930; 116 पृ., 18 से.मी.
5. भीष्म	(जीवनी) द पापुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता, 1926
6. रवीन्द्र कविता कानन	(समालोचना) निहालचन्द एण्ड कम्पनी, कलकत्ता, 1928, स.स. हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी। 1954; 175 पृ., 18 से.मी.। मू. 1.00
7. परिमल	(काव्य) गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ, 1929, गंगा ग्रंथागार, लखनऊ पंचमावृत्ति, 1950 265 पृ. 18 से. मी., मू. 5.00
8. अप्सरा	(उपन्यास) गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ, 1932, 186 पृ., 18 से.मी., मू. 1.50, सुबोध पाकट बुक्स दिल्ली से पाकेट सीरीज में 2.00 रु.
9. अलका	(उपन्यास) गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ, 1933; 220 पृ., 18.5 से.मी., मू. 1.50। षष्ठावृत्ति, 1952, मू. 3.50, पृ. 220
10. पद्मा (लिली)	8 कहानियां, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ, 1934, तीसरा स. 1949· 143 पृ. 18 से.मी.· मू. 2.00। सातवां सं. 1961
11. प्रबन्ध-पत्र	(प्रबन्ध) सम्पा. दुलारेलाल भार्गव, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, 1934· दूसरा सं. भारती (भाषा) भवन, दिल्ली; 1954 172 पृ. 18 से.मी.। मू. 3.00
12. सखी	(कहानियां) गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ, 1935; 130 पृ., 18.5 से.मी., मू. 0.75। बाद में चतुरी चमार नाम से प्रकाशित 1939

13. गीतिका (काव्य) भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1936; 106 पृ., 18 से.मी., मू. 1.50 (101 गीत)।

14. निरूपमा (उपन्यास) भारती भण्डार, प्रयाग, 1936; सातवां सं. 1954, 148 पृ., 18 से.मी.।

15. प्रभावती (उपन्यास) गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ, 1936; 234 पृ., 18 5 से.मी., मू. 2.00। किताब महल, चतुर्थ सं. 1953, मू. 3.00

16. तुलसीदास (काव्य) भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1938, 95 पृ., 18 से मी., मू. 1.25

17. कुल्लीभाट (रेखाचित्र) गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ, 1939; दूसरा सं. 1947, 146 पृ., 18 से.मी., तृतीय सं. 1953, मू. 2.50, 146 पृ.

18. चमेली (उपन्यास) अप्रकाशित, 1939, रूपाभ में 1942 में प्रकाशित

19. अनामिका (द्वितीय) भारती भंडार, इलाहाबाद, 1938

20 प्रबन्ध प्रतिमा (प्रबन्ध) भारती भण्डार, इलाहाबाद, 1940; 345 पृ., 18 से मी.; मू 2.00। द्वितीय संस्करण, 1963, मू. 8.00, पृ. 255

21. बिल्लेसुर बकरिहा (रेखाचित्र) युग मन्दिर, उन्नाव, 1942, 61 पृ., 18 से.मी.। द्वितीय सं 1945, किताब महल, 84 पृ., मू. 1.50, नवीन संस्करण 1958 किताब महल।

22. सुकुल की बीबी (कहानियां) भारती भण्डार, प्रयाग, 1941, दूसरा सं. 1947, 96 पृ., 12 से.मी., मू. 1.00 (4 कहानियां)।

23. कुकुरमुत्ता (काव्य) युग मन्दिर, उन्नाव, 1942; 64 पृ., 16 से.मी.; मू. 0.62, किताब महल, 1952 मू 62 पैसे। लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1969, मू. 3.00

24. अणिमा (काव्य) युग मन्दिर, उन्नाव, 1943; 104 पृ., 16.5 से. मी., मू. 1 25। लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1971, मू. 4.00, पृ. 87

25. चतुरी चमार (कहानियां) किताब महल, इलाहाबाद, 1945, 80 पृ., 18 से.मी., मू. 1.50 (8 कहानियां)।

26. अपरा (काव्य संग्रह) साहित्यकार संसद, प्रयाग, 1946; 216, पृ. 21.

(काव्य) हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, 1946, 103 पृ., 18 से.मी.। मूल्य 2.00। निरूपमा प्रकाशन, 1963

कड किताब महल, इलाहाबाद, 1946, 167 पृ., 18.5 से मी.; मू. 2.25 (केवल प्रथम भाग)। मू. 3.75, पृ 110

(काव्य) हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, 1946, 104 पृ., 18 5 से.मी ; मू. 2 00। निरूपमा प्रकाशन प्रयाग, 193, मू 4.00, पृष्ठ 111

(कहानियां) राष्ट्रभाषा विद्यालय, वाराणसी, 1948; 195 पृ., 18.5 से.मी.; (10 कहानिया)। द्वितीय स. 1963। निरूपमा प्रकाशन, प्रयाग।

ल्लव (समीक्षा) गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ, 1949; 99 पृ., 18 से.मी.; मू. 2.00।

(काव्य) कलामन्दिर, प्रयाग, 1950, 112 पृ., 18 से.मी., सचित्र; मू. 2.50। दूसरा संस्करण निरूपमा प्रकाशन 1963, मू 4 00, 128 पृष्ठ।

ाम (उपन्यास) कल्याण साहित्य मन्दिर, इलाहाबाद, 1950, 80 पृ., 18 से.मी , दूसरा सं हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय (पाकेट बुक्स), 1960; 102 पृ., 16 से.मी. मू. 1.00।

(समीक्षा, 1942) कलामन्दिर, इलाहाबाद, 1951; 122 पृ., 18 से.मी.।

(काव्य) साहित्यकार संसद, इलाहाबाद, 1953, 96 पृ., 19 से.मी , सचित्र, मू 2.50 (96 कविताएं)।

(काव्य) हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1954; 64 पृ., 18 से.मी., मू. 1.50, द्वितीय सं. 1959, तृतीय स वसुमती प्रकाशन, 1970, मू 4.00, 1124

(काव्य संग्रह) साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी, 1955; 29 पृ., 22 से.मी., मू. 0.62 (22 कविताएं)

(प्रबन्ध) सम्पादक शिवगोपाल मिश्र, कल्याणदास ब्रदर्स वाराणसी, 1957, 204 पृ., 18.5 से.मी., मू. 4 00। द्वितीय सं. वसुमती इलाहाबाद, 1969, मू. 6.00

ली संपादक श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी, वसुमती, 38, जॉर्ज रोड इलाहाबाद-3, 1969, 87 पृ., मूल्य 5.00

40. संग्रह — संपादक रामकृष्ण त्रिपाठी : निरूपमा प्रकाशन, प्रयाग, 1963, मू. 5.75, 159 पृ

भाषा तथा अलंकार आदि

41. रस अलंकार — लहरिया सराय, पटना, 1926
42. हिन्दी बंगला शिक्षक — पापुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता, 1928
43. सीख भरी कहानियां — अभिनव भारती, इलाहाबाद, प्रथम सं. 1969, मूल्य 2.00, पृष्ठ 48

अनुवाद

44. वैदिक साहित्य — निहालचन्द एण्ड कम्पनी, कलकत्ता
45. वात्स्यायन कामसूत्र — निहालचन्द एण्ड कम्पनी, कलकत्ता

रामकृष्ण परमहंस साहित्य

46. परिव्राजक — (जीवनी) श्री रामकृष्ण आश्रम, धनतोली, नागपुर, 1942
47. श्री रामकृष्ण वचनामृत — श्री रामकृष्ण आश्रम, धनतोली, नागपुर, तीसरा भाग, 1942

विवेकानन्द साहित्य

48. भारत में विवेकानन्द — श्री रामकृष्ण आश्रम, धनतोली, नागपुर, 1948; दूसरा सं. 1951, 498 पृ, 18 से.मी.
49. तुलसीकृत रामायण की टीका — गंगा ग्रंथागार, लखनऊ (20 खण्ड) प्रथम खण्ड, 1934; मूल्य 2.00
50. रामायण (विनय खण्ड) — राष्ट्रभाषा विद्यालय काशी, प्रथम सं. 1948, मू. 2.25, पृ. 159
51. महाभारत — गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, 1939, 196 पृ. (संक्षिप्त)

बंकिम साहित्य

आनन्द मठ	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
कपाल कुण्डला	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
चन्द्रशेखर	इण्डियन प्रेस इलाहाबाद
दुर्गेशनन्दिनी	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
कृष्णकान्त का बिल	इण्डियन प्रेस इलाहाबाद

युगांगुलीय	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
रजनी	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
देवी चौधरानी	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
राजारानी	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
विषवृक्ष	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
राजसिंह	इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद

अप्रकाशित साहित्य

समाज	नाटक
शकुन्तला	नाटक
उषा अनिरुद्ध	नाटक
फुलवारी लीला	उपन्यास
चमेली	उपन्यास (1942, रुपाभ में प्रकाशित)
इन्दुलेखा	उपन्यास, 1959
राजयोग	अनुवाद

गीत गोविन्ददास की बंगलाकृति (अनुवाद)

52 राग विराग — सम्पादक डॉ. रामविलास शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, 1995

53 निराला रचनावली (खण्ड 1-8) — सम्पादक नन्द किशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, 1983, अमृत प्रभात में प्रकाशित

टिप्पणी : सरस्वती सम्पादक ठाकुरदत्त मिश्र की 95वीं वर्ष गांठ पर उनकी कृतियों की सूची में 'तीन नगीने' के सहलेखक महाप्राण निराला बताये गये हैं।

निराला रचनावली की विशिष्टता

डॉ. नन्द किशोर नवल ने तमाम पुस्तकालयों में पुराने पत्रों तथा पुरानी पत्रिकाओं की जिल्दों में निराला की गद्य-पद्य रचनाओं को छांटा और गद्य तथा पद्य रचनाओं को तिथि-क्रम के अनुसार सजाया है। साथ ही, जिस पत्र में रचना प्रकाशित है, उसका नाम भी दिया है। यह बहुत बड़ा शोध कार्य था जिसकी दीर्घकाल से प्रतीक्षा थी। इससे निराला साहित्य के जिज्ञासाओं को निराला के कवि, कहानीकार, निबन्धकार तथा उपन्यासकार रूप को समझने में सुविधा होगी।

यही नहीं, निराला की कुछ रचनाएं हिन्दी पाठकों के सम्मुख पहली बार प्रस्तुत हो रही हैं। शायद कुछ को निराला ने जानबूझ कर अपने संकलनों में नहीं दिया था। किन्तु अब सम्पूर्ण या समग्र साहित्य की बात उठती है तो निराला की सारी रचनाओं को संकलित होना ही चाहिए था।

में नवल जी द्वारा 'असंकलित रचनाओं' के प्रकाशन तथा 'निराला रचनावली' में उनका निर्देश किये जाने की भूरि-भूरि प्रशंसा करना चाहूंगा। उदाहरणार्थ, निराला जी द्वारा रचित 14 कविताएं (रचनावली खण्ड 2 में) ऐसी हैं जिन्हें मैंने नहीं देखा था। वास्तव में ये कविताएं 'संगम' में छपी थीं किन्तु प्रयाग में ही रहकर वे मेरी नजर से छूट गई थीं। इन कविताओं को देखकर मुझे सर्वाधिक प्रसन्नता इसलिए भी हुई कि मैं प्राय: सोचा करता कि 1949 में निराला जी क्या करते रहे। वस्तुत: 1949 में उन्होंने **एक दर्जन** कविताएं लिखीं। अत: निराला कविकर्म से कभी उदासीन नहीं हुए भले ही वे संन्यास लेने वाले रहे हों।

निराला के विषय में सम्पन्न शोधकार्य : एक झाँकी

'हिन्दी अनुशीलन' (वर्ष 26 संयुक्तांक, 29-32, सन् 1976) के शोध विशेषांक-2 में पृष्ठ 66-68 पर निराला विषयक स्वीकृति शोध प्रबन्धों की सूची है जिसमें 34 शीर्षक हैं। यह भारत के विभिन्न विश्वविद्यालययों में सम्पन्न शोध कार्यों को द्योतित करने वाली सूची है जो 1966 से 1974 की अवधि की है। स्पष्ट है कि निराला की मृत्यु के पश्चात् ही उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोधकार्य हुआ। पता नहीं इधर के 20-22 वर्षों में और कितने शोध प्रबन्ध स्वीकृत हुए किन्तु यहां यह बताना प्रासंगिक होगा कि इसी अवधि में दिनकर पर 13, सुमित्रानन्दन पन्त पर 23, जयशंकर प्रसाद पर 54, महादेवी वर्मा पर 11, मैथिलीशरण गुप्त पर 22 शोध प्रबन्ध स्वीकृत हुए। स्पष्ट है कि केवल प्रसाद जी ही ऐसे कवि हैं जिन पर निराला से अधिक शोध प्रबन्ध स्वीकृत हुए (उन पर 1958 से ही शोध प्रबन्ध स्वीकृत हो चुके थे)।

इन शोध प्रबन्धों मे दो विशेष उल्लेखनीय हैं :—

(1) सुब्रह्मण्यम भारती और निराला के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन —पी. जयरमण, सागर, 1965 (प्रकाशित 1966)

(2) स्वच्छन्दतावादी चेतना की भूमिका में निराला और जी. शंकर कुरूप के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन—शशिधरन पिल्ले, सागर, 1969

इनमें दक्षिण भारत के दो काव्यों सुब्रह्मण्यम भारती तथा जी. शंकर कुरूप के साथ निराला का तुलनात्मक अध्ययन हुआ है। यह स्वस्थ परम्परा का सूचक है। (यहां पर 'टैगोर और निराला'—अवध प्रसाद वाजपेयी, 1965 का उल्लेख भी प्रासंगिक होगा। वैसे तो प्रारम्भ से ही निराला में टैगोर का प्रभाव लक्षित किया जाता रहा है किन्तु विश्व कवि टैगोर के साथ निराला की तुलना यह बताती है कि निराला में सचमुच विश्वकवि की प्रतिभा थी। वैसे आलोचकों ने निराला की तुलना तुलसी, कबीर, कालिदास, भवभूति आदि से भी की है।)

ए क्रिटिकल स्टडी आफ दि पोएट्री आफ सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, धरमचन्द जैन, जबलपुर, 1970
कवि निराला की जीवनी और काव्य का अनुशीलन, रमेशचन्द्र महरा, सागर, 1974
छायावाद : निराला के सन्दर्भ में, लल्लन सिंह, पटना, 1970
छायावादी काव्य और निराला, शान्ति श्रीवास्तव, का.हि , 1965 (ग्रन्थम, कानपुर, 1966)
निराला का काव्य, सन्तोष जैन, दिल्ली, 1966
निराला का काव्य-दर्शन और उनकी काव्य प्रक्रियाओं का समीक्षात्मक अध्ययन, सूर्यप्रसाद श्रीवास्तव, सागर, 1972
निराला का काव्य दर्शन एवं शिल्प, रामप्रीति उपाध्याय, रांची, 1975 (डी.लिट.)
निराला का काव्य-विकास, नन्द किशोर नवल, पटना, 1970
निराला काव्य का अध्ययन (छायावाद के विशेष सन्दर्भ में), इन्द्रराज सिंह ठाकुर, इन्दौर, 1973
निराला-काव्य का एक मनोवैज्ञानिक विवेचन, सन्तोष कुमारी कालरा, पंजाब, 1971
निराला-काव्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, रमेश अंगीरस, कुरुक्षेत्र, 1969
निराला काव्य में अभिव्यंजना शिल्प, रामकृष्ण कौशिक, मेरठ, 1974
निराला काव्य में परम्परा और प्रयोग, रीता वर्मा, गोरखपुर, 1973
निराला शिल्प विधान, ओमप्रकाश त्यागी, अलीगढ़, 1971
निराला की काव्य- भाषा, शकुन्तला शुक्ला, का.हि., 1973
निराला की काव्य-भाषा और शैली का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन, बी. नागराजू, वेंकटेश्वर, 1972
निराला की काव्य-भाषा का काव्यशास्त्रीय अध्ययन, स्वर्ण बंसल आर्य, दिल्ली, 1971
निराला की प्रबन्ध कल्पना और प्रबन्धात्मक काव्य-प्रतिभा, जितेन्द्रनाथ दूबे, काशी विद्यापीठ, 1973
निराला : व्यक्तित्व, कला और दर्शन, सुदेश कुमारी पुरंग, इलाहाबाद, 1967
निराला के काव्य का स्वरूप-विकास : उनके व्यक्तित्व के विकास में, सरोज गर्ग, पंजाब, 1971

21. निराला के काव्य का कलापक्षीय परिशीलन, प्रेमनारायण अग्निहोत्री, सागर, 1971
22. निराला के काव्य की दार्शनिकता, मुहम्मद अयूब खां, कश्मीर, 1966
23. निराला के काव्य की मूल प्रेरणा और विद्रोही दृष्टिकोण, विभा गुप्ता, इलाहाबाद, 1970
24. निराला साहित्य में सामाजिक चेतना, शिवकुमार त्रिवेदी, राजस्थान, 1974
25. निराला के काव्य में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों का अध्ययन, रामस्वरूप भक्त, मगध, 1971
26. निराला साहित्य में नारी, उषारानी अग्रवाल, का.हि., 1970
27. निराला साहित्य में सामाजिक चेतना, शिवकुमार त्रिवेदी, राजस्थान, 1974
28. भारतीय पुनरूत्थान के सन्दर्भ में निराला काव्य का अध्ययन, शकुन्तला खोसला, कुरुक्षेत्र, 1973
29 महाकवि निराला के काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन, बुद्धसेन शर्मा, अलीगढ़, 1968 (रीगल बुक डिपो, 1973)
30. महाकवि निराला : मनीषा और कला, श्रीकृष्ण, जोधपुर, 1969
31. महाप्राण निराला : दर्शन और काव्य, वसन्त जोशी, म.स., 1966
32 सुब्रह्मण्यम भारती और निराला के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन, पी जयरमण, सागर, 1965 (हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1966)
33. स्वच्छन्द कवि निराला, उर्मिला कुमार, पंजाब, 1967
34. स्वच्छन्दवादी चेतना की भूमिका में निराला और जी.शंकर कुरूप के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, शशिधरन पिल्ले, सागर, 1969

राला विषयक आलोचनात्मक साहित्य

1 युग कवि निराला—गिरिराज शरण अग्रवाल, हिन्दी साहित्य निकेतन कानपुर, 1970
2. निराला स्मृति ग्रंथ—सं. अमरनाथ, ज्ञानलोक प्रकाशन, लखनऊ
3. निराला का साहित्य और साधना—विश्वंभरनाथ उपाध्याय, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1965 (यह पुस्तक महाकवि निराला : काव्य कला और कृतियां का द्वितीय संस्करण है।)
4. महाकवि निराला काव्य कला और कृतियां—विश्वंभरनाथ उपाध्याय, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, 1953।
5. निराला—सं. ओंकार शरद, बोरा एंड कंपनी, पब्लिशर्स, बंबई, 1969

निराला स्मृति ग्रंथ—सं. ओंकार शरद, भारती परिषद्, प्रयाग, 1968
महाकवि निराला और राम की शक्ति पूजा—श्याम कपूर, सेंट्रल बुक डिपा, दिल्ली, 1962
निराला काव्य पर बंगला का प्रभाव—इन्द्रनाथ चौधरी, श्री भारत भारती, दिल्ली, 1964
निराला-काव्य-कोश—सं जयनाथ 'नलिन', आलोक प्रकाशन, कुरुक्षेत्र, 1968
महाकवि सुब्रह्मण्यम् भारती एवं महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध)—प्रो. जयरामन, हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1966।
निराला के पत्र—सं. जानकी बल्लभ शास्त्री, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1971
युग कवि निराला—कृष्णदेव झारी, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1969
निराला एक झलक—प्रेमनारायण टंडन, हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ 1962
निराला : व्यक्तित्व एवं कृतित्व—प्रेमनारायण टंडन, हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1962
कवि निराला और उनका काव्य—गिरीशचन्द्र तिवारी, साहित्य भवन इलाहाबाद, 1956
निराला का गद्य—सूर्यप्रसाद दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1968
निराला की आत्मकथा—सूर्यप्रसाद दीक्षित, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, 1970
महाप्राण निराला—गंगा प्रसाद पाण्डेय, लोकभारती, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, 1968 (प्रथम संस्करण, भारती भण्डार, 1949)
क्रांतिकारी कवि निराला—बच्चन सिंह, नंदकिशोर एंड संस, वाराणसी, 1961
महाकवि श्री निराला अभिनंदन ग्रंथ—सम्पादक ऋषिजैमिनी कौशिक बरुआ, प्रकाशक—अखिल बंग महाकवि निराला अभिनंदन स्वागत समिति, कलकत्ता, 1953
निराला का गद्य साहित्य—प्रमिला बिल्ला, चैतन्य प्रकाशन, कानपुर 1964
निराला—रामरतन भटनागर, साथी प्रकाशन, सागर, 1962
निराला और नवजागरण—रामरतन भटनागर, साथी प्रकाशन, सागर 1965

24. निराला और उनकी अपरा—देशराज सिंह भाटी, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1963
25. निराला और उनकी राम की शक्ति पूजा—देशराजसिंह भाटी, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1966
26. महाकवि निराला कृत तुलसीदास—शंभूसिंह मनोहर, राज पुस्तक मंदिर, जयपुर, 1967
27 महाप्राण निराला—प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1969
28. युगाराध्य निराला—गंगाधर मिश्र, काशी राष्ट्र भाषा विद्यालय, काशी, 1967
29. निराला काव्य का अध्ययन—भागीरथ मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1967
30. निराला का परवर्ती काव्य—रमेश चन्द्र मेहरा, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, 1963
31. निराला—धनंजय वर्मा, विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1965
32. टैगोर और निराला—अवधप्रसाद वाजपेयी, युगवाणी प्रकाशन, कानपुर, 1965
33. कवि निराला—नन्ददुलारे वाजपेयी, वाणी विज्ञान प्रकाशन, वाराणसी, 1965
34. निराला का कथा साहित्य—कुसुम वार्ष्णेय, मिश्र प्रकाशन, इलाहाबाद, 1963
35 निराला और उनका तुलसीदास—रघुवर दयाल वार्ष्णेय, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली, 1968
36 काव्य का देवता, निराला—विश्वंभर 'मानव' लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1963
37. कवि निराला की वेदना तथा अन्य निबंध—विष्णुकांत शास्त्री, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1963
38. संस्मरणों के बीच निराला—शंकर सुल्तानपुरी, भारतीय ग्रंथमाला, लखनऊ, 1965
39. महाकवि निराला और उनकी अपरा—कृष्णदेव शर्मा, रीगल बुक डिपो, दिल्ली, 1969
40. राम की शक्ति पूजा और निराला—देवेन्द्र शर्मा इन्द्र, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1966
41 निराला—सम्पादक पद्मसिंह शर्मा, कमलेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1969

निराला : काव्य समीक्षा—पद्मसिंह शर्मा, कमलेश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1969
निराला और उनका तुलसीदास—राजकुमार शर्मा, पदम बुक कंपनी जयपुर, 1968
निराला : संस्मरण : श्रद्धांजलियां—राजकुमार शर्मा, किताब महल, इलाहाबाद
निराला और राम की शक्ति पूजा—राजनाथ शर्मा, प्रभाकर, पुस्तक मंदिर, आगरा, 1966
निराला—राजनाथ शर्मा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
निराला—रामविलास शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा, 1946, दूसरा संस्करण, 1955
निराला का साहित्य, भाग 1-2, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1969, 1972, 1976
निराला की काव्य साधना—वीणा शर्मा, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली, 1965
निराला अभिनंदन पुष्पहार—श्याम बिहारी 'विरागी', राष्ट्रभाषा प्रकशन मंदिर, वाराणसी
अभेददर्शी निराला—शिवप्रसाद 'दिवाकर', नवयुग, ग्रंथागार, लखनऊ, 1966
छायावादी काव्य और निराला—शान्ति श्रीवास्तव, ग्रंथम, कानपुर, 1966
कविवर निराला—श्री हरि, स्टूडेंट्स फ्रेंड्स, इलाहाबाद, 1960
महाकवि निराला का निरालापन—उमाशंकर सिंह, अंतर्राष्ट्री प्रकाशन मंडल, पटना, 1955
निराला : जीवन और साहित्य—तेजनारायण प्रसाद सिंह, राज प्रकाशन, पटना, 1964
छायावाद और निराला—हनुमानदास, 'चकोर', हिन्दी साहित्य भवन, लखनऊ, 1963
महाकवि निराला कृत तुलसीदास—जगदीश चंद्र जोशी, राज पुस्तक मंदिर, जयपुर, 1967
कवि निराला—रामरतन भटनागर, किताब महल, इलाहाबाद, 1947
सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला—रामविलास शर्मा, पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली, 1959
निराला—रामरतन भटनागर, यूनिवर्सल प्रेस, प्रयाग, 1952
निराला—तिलक, विक्रमशिला प्रकाशन।

62. निराला और राम की शक्ति पूजा—हरिचरण शर्मा, चिन्मय प्रकाशन।
63. निराला की काव्य साधना—देवेन्द्र कुमार जैन, कमलेश प्रकाशन
64. महाकवि निराला—जानकी बल्लभ शास्त्री, 1963
65. निराला : साहित्य संदर्भ—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग शकाब्द 1894 (1973)
66. निराला के काव्य का शैलीगत अध्ययन—डॉ. वेदव्रत शर्मा, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली
67. छायावादी काव्य और निराला—डॉ. कुमारी शान्ति श्रीवास्तव, 1966
68. निराला की काव्य साधना—वीणा शर्मा. 1965
69. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला—डॉ. चन्द्रकला,1965
70. छायावाद और निराला—हनुमानदास चकोर, 1963
71. नये भारत के नये नेता—महापंडित राहुल सांकृत्यायन, किताब महल
72. अभेददर्शी निराला—शिवप्रसाद श्रोत्रिय दिवाकार, 1966
73. महामानव निराला—कृतित्व और व्यक्तित्व—सत्यनारायण दुबे शरतेन्दु, 1963
74. निराला और डलमऊ—रामनारायण रमण, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, 1993
75. एक व्यक्ति : एक युग—नागार्जुन, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1963
76. निराला के संग—जयगोपाल मिश्र, लखनऊ, 1973
77. निराला की आत्मकथा—डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, गंगा पुस्तक कार्यालय, 1970

संग्रहणीय सामग्री

1. **साप्ताहिक हिन्दुस्तान** . 11 फरवरी, 1962, निराला स्मृति अंक
2. **साधना** निराला परिषद्, ग्रंथमाला, 15 भवानी दत्त लेन, कलकत्ता, वर्ष 1 से 2005
3. **अन्तर्वेद** : वसन्त, 1962
4. **त्रिपथगा** : फरवरी-मार्च, 1962
5. **साहित्य संदेश** : फरवरी-मार्च, 1962
6. **सम्मेलन पत्रिका** . श्रद्धांजलि अंक, शक 1884
7. **अपरा** : सम्पादक डॉ. शिवगोपाल मिश्र, फरवरी, 1967
8. **कादम्बिनी** : सितम्बर, 1993 में (निराला और डलमऊ)
9. **भारती** : निराला अंक : बिहार नेशनल कालेज, पटना, सितंबर 1959, वर्ष 9, अंक 1।

निराला संगीत संध्या

25 जनवरी, 1997 को हिन्दुस्तानी एकेडमी के समाचार में श्री ओ.पी मालवीय ने निराला जी की निम्नलिखित छः रचनाओं की संगीतमयी प्रस्तुति की। इनमें से भारतिजय विजय करे' तथा 'किनारा वो हमसे किये जा रहे हैं' गजल की प्रस्तुति ने सारे श्रोताओं का मन मोह लिया। मालवीय जी ने 'गीतिका' में निराला जी द्वारा कुछ गीतों की ताल-लय का उल्लेख करते हुए तीन महत्वपूर्ण बातें कहीं— (1) निराला के पास एक हार्मोनियम तक न थी कि वे अपने गीतों को तालबद्ध करते (2) निराला के काव्य का गुण ताल और लय है—नवगति, नव लय, ताल छन्द नव—यह वर वे सरस्वती से माँगते हैं। (3) किन्तु निराला ने अपने काव्य में आज की 'मल्टीनेशनल' तथा आर्थिक वृत्ति की सूचना इस गीत 'जागो जीवन धनिके, विश्व वन्द पणिके' में दी है। शायद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बाद वे दूसरे कवि हैं। जिन्होंने स्पष्ट रूप से देश की आर्थिक नीति के विषय में अपना मत व्यक्त किया है।

मालवीय जी ने जिन छः गीतों को चुना वे थे—(1) भारति जय विजय करे, (2) वरदे वीणा वादिनि वरदे, (3) जागो जीवन धनिक विश्व वन्य पणिके, (4) टूटे सकल बन्ध, (5) गहन है यह अन्धकार (करुण रस), (6) किनारा वो हमसे किये जा रहे हैं (गजल)।

"भारतिजय विजय कर" ध्रुपद शैली, यमन राग तथा परवावज की वैदिशके के साथ गाया। उन्होंने बताया कि 'टूटे सकल बन्ध में' "मानुस हों तो वहै रसखान" जैसे खण्ड हैं। वरदे वीणा वादिनि में विश्व भावना है।

अन्त में एक गीत "माँ मेरे आलोक निखारो" को मालकोश का उदाहरण बताते हुए उन्होंने कहा कि तुलसी का पद "अबलौ न सानी" मालकोश के ही हैं।

अंग्रेजी के अध्यापक होने पर भी संगीत का अभ्यास करके मालवीय जी ने निराला के गीतों पर विशेष कार्य किया है।

अद्भुत संयोग : शती वर्ष

निराला की शताब्दी वसन्त 1996 से वसन्त 1997 तक मनाई गई। इस अवधि में बालकृष्ण शर्मा नवीन तथा सुभाष चन्द्र बोस (23 जनवरी) की भी शताब्दियां मनाई गईं या मनाई जा रही हैं। समाचार पत्रों में नवीन तथा बोस की राष्ट्रीय भावनाओं में साम्य दिखलाया गया है। निराला साहित्यकार और अधिक राजनीतिक व्यक्ति कम (नहीं ही) थे।

जिस वर्ष निराला ने 'जुही की कली' लिखी (1916)। उसी वर्ष नवीन जी दसवीं कक्षा के विद्यार्थी होकर भी लखनऊ कांग्रेस में सम्मिलित हुए। नवीन जी के अनेक राजनीतिज्ञ मित्र थे। जवाहर लाल नेहरू उनके मित्र थे किन्तु निराला जी का

परिचय श्रीमती विजयलक्ष्मी के पति आर.एस. पंडित से था निराला नेहरू, गाधी टंडन आदि से हिन्दी का प्रश्न लेकर लड़-चुके थे। फलतः राजनीति में निराला का प्रवेश नहीं ही हो सकता था। नवीन जी को जेल में नेहरू जी शेक्सपियर के नाटक पढ़ाते थे किन्तु निराला जेल से बाहर रहकर टैगोर तथा शेक्सपियर की शिक्षा अपने शिष्यों को दे रहे थे।

नवीन जी ने 'प्रभा' और 'प्रताप' के माध्यम से हिन्दी की राजनीतिक पत्रकारिता को जन्म दिया। उन्होंने निराला की प्रथम कविता 'प्रभा' में न केवल प्रकाशित की अपितु आजीवन वे निराला के परम समर्थक रहे। 1924-25 में 'भावों की भिड़न्त' लेकर जो तूफान उठा उसमें नवीन जी ने निराला का साथ दिया। निराला की कविताओं को गणेश शंकर विद्यार्थी क्लिष्ट कहकर प्रकाशित करने में हिचकिचाते तो नवीन जी उनका अर्थ बताकर उनको सादर प्रकाशित करते रहे।

नवीन जी ने मृत्यु गीत लिखे। कहते हैं कि टैगोर के अलावा मृत्युगीत लिखने वाले नवीन ही हैं। उनकी फक्कड़ता को कबीर की परम्परा का बतलाया गया है। उनकी मृत्यु निराला की मृत्यु के ही आसपास हुई। उनकी सारी रचनाएं 1987 में सकलित होकर प्रकाश में आ चुकी हैं। सचमुच ही नवीन तथा निराला में काफी साम्य था—समसामयिक होते हुए यह साम्य उल्लेखनीय है।

शायद उग्र जी तथा फिराक भी ऐसे ही मस्तमौला हैं जो निराला के समानधर्मा थे।

शती वर्ष की उपलब्धियाँ

निराला महोत्सव समिति उन्नाव के तत्वावधान में निराला जन्म शती समापन समारोह के अन्तर्गत 11 फरवरी, 1997 को निराला परिमल उद्यान से डलमऊ तक की साहित्यिक यात्रा का आयोजन किया गया। यह यात्रा निराला के पैतृक गाव गढ़ाकोला और ससुराल डलमऊ के बीच भावनात्मक तथा साहित्यिक रिश्तों को जोड़ने में पूरी तरह से सफल रही। यात्रा में नवनीत के सम्पादक गिरिजा शकर त्रिवेदी, नवभारत टाइम्स के पत्रिका सम्पादक इब्बार रब्बी, यूनीवार्ता के दिल्ली प्रभारी विमल कुमार, पत्रकार सुरेश सलिल, साहित्यकार डॉ माहेश्वर, भारती परिषद् के अध्यक्ष कृष्ण मोहन सहगल, निराला महोत्सव समिति के संयोजक कमलाशंकर अवस्थी आदि शामिल थे।

12 फरवरी 1997 को गढ़ाकोला में गोष्ठी आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता डॉ विश्वनाथ त्रिपाठी ने की। डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, बी.बी.सी. लन्दन से जुड़े ओंकारनाथ श्रीवास्तव, दिल्ली के डॉ. सुरेश शर्मा, डॉ. अरविन्द त्रिपाठी, डॉ. प्रमोद सिन्हा, उन्नाव के जिलाधिकारी अरुण आर्य, तथा हिन्दी संस्थान के निदेशक श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। जन्मशती पर प्रकाशित पत्रिका 'नये पन्ने' का विमोचन हुआ।

*   *   *

निराला के गांव गढाकोला व उनके जनपद में जाकर दिल्ली दूरदर्शन ने शूटिंग की। निराला के पौत्र लक्ष्मी नारायण से लम्बा इंटरव्यू किया गया। उन्नाव, गढाकोला, डलमऊ आदि में हुई जनसभाओं तथा निराला गोष्ठियों पर आधारित समूची सामग्री को विशेष कार्यक्रम शृंखला में दिल्ली दूरदर्शन से प्रसारित किया गया। इसके निर्देशक कुबेरदत्त हैं।

*   *   *

निराला की कार्यस्थली प्रयाग में 20 जुलाई, 1997 को निराला जी की आदमकद मूर्ति का अनावरण इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रांगण में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रोमेश भण्डारी के द्वारा किया गया। किन्तु मजेदार बात यह रही कि प्रयाग के साहित्यकारों ने इसका विरोध किया और इस अवसर पर उपस्थित नहीं हुए।

सचमुच निराला के स्वाभिमान को कुंठित करने वाली बात थी कि जो कार्य किसी हिन्दी साहित्यकार द्वारा सम्पन्न होना था उसे एक सरकारी अधिकारी ने किया। विरोध सही था। किन्तु अब प्रयाग में निराला की दो मूर्तियां हो गईं—एक दारागंज में और दूसरी इलाहाबाद विश्वविद्यालय में।

*   *   *

बनारस में भी निराला जन्मशती पर गोष्ठी आयोजित की गई।

6

निराला सम्बन्धी दन्तकथाएं

दन्तकथाएं, जनश्रुतियां या किंवदन्तियां किसी व्यक्ति की मृत्यु के उपरान्त काफी समय बीत जाने पर सुनाई पडती हैं। किन्तु निराला ऐसे साहित्यकार एवं महामानव थे, जिनके जीवन काल में उनसे सम्बन्धित अनेक दन्तकथाएं प्रचलित थीं। ऐसी दन्तकथाओं की संख्या उत्तरोत्तर बढती रही क्योंकि वे जिस व्यक्ति से सम्बद्ध थीं वह स्वयं में निराला था। उसे इसकी परवाह कहां कि दुनियां उसके विषय में क्या सोच या कह रही है। यदि कोई असत्य बात को प्रचारित करना चाहता तो उसका प्रतिवाद न होने से वह भी जनश्रुति बन जाती। यही कारण है कि निराला जी के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तियां भी प्रचलित हो चुकी थीं।

शायद अब ऐसी भ्रान्तियां इसलिए समाप्त हो जावें क्योंकि निराला के जीवन की सम्पूर्ण घटनाओं का शोधपरक ब्यौरा प्रस्तुत हो चुका है। यह रोचक अध्ययन का विषय बन सकता है कि प्रचलित भ्रान्तियों का सम्भावित कारण क्या हो सकता है। इनमें से कतिपय सत्य के निकट भी हो सकती हैं।

चूंकि निराला विषयक दन्तकथाओं की संख्या काफी है। अतः मैं उनका वर्गीकरण करना समीचीन समझता हूं। वर्ग निम्नवत् हैं—

(1) **दान सम्बन्धी दन्तकथाएं**—ऐसी दन्तकथाएं इतने प्रकार की हैं कि निराला जी कलियुग के दानी कर्ण या हरिश्चन्द्र प्रतीत होते हैं। इन कथाओं के मूल में निराला जी द्वारा मुक्त हस्त से अपनी कमाई का खर्च करना है जिसे वे प्रायः अपने ऊपर न करके दीन-दु:खियों तथा असहायों में बांट दिया करते थे। यह उनके अपरिग्रही, उनके विरक्त भाव का द्योतक था। अन्यथा निराला के पास कभी इतना धन नहीं रहा कि वे राजा हर्ष की तरह मुट्ठियां भर-भर कर सब पर लुटाते।

(2) **न्यायप्रियता सम्बन्धी दन्तकथाएं**। (3) **अतिथि सत्कार सम्बन्धी दन्तकथाएं**। (4) **स्वाभिमान सम्बन्धी दन्तकथाएं**। ऐसी दन्तकथाओं के अन्तर्गत वे कथायें वर्गीकृत हो सकती हैं जो उनकी अक्खड़ता, उनके अहंकार, स्वाभिमान

को दर्शित करती हैं। फलतः इस वर्ग के अन्तर्गत की दन्तकथाओं में निराला जी द्वारा किये गये वाक् प्रहारों, आघातों, द्वंद्विताओं का वर्णन होगा। इसी वर्ग के अन्तर्गत प्रकाशकों के साथ हुई चपेटों को सम्मिलित किया जा सकता है। (5) **विक्षिप्तता सम्बन्धी दन्तकथायें**। (6) **साहित्यिक जीवन सम्बन्धी दन्तकथायें**। इस वर्ग की दन्त कथाओं के अन्तर्गत उनके साहित्य, उनके साहित्यिक जीवन एवं उनकी काव्य कला पर किये गये आक्षेप रखे जा सकते हैं। (7) **अन्य**। इसके अन्तर्गत विविध स्फुट दन्तकथायें होंगी। इनके अतिरिक्त और भी दन्तकथायें हो सकती हैं किन्तु उन सबका संकलन व्यक्तिगत प्रयास से और अधिक व्यापक सहयाग की अपेक्षा रखता है।

दान सम्बन्धी दन्तकथायें

जन साधारण के बीच में निराला जी का सम्मान उनकी दानवृत्ति के कारण था। वे पात्र-कुपात्र का ध्यान किये बिना ही मुक्त हस्त से अपनी कठिन कमाई को लुटाते हुये तनिक भी नहीं हिचकते थे। वे अवढरदानी थे। वे अपने शरीर के वस्त्र, कम्बल, जूते—देखते-देखते लुटा देते थे। उनकी यह दानवृत्ति उनके साहित्य में भी अंकित मिलती है। कठिन से कठिन परिस्थितियां भी उनकी इस दानवृत्ति को नहीं छुड़ा पाई।

एक बार निराला जी अपने प्रकाशक के यहां से रायल्टी लेकर इक्के पर चले आ रहे थे। रास्ते में एक बुढ़िया भिखारिन ने तीव्र स्वर में पुकार—'बेटा ! भीख दे।' आकृष्ट हो, निराला जी ने इक्का रुकवाया और उतरकर बुढ़िया की ओर बढ़े। बुढ़िया ने समझा कि कोई बड़ी भीख मिलने वाली है किन्तु निराला जी ने बुढ़िया का गला पकड़ लिया और पूछना शुरू किया—'तुम निराला की मां बनकर भीख मांग रही हो ? बोलो यदि तुम्हें पांच रुपये दूं तो कब तक भीख नहीं मांगोगी ?' बुढ़िया ने कहा—'आज भर।' निराला जी ने पूछा—'यदि दस ?' 'तो दो रोज।' 'यदि सौ दूं तो ?' बुढ़िया हतप्रभ हो गई। निराला जी के जेब में कई सौ रुपये थे. सभी रुपयों को निकालकर उन्होंने बुढ़िया मां की हथेली में रखते हुए कहा—'निराला की मां होकर यदि आज से तुमने, कभी भीख मांगी तो गला दबा दूंगा।' यह कहकर रिक्तहस्त हो निराला जी अपने निवास स्थान चले गये। बुढ़िया ने दानी बेटा को लाख लाख आशीष दिये।

दारागंज स्टेशन के पास एक भिखारिन बुढ़िया रहती थी। एक दिन जाड़े की शाम को निराला जी घूमते हुए उधर से निकले तो शीत से कांपती हुई बुढ़िया के ऊपर अपना नया कम्बल लपेटते हुए कहा—'तुझे कितना जाड़ा लग रहा होगा, ले।' फिर वे उसे सुरक्षित स्थान पर बैठाकर घर गये और वहां से अपने लिये परोसी गई थाल को उठाकर उसी बुढ़िया को दे आये।

जब कलकत्ते से 'मतवाला' साप्ताहिक पत्र निकलता था, और जब निराला जी की कविताओं की कोई मद्र नहीं थी तो मुं. नवजादिक लाल ने 'अनामिका' नाम से उनकी 9 कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित किया था और उसकी भूमिका में निराला जी को अग्रणी कवि माना था। फलतः नवजादिक लाल की मृत्यु के पश्चात् उनकी विधवा पत्नी एवं परिवार के प्रति भी निराला जी सदैव आत्मीयता बरतते रहे। अतः जब अपरा संग्रह पर उन्हें 2100/- का पुरस्कार मिला तो उनके सामने उसके खर्च की समस्या आई। उन्होंने बिना कुछ सोचे-विचारे स्वर्गीय नवजादिक लाल की पत्नी के नाम सम्पूर्ण राशि भिजवा दी। बाद में एक कृति भी स्वर्गीय मित्र के नाम अर्पित की।

एक बार निराला जी के घर की गली साफ करने वाली मेहतरानी ने बड़े ही विनयपूर्वक स्वर में कहा—'पंडित जी, अब ठीक से दिखाई नहीं पड़ता।' निराला जी ने झट से अपना चश्मा उतार कर उसे देते हुए कहा—'लो, हम अपनी आंखें तुम्हें देते हैं।'

दूध वाले को नंगे पांव देखकर उसे अपने जूता दे देने अथवा किसी भी दीनहीन को अपनी लुंगी, चादर या कुर्ता दे देने की अनेक कथायें दारागंज के निवासियों से सुनी जा सकती हैं। वस्तुतः निराला जी का वास्तविक सम्मान ऐसे ही दीन-हीन जन करते थे। जिस गली से वे निकल जाते थे, लोगों की आंखें श्रद्धा से झुक जाती थीं।

रिक्शे वालों को अपनी गांठ से पैसे देकर चाय पिलाना अथवा बीमार के लिए दवा ला देना, ऐसी सामान्य घटनाओं की तो न जाने कितनी कथायें होंगी।

न्यायप्रिय निराला

फल, तरकारी बेचने वालों अथवा रिक्शा वालों को वे सदैव ही अधिक पैसे देते थे जिसके फलस्वरूप कोई भी फल या तरकारी वाला अथवा मिठाई वाला उन्हें उधार दने में हिचकता नहीं था क्योंकि वे जानते थे कि किसी न किसी दिन एक के चार मिल जायेंगे किन्तु कभी-कभी उन्हें अन्याय खल जाता था।

एक बार एक तरबूज वाला तरबूज की फांके बेच रहा था। तमाम बच्चे फांके खरीद-खरीद कर खा रहे थे। सहसा किसी बच्चे के रोने की आवाज आई। निराला जी उधर से जा रहे थे। उन्होंने देखा कि तरबूज वाले ने बच्चे के साथ दुर्व्यहार किया था। एक फांक के ज्यादा पैसे ले लिये थे। निराला जी तरबूज वाले की ओर लपके। तुरन्त ही स्थिति समझ गये। तरबूज वाले का गला पकड़ कर कहा कि बच्चे के पैसे वापस करो। आनाकानी करन पर निराला जी बरस पड़े। उसके सभी तरबूजों को एक-एक कर नाली में फेंक दिया और हंसते हुए घर चले गये।

इसी प्रकार एक बार वे सिविल लाइन्स (इलाहाबाद) में घूम रहे थे। कुछ अंग्रेज सिपाही एक तांगे वाले को मारने के लिए धमका रहे थे। निराला जी ने यह दृश्य देखा तो वे उस ओर बढ़े। उनमें से एक ने लपकते हुए विशालकाय व्यक्ति को रोकते हुए कहा—'जाओ मैन, तुम यहां कहां आता है।' निराला जी को देखकर तांगे वाले को कुछ ढाढस हुआ। उसने सारा किस्सा सुनाया तो निराला जी गरज कर बोले-'तुम लोग, इसका पैसा वापस करो, नहीं तो मारते-मारते तुम्हारी खाल निकाल लूंगा।' अंग्रेज सिपाही सकपका गये और तांगे वाले को पूरे पैसे दे दिये।

एक बार किसी सूटबूट पहने अफसर से भीड़ में किसी खोमचे वाले का सारा खोमचा जमीन पर गिर पड़ा। खोमचे वाले ने रोना धोना शुरू किया किन्तु वह अफसर उसे उल्टा डाटने लगा। निराला जी पहले तो यह तमाशा देखते रहे किन्तु जब वह अफसर बिना हरजाना दिये ही जाने को उद्यत हुआ तो निराला जी उधर बढ़े और ऊंचे स्वर में कहा—'तुम्हें हरजाना देना पड़ेगा। इसका खोमचा पांच रुपये का था, चुपके से रुपये दो और फिर जाओ।' सूटधारी व्यक्ति को निराला जी की आज्ञा माननी पड़ी।

अतिथि सत्कार सम्बन्धी

निराला जी मेहमानगिरी अथवा अतिथि सत्कार के लिए अपनी दानवृत्ति के ही समान विख्यात थे।

एक बार नेहरू जी दारागंज स्थित छोटी कोठी में गये। चारों ओर पुलिस तैनात थी। निराला जी ने भी सुन रखा था कि नेहरू जी आ रहे हैं अतः वे उनके स्वागत में गरम चाय की एक प्याली लेकर पहुंचे। जैसे ही कार आई कि निराला जी ने भीड़ चीरते हुये नेहरू जी के निकट पहुंचकर चाय की प्याली भेंट करनी चाही। किन्तु नहीं, पुलिस वाले पीछे पड़ गये। निराला जी ने आवेश में आकर प्याली फेंक दी और कहा—'ऐसे स्वराज्य से क्या हुआ जिसमें मैं नेहरू से मिल न सकूं।'

(इसी अपमान के कारण वे नेहरू जी के बुलाने पर भी आनन्द भवन नहीं गये। उत्तर में यही कहला भेजा हमारी और आपकी राहें जुदी जुदी हैं।)

अतिथि सत्कार में निराला जी तन-मन-धन सभी लगा देते थे। मैथिलीशरण गुप्त, चतुरसेन शास्त्री, आचार्य शिवपूजन सहाय, ठाकुर गोपाल शरण सिंह अथवा अन्य कोई भी उनका परिचित जब-जब पहुंचा तो उन्होंने बीमार होने पर भी पैदल चलकर मिठाई की दुकान से मिठाई खरीदी और लाकर खिलाया। अपना भोजन देकर अथवा अपनी चाय पिलाकर अतिथि सत्कार करना तो उनका स्वभाव सा बन चुका था।

अतिथि सत्कार करने के साथ ही वे आतिथ्य भी सरलता से स्वीकार कर लेते थे। यदि कोई उनके घर आता था तो वे बदले में उसके घर अवश्य पहुंचते थे। एक

बार कलकत्ता में कुछ मछुआरों ने उन्हें आमंत्रित किया जब वहां पहुंचे तो देखा कि चबूतरे पर इनका स्थान नियत किया गया है। इन्हें बैठाने के बाद सब ने शराब पीनी प्रारम्भ की और फिर इन्हें बादशाह बनाकर इनके सामने खूब नाचा गाया भी। कहते हैं कि निराला जी ने भी छककर शराब पी थी।

स्वाभिमान सम्बन्धी दन्तकथायें

निराला जी की अक्खड़ता सर्वविदित थी। बहुत से भद्र लोग उनके पास जाने में हिचकते थे। उन्हें लगातार यही आशंका रहती थी कि कहीं वे कटुबचन न बोल दें, गाली न दे दें, मान भंग न कर दें। बहुत बार ऐसा हुआ भी है। निराला जी मान के भूखे थे। वे किसी भी परिस्थिति में पैसे के लिए झुकना पसन्द नहीं करते थे। मान के साथ उनसे कोई भी काम कराया जा सकता था किन्तु बाध्य होकर वे कुछ भी करने को तैयार नहीं होते थे। तब तो वे अत्यन्त हठी सिद्ध होते थे। बहुधा वे प्रकाशकों को अपनी पुस्तक बिना किसी प्रकार की शर्त के ही छपने को दे देते थे और आवश्यकता पड़ने पर प्रकाशकों से धन की मांग किया करते थे।

एक बार जब वे कलकत्ते में रह रहे थे तो उन्होंने हरीसन रोड के प्रकाशन दया राम बेरी के कहने पर कोई पुस्तक लिखनी स्वीकार की। नित्य प्रति कुछ पृष्ठ लिखकर देते और रुपये ले लेते थे। एक दिन बिना कुछ लिखे ही प्रकाशक के पास पहुचे और रुपये मांगने लगे। जब प्रकाशक ने इनकी मांग ठुकरा दी तो ये युद्ध करने को प्रस्तुत हो गये। कहते हैं कि प्रकाशक भी मनचला था। उसने तलवार से (जो काठ की ही थी) इन पर वार किया। निराला जी ने इसे अपमान मानकर तुरन्त ही प्रकाशक को पकड़ लिया और उसे बाजार में घसीटते रहे।

इसी प्रकार से एक अन्य प्रकाशक के साथ, जो उन्नाव के थे (राजेन्द्र चौधरी) निराला जी ने दुर्व्यवहार किया। यद्यपि उनके खाने पीने का पूरा प्रबन्ध था किन्तु किसी छोटी सी बात पर ये बिगड़ गये और प्रकाशक के पांव पकड़ कर सड़कों में घसीटते रहे।

विक्षिप्तता सम्बन्धी

निराला जी के सम्बन्ध में जितनी भी दन्तकथायें हैं उनमें उनको विक्षिप्त बताने वाली अनेक घटनायें हैं। ऐसी दन्तकथायें इसीलिये प्रचलित हैं कि लोगों ने न तो निराला को समझने का यत्न किया और उनकी समस्याओं को ही। कहा जाता है कि अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद वे रात्रि के समय श्मशान जाकर चिता की राख देह में मलते ओर रोया करते थे। एक बार कलकत्ते में घर से बिना बताये बाहर चल गये और अपना सिर मुडाकर आये। कहा कि मैं साधू हो गया हूं। मित्रों ने बहुत मनाया तो अपना हठ छोड़ा।

इसी प्रकार एक बार फिर गायब हो गये। बहुत दिन बात पता चला कि साधू होकर साहित्यकार संसद पहुंचे हैं।

निराला जी को विक्षिप्त बताने वाली और भी दन्तकथायें हैं जिनमें उनके स्वगत भाषण करने की आदत का उल्लेख होता है। कहा जाता है कि जब निराला जी जवान थे, तभी खुले आकाश के नीचे आसन मारकर घंटों बैठे रहते थे और अपने आप जोर-जोर से बातें करते थे। बाद में तो वे लोगों से बातें करते समय विमुख होकर अपने अन्तर्नाद में व्यस्त हो जाते। एक बार जब दारागंज में व पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी जी के साथ रह रहे थे तो रात भर जोरों से हंसने की ध्वनि आती थी। लोग कहते थे कि निराला जी को उन्माद हो गया है—ठहाका मारकर हंसना और जोर से स्वतः बोलना ये तो उनके गुण बन गये थे।

यह भी कहा जाता है कि निराला जी यह कहा करते थे कि वे विलायत हो आये हैं और हिटलर उनका चचा था। निराला जी अपने नाम के स्थान पर डॉ. सैयद हुसैन का नाम लिखते थे। यही नहीं, वे अंग्रेजी में ही बोला करते थे और यह कहते थे कि मैं हिन्दी नहीं जानता।

निराला जी की विक्षिप्तता सम्बन्धी एक विशेष दन्तकथा यह है कि एक बार कोई साहित्यिक जन निराला जी के दर्शन के लिए पहुंचे और न जानते हुये निराला जी से निराला जी का वास स्थान पूछा। निराला जी ने बड़े ही गम्भीर स्वर से उत्तर दिया—'निराला तो बहुत पहले मर चुका है। आप उसे ढूंढते यहां कैसे आये ? सामने का मकान उसी का है।'

इसी विक्षिप्तता से सम्बन्धित उनके 'मूड' पर अनेक किवदन्तियां हैं। यह बहुत प्रचारित बात है कि वे बात करते-करते आगन्तुक से कह देते थे कि तुम भग जाओ, हमारा 'मूड' ठीक नहीं है। अथवा यह कि अमुक दिन आना, जब हम ठीक से हों। यदि कोई सम्पादक रचना लेने जाता तो भी वे अपने 'मूड' के कारण कभी कुछ लिख देते थे और कभी लौटा देते थे।

यह भी कहा जाता है कि निराला जी प्रायः अपने हाथों में पत्थर के टुकड़े लेकर इधर-उधर जाया करते थे। यहां तक कि चारपाई में बिस्तर के नीचे भी ईंट के टुकड़े छिपाकर रखे रहते थे।

निराला जी को यह भी भ्रम था कि खुफिया पुलिस उनके पीछे लगी है, उनका राज लेना चाहती है। इसीलिये वे न तो हस्ताक्षर करते थे और न पुलिस अफसरों की कद्र ही करते थे।

साहित्य सम्बन्धी

निराला जी के साहित्य को लेकर भी अनेक दन्तकथायें प्रचलित हैं। कहा जाता है कि निराला जी ने रवीन्द्र एवं बंकिम चन्द्र की रचनाओं की नकल की। जब

निराला जी ने स्वच्छन्द छन्द का प्रणयन किया और उसमें कविता लिखनी प्रारम्भ की तो लोगों ने उसे केंचुआ छन्द या रबड़ छन्द कहने के साथ-साथ यह भी कहा कि निराला ने वाल्ट ह्विटनी कृत Leaves of the Grass अथवा टी.एस. इलियट के काव्य की नकल की है। जोशी बन्धुओं से ऐसी ही बुनियाद पर झड़प हो गई थी।

अधिकांश लोग यह भी कहते हैं कि निराला जी कठिन काव्य के प्रेत हैं। उनकी कोई भी कविता, यहां तक कि कविता की कोई भी पंक्ति समझ में नहीं आती। वह अत्यन्त कठिन होती है। (वास्तव में यह झूठा प्रचार था, निराला की कविता को निम्न सिद्ध करने का)

कुछ लोग निराला जी को असाधारण प्रतिभा से अत्यन्त प्रभावित थे। वे लोग यह कहा करते थे कि 'सुधा' के जितने भी सम्पादकीय होते थे उन्हें निराला जी ही लिखा करते थे। यह भी किंवदन्ती है कि 'दुलारे दोहावली' उन्होंने लिखी थी और अर्थाभाव के कारण प्रकाशक के हाथों बेच दी थी।

निराला जी की साहित्यिक जीवन सम्बन्धी सबसे बड़ी घटना है उनका लेख 'वर्तमान धर्म'। इसे पं. बनारसी दास चतुर्वेदी ने 'विशाल भारत' में 'साहित्यिक सन्निपात' के नाम से प्रकाशित किया। बाद में उन्होंने मत संग्रह करके यह घोषित किया कि निराला जी विक्षिप्त हो गये हैं। कहा जाता है कि निराला जी को इस साहित्यिक षड्यंत्र से बड़ा धक्का लगा और उन्होंने सब मित्रों से अपने सम्बन्ध विच्छिन्न कर लिये।

कवि सम्मेलनों में निराला जी डंडा लेकर जाया करते थे। उनकी वाणी और उनके स्वर का क्या कहना था। खड़े होकर एक भी अपनी कविता सुना देते तो शान्ति स्थापित हो जाती थी। ऐसी कई दन्तकथायें हैं जब निराला जी ने कवि सम्मेलनों में असामान्य आचरण किये। एक बार शिमला में कवि सम्मेलन में टिकट लगाया गया तो निराला जी वहां रहते हुए भी कवि सम्मेलन में सम्मिलित नहीं हुये। इसी प्रकार फैजाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर पं. रामचन्द्र शुक्ल को उचित मान न प्रदान किये जाने पर निराला जी गरज उठे थे।

निराला जी के साहित्यिक जीवन से सम्बन्धित कथायें हैं—महात्मा गांधी, नेहरू जी, टंडन जी तथा सम्पूर्णानन्द जी से उनकी भिड़तें। एक बार गांधी जी ने यह कह दिया कि हिन्दी में एक भी रवीन्द्रनाथ नहीं हुआ तो निराला जी ने ललकारते हुये कहा—'गांधी जी, आपको हिन्दी का क्या पता। उसको तो हम जानते हैं। आपने मेरी रचनायें पढ़ी हैं ?'

राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर नेहरू जी से निराला जी की भिड़ंत रेलगाड़ी में हुई थी। बातचीत के दौरान नेहरू ने हिन्दी शब्द भण्डार पर कुछ छींटाकशी की तो निराला जी ने पूछा था कि 'क्या आप 'ओउम्' का अर्थ बता सकते हैं ?' नेहरू जी निरुत्तर रह गये थे।

एक बार अपने 'अहं' के कारण इन्हें जेल जाने की नौबत आ गई थी। जब वे करुई में अपने मित्र रामलाल के यहां भरकोरा में रह रहे थे तो एक कवि सम्मेलन में भाग लेने गये। रात्रि में कवि सम्मेलन के पश्चात् एक नहर के किनारे घूमने लगे। लम्बे-लम्बे बाल, दाढ़ी, पुष्ट शरीर, दह देखकर पुलिस वालों को कुछ दूसरे प्रकार की शंका हुई। उन्होंने पूछा—'अपना पता बताओ।' उन्होंने कहा—'जानते नहीं हो, मैं हिन्दी का श्रेष्ठ कवि निराला हूं।' पुलिस वालों का संदेह बढ़ा। उन्होंने लाकर जेल में बन्द कर दिया। बाद में जब पुलिस अफसरों को पता चला तो क्षमा मांगी और उन्हें मुक्त कर दिया।

स्फुट

निराला जी की सरलता एवं निश्छलता से सम्बन्धित कई कथायें सुनने को मिली हैं। एक बार जब बनारस में उनका अभिनन्दन किया गया तो उनसे यह बताया गया था कि कई सहस्त्र रुपयों की धनराशि उन्हें भेंट की जायेगी। निराला जी ने उस राशि के खर्च किये जाने की एक रूपरेखा बना रखी थी किन्तु समारोह समाप्त हुआ तो, पता चला कि एक छदाम भी नहीं मिला।

इसी प्रकार जब कलकत्ते में उनका अभिनन्दन हुआ तो प्रचुर धनराशि मिलने की सम्भावना थी किन्तु जब जैन भवन में आयोजित समारोह सम्पन्न हो चुका और निराला जी ने केस्केट (बक्स) खोला तो उसके भीतर केवल अभिनन्दन ग्रंथ मिला।

निराला जी कवि सम्मेलनों में जाते तो थे किन्तु प्राय: वे भेंट रूप में थैली की मांग किया करते थे। एक बार (प्रयाग) स्थानीय विद्यालय के कुछ विद्यार्थी उनके यहां पहुंचे और कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करने का आग्रह किया। निराला जी ने यह आग्रह स्वीकार किया किन्तु 1000/- अग्रिम मांगे। विद्यार्थी बड़े चालाक होते हैं और शरारती भी। वे हां करके चले आये। सन्ध्या समय वे कुछ रुपये (जिसके उन्होंने पैसे भुना लिये थे) लेकर पहुंचे और चरणों में रख कर बोले—'चलिए, आपकी मांग पूरी हुई।' निराला जी तब कुछ नहीं बोले। कवि सम्मेलन में गये, अध्यक्षता की और जब बोलने का अवसर आया तो विद्यार्थियों की बदमाशी का भंडाफोड़ कर दिया।

एक बार स्वाधीनता दिवस के अवसर पर आयोजित एक कवि सम्मेलन में फिर ऐसा ही धोखा फतेहपुर में हुआ। बात तय हुई थी पांच सौ रुपये की किन्तु केवल 100/- पर ही चले गये और फिर उन्हें एक भी रुपये न मिले।

रेडियो में कविता पाठ करने के सम्बन्ध में भी एक यह दन्तकथा प्रचलित है कि वे सदैव 1000/- मांगा करते थे। एक बार अधिक से अधिक 100/- पर सभी श्रेष्ठ कवियों ने रेडियो आमंत्रण स्वीकार कर लिया किन्तु निराला जी इससे अधिक लेने पर अड़े रहे। अन्त में 101/- पर गये। अपने हठ के आगे रेडियो के अधिकारियों को बाध्य किया कि वे भी झुकें।

कहा जाता है कि इसके बाद जब कभी भी रेडियो से कोई आमन्त्रण जाता तो वे मौखिक रूप से 1000/- मांगते। उनकी यह मांग कभी भी पूरी नहीं हो पाई।

निराला जी के सम्बन्ध में यह भी किवदन्ती है कि वे बचपन से संगीत के प्रेमी थे। महिषादल में राजकुमारों के साथ रहते थे। स्वयं नाटकों में भाग लेते और अच्छा गाना गाते थे। हारमोनियम का भी शौक था। इनकी पत्नी मनोहरा भी संगीत निपुण थीं। उनकी मृत्यु के पश्चात् निराला जी संगीत सुनने के लिए वेश्याओं के यहां प्राय: जाया करते थे। यहां तक कि राग रंग में डूब जाते और पूरी रात वहीं बिता देते। उन्हें प्रसिद्ध नर्तकियों, वेश्याओं एवं संगीत विशारदाओं के नाम याद थे। इसी संगीत प्रेम के कारण वे हिन्दी के अमर कवि जयशंकर प्रसाद के अभिन्न मित्र थे। अक्सर बजरे पर बैठ कर गंगा नदी में सैर करते तो संगीत ठन जाया करता था।

निराला जी की शृंगार प्रियता के सम्बन्ध में यह प्रचलित है कि अपने घुंघराले बालों में वे इत्र कस्तूरी, अगुरु की शीशियां की शीशियां उडेल लेते थे। यहां तक कि वस्त्रों को भी सुवासित कर लेते थे। (निराला जी ने स्वयं लिखा है कि अपनी ससुराल में व इत्र से देह की मालिश करते थे।)

निराला जी के मांस खाने के सम्बन्ध में भी अनेक दन्तकथायें हैं। निराला जी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे अत: वे मांस खाने को अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानते थे। एक बार उनकी पत्नी ने उन्हें बताया कि पुराणों में मांस खाने वाले को अनेक यातनायें लिखी हैं तो कुछ दिन तक उन्होंने मांस खाना स्थगित रखा किन्तु एक दिन परिवार के एक वृद्ध से यह जानकर कि वंशावली में मांस खाना विहित लिखा है, निराला जी ने फिर मांस खाना शुरू कर दिया और आजीवन मांस खाते रहे। यहा तक कि अधपका मांस खाने के कारण ही उनकी मृत्यु हुई।

कुछ लोग कहते हैं कि निराला जी मांस को कच्चा ही खा जाते थे।

मांस खाना और मदिरापान करना, ये दोनों कृत्य गर्हित समझे जाते हैं। निराला जी इन दोनों से परहेज नहीं करते थे। यही कारण है उनके मदिरापान से अनेक लोग चिढ़ते भी थे। एक बार कलकत्ते में एक सेठ के यहां निराला जी रुके थे। सेठ जी परमवैष्णव थे। उन्होंने यह कह रखा था कि उनके घर में शराब नहीं पी जा सकती। निराला जी परम हठी तो थे ही। वे बाजार गये और देशी शराब का एक अद्धा ले आये। शाम के समय जब वे लोग निराला जी का संगीत सुन रहे थे, तभी उन्होंने अपनी बोतल निकाली और पीना प्रारम्भ किया। सभी लोग अवाक् रह गये।

एक बार सन्यासी वेश में जब निराला जी साहित्यकार संसद पहुंचे तो इसी प्रकार की घटना घटी। यद्यपि इनके रहने तथा खाने की समुचित प्रबन्ध था किन्तु वहां रहकर मांस खाने की बिल्कुल मनाही थी। इसलिए वे वहां से एक दिन चुपके से खिसक आये और फिर आजीवन वहां नहीं गये। निराला जी मांस को 'वैदिक भोजन' कहते थे।

यह बहुविख्यात तथ्य है कि निराला जी औरतों का सम्मान अधिक किया करते थे। कुछ लोगों का कहना है कि निराला जी अपनी एकमात्र पुत्री सरोज की बीमारी के समय आर्थिक विपन्नता के कारण कुछ नहीं कर पाये थे इसीलिये उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप वे नारी जाति के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करते हुये नहीं चूकते थे। भरी सभाओं में वे अपना स्थान छोड़कर उस पर किसी भी अपरिचित महिला को बैठा देते थे। इतना ही नहीं, यदि कोई स्त्री उनके घर उनसे भेंट करने पहुंचती, तो वे कुर्सी के अभाव में उसे चारपाई पर बैठने को कहते और स्वयं जमीन में जा बैठते थे। कभी-कभी जाड़ों में वे अपनी रजाई तक आगन्तुकाओं को ओढ़ाकर सन्तोष पाते थे।

यह भी किंवदन्ती है कि वे सुश्री महादेवी वर्मा को बहन के रूप में मानते थे। प्रत्येक रक्षा बन्धन के दिन उनसे राखी बंधाते और उन्हें यत्नपूर्वक संग्रहीत कुछ रुपये भेंट करते थे।

निराला जी पुष्ट शरीर के कारण बचपन से मल्लयुद्ध में दक्ष थे। वे कहा करते थे कि उन्होंने सभी नामी पहलवानों से कुश्ती लड़ी है। एक बार बनारस में विश्व विजयी गामा आया। उसने मुनादी कराई कि जो लड़ना चाहे लड़ ले। सुना जाता है कि कोई तैयार न हुआ तो निराला जी लंगोट पहनकर अखाड़े में निकल आये और गामा को लज्जित कर दिया।

7

ऐसे थे हमारे निराला

हमारे निराला को आप आधुनिक युग का भगीरथ कह लीजिये। ऐसे भगीरथ जो उल्टी गंगा बहाने वाले थे। हिन्दी काव्य की गंगा को वे गंगासागर (बंगाल) से हिमालय की ऊंचाइयों तक पहुंचा देना चाहते थे किन्तु साधन सम्पन्न न होने से उसे वे प्रयाग तक लाकर यमुना से नहीं अपितु साक्षात् सरस्वती से उसका संगम कराने में सफल हुए। इससे प्रयाग को गरिमा प्राप्त हुई और कण्ठ-कण्ठ से सरस्वती का जयघोष (वर दे वीणा वादिनी वर दे) होने लगा। इस तरह तीरथराज प्रयाग के साथ-साथ विलुप्ता सरस्वती भी धन्य हुईं। 'वरद हुईं शारदा जी हमारी'।

हमारे निराला साक्षात् शारदा माता सरस्वती के पुत्र थे।

यूं भी प्रयाग आने के पीछे आकर्षण था, कवि निराला का नहीं, महामानव निराला का। गंगा तट पर वास करते हुए मरने की साध हमारे निराला में बहुत पुरानी थी और 1950 में जब पुनः प्रयाग आकर संन्यस्त होकर धूनी रमाई तो उनकी यह साध भी पूरी हुई। वे आप्तकाम हो गये।

प्रयाग के दारागंजवासियों को हमारे निराला में देवता, महात्मा या साधु सन्त के दर्शन होते तो कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। जब निराला दारागंज की मुख्य सड़क पर या गलियों से होकर निकलते तो राह चलने वाले, दुकान वाले, दारागंज के आबाल वृद्ध बनिता उन्हें शीश झुकाते और मत्तगयन्द निराला 'नमो नमो' कहते आगे बढ़ते जाते। कोई यह भांप न पाता कि वे कब नाई की दुकान पर, मिठाई वाले की दुकान पर या कपड़े वाले की दुकान पर रुक जावेंगे या फल वाले या आम वालों से मोल-तोल करने लगेंगे या फिर किसी रिक्शे वाले को रोककर उस पर चढ़ेंगे और शहर के दूसरे छोर भारती भंडार जा पहुंचेंगे या बीच में एल्गिन रोड पर उतर पड़ेंगे या थोड़ी दूर तक जाकर तुरन्त लौट आवेंगे तथा रिक्शे वाले को इतना दे देंगे कि वह कृतार्थ हो जावेगा।

हमारे निराला सन्यस्त हो चुके थे। अत: कुछ दिन गेरुवे वस्त्र पहनते रहे पर खान-पान में संन्यास आश्रम का कोई संयम नहीं बरत पाये। यदि संन्यासी निराला बाह्य जगत के संन्यासी जैसे दिखें तो फिर निराला कैसे ! मनमौजी जो थे। रेशमी कुर्ता खरीद कर पहनने लगे। काले रंग की जवाहर जाकेट (बंडी) बनवा ली और ऊनी टोप खरीद लाये। छड़ी या डंडा लेकर घूमने निकलते तो बहुत जंचते। इस वेश में फोटो भी खिंचवाये उन्होंने। वैसे उनकी प्रिय पोशाक धोती-कुर्ता या फिर लुंगी बनियान थी। कभी-कभी केवल लुंगी तथा ऊपर शरीर उघार।

कभी बाल बड़े-बड़े, और मुच्छें भी बढ़ीं, कभी बाल-दाढ़ी-मूंछ सफाचट। उनका नाई बंधा हुआ था—नाम था भगवान दास लेकिन दारागंज में वह निराला के भक्त रूप में था। बाल कटाई देने की निराला को जरूरत नहीं। उधार खाता चलता। अब संगीत का जमघट होता तो भगवान दास तबला बजाता।

जिस कलामन्दिर में हमारे निराला रह रहे थे उसमें सूर्य का प्रकाश पहुंचता ही न था। जहां सूर्यकान्त हो वहां सूर्य की क्या जरूरत ? जिस कमरे में वे रह रहे थे उसमें न दरी बिछी होती, न ही सदैव कुर्सी रहती। मेज होने की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। लेटने के लिए एक तखत या चारपाई थी। उस पर चादर बिछा लेते। खाट होती तो उसी पर बैठते, पढ़ते-लिखते, खाते और सोते। कपड़े गिने चुने थे अत: रखने के लिए बक्से की जरूरत न थी। सारे कपड़े तहाकर सिरहाने या पैताने रख लते।

इस खाट के पीछे दीवाल में बनी खुली आलमारी के विभिन्न खानों में किताबें, तम्बाकू की पत्ती, चुनाती, कविता की कापी और कलम दवात इधर उधर दिख जाते. तम्बाकू खाना होता तो पत्ती तोड़कर चूना लेकर हथेली में मलते और फांक लेते। बीडी या सिगरेट भी पी लेते और पान खाना होता तो दुकान पर चले जाते।

वैसे तो निराला चमड़े की चप्पलें पहनते। किन्तु जूते भी खरीद लाते तो बड़ी हिफाजत से रखते, उन्हें कपड़े से चमकाते और कभी-कभी पांव में कसे-कसे से जाते। किन्तु यह सावधानी अधिक काल तक न चल पाती। वे अपने नये जूते ले जाकर किसी दूध वाले को या अन्य किसी जरूरतमन्द को दे आते और पुन: चप्पलें या किरमिच के फटे पुराने जूते पहनते। बाहर जाते तो छड़ी लेकर जाते। छड़ी को जतन से रखते। छाते या बरसाती से निराला को कोई प्रयोजन न रहता। बाहर जाते समय चश्मा लगा लेते। पढ़ते समय भी चश्मा लगाते।

निराला जी को घूमना पसन्द था। सुबह शाम या केवल सुबह या शाम को दूर तक घूमने निकल जाते—गंगा तट पर या बांध पर जाते। गंगा-स्नान के महत्व की बातें करते रहते पर गंगा स्नान करने कम ही जाते। घर पर बम्बा स्नान करके संतुष्ट हो लेते।

उनका शरीर लंबा-तड़ंगा तो था ही। जवानी में पहलवानी भी करते रहे किन्तु अवस्था अधिक हो जाने से अब उनका शरीर जर्जर हो चुका था। मांस पेशिया थुलथुल हो चुकी थीं, आंखों के नीचे की खाल लटकने लगी थी, हाथ-पांव के जोड़ों में दर्द रहता था और जकड़न आ चुकी थी। नसें दिखने लगी थीं—जैसे गौर शरीर में श्यामल यमुना सहस्र धाराएं लेकर बिखर गई हों। मुंह से कुछ दांत निकल जाने से वह उतना सुडौल नहीं रह गया था। बड़ी आंखें चश्मा चढ़ जाने पर अधिक तेजोमय लगने लगतीं। नाक लम्बी थी ही। नुकीली बढ़ी दाढ़ी से उसकी शोभा बढ़ जाती। स्थूल शरीर होने से जब कहीं बैठते तो धप्प से आवाज होती और हाँफने से शरीर हिलने लगता।

हमारे निराला को रसोई घर में भोजन बनाते देखना रोमांचक दृश्य था और उनके द्वारा दी जाने वाली दावतें अति विचित्र होतीं। निराला जी द्वारा कलिया का घी में भूनना-पकाना, गुच्छी की तरकारी बनाना, बैंगन या प्याज का भाजा बनाना या कि उर्द की दाल पकाना देखते ही बनता। भोजन में देशी घी की बहार रहती। कितने मनोयोग तथा परिश्रम से समय की परवाह न करते हुए बार-बार मसाले की सुगन्ध की तारीफ करते खुद खाते और मित्रों को खिलाते उन्हें न जाने कितना आनन्द मिलता! 'सह भुनक्तौ'। लगता कि भोजन ही उनकी हाबी है—भूल जाते कि कुछ लिखना-पढ़ना है। हां, मौज में आकर खाते समय या पहले कोई कवित्त सवैया, बंगला का गीत या संस्कृत श्लोक गाकर सुनाते जाते। पान खाते समय एक श्लोक पढ़ते—'ताम्बूद्वय आसनं तच लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्।'

चाय उन्हें प्रिय थी। चाय पीने वे प्रायः चन्दो के यहां जाते, दुकान पर चाय पीते मैंने उन्हें नहीं देखा। वे शराब भी पी सकते थे। प्रायः अड्डे की दुकान से अद्धा ले आते और कमरे में पीते। कभी-कभी कमलाशंकर जी उन्हें अच्छी शराब भी पिलाते। ज्यादा पी लेने पर वृद्धावस्था के कारण उनकी हालत खराब हो जाती। तब कमलाशंकर बताते कि निराला अचेत होकर गाली बकते हैं। मैंने निराला को स्पष्टतः गाली बकते नहीं सुना। हां, अपने अन्तर्नाद या स्वगत भाषण में वे तरह-तरह के अपशब्द बकते रहते थे।

हमारे निराला द्वारा की जाने वाली मेहमानगिरी देखने लायक होती। उनका कोई परिचित आया नहीं कि अपने मेजबान को किसी तरह परेशान किये बिना वे अतिथि को प्रेमपूर्वक बैठाते, फिर स्वयं बाहर चले जाते और जब कमरे में घुसते तो दोनों हाथों में रसगुल्ले का कुल्हड़ या जलेबी का दोना रहता। तब वे घर के भीतर आवाज लगाते 'बच्ची जी! (या हरे राम!) दो प्याले चाय लाना।' चाय आप भी पीते किन्तु अन्य चीजें स्वयं न खाते। अतिथि सत्कार में बड़े दक्ष थे।

हमारे निराला को अपने पिता के बैसवाडी संस्कार पूरे-पूरे मिले थे। महिषादल में सस्वर रामायण बांचना निराला ने नैत्यिक कार्यक्रम बना रखा था। बाद में यही

रामायण न जाने कितने प्रकार से निराला के काव्य में अवतरित होती रही। हम यह तो नहीं कह सकते कि उन्होंने रामचरित मानस का गम्भीर अर्थ कहां से पढ़ा-सीखा होगा किन्तु लगता ऐसा है कि उन्होंने हर चौपाई के बारे में स्वाध्याय किया होगा। तभी तो उन्होंने विनय खण्ड के रूप में रामायण का पद्यानुवाद किया और रामचरित मानस की टीका भी लिखी। डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा है कि निराला जी किसी विषय पर गम्भीर चिन्तन करते थे—घोखते रहते थे। शायद यही कारण है कि संस्कृत और उर्दू के अनेक कवियों का जो भी अध्ययन उन्होंने किया, वह उनके इसी स्वाध्याय का फल था।

निराला में बैसवाडी संस्कार कूट-कूट कर भरे होने का कारण यह भी था कि वे पहले अपने पिता के साथ बंगाल से गढ़ाकोला आते जाते रहते थे। वे अपने दादा तथा चाचाओं के नाम लेते रहते, अपने भतीजों की खोज-खबर रखते। गांव के आम के बाग और खेतों का हिसाब-किताब रखते। चतुरी चमार और बिल्लेसुर से सम्पर्क बनाये रखते। डलमऊ के कृपालु नाविक को भी जानते। कुल्लीभाट तो उनको ज्ञान एवं जीवन दर्शन बताने वाला था ही।

हमारे निराला अपने पिता की एकमात्र सन्तान होने और बचपन से ही मातृविहीन हो जाने के कारण पिता के लाडले थे हीं। पिता के कारण राजमहल के भीतर भी निराला का आना-जाना था। उन्हें संगीत तथा नाटक का चस्का लग चुका था। शरीर सुडौल था ही अपने पिता के तुल्य। अतः जब पढ़ लिख चुके ना राजा के यहां नोकरी भी मिल गई। तब उन्हें राजसी ठाटबाट का पूरा-पूरा अनुभव हुआ।

बंगाल में रहने के कारण हमारे निराला ने पाठशाला में बंगला साहित्य पढ़ा और घर तथा पड़ोस में बैसवाडी के अलावा स्कूली मित्रों से बगला भी बोलते रहे। पर हिन्दी सीखने का कोई साधन न था। प्रथम मिलन पर उनकी पत्नी ने हिन्दी (खड़ीबोली) का जो प्रकाश दिया उसे निराला जी आजीवन स्मरण करते रहे। निराला जी बातचीत के दौरान बताते 'मनोहरा का रामचरित मानस कंठाग्र थी। 'रामचन्द्र कृपालु भजुमन' उनका प्रिय भजन था। उनके पास कई बक्से पुस्तकें थीं। उनका ननिहाल किशुनपुर में था।' वे यह भी बताते कि उनकी सासु जी उनका बड़ा आदर करतीं। उनकी सलहज तो देवी तुल्य थीं। निराला जी ने अपने पुस्तक 'प्रभावती' इन्हीं को बीवी सम्बोधन के साथ समर्पित किया है। इन्हीं ने निराला की दोनों सन्तानों को पाल-पोस कर बड़ा किया था अत. निराला उनके ऋण से उऋण नहीं हो पाये। वे अपने साले की रुग्णता से भी अत्यधिक चिन्तित रहे।

भला ऐसा व्यक्ति अपनी जननी तुल्य जन्मभूमि को कैसे भुला सकता था। इसीलिए निराला ने न जाने कितनी तरह से भारत माता की वन्दना की है। चाहे 1920 में छपी उनकी 'जन्मभूमि' कविता को लें या 1938 में लिखी 'भारति जय विजय' को लें, सबमें निराला का देश-प्रेम पराकाष्ठा पर है।

हमारे निराला लखनऊ में भी बैसवाडी बोलते रहे। मौज आती तो फर्राटे की अंग्रेजी अन्यथा लखनौवी हिन्दुस्तानी। वे कहते कि खड़ीबोली बोलने में उन्हें कष्ट होता है। बंगला भी बोलते। पूरे डायलाग बोल जाते—समन्वय काल में सन्यासियों के बीच किशोर निराला ने जैसा जीवन बिताया उसमें रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, शारदानन्द महाराज की झलक रहती। 1953 में कलकत्ता में अपने अभिनन्दन के समय वे विवेकानन्दी वेश में रहे और बंगला में ही बातें करते रहे।

जब बैसवाडी के शिक्षित नवयुवक हमारे निराला के प्रति आकृष्ठ हुए तो निराला ने सबको सिर-आंखों लिया। इनमें पं. नन्ददुलारे वाजपेयी, शिवमंगल सिंह सुमन, त्रिलोकीनाथ दीक्षित मुख्य थे। डॉ. रामविलास शर्मा तो उनके साथ लखनऊ में रह ही रहे थे। इलाहाबाद और काशी के नवयुवकों से भी वैसे ही सम्बन्ध स्थापित हुए। उनकी दृष्टि तीक्ष्ण थी। वे हीरे को पहचानने वाले थे। इसी दृष्टि के बल पर उन्होंने अपने शिष्य बनाये। ये शिष्य उनके प्रशंसक या चारण नहीं अपितु अच्छे आलोचक बने। निराला के संसर्ग में लोहे को भी पारस बना दिया।

काशी भारतेन्दु, प्रसाद तथा प्रेमचन्द की नगरी रही है। बाद में वहां पं. रामचन्द्र शुक्ल तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी उदित हुए। किन्तु निराला का यहां भी सम्मान था। अक्सर वे गाते—'सो काशी सेइय कसन।' प्रसाद, विनोद शंकर व्यास, बेढब बनारसी से उनके बहुत ही मधुर सम्बन्ध थे। शान्तिप्रिय द्विवेदी एवं नन्ददुलारे वाजपेयी का उनसे काशी में ही परिचय हुआ। और पं. जानकी बल्लभ शास्त्री काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्र थे जब उन्होंने निराला स पत्र व्यवहार शुरू किया था। लखनऊ से निराला उन्हें लम्बे-लम्बे पत्र लिखकर उनकी साहित्यिक जिज्ञासा का शमन करते।

राष्ट्रभाषा विद्यालय गायघाट, बनारस के प्राचार्य गंगाधर शास्त्री बहुत ही विनीत भक्त थे निराला के। उन्होंने निराला को कई मास तक अपने पास रखा जहां उन्होंने तुलसी कृत रामायण के बालकाण्ड का खड़ीबाली में उल्था किया।

नारी जाति के प्रति हमारे निराला कितने दयालु थे, कितने भावुक थे, अकथनीय है। चाहे महादेवी जी, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, सुभद्रा कुमारी चौहान या चन्द्रमुखी ओझा सुधा जैसी कवियित्रियां हों या बच्ची जी तथा चन्द्रकान्ता जी जैसी गृहस्थिनें या फिर देवी जी की सेविका भगतिन हो या कलामंदिर की जमादारिन हो, सबके प्रति उनका स्नेह प्रदर्शन अनूठा होता। बातें करते समय उनकी बड़ी-बड़ी आंखें पृथ्वी की ओर झुकी रहतीं, उनकी वाणी में विशेष अवरोध आ जाता। वे आरदसूचक शब्दों से उन सबसे सम्बोधन करते। यही नहीं, चाहे शारदा जी (सरस्वती) की वन्दना हो, भारत माता की वन्दना हो, तुलसीदास की पत्नी रत्नावली का प्रसंग हो या अपनी ही पत्नी मनोहरा का स्मरण क्यों न हो, सबमें वे अतीव विनयशील जान पड़ते। वे 'श्रीराम चन्द्र कृपालु भजु मन' पंक्ति गाते तो स्वयं थे किन्तु तुरन्त

कहते कि यह मनोहरा का प्रिय भजन है। इसी तरह लोकगीतों की कुछ पंक्तियां गाते-गाते आत्मविभोर हो जाते।

ऐसा लगता है कि हमारे निराला में जो भी सुकुमार भावनाएं थीं वे महिषादल के राजपरिवार की उपज थीं जबकि उनकी परुषता अपने पिता रामसहाय से प्राप्त बैसवाड़ी संस्कार से जनित थी। निराला जी महादेवी वर्मा तथा सुमित्रानन्दन पन्त की सुकुमार भावनाओं की बारम्बार प्रशंसा करते किन्तु कवि सम्मेलनों तथा साहित्यिक गोष्ठियों में 'शिवा जी का पत्र', 'राम की शक्ति पूजा' जैसी पौरुषमयी रचनाएं सुनाते। जब 'कितनी बार पुकारा खोल दो द्वार बेचारे' गाकर सुनाते तो उनकी असीम करुणा का सागर उमड़ता प्रतीत होता।

हमारे निराला को दानवीर निराला के रूप में सर्वाधिक ख्याति मिली। उनके दान की तमाम कहानियां या किंवदन्तियां सुनने को मिलेंगी। किसी भी क्षेत्र के व्यक्ति से आप निराला साहित्य की नहीं, उनके दान की एक नहीं अनेक कहानियां सुन सकते हैं। क्या कभी हमारे निराला के पास इतना धन था कि वे मुक्त हस्त से लुटाते ? कहते हैं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बाप-दादों की कमाई मुक्त हस्त से लुटा दी थी। जब भी कोई पारिश्रमिक या पुरस्कार निराला जी को मिलता, वे पात्र-कुपात्र का विचार किये बिना मुक्तहस्त से लुटाते। प्राय. दीन-हीन वृद्धा, कोई दूध वाला, भिखारी, रिक्शा वाला ये ही दान के पात्र होते। दान देने की कोई तिथि या कोई समय निर्धारित न था। हाथ में धन आया नहीं कि वितरित हो जाता। एक बार कलामन्दिर की जमादारिन ने कहा, 'मुझे आपका चश्मा चाहिए' (शायद मजाक में कहा था)। निराला बोले—'यह क्यों नहीं कहती कि आंखें चाहिए। तो यह लो। मुझे तत्काल 'राम की शक्ति पूजा' का वह प्रसंग स्मरण हो आया जिसमें देवी को राजीवन यन राम अपना नेत्र देने को तत्पर हो जाते हैं।

उस पगली का प्रसंग भी सहसा स्मरण हो आता है जब निराला जी लखनऊ में होटल के पास रहने वाली एक पगली भिखारिन को अपनी भोजन की थाली दे आते थे। दारागंज में निराला जी को यही कहानी दोहराते हम लोगों ने देखा है। वे दारागंज पुल के पास लेटी एक भिखारिन को अपनी परोसी थाल लेकर दे आते और स्वयं भूखे रह जाते। यह असीम करुण निराला के अन्तर से प्रसूत थी। 'भिक्षुक' कविता इसका ज्वलन्त प्रमाण है। 'विधवा के प्रति' कविता में कितनी संवेदना है स्त्रियों के प्रति! और 'सरोज स्मृति' में तो उसकी चरण परिणति मिलती है। यह कविता विश्व के श्रेष्ठतम शोक गीतों में परिगणित की जाती है।

हमारे निराला ऊपर से कहते कि उन्हें आचार्यत्व की भूख नहीं रही किन्तु अपने कलकत्ता प्रवास के समय से ही वे रस छन्द अलंकार की शिक्षा देने लगे थे। शिवशेखर द्विवेदी, दयाशंकर वाजपेयी, परमानन्द शर्मा उनके प्रारम्भिक शिष्यों में थे। लखनऊ में रामविलास शर्मा, रामरतन भटनागर, वासुदेव शरण अग्रवाल उनके

सम्पर्क में रहे। यहां तक कि उनके पुत्र भी शिष्य मण्डली में शामिल थे। इस तरह लखनऊ में तमाम युवकों ने उनका शिष्यत्व स्वीकार किया और आजीवन निराला को गुरु मानते रहे। इलाहाबाद में मेरे अलावा ध्रुव नारायण चतुर्वेदी को उन्होंने दीक्षा दी।

हमारे निराला को गाने-बजाने का शौक था। वे हार्मोनियम बजाकर गीत गाते। कवि सम्मेलनों या सभा सोसाइटियों में जाने के पूर्व उनकी सजधज देखते बनती। इलाहाबाद में वे लखनऊ के दिनों की याद करते—इत्र की शीशी मंगाते, कपड़े चपतते, जूतों में पालिश करते और तब कहीं जाते।

यदि निराला कभी शराब पीते, तो खुला पीते। कहते तीन मकार—मांस, मत्स्य और मदिरा—हमें प्रिय हैं। वे उल्लास में आकर पीते थे, गम गलत करने के उद्देश्य से नहीं। न ही पीकर कोई रचना लिखते। भिन्न रुचिर्हि लोकाः —निराला की रुचियां विचित्र थीं।

हमारे निराला के व्यक्तित्व के एक साथ कई स्तर प्रकट होते, उनका साहित्यिक रूप महामानव रूप से सदा आच्छादित रहता। हिन्दी का ऐसा कोई अन्य साहित्यकार नहीं जिसकी हर रचना में उसका व्यक्तित्व झांके और इसके बावजूद भी उसकी कविता सार्वजनीन हो, सबसे लिए हो, सबके दुःख की वाहिका हो। यह व्यक्ति व्यष्टि से समष्टि का स्पर्श करने वाला था। यह छायावादी था, प्रगतिशील था, नई कविता का जनक था। वह टालस्टाय, गोर्की, चेखब के गुणों का अपने में समाहित किये था।

वह प्रसाद, प्रेमचन्द, रामचन्द्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवदी जसे साहित्यकारों की वन्दना करता है। वह रैदास के चरण स्पर्श करता है। वह तुलसीदास को सर्वोच्च कवि बतलाता है। कालिदास के श्लोक पढ़ता है। रीतिकालीन कवि पद्माकर के कवित्त सुनाता है। गालिब, मीर, नजीर की रचनाओं से उद्धरण देता है। वह शेक्सपियर और मिल्टन के सोनट सुनाता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के गीत गाता है। उसकी बराबरी में निराला संगीत की चर्चा चलाता है। वह फिराक का नाम लेता है। वह मैथिलीशरण गुप्त का आदर देता है। शिवपूजन सहाय को गले लगाता है। स्नेही जी के सवैये सुनाता है। उग्र जी के चर्चे छेड़ता है। वह विजयालक्ष्मी पंडित और कमला चट्टोपाध्यया का भी उसी लहजे से गुणगान कर जाता है। यह हमारे निराला का निरालापन नहीं तो क्या है ?

हमार निराला मात्र खाने-पीने, घूमने में सारा समय गंवाते रहे हों, ऐसा भी नहीं था। उनके मन में 'अहर्निश भारत तथा भारती का चिन्तन चलता रहता था। व सदैव चिन्तन की उच्चतम भावभूमि पर पहुंचकर रचना करते रहे। रचनाकार निराला एक अन्य निराला बन जाता था। डॉ. रामविलास शर्मा ने अनुभव के आधार पर लिखा है कि लखनऊ में 'राम की शक्ति पूजा' लिखते समय वे घंटों कमरे में

बन्द रहते थे। बाह्य जगत से सारा सम्पर्क तोड़ लेते, एकनिष्ठ होकर, एकाग्रचित्त स रचना करते थे। रचनाधर्मी निराला महामानव निराला का अंग होकर भी सर्वथा पृथक बन जाता था। तब सूर्यकान्त का सूर्य अपनी कान्ति से पृथक सत्ता रखता। ऐसा विलक्षण व्यक्तित्व किसका होगा ?

रचनाधर्मी निराला के समक्ष अर्थ प्राप्ति गौण थी। वे अर्थ के लिए नहीं लिख रहे थे। वे इसलिए भी नहीं लिख रहे थे कि यश मिलेगा। वे तो कविकर्म का निर्वाह कर रहे थे। वे उस समय विश्व वेदना को अन्तर से निकालते थे—कैसा आत्ममंथन करते थे ? और कैसे-कैसे रत्न निकलते थे ?

हमारे निराला सचमुच ही सरस्वती पुत्र थे। वे उन्हें पद्मासीन, पद्मावती वीणा वादिनि सरस्वती कहते। उनकी 'वर दे वीणा वादिनि वर दे' बहु प्रसिद्ध रचना है जो देश क्या विदेश में भी प्रत्येक साहित्योत्सव के प्रारम्भ में गाई जाती है। 'बेला' में उनकी सरस्वती देवी नितान्त ग्रामीण हैं।

कवि कर्म निराला पर अहर्निश हावी रहा। वे अन्तिम समय तक, रुग्णावस्था में भी, गीत लिखते रहे और प्रकाशनार्थ भिजवाते रहे। कभी वे गीतों की स्वर लिपियां पूरी कराने की बात करते, कभी हजार गीतों का हजारा पूरा कराने की बात करते। कभी अधूरा उपन्यास पूरा कराने को कहते, तो कभी नई कहानी का प्लाट तैयार करते किन्तु बीमारी के कारण अनुत्साह वश पूरा न कर पाते।

हमारे निराला साहित्य के अखाड़े में कुश्ती पर कुश्ती लड़ते रहे। कभी चित होते तो कभी पट। पुराने साहित्य महारथी भितरघात करने में पटु थे। वे अभिमन्यु को चक्रव्यूह में फंसाकर बध करने पर तुले थे किन्तु उसे देवी सरस्वती भगवती का वर मिला हुआ था। उन्होंने व्यूह भेदन की विधि प्रत्यक्ष अपने गुरु बाबा महावीर प्रसाद द्विवेदी से नहीं पाई थी किन्तु उनका आशीर्वाद अवश्य प्राप्त था। वे एकलव्य की तरह दीक्षित हुए थे।

हिन्दी साहित्य को लेकर वे राजर्षि टंडन, जवाहर लाल नेहरू, आदि से लोहा ले चुके थे। अपने समकालीन कवि पन्त जी की कटुतम आलोचना कर चुके थे। जोशी बन्धुओं से भिड़ चुके थे। अन्ततः साहित्य-कानन में निराला निर्द्वन्द्व नर-नाहर की तरह विचरण कर रहे थे। संन्यास ग्रहण करने पर तो उनके घोर विरोधी भी अनुकूल हो चुके थे।

किन्तु हमारे निराला की लड़ाई सरकार से चलती ही रही। वे लगातार उस सरकार की खोज में लगे रहे जो शान्ति और व्यवस्था करने में समर्थ होती। अब भी उन्हें रायल्टी मिलने में कठिनाई होती तो सरकार का राज लेने चल पड़ते। उनमें एसा मानसिक द्वन्द्व छिड़ जाता कि वे रौब में आ जाते, उद्दंडता पर उतारू हो जाते। जब-जब सरकारी अफसरों को देखते, किसी से उनके नाम सुनते तो कोई उनके सामने उनके नाम लेता तो वे बिफर पड़ते।

वे सरकार द्वारा साहित्यकारों को उचित सम्मान न दिये जाने से क्षुब्ध रहते। वे यह मानते रहे कि साहित्यकार का दर्जा राजनीतिक नेता से बड़ा होता है। वे हर्षकालीन संस्कृत श्लोक 'ताम्बूलद्वय आसनं च लभतें' सुनाकर कहते कि हमारा सम्मान इसी तरह होना चाहिए। वे छत्रसाल एवं शिवाजी द्वारा भूषण को पालकी कंधे पर उठाये जाने का उल्लेख करते। वे ये बातें किसी पूर्वाग्रह या पुराणपंथी के कारण नहीं करते थे। उनके भीतर का साहित्यकार आत्म-सम्मान को प्रधानता देता रहा। वे अपने लिए किसी राजसम्मान के भूखे न थे। वे पद्म श्री, पद्म विभूषण जैसी उपाधियों से विरक्ति ले चुके थे। वे अपने कवि जीवन की पराकाष्ठा के समय मंगला प्रसाद पुरस्कार की लड़ाई लड़ चुके थे। उन्हें साहित्य सम्मेलन तक से घृणा हो चुकी थी। हमारे निराला की अहं मन्यता विचित्र थी—

देख वैभव न हो नत सिर

हमारे निराला की अनबन प्रकाशकों के साथ भी रही आई। प्रकाशकों का स्नेह उन्हें शायद ही मिला हो पर वे उन पर निर्भर रहे और प्राय: उनसे लड़ते-झगड़ते। जब लखनऊ में दुलारे लाल भार्गव से नहीं बनी तो इलाहाबाद में भारती भंडार से सम्बन्ध जोड़ा किन्तु वहां के कर्ताधर्ता पाठक जी से उनकी कभी नहीं बनी। वे जाते, तड़पते, कुछ लेकर शान्त हो जाते। पूरी रायल्टी का हिसाब उन्हें कभी मिला ही नहीं। पुस्तक लिखकर देते समय कोई कांट्रैक्ट फार्म भरते तो थे नहीं। आवश्यकता पड़ने पर प्रकाशक के पास जाते और जो भी राशि मिल जाती उसे लेकर प्रसन्न होकर चले आते। रायल्टी न मिलने पर निराला को लड़ाई करनी पड़ती।

निराला बाध्य थे अपने स्वभाव से। वे जिस भी व्यक्ति के यहां रुकते, जिसका खाते उसको प्रतिदान के रूप में कोई न कोई पुस्तक लिखकर देते। उन्नाव, काशी तथा प्रयाग में उन्होंने ऐसा ही किया। निराला के प्रशंसक तथा हितैषी जन उनके जीवन काल में उनकी पुस्तकों का स्वामित्व उनके पुत्र को दिलाने का भरसक प्रयास करते रहे। बड़ी-बड़ी कमेटियां बनीं किन्तु सब व्यर्थ हुआ। निराला के पुत्र पं. रामकृष्ण ने न्यायालय की शरण ली तो वे सफल हुए और राजकमल के यहां उन्होंने निराला की सारी पुस्तकों को 'निराला रचनावली' के रूप में प्रकाशित कराने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। इससे शोधार्थियों के लिए मानो मुंह मांगा वर मिल गया।

स्वस्थ निराला 1942 के बाद से रह-रह कर बीमारियों से आक्रान्त होते रहे। एक बार अपने मित्र रामलाल गर्ग के घर कर्वी में बुरी तरह बीमार पड़े तो श्रीनारायण चतुर्वेदी ने इलाहाबाद बुलवाकर उपचार कराया। 1952 के बाद वे बाहुपीड़ा, पेचिश, अस्थिसंधि रोग तथा हार्निया से पीड़ित रहे। निराला की अन्तिम बीमारी में पूरे राष्ट्र की नजरें दारागंज पर टिक गई थीं। आयुर्वेदिक, ऐलोपैथिक तथा होमियोपैथिक सभी इलाज चले। निराला दवाएं खाने से इनकार करते रहे। लाख

प्रयत्न करने पर भी अन्तिम समय वे अस्पताल नहीं ले जाये जा सके और कला मन्दिर के कमरे में ही उनका देहान्त हुआ। अन्तिम क्षण अकथनीय पीड़ा में बीते। ऊर्ध्वश्वांस चलने के पूर्व 'राम राम' 'हाय बपा' करते रहे, आँखें बन्द कर लेते, खोलते, शरीर जवाब दे रहा था। देखते-देखते हमारे निराले क्षार हो गये।

कितनी लम्बी शव यात्रा थी, दिन डूब रहा था, चिता जलने जा रही थी! सूर्यकान्त का दिनमान डूब रहा था।

हमारा डूब रहा दिन मान।

मरने के बाद अच्छा टंटा खड़ा हुआ। निराला ने जो वस्तुएं छोड़ी थीं उनको लेकर कमलाशंकर सिंह तथा निराला के पुत्र में मनमुटाव हो गया। निराला जी की तेरहवीं के दिन दो पक्ष हो गये। एक पक्ष का कहना था कि निराला के बक्से में उनके कपड़े तथा रुपये थे। लेकिन सबसे बड़ी गले की हड्डी बनी निराला के गीतों की कापी जिसमें से कुछ गीत पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके थे किन्तु पुस्तकाकार न हो पाए थे। दारागंज युद्धस्थल बना रहा। अन्त में श्रीनारायण चतुर्वेदी जी ने मध्यस्थता की तो ये गीत 'सांध्य काकली' नाम से छपे। मूल कापी कमलाशंकर के ही पास रही। निराला की अस्थियां दारागंज के अतिरिक्त काशी में भी ले जाकर प्रवाहित की गईं।

निराला के शोक में अनेक सभाएं आयोजित हुईं। अनेक पत्र पत्रिकाओं ने विशेषांक निकाले। निराला शोध संस्थान बनाने की घोषणा हुई। निराला पर संस्मरण संकलन भी छपने लगे। दारागंज की सड़क का नाम 'निराला मार्ग' रख दिया गया तथा अड्डे पर निराला की मूर्ति लगाने का प्रस्ताव हुआ तो नगर महापालिका ने मूर्ति लगवा दी। अब वहीं पर वसन्त पंचमी के दिन निराला पर्व मनाये जाने लगा। निराला पर डाक टिकट भी निकल गया।

निराला की पुस्तकों का स्वामित्व उनके पुत्र को कैसे मिले इस पर सामूहिक विचार हुआ। कालान्तर में लखनऊ से और अन्त में राजकमल दिल्ली के यहां से 'निराला रचनावली' छपी। एक विवादास्पद अध्याय की समाप्ति हुई। निराला की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाने वाली पुस्तकें ही होंगी। उनकी व्यवस्था हो चुकी थी।

हिन्दी संस्थान उत्तर प्रदेश में डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन के निदेशक बनने पर निराला के गांव गढ़ाकोला में निराला की मूर्ति स्थापित हुई। श्री कमलाशंकर अवस्थी ने बीघापुर में निराला महाविद्यालय की स्थापना की और उसके प्रांगण में निराला की अत्यन्त सुघर आदमकद मूर्ति लगवा दी। निराला के नाम पर यह महाविद्यालय छात्र-छात्राओं को समान अवसर प्रदान कराने वाला है।

हमारे निराला की जन्मशती की धूम यहीं से उठी। सचमुच ही निराला के ग्रामवासी जाग्रत हो उठे हैं। उन्हें बैसवाड़ी के समस्त साहित्यकारों का मार्गदर्शन प्राप्त है। 12 फरवरी 1997 को निराला जन्मशती का समापन बड़े ही जोरदार ढंग

से हुआ है इलाहाबाद म भी व्याख्यान और गोष्ठिया आयोजित हुईं निराला की स्मृति एक बार फिर ताजी हो उठी। किन्तु राष्ट्रीय स्तर पर सरकार की ओर से इस महाकवि के शती वर्ष मनाने का कोई आयोजन न होने से सरकार की जनतन्त्रात्मकता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है—आखिर रवीन्द्र, राहुल या सुभाष चन्द्र की जयन्तियां व्यापक पैमाने पर मनाई गई तो निराला के नाम पर चुप्पी क्यों सधी रही ? वे सारे बड़े-बड़े कवि तथा आलोचक भी मौन रहे आये जो निराला का नाम सर्वोपरि रखने में गर्व का अनुभव करते हैं। क्यों वे भूल गये उस कवि को ? यदि कुछ नहीं हुआ तो ठीक ही हुआ। निराला जनता का कवि था, है और बना रहेगा। जनता ने निराला को अकथनीय सम्मान और प्यार दिया है। वह उनके लिए 'वसन्त का अग्रदूत' बना रहेगा, उनके लिए उनकी 'कभी न होगा मेरा अन्त' पंक्ति सार्थक बनी रहेगी।

निराला जेसी विभूति का आविर्भाव बहुत काल के बाद होता है। तुलसी के बाद भिन्न स्वर एवं भिन्न व्यक्तित्व लेकर निराला अवतरित हुए थे।

ऐसे थे हमारे निराला ! जितना भी लिखें, जितना भी कहें, वह अत्यल्प है। हमारे जनप्रिय नेताओं को भौतिकता के आगे अवकाश ही कहां है कि वे निराला के त्याग-तपस्या की, उनके गद्य-पद्य की बातें कहें सुनें ? निराला जैसा कवि, निबन्धकार एवं महामानव न तो हुआ है न होगा—न भूतो न भविष्यति।

मैं निराला की ही पंक्तियों से समापन कर रहा हू—

मरण को जिसने वरा है, उसी ने जीवन वरा है
परा भी उसकी, उसी के अंक सत्य-यशोधरा है।

परिशिष्ट 1

वसन्त पंचमी

महादेवी के सान्निध्य में 1 फरवरी 1979 को हिन्दुस्तानी एकेडमी के सभागार में निराला संगीत तथा स्मरण संध्या का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम इस प्रकार था—सरस्वती वन्दना, वसंत राग (प्रो. ओ.पी. मालवीय द्वारा टूटे सकल बन्ध तथा सखि वसन्त आया का गायन), निराला के कुछ गीत (कृपाशंकर तिवारी द्वारा दलित जन पर करो करुणा की प्रस्तुति), बादल राग (आकाशवाणी के सौजन्य से) तथा बिल्लेसुर बकरिहा की प्रस्तुति (जीवनलाल गुप्त द्वारा)। अध्यक्षीय भाषण।

इस आयोजन की अध्यक्षा श्रीमती महादेवी वर्मा थीं

'बादल राग' के लिए आकाशवाणी ने 4 मास तक तैयारी की थी। श्री केशचन्द्र वर्मा तथा रघुनाथ सेठ ने इसे तैयार किया था।

वक्ताओं में श्री बच्चन सिंह, बाबूराम सक्सेना, लक्ष्मीकान्त वर्मा, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, श्रीमती उमाराव, श्री अमृतराव, पं. रामकृष्ण त्रिपाठी तथा श्री लाल शुक्ल मुख्य थे। मैं भी श्रोता के रूप में उपस्थित था।

सुश्री महादेवी वर्मा ने अध्यक्षीय भाषण में कहा—

'निराला ने हमारे युग को धन्य किया है। उनकी कविता में त्रिविधता है। एक व्यक्ति ने भाषा को कितनी भंगिमाएं दीं! उन्होंने शब्दों को इतना मांजा कि खड़ीबोली ब्रजभाषा की स्थानापन्न हो गई। उन्हें बादल पसन्द थे। फिर उन्हें वसन्त अच्छा लगता था।।'

महादेवी जी ने दारागंज के उस मकान का वर्णन किया जिसमें निराला जी दिए के प्रकाश में लिखते, गीली लकड़ी जलाने से घर धुंए से भरा रहता उन्हीं में वे काम करते। प्राथमिक पाठशाला की दवात, निब वाली होल्डर, मोतियों जैसे अक्षर। शीतकाल में लुंगी ओढ़ते' एक बार देवी जी रजाई दे आई किन्तु दो दिन बाद वह गायब थी। इस अर्थ के युग की परवाह न करके निराला ने सामान्य जीवन जिया। वही उत्कृष्ट हैं जो कमण्डल वाले हैं—जिसमें अक्षय जल की बूंदे हैं—निराला जी उसी सन्त परम्परा से हैं। युग का सारा हलाहल अपने कण्ठ में रखा केवल अमृत दिया। लेकिन हमने उन्हें क्या दिया ?

उनके साहित्य और जीवन में कोई अन्तर नहीं था। कष्ट सहन मे निराला जी बापू जी से भी आगे थे। उन्होंने बताया कि अपने काव्य को व्यक्ति कैसे जीता है।

बादल राग की प्रस्तुति के पूर्व यह बतलाया गया कि जब निराला बादल राग गाते थे तो बड़े तन्मय हो जाते थे। कहते हैं कि बादल राग गाने से लखनऊ में वर्षा हुई थी।

(टिप्पणी : महादेवी द्वारा निराला के विषय में यह अन्तिम भाषण था।

परिशिष्ट-2

निराला व्याख्यान माला

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में निराला व्याख्यान माला 9-11 मई, 1979 को सायं 6 बजे आयोजित थी, जिसमें श्री शमशेर बहादुर सिंह को निराला तथा अज्ञेय की कविताओं के उद्देश्यपरक प्रयोग पर बोलना था।

मैंने पहली बार श्री शमशेर बहादुर जी को निराला की छोटी कविताओं पर विचार प्रस्तुत करते सुना। उन्होंने 4 कविताएं चुनी थीं—मौन, निवेदन, प्रिया के प्रति तथा स्वप्न स्मृति।

उन्होंने बताया कि डॉ. रामविलास शर्मा ने इन लघु कविताओं पर विचार नहीं किया।. .. कहने को तो ऊपरी मौन है किन्तु मन में तुमुलनाद है। यह मौन कब मधु हो जाय—मन का गुण सरलता है जिसके बिना कुछ ग्रहर्ण नहीं किया जा सकता। प्रातः के लघुपात—किरणों का गिरना है यानी तेजी से प्रातः आया। गीत की हर पंक्ति आगे वाली पंक्ति से जुड़ी है। चक्कर संगीत का द्योतक है।

निवेदन—एक दिन थम जायेगा रोदन—इस छन्द का संगीत मन पर अधिक छा जाता है। गीत में नाटकीय संभाषण (dialogue) शैली है।

'अंधकार में मेरा रोदन' कविता भावुकता से पूर्ण है। इस गीत में संगीत का प्रवाह मोहने वाला है। लगता है इन गीतों में निराला ने अपनी पत्नी को रखा है।

'प्रिया के प्रति' में बन्दों की कसावट है, बन्धान complex है। भाव व्यक्तिगत हैं किन्तु अभिव्यक्ति विराट है। ताल पर नाचने की मुद्रा। कला को व्यक्त करने म भाव मुद्रा।

'स्वप्न स्मृति' अद्वितीय कविता है। अन्तिम पंक्तियों पर लोक का चित्र उपस्थित करती हैं। उस समय निराला घोर संताप से गुजर रहे थे। इसका प्रारम्भ हताशा से होता है किन्तु तो भी आत्मसंयम दिखता है।

परिशिष्ट-3

अछूता संस्मरण

डॉ. महेश प्रताप नारायण अवस्थी द्वारा लिखित पुस्तक 'कविवर निराला' (1991) में पृष्ठ 58 से 67 तक, लखनऊ के श्री शारदा प्रसाद, भुशुंडि जी का एक संस्मरण 'अछूता संस्मरण' नाम से प्रकाशित है। इसमें निराला जी के विषयक जो संस्मरण हैं वह उनके कर्वी निवास से सम्बद्ध हैं। इसके आगे निराला की मृत्यु के पश्चात् गंगा प्रसाद मैमोरियल हाल, अमीनाबाद लखनऊ में उर्दू साहित्य के श्रेष्ठ शायर श्री आनंद नारायण मुल्ला की अध्यक्षता में हुई शोक सभा के उपरान्त 'रसवंती' के सम्पादक डॉ. प्रेमनारायण टंडन द्वारा श्री भुशुंडि जी से इस करुण प्रसंग पर हास्यरस की कविता मांगे जाने पर उनके द्वारा लिखित कविता लिखने का उल्लेख है। मेरी समझ में यह जानकारी महत्वपूर्ण है इसलिए इसके आवश्यक अंश उद्धृत हैं—

"कर्वी जिला बांदा मे मेरा ननिहाल है। मैंने लगभग 1917 से 1930 तक यहां पर शिक्षा प्राप्त की थी। मेरे माता के पुरोहित दो भाई कर्वी में रहते थे। बड़े भाई का नाम पंडित गोकुल प्रसाद त्रिपाठी था। वे यहां के कच्ची छावनी मुहल्ले मे रहते थे। दूसरे भाई कोंची महाराज थे। ये तरौंहा मुहल्ले में रहते। इनके एक भाई और थे जो महिषादल के राजा के यहां नौकर थे। ये लोग उन्नाव के रहने वाले थे। ये भाई महिषादल से छुट्टी लेकर जब कभी अपने गांव आते थे तब वे अपने भाइयों से मिलने के लिए कर्वी भी आते।. . ये लम्बा कुर्ता तथा लम्बी धोती पहनते थे। इनका कद लम्बा था। इनके साथ एक लड़का भी रहता था जिसकी वेशभूषा तथा शरीर का गठन बिलकुल बंगाली लड़कों जैसा था। इनकी एक लड़की भी थी जो तरौंहा में एक गर्ग को ब्याही थी .. । यह तब की बात है जब मैं कक्षा 8 में पढ़ता था. ..।"

"1937 में मैं लखनऊ में नगर पालिका में नौकर हो गया। आर्यनगर मुहल्ले में मेरे मकान के आगे कुछ दूर पर श्रीनारायण चतुर्वेदी भाई साहब इसमें किराये पर रहते थे। ये इस समय यहां पर शिक्षा अधिकारी थे। आशुकवि श्री जगमोहन नाथ अवस्थी इन्हीं के कार्यालय में क्लर्क थे।.... भइया साहब के यहां राज रात के समय कवियों का जमघट हो जाता था। इनमें अन्य कवियों के अतिरिक्त सर्वश्री हितैषी तथा निराला जी भी आते थे। उस समय ये लोग लखनऊ में ही रहते थे....।"

"1941 के लगभग मुझे अपने मामा के यहां कर्वी जाना पड़ा। वहां पर मैं पंडित गोकुल प्रसाद त्रिपाठी से मिला तथा उनसे निराला जी के विषय में जानकारी चाही। उन्होंने मुझे बताया कि उनके भाई महिषादल (बंगाल) में रहते हैं. इनका नाम रामसहाय त्रिपाठी है। निराला जी इन्हीं के लड़के हैं।"

"निराला जी जिस समय श्रीमती सुमित्रा कुमारी जी के यहां उन्नाव में रहते थे उस समय कवि सम्मेलन में मैं भी उन्नाव गया हुआ था और श्रीमती जी के यहां ही ठहरा था। दूसरे दिन सुबह निराला जी मकान के बाहर बैठे हुए थे। मैं उनसे मिला और कर्वी वाली बात पूछी। उन्होंने मुस्कराते हुए प्रश्न किया 'तुमको कैसे मालमू?'"

"डॉ. महेश प्रताप नारायण अवस्थी के आग्रह पर यह संस्मरण लिपिबद्ध कर रहा हूं।"

निराला जी की मृत्यु पर जो कविता लिखी गई वह रामचरित मानस में श्री दशरथ की मृत्यु के पश्चात् श्री वशिष्ट जी शोकाकुल भरत का शोक न करने का जो उपदेश देते हैं उसी को आधार बनाकर है—

खबर उड़ी आकाश में आय अचानक मौत।
साथ निरालहिं लै गई बन हिन्दी की सौत।।
सुनि कै दुखद संदेस यहु लै संग सोक समाज।
श्रीनगर अति व्यथित हो गये लिबर्टी लाज।।

* * *

बोले नागर का कहौं, मोहिं न तनिक सोहाय।
पेटे से चलि बात तो, मरे अटकि रहि जाय।।

* * *

सुकवि निराला स्वर्ग सिधाये, हम सब तकत रहे मुंह बाये
डाढि मारि कै हालावादी, रोवैं सब मिल छायावादी
रोवैं टेकनिक कथा कहानी, 'अलका' और 'अप्सरा' दानी
दे सामन्तवाद कहँ बुत्ता, सीस धुनत निज 'कुकुरमुत्ता'।

* * *

कहौं कहां अगि नैन भिगोये, बहुत हास्य के कवि रोये।
भाव विभाव सुभाव का, भा प्रकास अब मन्द।
रोय रहे सब गीत हैं, रोय रहे सब छन्द।।
बोले 'श्रीवर' अति अकुलाई, यह जग अजग सदा से भाई
जो आवै सो रहन न पावै, दिन दुइधारि गये चलि जावै



सोचनीय नहिं रहे निराला, जो जीवन भर सहिन कसाला
जाकी धूम चहूं दिसि मांची, ताकी मौत कहां भइ सांची
तजो सको अपने घर जाहू, भंग छानि कै रबड़ी खाहू

टिप्पणी : मैंने अपनी पुस्तक के प्रारम्भ में 'हमारे निराला' का जो परिचय दिया है उसमें रामसहाय तथा रामलाल को भाई-भाई कहा है। श्री भुशुंडि जी के उपर्युक्त विवरण मे रामसहाय तथा रामलाल का सम्बन्ध साले बहनोई का प्रतीत होता है। किन्तु स्मरणीय है कि रामसहाय जी के कोई बहन न थी।

भुशुंडि जी के विवरण से कुछेक नई बातों का पता तो चलता है किन्तु भ्रांतिया अधिक हो सकती है। अतः नीर क्षीर विवेक की आवश्यकता है उपर्युक्त 'अछूता संस्मरण' को पढ़ते समय।

हां, निराला जी की मृत्यु पर लिखी पद्यांश काफी रोमांचक है, भावपूर्ण है और यथार्थपूर्ण भी।

परिशिष्ट-4

निराला पर एक कविता के अंश

जनवरी 1996 के 'नवनीत' में देवनारायण त्रिवेदी 'देव' (रायबरेली) की एक कविता के कुछ अंश उद्धृत हैं—

बंगदेस जन्मभूमि गढ़ाकोला पितृभूमि
संस्कार शाक्त-वैष्णवों का उजियाला है
काली दुर्गा के प्रति भावना समर्पित जो,
रामशक्ति पूजा के मंत्रों में ढाला है
'देव' बंगल का कोमलत्व वर्चस्व और,
संस्कृत-हिन्दी का अनोखा रवि आला है
कर्म में निराला, कवि धर्म में 'निराला'
कविश्रेष्ठ 'मतवाला' अनमोल वह निराला है।

परिशिष्ट-5

48वीं सालगिरह पर वयोवृद्ध केदारनाथ अग्रवाल से बातचीत के कुछ अंश—(ये किसी पत्रिका में छपे थे)

प्रश्न—निराला से आपका कैसा सम्पर्क रहा ?

उत्तर—निराला पर तो मुग्ध रहा करते थे। यहां बांदा में नुमाइश लगा करती थी। उसमें निराला को बुलाया जाता था। बाबू विश्वम्भर नाथ सरकारी वकील थे। उनके यहां ठहराया जाता था। कवि सम्मेलन होता था। एक बार कवि सम्मेलन शुरू हो गया तो लोग निराला जी को बुलाने गये और कहा कि चलिए, वहां बहुत से अफसर, हाकिम बैठे हैं। निराला जी इस पर भड़क गये और कहा कि हम नहीं जाएंगे। बाद में हम गये। उनके पास थोड़ी देर बैठे रहे और कहा कि आपकी कविता सुनने के लिए बहुत जनता आई है। बस, निराला जी चल दिए। एक बार तो वह यहां हमारे घर भी आये। यहीं कमरे में जमीन पर बैठाकर उनको हमने खाना खिलाया। हालांकि बाद में हमको बड़ी ग्लानि हुई कि इतने बड़े कवि को ऊपर मेज-कुर्सी में खिलाना चाहिए था। हम तो बस उनके ऊपर मुग्ध थे।



परिशिष्ट-6

निराला का कुश्ती प्रेम

नागरी पत्रिका के 15 मार्च-14 मई, 2000 अंक में श्री गोवर्धन दास मेहरोत्रा के एक लेख से कुछ अंश उद्धृत हैं—

"गामा और गुलाम पहलवान को कुश्ती का महान कलाकार मानने वाले महाकवि निराला अपने को कवि न कहकर पहलवान कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। स्वामी विवेकानन्द शरीर को बलशाली बनाने के हिमायती थे। निराला कहा करते कि जब तक जनता ताकतवर नहीं होगी। फिरंगी शासकों को भगाया नहीं जा सकता।"

"वे महिषादल के अलावा कलकत्ता के टंड इल बगान खिद्धिरपुर और घुसुडी (हावड़ा) में आयोजित कुश्ती दंगलों में देश के नामी पहलवानों को देख चुके थे।"

"वे नित्य रियाज में 2000 बैठक, 1500 दंड, 3 मील दौड़, 200 हाथ डम्बल करने के बाद स्टेट अखाड़े में पुलिस के जवानों से जमकर कुश्ती लड़ते थे।"

वे दस्ती, लोकान, उतार, पट्ट, ढाक, कालाजंग और घिस्सा दांवों में पटु थे। उनकी हाइट 6 फुट तथा छाती 56 इंच चौड़ी थी। शरीर का वजन 50 वर्ष की अवस्था में 240 पौंड था। रोजाना 2 घंटे मालिश के बाद नदी में तैरा करते थे। गिजा में 5 सेर दूध, 1/2 सेर बादाम की ठंडाई, डेढ पाव घी, आधा सेर दही का मट्ठा, मौसमी फल, बेल का मुरब्बा, मिठाई और कभी-कभी गोश्त खाते।

कलकत्ता, बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ आदि स्थानों में सुन्दर बलशाली जवानों को देखकर गदगद होते और उनके बल का अंदाज लगाने के लिए पंजा मिलाया करते। उन्हें घुड़सवारी का शौक था। छात्र जीवन में हाकी, फुटबाल के खिलाड़ी थे। व्यायाम के बाद कभी भी पढ़ाई में थकान महसूस नहीं की।

वाराणसी निवास के दौरान गंगा तट पर स्थित पाटन दरवाजा मुहल्ला के श्री राष्ट्रभाषा विद्यालय के आचार्य पं. गंगाधर मिश्र के साथ उनके शिष्य डॉ. बलदेव प्रसाद मेहरोत्रा, छात्र कृष्णचन्द्र पाठक, रघुनाथ प्रसाद, रमानाथ मिश्र, प्रह्लाद दास मेहरोत्रा निराला की सेवा में रहते थे।

